भारत के पूजा-स्थल

स्वराज अग्रवाल

भारत के पूजा स्थल

भारत के पूजा स्थल

लेखिका

स्वराज अग्रवाल
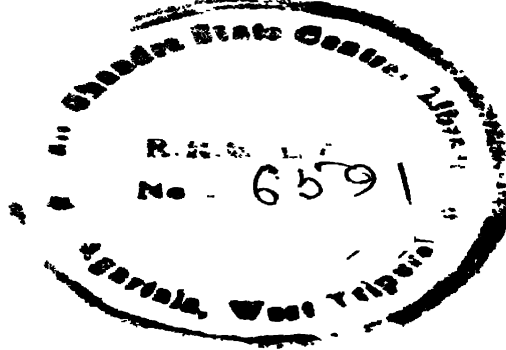
प्रेम-प्रकाशन मन्दिर

३०१२ बल्लीमारान, दिल्ली-११०००६

विषय-सूची

प्राक्कथन

त्रिलोक के लिये सप्तद्वीपवती पृथ्वी पूजा-स्थल है, सप्तद्वीपवती पृथ्वी के लिये जम्बूद्वीप पूजा-स्थल है और जम्बूद्वीप के लिये भारत भूमि पूजा-स्थल है। किन्तु भारत में भी निम्नलिखित स्थान प्रसिद्ध पूजा स्थल हैं।

(१) चार धाम (१) उत्तर में बदरीनाथ (२) दक्षिण में सेतुबन्ध (रामेश्वरम्) (३) पूर्व में जगन्नाथपुरी (४) पश्चिम में द्वारिकापुरी

(२) सात मोक्षपुरियाँ (१) अयोध्या (२) मथुरा (३) माया (हरिद्वार) (४) काशी (५) कांची (६) अवन्तिका (उज्जैन) (७) द्वारिका

नोटः--- कांची दक्षिण भारत में है शेष ६ उत्तर भारत में है।

(३) पंच केदार (जहाँ श्री शंकर महिष-रूप में प्रतिष्ठित हुए)

(१) श्री केदार नाथ (२) श्री मध्यमेश्वर

(३) श्री तगनाथ (४) श्री रुद्रनाथ

(५) श्री कल्पेश्वर

नोटः---ये सभी उत्तराखंड में हैं।

(४) सप्तबदरी (१) श्री बदरीनारायण (२) यादबदरी (३) वृद्ध बदरी (४) भविष्य बदरी (५) योगबदरी (६) आदिबदरी (७) नृसिंह बदरी

नोटः---भगवान नारायण लोक कल्याणार्थ युग-युग में बदरीनाथ रूप में स्थित हैं। पंच केदार के समान ये बदरी क्षेत्र में हैं। सभी क्षेत्र उत्तराखंड में हैं।

(५) पंचनाथ (१) उत्तर में श्री बदरीनाथ (२) दक्षिण में श्री रंगनाथ (३) पूर्व में जगन्नाथ (४) पश्चिम में श्री द्वारिकानाथ (५) मध्य में श्री गोवर्धननाथ।

(६) पंचकाशी (१) वाराणसी (२) गुप्तकाशी (३) उत्तरकाशी (४) दक्षिण काशी (५) शिव काशी

(७) सप्त सरस्वतीः---(१) सुप्रभा (पुष्कर) (२) काचनाक्षी (नैमिष) (३) विशाला (गया) (४) मनोरमा (उत्तर कौशल) (५) ओघवती (कुरुक्षेत्र) (६) सुरेणु (हरिद्वार) (७) विमलादका (हिमालय)

(८) सप्त पुण्य नदियाँ (१) गगा (२) यमुना (३) गोदावरी (४) सरस्वती (५) कावेरी (६) नर्मदा (७) सिन्धु

(९) सप्त गंगा (१) भागीरथी (२) वृद्धगंगा (३) गोदावरी (४) सरस्वती (५) कावेरी (६) कृष्णा (७) नर्मदा

(१०) सप्त क्षेत्र (१) कुरुक्षेत्र (२) हरिहरक्षेत्र (३) प्रभासक्षेत्र (४) रेणुका क्षेत्र (५) भृगुक्षेत्र (६) पुरुषोतम क्षेत्र (७) सूकर क्षेत्र

(११) पांच सरोवर (१) बिन्दुसरोवर (२) नारायण सरोवर (३) पम्पासरोवर (४) मानसरोवर (५) पुष्कर सरोवर

(१२) नौ अरण्य (वन) (१) दडकारण्य (२) मेन्धवारण्य (३) पुष्कारण्य (४) नैमिषारण्य (५) कुरुजांगल (६) उत्पलावर्तकारण्य (७) जम्बुमार्ग (८) हिमवारण्य (९) अबुर्दारण्य।

(१३) द्वादश (१२) ज्योतिर्लिंग (१) सोमनाथ (सोराष्ट्र-गुजरात) (२) मलिकार्जुन (मद्रास-तमिलनाडू) (३) महाकाल (उज्जैन-मध्यप्रदेश)

(४) ओंकार-अमरेश्वर (उज्जैन से खडवा जाने वाली पश्चिम रेलवे की छोटी लाइन पर ओंकारेश्वर रोड है वहां से ओंकारेश्वर मन्दिर ७ मील है)

(५) श्री केदारनाथ (उत्तर प्रदेश में उत्तराखड मे हिमालय पर्वत पर है। हरिद्वार से १५० मील तथा ऋषिकेश से १३२ मील है।)

(६) भीम शंकर (बम्बई प्रदेश मे नासिक से १२० मील दूर भीमा नदी के किनारे पर है)

(७) विश्वनाथ (वाराणसी में गादोलिया चौक गली के अन्दर है)

(८) त्र्यम्बक (बम्बई प्रान्त में नासिक पंचवटी से १८ मील दूर, गोदावरी के उद्‌गम स्थान ब्रह्मगिरि पहाडी के निकट है)

(९) नागेश्वर (गुजरात मे गोमती द्वारिका से इशानकोण में १२-१३ मील दूर है। इसे दारूका वन भी कहते हैं।

(१०)) रामेश्वरम् (तमिलनाडू प्रांत के रामनाथन या रामानद जिले में समुद्र तट पर रामेश्वरम् का विशाल मन्दिर है)

शाही दरवाजे के बिल्कुल सामने है।

(१३) हज़रत शेख कलीम उल्लाह शाहजहाँ अबादी रह० मजार शरीफ हजरत निजामुद्दीन अमीर खुसरो के मजार के पास है।

(१४) हज़रत ख्वाजा मुहम्मद सुलेमान तौस्वी रह० दरगाह शरीफ भागलपुर।

(१५) हज़रत मौलाना फज्लुलर्रहमागंज मुरादाबादी रह० दरगाह शरीफ मुरादाबाद यू०पी०।

(१६) हज़रत मौलाना हाजी मैयद वारिस अलिशाह रह० दरगाह शरीफ देवाह जिला बाराबांकी।

नोटः---मुसलमान अल्लाह के सिवाय किसी और की पूजा नहीं करते मस्जिदें मुमलमानों की इबादतगाह हैं। दिन मे पांच बार नमाज पढ़ने का नियम है। मुमलमानों का प्रमुख तीर्थ स्थल भारत से बाहर मक्का-मद्दीना में है।

हज़रत मोहम्मद ने इस्लाम को पूरी तरह से स्थापित किया। मुसलमानों का धार्मिक तीर्थस्थल मक्का-मदीना के सिवाय कहीं नहीं है। हालांकि सूफी धारा ने पीर, औलियों, शहीदों इत्यादि को इतना सम्मान दिया कि अन्य धर्म के लोगों ने और कुछ मुसलमानों ने उनकी दरगाहों, ख़ानकाहों तथा मजारों को एक तरह से धार्मिक तीर्थ स्थल का दर्जा दे दिया। सूफी धारा पर हिन्दु धर्म का विशेष प्रभाव है लेकिन कट्टर इस्लामी लोग इसे धार्मिक कर्मकांड नहीं मानते। यही कारण है कि स्वयं मोहम्मद की पूजा करने की भी मुसलमानों को इजाजत नहीं है।

ईसाइयों के प्रमुख-चर्च (गिरजाघर)

(१) बजीलिका आव बोम जीजस (ओल्ड गोआ) यह विश्व विख्यात चर्च है। यहॉ ईसाई धर्म प्रचारक संत फ्रांसिस जेवियर का मृत शरीर अभी तक सुरक्षित रखा है।

(२) सिक कव्यीड्रल गोआ।

(३) कान्वन्ट आव सैंट फ्रांसिस आव असिसी तथा चैपल आव सैंट कैथरीन और कान्वन्ट आव सैंट मौनिका। (गोआ)।

(४) सैंट फिलोमेना चर्च (मैसूर)

(५) रोमन कैथोलिक प्रॉ कैथीड्रल (कोलाबा, बम्बई)

(६) माऊँट मेरीज (बान्द्रा बम्बई)

(७) ग्लरिया चर्च (भायखाला, बम्बई)

(८) श्राइन आव मेरी ड्रेल्प आव क्रिम्चियंन मानटुगा, बम्बई)

(९) सैट एण्ड्रज चर्च (बान्द्रा, बम्बई)

(१०) मैट माइकल चर्च (माहीम, बम्बई)

(११) मैट पाल कथीड्रल (कलकत्ता)

(१२) सट जान चर्च (कलकत्ता)

(१३) सैट मेगीज चर्च (मद्रास मे एशिया का प्राचीनतम् एगलीक चर्च माना जाता है)

(१४) सेटोम कैथीड्रल (मद्राम, ईसामसी के दूत सेट टामम क अवशष पहल यहाँ सुरक्षित रखे थे जो अब सैट टामस (माउण्ट) चच म हे।

(१५) सेट टामस माउण्ट (मद्रास)

(१६) सेट फ्रासिस चर्च (कोचीन)

(१७)सान्ताक्रुज केथीड्रल (कोचीन)

(१८) यूनियन चर्च (मसूरी) आदि

पारसी अगियारी-आतशबेहराम

(१) अजुमन (धोबी तालाब, बम्बई)

(२) बनाजी (चर्नी रोड स्टेशन, बम्वई)

(३) वाडियानी (धोबी तालाव, बम्बई) आदि।

यहूदियों के सिनगोग

यहूदियो के अगियारे (मदिर को अग्रेजी म "सिनगोग" कहते है तथा यहूदी को "जू" कहते हे कोचीन मे यहूदियो का जूइम सिनगाग दखने योग्य है।

तीर्थ-यात्रा

तीर्थः---का अर्थ हे जिसके द्वारा तग जाए। अत तीर्थाटन का उद्देश्य ऐसे तीर्थों एवम् पूजा-स्थलो पर जाना है जहाँ स्नान, ध्यान तथा पूजा करके कुछ नयापन अनुभव कर सके। मच्चा तीर्थ यात्री केवल पूजा-स्थलो की यात्रा ही नही करता बल्कि पूजास्थलों मे जुडे हुए महापुरुषो, मत महात्माओ तथा तपस्वी लोगो के साथ सत्सग भी करता है।

भारतीय जन की यात्राएँ प्रायः तीर्थ यात्रा ही रही हैं। धनवानो से लेकर भिक्षु तक प्रायः यहाँ तीर्थाटन ही करते रहे हैं। तीर्थयात्रा एक महान माधना एवम् तपस्या

(११) घृष्णेश्वर (महाराष्ट्र में दौलताबाद (औरंगाबाद) स्टेशन से १२ मील वैरूल (एलोरा) ग्राम के पास है), यहाँ एलोरा की सुप्रसिद्ध गुफायें भी हैं।

(१२) वैद्यनाथ (पूर्व रेलवे के जसीडीह जंकशन से छः कि० मी० पर देवघर-वैद्यनाथ) है। यह बिहार प्रान्त में है।

(१४) ५१ शक्तिपीठ

क्रम	स्थान	अंगपतन	देवी	भैरव
१	हिंगुला	ब्रह्मरन्ध्र	देवकोट्टरी	भीमलोचन
२	सर्करा	चक्षुत्रय	महिषमर्दिनी	क्रोधिष
३	ज्वालामुखी	जिह्वा	अम्बिका	उन्मत्त
४	सुगन्धा	नासिका	सुनन्दा	त्र्यम्बक
५	अवन्ति	ऊर्ध्वओष्ट	अवन्ति	लम्बकर्ण
६	अट्टहासे	अधोओष्ठ	फूलरा	विश्वेष
७	प्रभास	उदर	चन्द्रभाग	वक्रतुण्ड
८	जनस्थान	चिंबुक	भ्रामरी	विपरीताक्ष
९	गोदावरी	वामगण्डी	विश्वमातृका	दण्डपाणि
१०	गण्डकी	दक्षिणगण्ड	गण्डको	चण्डी चक्रपाणि
११	सूचादेश	ऊर्ध्वदंत	नारायणी बराहो	महा महारुद्र
१२	करतोयातट	बाम तल्य	अर्पणा	बावन
१३	श्रीपर्वत	दक्षिण तल्प	श्रीसुन्दरी	सुन्दरानन्द
१४	कर्णाटक	कर्णद्वय	जयदुर्गा	अभिरु
१५	वृन्दावन	दक्षिण चरण चार अंगुष्ठ	उमा देवी	भूतेश
१६	क्रीट	क्रीट	देवी विमला	सम्बर्त
१७	श्रीहट	ग्रीवा	महालक्ष्मी	शवरानन्द
१८	नलहाटी	नली	कालिका	योगेश
१९	कश्मीर	कण्ठ	महामाया	त्रिसंधेश्वर
२०	रत्नावी	दक्षिणस्कन्ध	कुमारी	शिव
२१	मिथिला	वामस्कन्ध	उषा	महोदर

२२	चट्टग्राम	वाम हस्त	भवानी	चन्द्रशेखर
२३	मानसरोवर	दक्षिण हस्त	दाक्षादणी	अमर
२४	उजानि	वाम कोहूनी	मंगल चण्डी	कपिलाम्बर
२५	मणिवेदे	मणिबन्ध	गायत्री	मर्वानन्द
२६	प्रयाग	हस्त अंगुली	ललिता	भव भैरव
२७	बहुला	वाम बाहु	देवी बहुला	भिरूक
२८	जालन्धर	वामस्तन	त्रिपुरमालिनी	भीषन
२९	रामगिरि	दक्षिण स्तन	शिवानी	दण्ड भैरव
३०	वैद्यनाथ	हृदय	जय दुर्गा	वेद्यनाथ
३१	उत्कल	नाभि	विमला	जगन्नाथ
३२	कन्चीदेश	अस्थी (कंकाल)	देवीगर्भा	दण्ड भैरव
३३	कालमाधवे	वाम नितम्ब	देवी काली	अमितांग
३४	सोन नद	दक्षिणा नितम्ब	सोनाख्या	भद्रमंन
३५	कामाख्या	योनि	कामाख्या	उमानन्द
३६	नेपाल	जानु द्वय	महामाया	कपाली
३७	जयन्ती	वामजंघा	जयन्ती	क्रमदोश्वर
३८	मगध	दक्षिणा जंघा	चर्वानन्दकरी	व्योमकेश
३९	त्रिपुरा	चरण	देवी त्रिपुरा	त्रिपुरेश
४०	जुगाण्या	दक्षिण चरण अंगुष्ठ	महामाया	क्षीर खण्डक
४१	कालीघाट	केश	देवी काली	नकुलेश्वर भैरव
४२	कुरुक्षेत्र	दक्षिण पांव की घुट्टी	सावित्री	स्थानु भैरव
४३	बक्रेश्वर	भौंहमध्य	महिषमर्दिनी	बक्रनाथ
४४	जसर	पाणिषद्म	जसरेश्वरी	चण्ड्
४५	नन्दीपुर	हार	नन्दिनी	नन्दीकेश्वर
४६	वाराणसी	कुण्डल	विशालाक्षी	काल भैरव

४७	कन्याश्रम	पृष्ट	देवी सार्वानि	निमिष
४८	लंका	नुपुर	इन्द्राक्षी	राक्षेश्वर
४६	विराट	वामपंथ अंगुली	अम्बिका	अमृताक्ष
५०	विभासक	वामगुल्फ	भीमरूपा	सर्वानन्द
५१	त्रिश्रोता	वामपाद	भ्रामरी	भैरव अम्बर

बौद्धों के चार पवित्र तीर्थ स्थान

(१) कपिलवस्तुः---जो भगवान् बुद्ध का जन्म स्थान है।

(२) बुद्धगयाः---(उरुविल्व) जहाँ भगवान् बुद्ध को दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ।

(३) वाराणसीः---(सारनाथ) जहाँ से भगवान् बुद्ध ने धर्म का प्रचार करना आरम्भ किया।

(४) कुशीः---जहाँ से भगवान् बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया।

जैनियों के पवित्र तीर्थ स्थान

(१) कुंडग्रामः----(वैशाली) भगवान् महावीर का जन्म स्थान।

(२) पावापुरीः---जहाँ से भगवान् महावीर ने परिनिर्वाण प्राप्त किया। सारे भारत से जैन लोग पावापुरी की यात्रा को जाते हैं। जैनियों का यह भी कहना है कि दीपावली का त्योहार महावीर स्वामी के परिनिर्वाण की याद में मनाया जाता है।

नोटः--बौद्धों तथा जैनियों के तीर्थ स्थान सारे भारत में विद्यमान हैं, जिनको यहाँ पर वर्णन करना कठिन है।

सिक्खों के पाँच महान तख्त

(१) श्री अकाल तख्त साहिब (अमृतसर-पंजाब)

(२) श्री तख्त हरिमन्दर जी (श्री पटना साहिब-बिहार)

(३) श्री केशगढ़ साहिब (आनन्दपुर साहिब-पंजाब)

(४) श्री हजूर साहिब (नंदेड़-महाराष्ट्र)

(५) श्री दमदमा साहिब (तलवंडी साबो की भठिंडा-पंजाब)

(२) पाँच मुख्य बाणी जिनका प्रतिदिन पाठ किया जाता हैं।

(१) जपजी साहिब (२) जाप साहिब (३) दसवें गुरु के सवैये (४) सदर रहरास (५) कीर्तन साहिब।

औलिया-ए-हिन्द

भारत में सैंकड़ों मुस्लिम दर्वेश, फकीर, सूफी गुजरे हैं, जिनकी दरगाहें, रवानकाहें, मजारें आज भी हर मजहब मिल्लत के मानने वालों के लिये बरकत व खैर बनी हुई हैं। तमाम मुस्लिम दर्वेश खिदमत-ए-खलक अंजाम देते थे और मुस्लिम तारीख इन औलिया-ए-किराम के कारनामों से भरी हुई है। ८०० साल पहले जब हिन्दुस्तान में मुस्लिम बादशाह हकूमत करते थे, उस वक्त भी हिन्दुस्तान और इरान के सूफी और दर्वेश हिन्दू मुस्लिम एकता का सबक देते थे। इन औलिया-ए-किराम की पवित्र दरगाहें शरीफ निम्नलिखित हैं जहाँ प्रतिदिन हजारों हिन्दु मुसलमान जयारत करने जाते हैं।

(१) हज़रत ख्वाजा मुईनउद्दीन चिश्ती अजमेरी रह० दरगाह अजमेर शरीफ

(२) ख्वाजा कुत्बुद्दीन बख्तियार काकी रह० दरगाह शरीफ महरौली।

(३) हज़रत मख्दूम अलाउद्दीन अहमद साबिर कलियरी रह० दरगाह कलियर शरीफ।

(४) हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन रह० दरगाह शरीफ निजामुद्दीन दिल्ली।

(५) हजरत शेख शरफउद्दीन बू अली कलन्दर पानीपत्ती रह० दरगाह शरीफ पानीपत।

(६) हज़रत शेख मुहम्मद नसीरुद्दीन चिराग देहलवी रह० दरगाह शरीफ चिराग दिल्ली (नई दिल्ली)।

(७) हज़रत अबुल हसन अमीर खुसरो देहल्वी रह० मजार शरीफ निजामुद्दीन दिल्ली।

(८) हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह नक्शबन्दी रह० मजार शरीफ कुतुबरोड दिल्ली।

(९) हज़रत शेख अहमद इमाम खबानी मुज़द्दीद अल्फसानी रह० दरगाह शरीफ, सरहिन्द, पंजाब।

(१०) हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह से फैजे बातिनी रह० दरगाह शरीफ सरहिन्द पंजाब।

(११) हज़रत मौलाना शहबाज मुहम्मद भागलपुरी रह० दरगाह शरीफ भागलपुर, बिहार।

(१२) हज़रत सईद 'ए' सरमद शहीद रह० मजार शरीफ जामा मस्जिद दिल्ली

है जिससे इह लोक तथा परलोक दोनों के सुधरने की मान्यता रही है। भारत के चार धाम चारों कोनों पर इस लिये स्थापित किये गये हैं कि हम भारतीय अपने देश के आर-पार जाकर सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बंधें, मोक्ष प्राप्ति का मार्ग भी शायद यही है।

पहले यात्रा की इतनी सुविधाएँ नहीं थीं। परन्तु आज यात्रा की सुविधाएँ बहुत बढ़ गई हैं। प्रायः सभी जगह यातायात के साधन उपलब्ध हो गये हैं। भारत सरकार के पर्यटन विभाग ने स्थान-स्थान पर पर्यटन विश्राम-गृह, जानकारी देने वाले पर्यटन कार्यालय, विभिन्न दर्शनीय स्थानों को दिखाने के लिये कंडक्टिड टूर पर्यटन बसें तथा अनेक सुविधाओं की व्यवस्था की है। अब यात्रियों को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता।

इन यात्राओं में मुझे भारत सरकार के पर्यटन विभाग एवम् भारतीय-रेलवे के अधिकारियों एवम् कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ जिसके लिये मैं उन सब का हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। कलकत्ता की लोकल प्राइवेट बसों, दिल्ली की लोकल प्राइवेट रैड लाइन एवम् सुविधा ब्लू लाइन तथा यैलो लाईन (एक्स सर्विसमैन) बसों के चालकों एवम् कंडक्टरों ड्राईवरों तथा अन्य सभी प्रांतों की प्राइवेट एवम् सरकारी रोडवेज बसों के ऑपरेटरों का भी पूरा सहयोग एवम् सम्मान देने के लिए धन्यवाद करती हूँ।

कलकत्ता में श्री एन. सी. दास एवम् श्री कल्याण कुमार बैनर्जी, ईशानी बैनर्जी गया में श्री बिनोद कुमार लाल नवादा में श्री दिनेश कुमार, दार्जलिंग में श्री बी. पी. मुखिया तथा इन सभी के परिवारों का अतिथि सत्कार एवम् सहयोग के लिये धन्यवाद करती हूँ।

धर्मशालाओं में विशेषकर तारापीट, बैद्यनाथ, अयोध्या, गुरुद्वारा पटना साहिब, भारत सेवाश्रम संघ गंगा सागर तथा होटलों में विशेषकर गया, शिलाँग, दार्जिलिंग, गंगटोक, गुवाहाटी, इटानगर, डीमापुर (रेलवे रिटायरिंग रूम) आदि के प्रबन्धकों का अच्छी व्यवस्था तथा सहयोग के लिये धन्यवाद करती हूँ।

मेरी यह पुस्तक प्रेम प्रकाशन मन्दिर के संचालक श्री प्रेमचन्द शर्मा तथा व्यस्थापक श्री अनिल शर्मा व सुधीर शर्मा ने प्रकाशित करके मेरे परिश्रम को सफल बनाया है। उनका हार्दिक धन्यवाद प्रकट करती हूँ और जसदीप कम्पोजर्स संत गढ़ गली नं २३ तिलक नगर (गुरदीप सिंह, इन्द्रजीत सिंह, दलबीर सिंह, नरिन्दर कौर) जिनके सौजन्य से सुन्दर टाईप सेटिंग की गई हार्दिक धन्यवाद करती हूँ। आवरण के लिये श्री जोशी जी का धन्यवाद करती हूँ।

सहयोग के लिये श्री दयानन्द वत्स, चौधरी मान सिंह, श्री राजकुमार वत्स, प० छोटे लाल, श्री असरार साहब, श्रीमती हुसन-आरा, श्री महिन्दर कुमार, मिस सीमा चौधरी, मिस अनिता, श्रीमती सुखविन्दर कौर, श्रीमती संतोष वधवा, सर्व श्री बलबीर सिंह, पी. एन. निगम, यादराम, कर्णसिंह चन्द्रशेखर, रामकिशन, त्रिलोकी सिंह, रामशरण, डा० जे. पी. मिश्रा, पं० चन्द्र, गिरधारी लाल श्रीमती मीना मलहोत्रा श्री. एस. सी. गुप्ता, श्री बी. एस डागर, चौ० रघुनाथ सिँह, रामकिशन, मेघनाथ ओ.पी. वत्स, सुशील कुमार, अतर सिंह, कुमारी बबीता रिहानी, यात्रा संगम के मालिक श्री बी. आर. खन्ना, रामकिशन, हरी राम सेठी, अशोक शर्मा राजकुमार गुप्ता, डी. एन. खोसला, धर्मपाल सैनी, विपिन कुमार मित्तल, इन्द्रजीत जैरथ, रत्न सिंह, प्रसाद का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ।

स्टेट ट्रांसपोर्ट अथार्रिटी, दिल्ली प्रशासन का निजी रेड लाइन तथा सुविधा ब्लयू लाईन, व्हाईट लाईन, यैलो लाईन बसें चलाकर दिल्ली के नागरिकों को यातायात की सुविधा तथा राहत पहुँचाने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। उपरोक्त बसें यात्रियों को हर बस स्टाप पर बुला-बुला कर बिटाती हैं जबकि पहले कई कई घंटे बस की प्रतीक्षा में खड़े रहना पड़ता था और एक ही स्थान पर जाने-आने में सारा दिन बीत जाता था। गत ४० वर्षों में पहली बार यातायात की यह सुविधा प्राप्त हुई है।

पुस्तक में किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिये क्षमा याचना करती हूँ। पाठकों के सुझाव आमंत्रित हैं। उन पर अमल किया जायेगा।

निवेदिका

स्वराज अग्रवाल

ए ३२, न्यू मुलतान नगर

नई दिल्ली ११००५६

पूज्य पिता स्वर्गीय श्री पन्ना लाल अग्रवाल एवम् पूजनीय माता श्रीमती चम्पावती की मधुर स्मृति में तीर्थाटन

भगवान विष्णु के चरण पर बसा नगर - गया

गया हिन्दुओं का पवित्र और प्रमुख तीर्थ स्थान है। यहाँ पर हिन्दू लोग पितरों को पिंड दान करने के लिए आते हैं। ग्रंथों में लिखा है कि पितरों की आत्मा का उद्धार करने के लिए गया में ही पिंड दान किया जाता है।

गया जाने के लिए हर तरफ़ से रेलवे स्टेशन हैं। मुग़लसराय, पटना, आसनसोल जंक्शन से गया स्टेशन जा सकते हैं। पटना से गया १६८ कि० मी०, कलकत्ता हावड़ा से ४६५ कि० मी०, दिल्ली से ६८२ कि० मी० और बनारस से २२१ कि० मी० है। गया, बोध गया से ११, नालन्दा से ८० तथा राजगीर से ६७ कि० मी० है। बिहार शरीफ, पावापुरी भी निकट है।

गया में ठहरने के लिए कई धर्मशालायें तथा होटल हैं। मारवाड़ी धर्मशाला, जैन धर्मशाला, भारत सेवाश्रम संघ की धर्मशाला, रामचन्द्र राय की धर्मशाला, पंचायती धर्मशाला, तिल्हा धर्मशाला, रेलवे स्टेशन धर्मशाला, रेलवे रिटायरिंग रूम, व्यू होटल, राज गोपाल होटल, तथा श्याम होटल आदि हैं।

हम दिनांक १०-१०-६२ को प्रातः सात बजे रांची से रवाना होकर ३ बजे गया पहुँचे थे। रांची से गया लगभग २२० कि० मि० है। रेलवे स्टेशन पर श्री कल्याण बैनर्जी के एक मित्र मिस्टर बिनोद कुमार लाल हमें लेने के लिये आये हुए थे। उन्होंने ही हमें गया, बोध गया, राजगीर, नालन्दा तथा पावापुरी के दर्शन कराये तथा जानकारी दी। इस यात्रा के दौरान हम श्याम होटल, रामन्ना रोड, जैन मंदिर के निकट ठहरे थे। यह होटल बहुत सस्ता तथा सुविधाजनक है।

११-१०-६२ को प्रातः ७ बजे श्री बिनोद कुमार लाल तथा श्री दिनेश कुमार, अपनी जीप द्वारा हमें गया तथा बोध गया के दर्शनीय स्थान दिखाने के लिए ले गये।

गया नाम कैसे पड़ा :---वायु पुराण के अनुसार गया का नाम गयासुर के नाम पर पड़ा। गयासुर की माता का नाम प्रभावती तथा पिता का नाम त्रिपुरासुर था। गयासुर बड़ा बलवान तथा धर्मपरायण था। उसने दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य से वेद-वेदान्त, धर्म-शक्ति, शास्त्र तथा युद्ध विद्याओं की शिक्षा प्राप्त की थी। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् गयासुर ने कठोर तपस्या आरम्भ की। विष्णु भगवान ने उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया कि जो कोई तुम्हारे दर्शन और तुम्हारा स्पर्श करेगा, वह सीधा वैकुण्ठ में जायेगा। तत्पश्चात् लोग गयासुर के दर्शन और स्पर्श करके वैकुण्ठ में जाने लगे। इससे यमलोक खाली हो गया। तब यमराज, इन्द्र आदि देवताओं तथा ब्रह्मा जी को लेकर विष्णु भगवान के पास गये और विनती की कि हे दीन बंधु, गयासुर के दर्शन और स्पर्श करके सभी जीव मुक्ति पाकर वैकुण्ठ में जाने लगे हैं और यमलोक खाली हो गया है। इसका कुछ उपाय करें। भगवान विष्णु ने देवताओं की स्तुति सुनकर कहा कि ब्रह्मा जी गयासुर के पवित्र शरीर पर एक यज्ञ का अनुष्ठान करें। यह आज्ञा पाकर ब्रह्मा जी गयासुर के पास गये और उससे यज्ञ के लिये उसका विशाल शरीर माँगा। धर्मपरायण गयासुर ने ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर अपना शरीर यज्ञ करने के लिये दे दिया।

ब्रह्मा जी सब देवताओं सहित गयासुर के शरीर पर बैठकर यज्ञ आरम्भ करने लगे। लेकिन सब देवताओं के बैठने पर भी गयासुर जीवित रहा और उसका शरीर हिलने लगा। तब विष्णु भगवान के आदेशानुसार ब्रह्मा जी तथा सब देवताओं ने उसके सिर पर धर्मशिला स्थापित की।

कहा जाता है कि धर्मशिला का नाम धर्मव्रता था और वह धर्मराज की पुत्री थी। उसकी माता का नाम विश्वरूपा था। जब वह विवाह के योग्य हुई तब धर्मराज के बहुत प्रयत्न करने पर भी उसके योग्य वर नहीं मिला। धर्मव्रता अच्छा वर पाने के लिए पिता की आज्ञा से वन में तपस्या करने लगी।

एक दिन मरीचि ने उसको तप करते देखकर पूछा कि तुम किसकी पुत्री हो? और यह घोर तप क्यों कर रही हो ? धर्मव्रता बोली, "मेरा नाम धर्मव्रता है, धर्मराज मेरे पिता और विश्वरूपा मेरी माता है। मैं योग्य वर पाने की इच्छा से तप कर रही हूँ। यह सुन कर मरीचि बोला, "हे परम् सुंदरी, मैं ब्रह्मा का मानस पुत्र हूँ। मेरा नाम मरीचि है, मैं भी एक अच्छी कन्या से विवाह करने के लिए घूम रहा हूँ, इसलिए क्यों न हम दोनों विवाह कर लें ? धर्मव्रता बोली कि आप मेरे

पिता धर्मराज के पास जाकर मेरा हाथ माँगें। मरीचि, धर्मराज के पास गये और कहा, "हे धर्मराज ! मुझे तमाम पृथ्वी पर आपकी कन्या के समान कोई योग्य कन्या नहीं मिली। आप अपनी कन्या हमें देकर हमारी इच्छा पूरी कीजिये। धर्मराज ने विधिपूर्वक अपनी कन्या धर्मव्रता का विवाह मरीचि से कर दिया।

एक दिन मरीचि थके हुए घर आये और अपनी पत्नी धर्मव्रता से कहा कि मैं सो रहा हूँ। तुम मेरे चरण दबाओ। यह कहकर मरीचि सो गये और धर्मव्रता उनके चरण दबाने लगी। इतने में मरीचि के पिता ब्रह्मा जी वहाँ आये। धर्मव्रता पति की सेवा छोड़ कर अपने ससुर ब्रह्मा जी का आदर सत्कार करने लगी। जब मरीचि जागे तो उन्होंने धर्मव्रता को श्राप दिया कि तूने मेरी आज्ञा को भंग किया इसलिए तू शिला हो जा। धर्मव्रता ने कहा कि हे स्वामी, आप सोये हुए थे तब आप के पिता ब्रह्मा जी यहाँ आये और मैं बड़े संकट में पड़ गई कि अब मैं किस की सेवा करूँ। मैंने अपने ससुर की सेवा करना उचित समझा। मैं निरपराध हूँ। मैं भी आपको श्राप देती हूँ कि आपको भी महादेव जी से श्राप मिले।

तत्पश्चात् मरीचि के श्राप से धर्मव्रता शिला बन गई। धर्मराज को जब इस बात का पता चला, तो वे उस शिला को उठाकर अपने घर ले गये। भगवान विष्णु की आज्ञानुसार ब्रह्मा जी उस शिला को धर्मराज के घर से लाये और गयासुर के शरीर पर स्थापित किया और सब देवताओं सहित उस पर बैठकर यज्ञ करने लगे। तब भी गयासुर जीवित रहा और उसका शरीर हिलता रहा। तब स्वयं विष्णु भगवान गदा लेकर गदाधर नाम से वहाँ आये और शिला पर अपने चरण रखकर गयासुर को मुक्ति प्रदान की।

मृत्यु के समय गयासुर ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की कि हे भगवन, मेरी यहाँ पर मृत्यु हुई है, मैं यहीं पर शिला होकर सदैव विद्यमान रहूँ और उस शिला पर आपके चरण की स्थापना हो और ब्रह्मा आदि सब देवता भी मेरे शिलारूपी शरीर पर सदा वास करें। जो व्यक्ति इस शिला पर अपने पितरों का पिंडदान तथा तर्पण करें उनके सब पितृगण नरक से छूटकर स्वर्ग में वास करें। इस क्षेत्र का नाम मेरे नाम पर गया क्षेत्र पड़े। विष्णु भगवान ने गयासुर को माँगे गये वरदान दे दिये और उसके मस्तिष्क पर अपना चरण स्थापित कर दिया। तब से इस क्षेत्र का नाम गया प्रसिद्ध हो गया और गयासुर का शरीर शिला रूप हो कर आज भी यहाँ विद्यमान है और विष्णु भगवान के चरण पर ही गया नगर बसा हुआ है।

पिंडदान महात्म्य

भगवान श्री रामचन्द्र जी अपने पिता राजा दशरथ का पिंडदान करने गया आये थे। जब रामचन्द्र जी रूद्र पद पर पिंड देने लगे, तो दशरथ जी की प्रेतात्मा ने पिंड लेने के लिए अपना हाथ फैलाया; परन्तु रामचन्द्र जी ने दशरथ जी के हाथ में पिंड न देकर रुद्र पद पर पिंड दिया। तब दशरथ जी ने कहा कि हे पुत्र, तुमने ठीक किया है, यदि तुम मेरे हाथ में पिंड दे देते तो मेरी मुक्ति न होती और मुझे स्वर्ग न मिलता। यह कहकर दशरथ जी की प्रेतात्मा को मुक्ति मिल गई और वे स्वर्ग में चले गये।

भीष्म पितामह भी अपने पिता शान्तनु का पिंडदान करने गया में आये। शान्तनु की प्रेतात्मा ने भी पिंडदान लेने के लिये अपना हाथ बढ़ाया; परन्तु भीष्म पितामह ने भी उनके हाथ में पिंड न देकर वेदी पर ही पिंड चढ़ाया, जिससे शान्तनु को स्वर्ग लोक मिला।

युधिष्ठिर भी जब गया जी में आकर अपने पिता पांडु का पिंडदान करने लगे तब पांडु ने भी पिंड लेने के लिए अपना हाथ बढ़ाया; परन्तु युधिष्ठिर ने उनके हाथ में पिंड देने की बजाय वेदी पर हीं पिंडदान किया जिससे पांडु को मुक्ति प्राप्त हुई।

भगवान श्रीकृष्ण ने भी अपने माता-पिता का पिंडदान गया जी में आकर किया जिससे उनके माता-पिता वसुदेव और देवकी को मुक्ति मिली।

एक बार शिवजी, पार्वती के साथ वन में विहार कर रहे थे, वहाँ पर मरीचि ऋषि फूल लाने के लिए गए। शिवजी ने उन्हें देखकर शाप दिया कि तुम काले हो जाओ। मरीचि के स्तुति करने पर शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा कि गया में जाकर तप करने से तुम्हारा उद्धार होगा। तब मरीचि गया में आये और तप करने पर शिवजी के शाप से मुक्त हुए।

कहा जाता है कि विशालपुरी के विशाल नामक राजा निःसंतान थे। ब्राह्मणों के कहने पर उन्होंने गया में आकर पिंडदान किया। पिंडदान करते ही उनके सामने दो पुरुष प्रकट हुए। उनमें से एक का रंग लाल था तथा दूसरे का सफ़ेद। उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पिता और दादा हैं। तुम्हारे यहाँ पर आकर पिंडदान करने से हम नरक से छूट कर स्वर्ग में जा रहे हैं और तुम्हें आशीर्वाद देते हैं कि तुम्हारे घर शीघ्र पुत्र हो। पितरों के आशीर्वाद से उनके घर पुत्र का जन्म हुआ।

पुरातन काल में गया नामक राजा ने भी गया में आकर यज्ञ तथा पिंडदान किया था। उसके यज्ञ से संतुष्ट होकर भगवान विष्णु गदाधर ने उसे वरदान दिया था कि इस नगर का नाम तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध हो।

गया में पितर सदैव वास करते हैं और यह आशा करते हैं कि हमारे कुल में कोई ऐसा व्यक्ति उत्पन्न हो जो यहाँ आकर हमारा पिंडदान करे जिससे हमारी मुक्ति हो।

पिंडदान करने के लिए प्राचीन काल में यहाँ ३६० वेदियाँ थीं और प्रतिदिन एक-एक वेदी पर पिंडदान किया जाता था। इस तरह पिंडदान (श्राद्ध) पूरा करने में एक वर्ष लग जाता था। लेकिन अब यहाँ पर ४५ वेदियाँ हैं जिन पर पिंडदान करने की प्रक्रिया सात या नौ या पन्द्रह या सत्रह दिनों में पूरी होती है। यदि पिंड दान करने वाले व्यक्ति के पास कम समय हो, तो दो-तीन घंटे में ही तीन स्थानों पर पिंडदान किया जा सकता है और यह तीनों स्थान विष्णु पद मंदिर में ही हैं। (१) **फलगु नदी**:---यह विष्णु मंदिर के बाहर ही है। (२) **विष्णु पदः**---विष्णु पद मंदिर में भगवान विष्णु के चरण हैं। (३) **अक्षय वटः**---विष्णु पद मंदिर में ही एक छोटा-सा अक्षय वट है। दूसरा अक्षय वट एक मील की दूरी पर है। ५ रुपये से लेकर अपनी श्रद्धानुसार जितना चाहें पिंडदान कर सकते हैं। जौ का आटा, तिल, जौ, चावल, फल या पेड़ा, जलपात्र, लोटा या मिट्टी का बर्तन, बैठने के लिए कुश का आसन पिंडदान के लिए ज़रूरी है। बिना तिल का पिंडदान देने से अपने पापों से मुक्ति होती है। तिलयुक्त पिंडदान करने से पितरों की मुक्ति होती है। यदि कोई व्यक्ति गया में जाकर बहुत ही कम समय होने के कारण पिंडदान न कर सके, तो वह केवल फलगु नदी का स्पर्श कर ले, तो भी उसके पितरों को मुक्ति मिल जाती है।

देखने योग्य स्थान

(१) **विष्णु पद मंदिर :**---गया में मुख्य मंदिर विष्णु पद मंदिर है। इस मंदिर में भगवान विष्णु का चरण चिह्न है जो १३ इंच का है और यही चरण चिह्न आराध्य मूर्ति के रूप में पूजा जाता है। इस चरण चिह्न के चारों तरफ एक फुट ऊँची मुंडेर बनी हुई है। सायं छः बजे इस चरण चिह्न की आरती होती है और अनेक प्रकार के सुगंधित फूलों से सजाया जाता है तथा चंदन का लेप किया जाता है और फिर लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है। यह दृश्य देखने योग्य है। विष्णु का

चरण चिह्न दक्षिण से उत्तर की तरफ है जो अब तक ज्यों का त्यों है।

विष्णु पद मंदिर के पूर्व की ओर मुख्य द्वार के सामने महावीर श्री हनुमान की विशाल मूर्ति है और उत्तर की ओर इंदौर की महारानी अहिल्याबाई की मूर्ति है। दाहिनी ओर शिवलिंग है। सामने "पितृच्छाया" महादेव का मंदिर है। पश्चिम की तरफ तिरहुत का फाटक है।

विष्णु पद मंदिर बहुत सुंदर कलात्मक विशाल मंदिर है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार रानी अहिल्याबाई ने सन् १७८७ में कराया था। इस मंदिर का कलश सोने का है। मंदिर में हर समय पानी की बूंद टपकती रहती है।

(२) फलगु नदीः---विष्णु पद मंदिर के सामने फलगु नदी है। यह नदी सूखी रहती है, परन्तु रेत में गड्ढा करने पर पानी निकल आता है। कहा जाता है कि फलगु के झूठ बोलने पर सीता जी ने उसे शाप दिया था कि उसका जल सूख जाये, लेकिन रेत के नीचे पानी रहे। इस नदी के घाटों पर ही पिंडदान की प्रक्रिया आरम्भ की जाती है। पहले फलगु नदी का नाम निरंजना नदी था।

(३) राम गया सीता कुंड :---फलगु नदी के दूसरे किनारे पर राम गया सीता कुंड मंदिर है। इस मंदिर में काले पत्थर का हाथ बना हुआ है। यह हाथ अयोध्या के राजा दशरथ का है। यहाँ पर सीता जी ने रेत का पिंड बना कर अपने ससुर राजा दशरथ का पिंडदान किया था।

(४) सूर्य मंदिर:---विष्णु पद मंदिर के पास सूर्य मंदिर है और उसके पास ही सूर्य कुंड है। इसके चारों तरफ पत्थर की दीवार है। यहाँ पर चैत्र और कार्तिक महीने की शुक्ल पक्ष की षष्टी को सूर्य छट व्रत का बहुत बड़ा मेला लगता है।

(५) ब्रह्म योनिः---गया के चारों तरफ बहुत सुंदर पहाड़ियाँ हैं। इन पहाड़ियों में ब्रह्म योनि, रामशिला तथा प्रेतशिला बहुत विख्यात हैं। ब्रह्म योनि पहाड़ बोध गया के मार्ग में है। इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए ४२४ सीढ़ियाँ हैं। ये सीढ़ियाँ रानी अहिल्याबाई ने बनवाई थीं। पहाड़ के ऊपर दो बहुत तंग गुफाएँ हैं जिन्हें मातृ योनि कहा जाता है। इन गुफाओं के अंदर से पार निकल जाने पर मनुष्य आवागमन से छूट जाता है; किन्तु वर्ण शंकर व्यक्ति इन गुफाओं से पार नहीं निकल सकता।

(६) राम शिलाः---विष्णु पद मंदिर से यह पहाड़ तीन मील की दूरी पर है। इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए टिकारी के राजा रणबहादुर सिंह ने ३५७ सीढ़ियाँ

बनवाई हैं। यहाँ पर श्री राम-लक्ष्मण तथा पातालेश्वर के अलग-अलग दो मंदिर हैं।

(७) प्रेत शिलाः---यह पहाड़ राम शिला से ६ मील पश्चिम में है। यहाँ पिंडदान किया जाता है। यहाँ पिंडदान देने से प्रेत योनि से उद्धार हो जाता है। यहाँ के पंडों को धामि या प्रेतियाँ कहते हैं। पिंडदान पहले प्रेत शिला में दिया जाता है। इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए ४०० सीढ़ियाँ हैं। ऊपर मंडप के नीचे चट्टानों पर तीन स्वर्ण रेखाएँ हैं जिन्हें लोग ब्रह्मा की लिपि बताते हैं। इस पहाड़ पर सूर्यमल झुनझुन वाले की एक छोटी-सी धर्मशाला भी है।

(८) अक्षय वटः---विष्णु पद मंदिर और ब्रह्म योनि के बीच में अक्षय वट है। अक्षय वट के सत्य बोलने पर सीता जी ने उसे अक्षय होने का वरदान दिया था। इसके निकट पश्चिम में रुकमणि तालाब है। यहाँ पर अंतिम पिंडदान किया जाता है और आखिरी पिंड देने के बाद पंडा लोग पिंडदान करने वाले को अक्षय वट के नीचे आशीर्वाद तथा प्रसाद देते हैं। कहा जाता है कि यह वृक्ष त्रेता युग से विद्यमान है।

(९) मंगल गौरीः---अक्षय वट से कुछ दूर पूर्व में आदि माया मंगल गौरी का मंदिर है, यहाँ पर लगभग १२५ सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। उत्तर की ओर जनार्दन भगवान का मंदिर है।

(१०) पुनपुन नदीः---पटना जंकशन के बाद पुनपुन स्टेशन है। मुग़ल सराय जंकशन से आने में सोन नगर स्टेशन के बाद अनुग्रह नारायण रोड स्टेशन है। यहाँ भी पुनपुन नदी मिलती है। पुनपुन नदी में पहला पिंडदान होता है। कहा जाता है कि पुनपुन नदी के पास पुनपुनिया नाम की एक वेश्या रहती थी। एक दिन वह वेश्या संध्या स्नान करके अपने घर जा रही थी। रास्ते में भगवत् कथा हो रही थी। वेश्या भी बैठकर कथा सुनने लगी। कथा समाप्त होने पर वेश्या ने कथावाचक से पूछा "हे महाराज, मैंने अपने जीवन में बहुत पाप किये है। मुझे उनसे कैसे मुक्ति मिलेगी। कथावाचक ने कहा कि ईश्वर भक्ति करो। यह सुनकर वेश्या उसी जगह आसन लगाकर ईश्वर भक्ति में लीन हो गई। २२ वर्ष बीत जाने पर भगवान् विष्णु ने प्रकट होकर उसे वरदान माँगने के लिए कहा। वेश्या ने कहा, "हे भगवन, मैं यह वरदान माँगती हूँ कि जितने मनुष्य मेरे शरीर के स्पर्श से पापी बने है उनसे भी अधिक मनुष्य मेरे स्पर्श से स्वर्ग प्राप्त करें। "भगवान ने उसे वरदान दिया कि आज से यह आदि गंगा नदी तेरे नाम से पुनपुन नदी कहलायेगी और जो मनुष्य

इस नदी में स्नान, ध्यान, तर्पण, श्राद्ध तथा पिंडदान करेंगे वे लोग अपने पितरों सहित स्वर्ग में वास करेंगे। पुनपुनिया वेश्या ने उसी नदी में अपना शरीर छोड़ दिया और स्वर्ग में चली गई। आज भी जो लोग पुनपुन नदी में स्नान करते हैं, वे अपने सब पापों से छूट जाते हैं और अंत समय स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।

(११) दुःख हरणि देवीः---साहब गंज चौक से करीब तीन फर्लांग उत्तर की ओर सड़क पर एक फाटक है। इस फाटक पर दुःख हरणि देवी की मूर्ति है।

(१२) काक बलि देवीः---दुःख हरणि देवी से लगभग एक मील उत्तर में रेलवे पुल है। पुल पार होते ही काक बलि देवी का मंदिर है। यहाँ पर भी पिंडदान होता है।

(१३) उत्तर मानसः---साहब गंज के पास उत्तर मानस तालाब है। यहाँ पर भी पिंडदान दिया जाता है।

बाज़ार

गया में मुख्य बाज़ार जी० बी० रोड, के० पी० रोड, आर्य रोड तथा स्वराज पुरी रोड हैं। पुराने गया में पंच मबला, बबनी घाट, चाँद चौरा, समीर टेकिंग तथा गाँधी मैदान हैं। यहाँ पर लगभग ४ कि० मी० के फासले पर हैंडलूम की इंडस्ट्री है। के० पी० रोड बाज़ार में डिलाइट बल्ब की बहुत प्रसिद्ध फैक्टरी है। यहाँ के बल्ब पूरे बिहार तथा अन्य प्रांतों में स्पलाई होते हैं। श्री विनोद कुमार लाल तथा उनकी धर्मपत्नी ने हमें यह फैक्टरी दिखलाई।

पैदावारः---यहाँ की मुख्य फसल चावल है। गेहूँ तथा अन्य फसलें भी यहाँ होती हैं। साग-सब्जियों की भी बहुत पैदावार होती है।

मौसमः---बिहार में गर्मियों के दिनों में अधिक गर्मी पड़ती है।

गया के लोग बहुत आदर-सत्कार करने वाले हैं। वे उदार हृदय, मिलनसार, सच्चे मित्र तथा अतिथियों का खुले दिल से स्वागत करने वाले हैं। श्री विनोद कुमार लाल तथा उनके परिवार का अतिथि सत्कार बेमिसाल है।

भगवान बुद्ध को दिव्य ज्ञान की प्राप्ति का स्थान-बोध गया

गया से बोध गया जाने के दो रास्ते हैं। एक रास्ता मेन रोड डौबी रोड है। डौबी गया से ३० कि० मी० है रास्ते में सेंट्रल जेल मार्ग है। मिलिट्री कैनटोनमैंट एरिया, आर्मी मंदिर तथा ब्रह्मयोनि पहाड़ भी इसी रास्ते में आते हैं। यूनिवर्सिटी जहाँ समाप्त होता है वहाँ से बाईं तरफ़ मुड़कर साढ़े तीन कि० मी० पर बोध गया है। इस रास्ते से बोध गया १६ कि० मी० पड़ता है। दूसरा रास्ता फलगु नदी के किनारे से जाता है, यहाँ से बोध गया ११ कि० मी० पड़ता है।

बोध गया निरंजना नदी के तट पर है। बोध गया का प्राचीन नाम उगुविल्व था। ईसा से छः शताब्दी पूर्व, भगवान बुद्ध को यहीं पर बोधि वृक्ष (पीपल का वृक्ष) के नीचे सर्वोच्च दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। बौद्धों के लिए यह स्थान बहुत पवित्र माना जाता है। जिस प्रकार हिन्दुओं के लिए काशी, मुसलमानों के लिए मक्का मदीना, ईसाइयों के लिए बैथलहम पवित्र स्थान हैं, वैसे ही बौद्ध लोगों के लिए चार पवित्र स्थान हैं।

(१) **कपिलवस्तुः**---जो भगवान बुद्ध का जन्म स्थान है।

(२) **उरुविल्व(बोध गय)ः**---जहाँ भगवान बुद्ध ने संन्यास लिया और सर्वोच्च दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ।

(३) **वाराणसी (सारनाथ)ः**---जहाँ भगवान बुद्ध ने धर्म प्रचार करना आरम्भ किया।

(४) **कुशीः**---जहाँ भगवान बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया।

आज से लगभग ढाई हज़ार वर्ष पहले उत्तर भारत (बस्ती ज़िले में) शाक्य

वंशीय महाराजा शुद्धोधन का राज्य था। उनकी राजधानी कपिलवस्तु थी। शाक्य वंश, सूर्य वंश की एक शाखा मानी जाती है। इसी वंश के इक्षवाकु वंश में त्रेतायुग में भगवान श्री राम का अवतार हुआ है।

महाराज शुद्धोधन की महामाया तथा प्रजावती नाम की दो रानियाँ थीं। एक रात रानी महामाया ने स्वप्न में एक छः दांतों वाला सफ़ेद हाथी देखा और एक छः नोक वाला तारा चमक रहा है। वह तारा उनके शरीर में प्रवेश कर गया। महारानी महामाया उसी दिन गर्भवती हो गईं। जब महारानी महामाया अपने पिता के घर जा रही थीं तब मार्ग में लुम्बनी वन में बिना किसी कष्ट के एक पुत्र का जन्म हुआ। वह पुत्र उत्पन्न होते ही सात क़दम चलता गया और जहाँ उसने पैर रखे, वहीं पर पृथ्वी से कमल के फूल प्रकट हुए। बालक का नाम सिद्धार्थ रखा गया। महारानी महामाया का कुछ दिनों में ही स्वर्ग वास हो गया। इस लिए सिद्धार्थ का पालन दूसरी रानी प्रजावती ने किया।

सिद्धार्थ बचपन में ही ध्यान मग्न रहते थे। कुछ बड़े होने पर जब वे शिकार करने जाते तो मृग पर बाण नहीं चलाते थे और उसे भाग जाने देते थे। जब उनका घोड़ा थक कर हाँफने लगता तब नीचे उतर कर उसे थपथपाने और प्यार करने लगते थे। एक दिन उनके बगीचे में एक हंस ऊपर से गिर पड़ा। कुमार देवदत्त ने उस हंस को बाण मार कर गिराया था। सिद्धार्थ ने हंस को अपनी गोद में उठा लिया और बाण निकाल कर उसके जख्म धोये। देवदत्त जब हंस माँगने आया तो उन्होंने उसे देने से इंकार कर दिया और जब हंस स्वस्थ होकर उड़ने योग्य हुआ तो उन्होंने उसे उड़ा दिया।

राजकुमार सिद्धार्थ के जन्म के समय ज्योतिषियों ने कहा था कि या तो ये चक्रवर्ती राजा होंगे या विरक्त ज्ञानी होंगे। इसलिए महाराज शुद्धोधन ने उनका विवाह राजकुमारी यशोधरा (गोपा) से कर दिया और एक विशाल भवन में उनके रहने की व्यवस्था कर दी। वहाँ कोई वृद्ध, रोगी नहीं जा सकता था और न ही कोई दुःख की चर्चा की जा सकती थी जिससे कि राजकुमार सिद्धार्थ के मन में कोई वैराग्य का भाव आये।

एक दिन राजकुमार सिद्धार्थ ने नगर देखने की इच्छा प्रकट की। महाराज शुद्धोधन ने नगर को खूब सजवा दिया। राजकुमार सिद्धार्थ रथ पर चढ़कर नगर में घूमने गये। संयोगवश मार्ग में उन्हें एक बूढ़ा लाठी टेक कर चलता हुआ दिखाई

दे गया। दूसरी बार मंत्री के पुत्र के साथ, साधारण सौदागर के वेष में नगर घूमने गये तो उन्हें एक रोगी जिसका शरीर घावों से भरा हुआ था, दिखाई दिया। राजकुमार ने उस रोगी को सहारा देकर उठाया। तीसरी बार जब फिर रथ में बैठकर नगर देखने गये तो उन्होंने एक मुर्दे को ले जाते हुए कुछ लोगों को देखा।

बूढ़े, रोगी और मुर्दे को देखकर राजकुमार समझ गये कि बुढ़ापा और रोग सब को मिलते हैं। एक न एक दिन सबको मरना है। अमरत्व कैसे पाया जाये ? उन्हें यह धुन लग गई और वे एक रात अपनी पत्नी यशोधरा और अपने नवजात पुत्र राहुल को छोड़कर घर से निकल पड़े और अपने कन्थक नाम के घोड़े पर सवार होकर अनामा नदी पार चले गये। उनका सारथी छंदक भी उनके साथ था। नदी पार होकर राजकुमार सिद्धार्थ ने अपनी तलवार से अपने लम्बे बाल काट डाले। उन्होंने अपने सब आभूषण और राजसी वस्त्र उतार कर छंदक सारथी को दे दिये और घोड़े के साथ उसे वापिस भेज दिया।

राजकुमार सिद्धार्थ सच्चे ज्ञान की खोज में कई विद्वानों के पास गये; लेकिन उनको कहीं संतोष नहीं हुआ। इसलिए उन्होंने कठोर तपस्या करने का निश्चय किया और वन में एक वृक्ष के नीचे आसन लगा कर बिना कुछ खाये पीये ध्यानमग्न बैट गये। कठोर तप करने से उनका शरीर सूख गया।

एक दिन कुछ स्त्रियाँ गाती हुई उस वन में से निकलीं। उनके गीत का भाव था कि वीणा के तार इतने मत खींचो कि टूट जायें और इतना ढीला भी मत छोड़ो कि उस से स्वर न निकले। इस गीत से बुद्ध ने शिक्षा ली और उन्होंने कठोर तपस्या छोड़कर मध्यम मार्ग ग्रहण किया। वहाँ से चलकर वे एक वट वृक्ष के नीचे बैठ गये। सुजाता नाम की एक स्त्री ने वट के देवता की मनौती की थी कि यदि उसे पुत्र हुआ तो वह उसे खीर चढ़ायेगी। वट के नीचे तपस्वी सिद्धार्थ को देखकर उसने समझा कि यह वट देवता प्रकट हो गये हैं। उसने बड़ी श्रद्धा से उन्हें खीर भेंट की। सिद्धार्थ ने सुजाता की दी हुई खीर खाई। उन्होंने स्वस्तिक नाम के एक ब्राह्मण को कुश लिए जाते हुए देखा। उन्होंने उस ब्राह्मण से कुश माँगी। ब्राह्मण ने बड़े आदर से उन्हें कुश दे दी। सिद्धार्थ उस कुश को बोधि वृक्ष के नीचे बिछाकर इस निश्चय से बैठ गये कि अब तो ज्ञान प्राप्त करके ही उठेंगे। उनके निश्चय को अडिग करने के लिए कामनाओं का देवता दुरात्मा 'मार' अप्सराओं और राक्षसों को लेकर वहाँ आया और उन्हें डराने तथा ललचाने लगा; लेकिन सिद्धार्थ अपने

ध्यान मे मग्न रहे। 'मार' हार कर वापिस चला गया। उसी बोधि वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त हुआ और इस स्थान का नाम बोध गया हो गया और सिद्धार्थ गौतम बुद्ध हो गये। बोध गया, गया का उपनगर है।

ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् गौतम बुद्ध काशी आये। कठोर तपस्या के आरम्भ में उनके ५ साथी थे, लेकिन जब उन्होंने सिद्धार्थ को तपस्या से अलग होते देखा था, तो वे उन्हें छोडकर काशी चले आये थे। भगवान बुद्ध काशी (सारनाथ) आकर उन साथियों (पंचभद्रीय विप्र) से मिले और उन्हें अपने दिव्य ज्ञान का प्रथम उपदेश दिया और वे ही उनके प्रथम शिष्य बने। काशी के पास सारनाथ मे ही उन्होने धर्मचक्र का परिवर्तन आरम्भ किया था।

उनकी शिक्षा के मुख्य चार उपदेश हैं जो चार 'आर्य सत्य' कहे जाते हैं (१) दुःख क्या है ? (२) दुःख कैसे उत्पन्न होता है ? (३) दुःखों का मिटना क्या है ? (४) दुःख कैसे मिटते है ? उन्होने अष्ट मार्ग बताया जो यह है (१) सम्यक् दृष्टि (२) सम्यक् सकल्प (३) सम्यक् वाचा। (४) सम्यक् कर्म (५) सम्यक् जीविका (६) सम्यक् व्यायाम (७) सम्यक् स्मृति (८) सम्यक् समाधि।

भगवान बुद्ध का कहना था कि संसार दुःखो का घर है। जन्म भी दुःख है और बुढापा भी दुःख है। मरण, शोक, मन का खेद सब दुःख हैं। न चाहने वालों से मिलन, अप्रिय से संयोग, प्रिय से वियोग भी दुःख हैं। किसी वस्तु की इच्छा करके उसे न पाना भी दुःख है। जिसका जन्म होता है, उसकी मृत्यु भी निश्चित है। मनुष्य संसार में आकर कभी भी दुःखों से छुटकारा नहीं पाता। एक न एक दुःख मनुष्य को हर समय लगा रहता है।

मनुष्य की तृष्णा उसके दुःखों का मुख्य कारण है। तृष्णा से मनुष्य को अंहकार, ममता, राग, द्वेष, कलह आदि दुःख उत्पन्न होते हैं। मनुष्य अपनी तृष्णाओं का दमन करके ही इन दुःखों से छुटकारा पा सकता है।

मृत्यु का कारण जन्म है। तृष्णा वासना या इच्छा के कारण मनुष्य को फिर जन्म लेना पड़ता है। आत्मा को नया शरीर धारण करने से मुक्ति मिल जाये, तो उसे फिर कभी मृत्यु का दुःख न भोगना पडे। राग, द्वेष व मोह से रहित होकर ज्ञानवान व्यक्ति कर्म करे, तो वह बन्धनों में नहीं पड़ता और आवागमन के चक्कर से मुक्ति पाकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

मनुष्य अपने जीवन में ही निर्वाण प्राप्त कर सकता है। तृष्णाओं से मुक्त

होकर दुःख रहित अवस्था का नाम ही निर्वाण है।

भगवान बुद्ध ने अहिंसा पर बहुत ज़ोर दिया है। उन्होंने पशु बलि का बहुत कठोरता से विरोध किया है। वे तो जीवों को किसी भी रूप में हानि पहुँचाने को हिंसा मानते थे।

उन्होंने सामाजिक ऊँच-नीच का भी बड़ी कठोरता से विरोध किया और छूआछात की भावना को अत्याचारपूर्ण बताया। उनका कहना था कि किसी ब्राह्मण के घर जन्म लेने से कोई मनुष्य ब्राह्मण नहीं बनता। मनुष्य अपने कर्मों से ही ब्राह्मण या अब्राह्मण होता है।

भगवान बुद्ध के उपदेशों को 'धम्मपद' नामक पुस्तक में लेखबद्ध किया गया है जिसमें उनके कुछ उपदेशों का अर्थ इस प्रकार है।

कोई मनुष्य संग्राम में लाखों मनुष्यों को जीत ले और दूसरा मनुष्य अपने आप को जीत ले, तो दूसरा मनुष्य ही संग्राम विजयी है।

जिस प्रकार स्वर्णकार चाँदी के मैल को दूर करता है उसी प्रकार मेधावी मनुष्य थोड़ा-थोड़ा करके क्षण-क्षण में क्रमशः अपने दोषों को दूर करे आदि।

धीरे-धीरे भगवान गौतम बुद्ध के अनुयायिओं की संख्या बढ़ने लगी और वे घूम-घूम कर ज्ञान का उपदेश देने लगे। घूमते-घूमते भगवान बुद्ध कश्यप ब्राह्मणों के यहाँ गये। उनकी अग्निशाला में एक भंयकर ज़हरीला साँप रहता था। जब बुद्ध अग्निशाला में बैठ गये, तो वह साँप उन पर झपटा; लेकिन बुद्ध की दृष्टि पड़ते ही शान्त होकर उनके भिक्षा पात्र में ही बैठ गया।

एक बार बुद्ध गयसिरस पर्वत पर गये। वहाँ दावाग्नि लगी थी, उस दावाग्नि को अपने शिष्यों को दिखाकर भगवान बुद्ध ने कहा, "देखो सारा संसार इसी प्रकार राग द्वेष आदि दुःखों से जल रहा है जो इस ज्वाला से निकल कर अध्यात्म तत्व की खोज करे वही बुद्धिमान है।

भगवान बुद्ध गयसिरस से चलकर राजगृह (राजगीर) पहुँचे। महाराजा बिम्बसार अपनी रानी, राजकुमार और मंत्रियों के साथ उनका स्वागत करने आये। वहाँ पर महाराजा बिम्बसार ने बुद्ध धर्म ग्रहण किया। वहाँ से अनेक स्थानों पर होते हुए भगवान बुद्ध अपने पिता के नगर में पहुँचे और भिक्षा माँगने लगे। जब उनके पिता को इस बात का पता चला तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। वे अपने मंत्रियों

सहित उनके पास आये, लेकिन गौतम बुद्ध ने त्यागी का धर्म समझा कर उन्हें संतुष्ट किया।

अपने पिता की प्रार्थना पर बुद्ध भिक्षा लेने राजमहल में आये और अपनी पत्नी यशोधरा के भवन में जाकर उसे दर्शन दिये। यशोधरा ने अपने पुत्र राहुल को सिखाया कि वह अपने पिता से पैतृक सम्पत्ति माँगे। जब बालक राहुल ने उनके पास जाकर पैतृक सम्पत्ति मांगी तो भगवान बुद्ध ने उसे अपने साथ ले लिया; क्योंकि उनकी सम्पत्ति तो त्याग थी।

भगवान बुद्ध ने अंगुलिमाल नामक डाकू को उसके पाप कर्म से छुड़ा कर अपना शिष्य बनाया। आम्रपाली नामक गणिका ने भी भगवान बुद्ध को निमंत्रण दिया और उनके संघ में शामिल हो गई।

कुछ लोग द्वेष वश बुद्ध का विरोध करने लगे। शिष्यों के अनुरोध पर बुद्ध ने उनको चमत्कार दिखाना स्वीकार किया। उन्होंने एक आम चूस कर उसकी गुठली जमीन में गाड़ दी और उस पर हाथ धोये। उसी समय गुठली में से अंकुर निकल कर तत्काल वृक्ष बन गया और उसमें फल भी आ गये।

एक बार भगवान गौतम बुद्ध अपने शिष्यों से अलग होकर कुछ दिन एकांत वन में रहे। वहाँ पर एक हाथी और एक बन्दर उनके लिए फल, फूल और जल लाकर उनकी सेवा करने लगे।

एक बार बुद्ध ने एक भेड़ के बच्चे को चोट लगने के कारण लंगड़ाते हुए चलते देखा। बुद्ध ने उस बच्चे को गोद में उठा लिया और वह भेड़ों के पीछे-पीछे चलने लगे। बुद्ध ने एक यक्ष का भी उद्धार किया।

बुद्ध के विरोधियों में कुमार देवदत्त प्रमुख था। उसने राजा अजातशत्रु को बुद्ध के विरुद्ध भड़का कर उनके ऊपर नीलगिरी नाम का हाथी छुड़वाया। लेकिन वह हाथी बुद्ध के पास पहुँचकर उनके सामने बैठ गया और उनकी चरण धूलि अपने मस्तक पर चढ़ाने लगा।

भगवान गौतम बुद्ध ने सभी वर्ग के लोगों को अपने उपदेशों से धर्म का सच्चा मार्ग दिखाया। उन्होंने अपना अंतिम उपदेश "चापल्य चैत्य" स्थान पर आनन्द तथा दूसरे भिक्षुओं को दिया और उनके साथ वहाँ से चले गये। 'मार' देवता ने उनके पास आकर प्रार्थना की कि आपका कार्य पूरा हो चुका है अब आप निर्वाण स्वीकार करें। बुद्ध ने 'मार' की प्रार्थना स्वीकार कर ली। वहाँ से कुशी नगर में

आकर बुद्ध ने आनन्द से जल माँगा। आनन्द भगवान बुद्ध का सबसे प्रिय शिष्य था। उस ने एक छोटी-सी नदी से जल लाकर बुद्ध को पिलाया। उसके बाद कुशी नगर में ही साल वन में दो साल वृक्षों के बीच आनन्द ने चादर बिछाई। भगवान बुद्ध उस चादर पर लेट गये और लेटे-लेटे ही उन्होंने परिनिर्वाण ग्रहण कर लिया। उनके निर्वाण से भिक्षु संघ तथा पूरे देश में हाहाकार मच गया और अंत में बड़ी श्रद्धा से उनका अग्नि संस्कार हुआ। उनके फूल (अस्थियाँ) देश के आठ स्थानों पर स्थापित करके उन पर आठ स्तूप बनाये गये। नौवें स्थान पर वह कुम्भ जिसमें अस्थियाँ थीं और दसवें स्थान पर चिता के अंगार स्थापित कर के उन पर भी स्तूप बनाये। इस प्रकार कुल दस स्तूप भगवान बुद्ध के स्मारक बनाये गये।

देखने योग्य बोध मन्दिर

महाबोधि मंदिर (मुख्य मन्दिर):---पहले इस जगह का नाम उरुविल्व था और यहाँ बहुत बड़ा जंगल था और एक निरंजना नाम की नदी थी। उसी नदी का नाम अब फलगु नदी हैं। जब बुद्ध को कठोर तपस्या से शान्ति नहीं मिली तब उन्होंने निरंजना नदी में स्नान किया और सुजाता नाम की स्त्री के दिये हुए भोजन (खीर) से तृप्त होकर बोधि वृक्ष (पीपल का वृक्ष) के नीचे ध्यान मग्न होकर बैठ गये और यहीं पर उनको दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ और इस स्थान का नाम उरुविल्व से बोध गया पड़ गया। यहाँ पर सम्राट अशोक ने एक विशाल मंदिर बनवाया। इसी मंदिर का नाम महाबोधि मंदिर हुआ।

यह २३०० वर्ष पुराना मंदिर है और बोध गया का मुख्य मंदिर है। पश्चिम की ओर बोधि वृक्ष है जिसे लोग सतयुग के वृक्ष की शाखा कहते हैं। इसी वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध ने ३६ दिन निराहार पूर्व मुख बैठकर तपस्या की थी और सर्वोच्च दिव्य ज्ञान प्राप्त किया था। आज भी उस वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध की मूर्ति स्थापित है और बोधि वृक्ष के दक्षिण में हिन्दू अपने पितरों का उद्धार करने के लिए पिंडदान करते हैं। सम्राट अशोक ने इस बोधि वृक्ष की एक डाली बड़े उत्सव के साथ लंका में भेजी थी।

१२०५ ई० में मुहम्मद बखत्यार खिलजी यहाँ आया था और उसने मंदिर को ३० फुट ऊपर से तुड़वा कर सड़क के लैवल में मिलवा दिया था। मंदिर की एक मंजिल भूगर्भ में थी ऊपर केवल कलश दिखाई देता था। १८८१ में सरकार

की सहायता से इसका जीर्णोद्वार किया गया, अब मदिर की ऊँचाई १७० फीट है। इस मदिर के कम्पाउड मे ४८० मानसिक स्तूपा है जिसकी मनोकामना पूरी हो जाती थी वह यहॉ एक स्तूप बना देता था। लेकिन अब बोधि वृक्ष मे कपडा बॉध कर चले जाते है स्तूप नही बनाते। मुहम्मद बखत्यार खिलजी ने बोधि वृक्ष को भी नष्ट कर दिया था। इसलिए सम्राट अशोक के समय बोधि वृक्ष की जो शाखा लका मे ले जायी गई थी उसी वृक्ष की शाखा लका से लाकर यहॉ लगाई गई।

मदिर की देखभाल करने वाले ८ व्यक्ति है। चार हिन्दू और चार बोधिष्ट हे। डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट चेअर मैन तथा भते जी बोधिष्ट सैकेट्री है। मदिर मे बेटे हुए भगवान बुद्ध की विशाल मूर्ति हे तथा शिवलिग भी हे। इसलिए मदिर मे दो पुजारी हे। एक बुद्ध की पूजा करने वाला बोधिष्ट हे और दूसरा शकराचार्य जा द्वारा बनाय गय शिवलिग की पूजा करने वाला पडित हे। मदिर क अहात म अशाक स्तम्भ हे इसमे एक गोल पत्थर हे। इस पत्थर स कमर रगडन स कमर का दर्द ठीक हो जाता हे। स्तम्भ के ऊपर का कटा हुआ चक्र कलकत्ता म्यूजियम मे हे।

सप्त स्थान

मदिर म भगवान बुद्ध क ध्यानावस्थित तथा 'सममम्बाधि' प्राप्ति क अवसर पर सात सप्ताह तक बिताय जाने वाल सात स्थान हे।

१. बोधि वृक्षः---जहॉ भगवान बुद्ध का ज्ञान प्राप्त हुआ।

२. अनिमिश्लोचन स्तूपः---यह वह स्थान हे जहॉ पर भगवान बुद्ध ने श्रद्धा पूर्वक खडे होकर बोधि वृक्ष को दखा था।

३. चकामनाः---उत्तर की आर वन हुए चबूतर पर भगवान बुद्ध क पद चिह्न।

४. रत्नाघरः---भगवान बुद्ध क ध्यानावास्थित अवस्था मे रहने का कक्ष। यहॉ बुद्ध के शरीर से सात रग की रोशनी निकली थी।

५. राजा यतन वृक्षः---इसके असली प्राचीन स्थान का पता नही लग सका है।

६. अजपालनिग्रोध वृक्षः---इसका भी असली स्थान मालूम नही हो सका फिर भी निरजना नदी के पूर्व तट पर एक जगह, यह स्थान बताया जाता है।

७. मुचलिंद झीलः---यह स्थान महाबोधि मदिर से एक कि० मी० उत्तर में बने एक तालाब को बताया जाता है।

बोधि सरोवर

मंदिर के दक्षिण में एक सरोवर है। इस सरोवर को बहुत पवित्र माना जाता है। तपस्या करने से पूर्व इस सरोवर में भगवान बुद्ध ने स्नान किया था। सरोवर के बीच में भगवान बुद्ध की मूर्ति है। पहले इस सरोवर को मुकलिंडा झील कहा जाता था अब इसे लोटस टैंक कहा जाता है।

अशोक जंगला

मंदिर के दक्षिण और पश्चिम की ओर खुदे हुए पत्थर के जंगले हैं जो अशोक के समय के बताये जाते हैं, लेकिन इनमें केवल तीन ही पत्थर अशोक के समय के प्रतीत होते हैं।

इस मंदिर के प्रांगन में ही सनातन धर्म मंदिर है। जिसमें ५ पांडव, राम लक्ष्मण सीता, महादेव, चेतननाथ, अन्नपूर्णा देवी के दर्शन होते हैं। बर्मा के राजा ने ५२ मन अष्टधातु का घंटा दिया था। बोधि वृक्ष के समीप व्रजासन देवी के दर्शन होते हैं। विष्णु चरण तथा बुद्ध का चरण भी है।

नोटः---महाबोधि मन्दिर की उपरोक्त जानकारी गाइड ने दी तथा मन्दिर दिखाया।
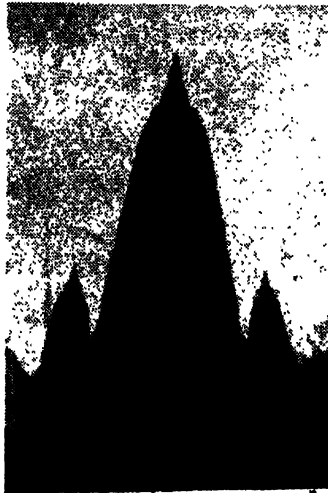
बौद्ध विदेशियों द्वारा बनाये गये बौद्ध मंदिर

(१) **भगवान बुद्ध की विशाल मूर्ति**.---प्राचीन महाबोधि मन्दिर से लगभग दो-तीन कि. मी. मे बौद्ध धर्म के मानने वाले देशो ने अपने-अपने देश के अलग-अलग बौद्ध मदिर बनाये है जो देखने योग्य है। इनमे जापान ने भगवान बुद्ध की विशाल मूर्ति बनाई है जिसकी ऊँचाई ६४ फीट, कमल की ऊँचाई ६ फीट, आधार की ऊँचाई १० फीट है। इस तरह यह ८० फीट की विशाल मूर्ति है।

बोध गया सम्पूर्ण विश्व में बौद्धो के लिए पवित्र स्थान है। २५३३ वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध को यहा ज्ञान प्राप्त हुआ था। भगवान बुद्ध को श्रद्धा समर्पित करने के लिए एवम् उनके उपदेश प्रसार के लिए विश्व शान्ति और आनन्द प्रतीक स्वरूप जापान के नागोया स्थित दाईजोक्यो धार्मिक संस्थान ने इस विशाल बुद्ध मूर्ति को स्थापित किया है। खुले गगन मे कमल पर स्थित यह बुद्ध मूर्ति ध्यान मुद्रा म है। मूर्ति के ललाट पर जो स्वर्ण बिन्दु है वह कास्य निर्मित है। मूर्ति चुनार के गुलाबी पत्थरो को जोडकर बनाई गई है। कमल चुनार के पीले पत्थरो तथा आधार लाल ग्रेनाइट पत्थरो से बनाया गया है। इस विशाल मूर्ति के निर्माण मे चार वर्ष लगे हैं। इसका अनावरण समारोह महामहिम दलाई लामा के कर कमलो द्वारा १८ नवम्बर १९८९ को सम्पन्न हुआ था।

(२) **डाइज्यूक्यो बुद्ध मन्दिर**:---यह मन्दिर भी जापान ने बनवाया है।

(३) **कर्मा थारजे चौक होलिंग कागयुपा वजराइंग बुधिष्ट मोनास्ट्री** :- इस मन्दिर का उद्घाटन १९८८ मे राष्ट्रपति आर० वेकटरमण ने किया था।

(४) **इंडोसन निपोंजी**:---यह मन्दिर भी जापान ने बनवाया है। इस मदिर मे स्कूल, गैस्ट हाउस, मंदिर, मैनेजमैट हाऊस, अस्पताल, हौल तथा पयगुडा है।

(५) **डक दो नाग चोलिंग मोनास्ट्री**

(६) **वट थाई मन्दिर**:---यह मन्दिर राजकीय थाई सरकार द्वारा १९७५ में बना।

(७) **चाइना मन्दिर** :- यह मन्दिर चीन द्वारा बनवाया गया।

(८) **गदेन फेलजोलिंग तिब्बतीयन महायाना बुधिष्ट मन्दिर**:---यह दो मजिला मंदिर १९३८ में तिब्बत वालों ने बनाया। इस मंदिर में धर्म चक्र है जो श्री वज्रसतवा तथा मुनियों के मंत्रों से परिपूर्ण है। इस में करोड़ों मंत्र हैं। यह प्राणियों के हितों

के लिए है तथा दुःखों एवम् पापों को दूर करता है। इस धर्म चक्र का वजन २०० क्विंटल से भी अधिक है। मन्दिर में दर्शन करने आने वाले यात्री को इसे एक या दो बार बायें से दायें अवश्य घुमाना चाहिए।

उपरोक्त मन्दिरों के अतिरिक्त बोध गया में और कई देशों के बौद्ध मन्दिर निर्माणाधीन हैं। हम दिनांक ११-१०-६२ को बोध गया तथा गया के मन्दिरों को देखने के लिए जीप द्वारा गये थे और दोपहर को **आई० टी० डी० सी०** के थ्री स्टार **अशोका होटल** में खाना खाया था। हमारे साथ श्री कल्याण बैनर्जी, ईशानी बैनर्जी व उनके परिवार के सदस्य, श्री एवम् श्रीमती बिनोद कुमार लाल तथा उनके दो सुपुत्र हर्ष कुमार लाल एवम् गौरव कुमार लाल, श्री दिनेश, कुमारी बबानी (पिंकी) व उसकी माता जी थीं। जीप श्री दिनेश जी (नवादा निवासी) की थी और हम सब स्थान देखकर रात्रि दस बजे तक वापिस श्याम होटल गया में आ गये थे।

हिन्दू, जैन, बौद्ध तथा मुसलमानों का संगम तीर्थस्थान-राजगीर (राजगृह)

राजगीर का पहला नाम राजगृह अर्थात् राजाओं का निवास स्थान था। महाभारत काल में यहाँ महाप्रतापी तथा शक्तिशाली मगध के राजा जरासंध की राजधानी थी। जरासंध ने अपनी दो पुत्रियां अस्ति और प्रम्ति का विवाह मथुरा के बलशाली राजा कंस के साथ किया था। कंस भगवान श्रीकृष्ण का मामा था उसने श्रीकृष्ण के माता-पिता वसुदेव और देवकी को कारागार में बंद कर दिया था क्योंकि उसको आकाशवाणी हुई थी कि देवकी के गर्भ से आठवां पुत्र उसका मारने वाला होगा। श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में कंस के कारावास में ही हुआ था परन्तु उनके जन्म के समय उसके माता-पिता की हथकड़ी, बेड़ी अपने आप खुल गई थीं और सब पहरेदार सो गये थे तथा कारावास के दरवाज़े खुल गये थे। वसुदेव नवजात शिशु श्रीकृष्ण को छाज (सूप) में लिटा कर यमुना पार गोकुल गाँव में अपने मित्र नन्द के घर छोड़ आये थे और उनकी नवजात कन्या को ले आये थे। उनके आने पर उनकी हथकड़ी, बेड़ी वैसे ही लग गई थीं। जेल के फाटक बंद हो गये थे, पहरेदार जाग गये और उन्होंने कंस को देवकी के गर्भ से कन्या होने की सूचना दी। कंस ने कारावास में आकर उस कन्या को मारने के लिए पत्थर पर पटका, लेकिन वह कन्या योगमाया रूप होकर आकाश में उड़ गई और कंस को आकाशवाणी कर गई कि तेरे मारने वाला गोकुल में हो चुका है। कंस ने गोकुल में श्रीकृष्ण को मरवाने के लिए अनेक राक्षस भेजे परन्तु बालक श्रीकृष्ण ने उन सब को मार डाला और अंत में अपने बड़े भाई बलराम के साथ मथुरा में जाकर कंस के बाल पकड़ कर पछाड़ दिया और उसका वध कर दिया।

कंस की मृत्यु के बाद उसकी दोनों पत्नियाँ अस्ति और प्रम्ति अपने पिता जरासंध के पास राजगीर में आईं और श्रीकृष्ण से अपने पति कंस की मौत का बदला लेने के लिए कहा। जरासंघ ने १७ बार श्रीकृष्ण को मारने के लिए मथुरा पर आक्रमण किये लेकिन हर बार वह हार गया। अन्त में ब्रह्मा जी से वरदान पाकर मथुरा पर विजय पा ली और श्रीकृष्ण को उसके सामने से भागना पड़ा तथा समुन्दर मे द्वारिका पुरी बसाकर अपने भाई बन्धुओं तथा यादवों सहित रहने लगे।

श्रीकृष्ण की बुआ कुन्ती के पुत्रों पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया तब यज्ञ होने से पहले श्रीकृष्ण भीम और अर्जुन को अपने साथ लेकर राजगीर पहुँचे वहां पर भीम और जरासंध का मल्लयुद्ध कराया जिसमें भीम ने श्रीकृष्ण के इशारे पर जरासंध की जाँघ पकडकर उसे बीचों बीच चीर कर मार डाला।

कहा जाता है कि जरासंध किसी ऋषि के वरदान से उत्पन्न हुआ था। उसके पिता का नाम वृहद्रथ था। उसकी दो रानियाँ थी। वृहद्रथ की छोटी रानी के कोई सन्तान न होने पर वह किसी ऋषि के पास गया और ऋषि से प्रार्थना की कि कोई ऐसा उपाय बतायें जिससे कि उनकी छोटी रानी से संतान उत्पन्न हो। ऋषि ने एक आम फल राजा को देकर कहा कि इसे छोटी रानी को खिला दें। राजा ने घर आकर वह आम फल छोटी रानी को खाने के लिए दिया। परन्तु छोटी रानी ने वह आम अकेले न खाकर बीचों बीच चीर दिया और आधा बडी रानी को खिलाकर आधा खुद खा लिया। उस आम के प्रताप से दोनों रानियों को गर्भ रह गया और उचित काल में दोनों के गर्भ से आधे-आधे बालक का जन्म हुआ। जब राजा को इस बात का पता चला तो उसने क्रोध में आकर उन आधे-आधे बालकों को वन में फिंकवा दिया। उस वन में जरा नाम की एक राक्षसी रहती थी। उसने उन आधे-आधे दोनों बालकों को उठा लिया और अपनी माया से उन दोनों को जोड़कर एक बालक बना दिया। फिर उस में प्राण डाल दिये और राजा वृहद्रथ के पास ले आई। राजा वृहद्रथ ने उस बालक को ले लिया और उसका नाम जरासंध रख दिया। अंतर्यामी भगवान श्रीकृष्ण इस भेद को जानते थे कि जरासंध को बीचों बीच चीर कर ही मारा जा सकता है; क्योंकि वह बीच में से जुड़ा हुआ है। इसलिए उन्होंने भीम को इशारा किया था कि उसे बीच में से चीर डाले।

राजगीर के राजगृह के अतिरिक्त और भी कई नाम थे। जरासंध के पिता का नाम वृहद्रथ था इसलिए उनके नाम पर वृहद्रथपुर था। इस नगर को ब्रह्मा जी

के चौथे पुत्र वसु ने बसाया था। इसलिए इस नगर का नाम वसुमति था। यह नगर चारों तरफ से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इसलिए इसका नाम गिरि व्रज था। महाभारत में गिरिव्रज नाम ही आया है। इस नगर का नाम कुशाग्रपुर भी आया है इसका कारण इस शहर के आसपास पाई जाने वाली खुशबूदार कुशा घास है अथवा वृहद्रथ के वंश में कोई कुशाग्र नाम का राजा हुआ होगा जिसने अपने नाम पर इस नगर का नाम कुशाग्रपुर रख दिया था।

राजा बिम्बसार (५४६-४६४ ई० पू०) ने मगध राज्य की स्थापना की थी और उसके पुत्र अजातशत्रु (४६४ से ४६२ ई० पू०) ने मगध राज्य का विस्तार किया था। उस समय उत्तरी भारत में चार राजाओं का बोल-बाला था। जिनमें मगध का राजा बिम्बसार, कौशल का राजा प्रसन्नजित, वीत्स का राजा जहयन और अवन्ती का राजा प्रद्योत।

राजा बिम्बसार के पुत्र अजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बसार को कैद कर लिया था और राजगीर की पहाड़ियों के बाहर नई राजधानी बसाई थी। उसने नगर के प्राचीरों की मरम्मत कराई थी: क्योंकि उसे अवन्ती के राजा प्रद्योत के आक्रमण का भय लगा रहता था।

अजातशत्रु के पुत्र उदयन (४६२-४४६ ई० पू०) ने अपने पिता अजातशत्रु को तड़पा-तड़पाकर मरवा दिया था और उसने राजगीर से राजधानी बदल कर पाटलिपुत्र (वर्तमान पटना) को राजधानी बनाया।

सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य तथा सम्राट अशोक के राज्य काल में मगध साम्राज्य अपनी चरम उन्नति पर पहुँच गया था।

राजगीर (राजगृह) पटना से १०१ कि० मी० गया से ६७ कि० मी० नालन्दा से १२ कि० मी०, बिहार शरीफ से १३ कि० मी० और बख्त्यारपुर से ७० कि० मी० है। हम दिनांक १२-१०-६२ को श्री दिनेश जी की जीप द्वारा गया से राजगीर (राजगृह) नालन्दा तथा पावापुरी देखने गये थे तथा राजगीर में ग्रीन होटल में भोजन किया था।

राजगीर (राजगृह) भारतवर्ष के बिहार राज्य में ५ पर्वतों पर बसा बहुत रमणीक स्थान है। महाभारत में इन पहाड़ों के नाम वैभार, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि और चैतयक हैं; परन्तु दूसरी जगह इनका नाम पंडार, विपुल, वराहक, चैत्यक और मतंग दिये गये हैं। पालि लेखों में इन के नाम वैभार, पांडव, वैपुल्य गृध्रकूट और

ऋषिगिरि हैं लेकिन जैन प्रभाव के कारण इनके नाम वैभार, विपुल, रतन, छट, शेल, उदय और सोना पड़ गये हैं।

राजगीर हिन्दू, जैन, बोद्ध तथा मुस्लिम धर्मों का संगम स्थल है। २४ वें जैन तीर्थंकर भगवान वर्धमान महावीर ने अपने जीवन के १४ वर्ष यहाँ पर बिताये थे। उनसे पहले भी राजगीर का संबंध जैन धर्म से रहा। यहाँ भगवान आदि नाथ और बासूपूज्य स्वामी के अतिरिक्त अवशेष २२ तीर्थंकरों के समवशरण (सभा) आये थे। भगवान महावीर का विपुलाचल पर प्रथम समवशरण लगा था। यहाँ से अनेक ऋषि मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया है। अंतिम केवली श्री सुधर्म स्वामी और जम्बु स्वामी ने विपुलाचल से ही निर्वाण प्राप्त किया है। श्री नाथूराम प्रेमी ने अनेकों प्रमाणों द्वारा नंग-अनंग आदि साढ़े पाँच करोड़ मुनियों का निर्वाण स्थान स्वर्णगिरि या सोनागिरि बताया है। राजगीर का आधुनिक धार्मिक महत्त्व अधिकांश जैनियों के कारण है। जैनियों ने राजगीर की प्रायः पाँचों पहाड़ियों की चोटियों पर मंदिर बनवायें और नये मंदिर प्राचीन मंदिरों के अवशेषों पर बनाये गये हैं।
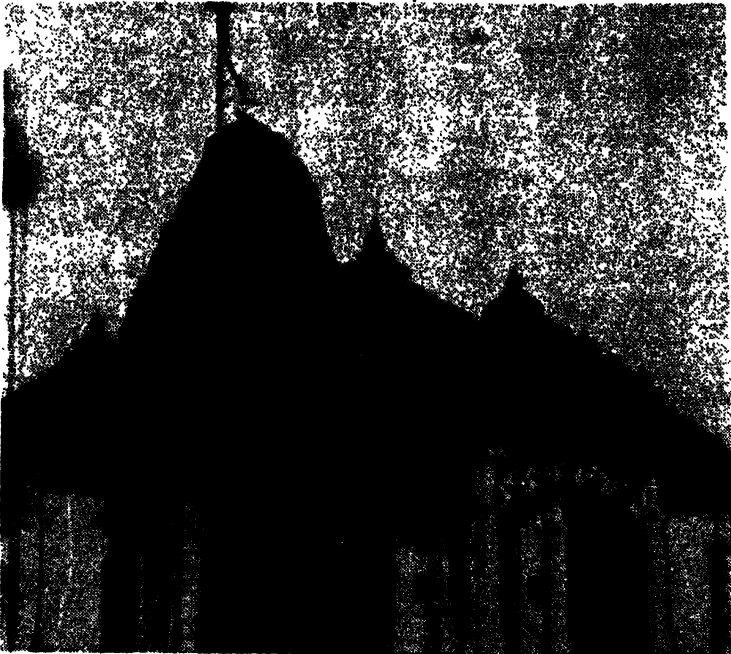
राजगीर बौद्ध धर्म का भी प्रधान केन्द्र था। भगवान बुद्ध सारनाथ में अपना प्रथम् उपदेश देकर राजगीर में आये थे और राजा बिम्बसार को अपना अनुयायी

बनाया था। उन्होंने अपने धर्म प्रचार कार्य में यहाँ पर १२ वर्ष बिताये थे। उन्होंने नगर के भिन्न-भिन्न स्थानों में निवास किया था; परन्तु राजगीर में उनको सब से अच्छा स्थान गृधकूट लगा था। गृधकूट पर्वत पर ही वे निवास करते थे। यहाँ पर उन्होंने बहुत से मुख्य उपदेश दिए थे। भगवान् बुद्ध राजगीर के प्राकृतिक सौन्दर्य के बहुत प्रेमी थे। उन्होंने अपने शब्दों में कहा है:---"रमणीक है राजगृह, रमणीक है गृधकूट, रम्य है गौतम---न्यग्रोध, मनोहर है चोर प्रताप, रम्य है वैभार---गिरि की सप्तपर्णि गुफा, रम्य है ऋषिगिरि की काल शिला, रम्य है शीत वन का सर्प शौडिक-प्रारभार, रमणीक है तपोदाराम, अभिराम है वेणुवन का कलंदक हद, आनन्दकर है जीवक का आम्रवन और रम्य है मर्थपक्षि का 'मृगवन'।

बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् उनकी अस्थियाँ जो राजा अजातशत्रु के भाग में आई थीं, वह उन्हें राजगीर में लाया था और उन्हें राजगीर में ही विधिपूर्वक समाधिस्थ करके उनके ऊपर एक चैत्य स्तूप बनवाया था और सप्तपर्णि गुफा के सामने एक विशाल मंडप का भी निर्माण कराया था।

राजगीर में मुसलमान संत श्री मख्दूम शाह शरीफुद्दीन ने लगभग १२३४ ई० में विपुल पर्व के नीचे शृंगकुंड जिसे मख्दूम कुंड कहा जाता है उसके निकट १२ साल तक तपस्या की थी। इस कारण राजगीर मुसलमानों का भी तीर्थ स्थान बन गया है।

राजगीर में दर्शनीय स्थान

(१) वेणुवनः---यह सुगन्धित बाँसों का वन था। राजा बिम्बसार ने इसे भगवान् बुद्ध को समर्पित कर दिया था। भगवान् बुद्ध ने सारिपुत्र तथा महाभोगदयालन को यहीं पर शिक्षा दी थी। अब यह वन विहार सरकार के वन विभाग द्वारा संरक्षित है।

(२) करन्द निवासः---वेणुवन के बीच में एक तालाब है। इस तालाब को ही करन्द निवास कहा जाता है। भगवान् बुद्ध इसी तालाब में स्नान किया करते थे।

(३) महावीर चरण चौराः---वेणुवन के पूर्व में तथा वर्तमान जापानी मन्दिर के पश्चिम में पटना गया मार्ग पर महावीर चरण चौरा है। यहाँ पर भगवान् महावीर स्वामी ने अपने शिष्यों के साथ विपुलांचल पर्वत पर उपदेश देने के पश्चात् आकर विश्राम किया था। जैन दिगम्बर दीपावली के अवसर पर यहाँ रथ यात्रा का उत्सव मनाते हैं।

(४) **गर्म पानी का कुंडः**---वैभारगिरि की तलहटी में ब्रह्म तथा सप्तधारा कुंड है। यहाँ गर्म पानी के चश्में हैं। सात धाराओं के नाम इस प्रकार हैं:---**(१) ब्रह्म कुंड (२) सप्तधारा (३) सालिगरामधारा (४) सप्तम गर्पि (५) सीता राम (६) गणेश (७) सुरज कुंड**। मुख्य ब्रह्म कुंड है। यह हिन्दुओं के प्रमुख तीर्थ हैं। स्त्रोतों की सातों धाराओं में से अलग-अलग तापमान का पानी निकलता है। पानी में सल्फर है। इसमें स्नान करने से चर्म रोग ठीक हो जाते हैं तथा गठिया रोग से छुटकारा मिल जाता है। इन स्त्रोतों का पानी पवित्र तथा प्रकृति की अनमोल देन है। हमने भी इन सप्त धाराओं तथा ब्रह्म कुंड में स्नान किया था तथा घनश्याम पंडा सुपुत्र श्री द्वारका नाथ उपाध्याय एवं श्री दीन दयाल उपाध्याय ने तर्पण कराया था। गर्म पानी के कुंड के पास ऊपर पहाड़ी पर ५२२ सीढ़ियाँ चढ़कर जैन मंदिर, शिव मंदिर तथा हनुमान मंदिर भी हैं।

(५) **मखदूम कुंडः**---यह कुंड विपुलांचल पर्वत की तलहटी में है। मखदूम कुंड का प्राचीन नाम शृंगी ऋषि कुंड है। यहाँ हज़रत मखदूम शाह बाबा की इबादत गाह है। आपका पूरा नाम मखदूम-उल-मुल्क शेख शरीफद्दीन याइया मनीरी रहम तुल्ला इलै है। आपका जन्म पटना जिले के मनशरीफ में हुआ था। आप आज से साढ़े सात सौ साल पहले फकीरी बुजुर्गी में यहाँ आये तो यहाँ चारों ओर जंगल पहाड़ था। कोई आबादी नहीं थी। आपने पहाड़ की चट्टान पर बैठकर इबादत करनी आरम्भ कर दी। आपसे पहले यहाँ दो जादूगर थे एक का नाम रावा और दूसरे का नाम रत्ता था। दोनों बहुत बड़े जादूगर थे। उन्होंने आप को जादू से मारना चाहा ताकि आप यह जगह छोड़कर चले जायें लेकिन आप अल्लाह वाले थे, अपनी इबादत में मशगूल रहे। जादूगरों ने मारने के लिए पहले एक शेर आजमाया लेकिन आपने उस शेर को मार दिया। ऊपर में शेर के पंजे और खून का निशान है। वहाँ से आपने अपना कयाम नीचे रखा जो यही स्थान है। उन जादूगरों ने दोबारा आप को मारने के लिए पूरा पहाड़ आपके ऊपर चलाया "लाइलाहा इलल लला मुहमद रसूल अल्लाह" यह कहते ही पहाड़ हवा में सिर से ऊपर रुका रह गया। यह देखकर दोनों जादूगर आपके कदमों पर गिर पड़े और दोनों मुसलमान हो गए। एक का नाम हजरत हतीक रहमतुल्ला इलाही और दूसरे का नाम हज़रत हिलाल रहमतुल्ला इलाही रखा। दोनों का मज़ार बिहार शरीफ बड़ी दरगाह में अपने आलताना के पूर्व तरफ गेट के पास हैं।

हजरत मौलाना मुज्जफर बल्खि रहमतुल्ला इलै जो बलख के बादशाह थे ने आपकी फकीरी बुजुर्गी सुनकर अपना तख्तोताज छोड दिया और आप के पास आकर रहने लगे थे। आपको भी १२ साल बाद फकीरी बुजुर्गी मिली तब वापिस अदन चले गए और मजार अदन मे हुआ जो अरब की तरफ है। ११५४ हिजरी यानि साढे तीन सौ साल पहले जब आपने ख्वाब मे दिखाया था तो स्पोर्ट के लिए मखदूम बाबा की इबादतगाह की अन्दर वाली दीवार बनाई गई। ८०० साल पहले यह चश्मा जारी हुआ जिसे मखदूम कुड कहते हे।

नोटः---उपरोक्त जानकारी श्री मुहम्मद वकील अमजद खदीम मखदूम कुड ने दी।

हजरत मखदूम शाह शरीफुद्दीन का मकबग बिहार शरीफ म हे जो राजगीर से १३ कि०मी० है ओर बिहार का मुख्य मुस्लिम तीर्थ है।

वैभार पहाड़ पर पत्थर की पीपल गुफा

गर्म स्रोता की सप्तधारा मे ऊपर एक पत्थर का भवन हे जिमको यहाँ के लोग मचान या जरामध की बैटक कहते है। इसको पीपल का निवास माना गया है। यह भवन ८५ फीट लम्बा तथा ८१ फीट चोडा है।

सप्तपर्णि गुफाः---पीपल गुफा मे निकलने पर दाई ओर एक गम्ता है जो सप्तपर्णि गुफा पर पहुँचता हे (बुद्ध की मृत्यु के छह महीने बाद उनके पॉच सो मुख्य शिष्यो का यहॉ प्रथम मम्मेलन हुआ था।

महादेव मंदिरः---इम मदिर म एक छाटा शिवलिग ओर एक नन्दी है। यह मदिर जैन मदिर की दक्षिण की तरफ हे ओर भग्नावम्था मे हे।

मणियार मठः---महाभारत मे राजगीर मणिनाग का पवित्र धाम था। खुदाई मे यहाँ पर बहुत बडी सख्या मे नाग मणियो की मूर्तियाँ मिली है। इसलिए इसे मणियार मठ कहा जाता हे।

जीवक का आम्रकुंजः---यह एक बुद्ध विहार हे। यहॉ जीवक का आम का बाग था जो उसने भगवान् बुद्ध और उनके सघ को भेट कर दिया था। जीवक अपने समय का सबसे प्रसिद्ध वैद्य था और बिम्मसार तथा अजातशत्रु के दरबार में रहता था।

स्वर्ण गुफायेंः---वैभार पहाडी पर दो गुफायें हैं। एक की छत बिल्कुल गिर

गयी है और दूसरी की दीवारों और छत में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गई हैं। सम्भवतः ये जैन मुनियों के साधनागृह थे।

रणभूमिः---यहाँ पर महाभारत काल में भीम तथा जरासंध का मल्लयुद्ध हुआ था। इसे जरासंध का अखाड़ा भी कहते हैं। यह स्वर्ण भंडार के पश्चिम दक्षिण में कुछ ही दूरी पर है।

बिम्बसार जेलः---यह मणियार मठ से लगभग एक कि०मि० की दूरी पर पत्थर की दीवारों से घिरा दो सौ फुट लम्बा और इतना ही चौड़ा स्थान है। बिम्बसार के पुत्र अजातशत्रु ने उसे बन्दी बना कर यहाँ रखा था।

इस क़ैदखाने से बिम्बसार, गृधकूट पर भगवान् बुद्ध को, जिन्होंने वहाँ १२ साल निवास किया था, देख सकता था।

गृधकूटः---यह राजगीर की पहाड़ियों की सब से ऊँची चोटी है। भगवान बुद्ध यहाँ १२ साल तक रहे और यहीं पर उन्होंने अपने मुख्य उपदेश दिये थे।

विश्व शान्ति स्तूपः---गृधकूट के शिख़र पर जापान सरकार ने लगभग २५ लाख की लागत से स्तूप निर्मित कराया जिसकी ऊँचाई १२० फुट है और शिखर पर १० फुट ऊँचा कमल कलश है। स्तूप का ब्यास १६३ फीट है। स्तूप के चारों ओर चार बुद्ध प्रतिमायें स्थापित हैं। यह विश्व शान्ति स्तूप जापान बौद्ध संघ के अध्यक्ष पूज्य गुरु जी भिक्षु निचिदात्सु फूजी की कल्पना की उपज है। उनका विश्वास है कि विश्व शान्ति स्तूप के निर्माण के पश्चात् ही बुद्ध अपने दिव्य शक्ति के फलस्वरूप इस भूमण्डल पर अवतरित होंगे। इस स्तूप में एक सुन्दर मन्जूषा में सप्त रत्नों सहित भगवान बुद्ध का अवशेष स्थापित किया गया है।

रोप वेः--- विश्व शान्ति स्तूप पर जाने के लिए वैसे तो सीढ़ियों का मार्ग है परन्तु जापानियों ने सुविधा तथा जल्दी पहुँचने के लिए बिजली से चलने वाला एक झूला बनाया है जिसमें ११४ कुर्सियाँ हैं। झूले (रोप वे) की लम्बाई २२०० फीट है। इस रोप वे से ऊपर जाने में केवल साढ़े सात मिनट लगते हैं। आजकल रोप वे बिल्कुल बन्द है।

जैन मन्दिरः---विपुलांचल पर्वत पर चार दिगम्बर तथा एक श्वेताम्बर मन्दिर है। रतनागिरि पर्वत पर एक श्वेताम्बर चौमुखी मन्दिर है। उदयगीरि पर्वत पर एक श्वेताम्बर तथा तीन दिगम्बर मन्दिर हैं। स्वर्णगिरि पर्वत पर एक श्वेताम्बर और

दो दिगम्बर मन्दिर हैं। वैभारगिरि पर्वत पर पाँच श्वेताम्बर और एक दिगम्बर मंदिर है।

इसके अतिरिक्त मरदकुछी, रथ चक्र तथा शंख लिपि, जैन मुनि की तपस्या तथा संस्कार भूमि, बाण गंगा, साइल्कोपिअन दीवार, अजातशत्रु का कोट तथा नवीन राजगिरि, मृग उद्यान, विष्णु मंदिर, काली बाड़ी, राम कृष्ण सेवा मठ तथा आनन्दमयी माँ का आश्रम देखने योग्य स्थान हैं। रथ चक्र गृध्रकूट तथा बाण गंगा के बीच में एक स्थान है जहाँ पथरीली ज़मीन में प्राचीन रथों के पहियों की रगड़ के निशान हैं।
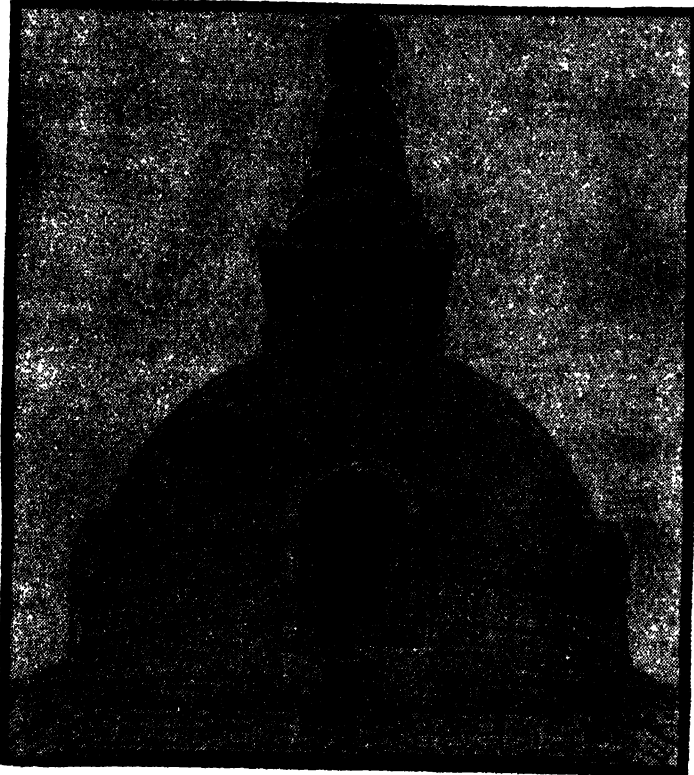
जहाँ कभी ज्ञान देने का अंत नहीं था - नालंदा तथा अन्य आस के स्थान कुन्डल पुर, वैशाली, बिहार शरीफ, पटना

पटना से ८८ कि० मी० तथा राजगीर (राजगृह) से १३ कि० मी० के फासले पर बड़ा गाँव के पास नालंदा विश्वविद्यालय के खंडरात हैं। हम दिनांक १२.१०. ९२ को राजगीर (राजगृह) के दर्शनीय स्थान देखकर नालंदा गये थे। नालंदा विश्वविद्यालय के खंडरात देखने में लगभग चार-पाँच घंटे लग जाते हैं।

नालंदा में ठहरने के लिए जैन धर्मशाला, सनातनी धर्मशाला, तिब्बती धर्मशाला, नालंदा रेस्ट हाउस, यूथ होस्टल, पालि इंस्टीच्यूट होस्टल आदि हैं जिनमें यात्री ठहर सकते हैं।

आज से लगभग ढाई हज़ार साल पहले एशिया में तीन विश्वविद्यालय थे। (१) तक्षशिला (२) विक्रमशिला (३) नालंदा।

पाकिस्तान बनने पर तक्षशिला पाकिस्तान में चला गया। विक्रमशिला और नालंदा के खंडरात खुदाई करने पर बिहार में मिले। विक्रमशिला बिहार के भागलपुर ज़िले में है। नालंदा के नाम पर नालंदा ज़िला है।

प्राचीन काल में नालंदा में बोद्ध विश्वविद्यालय था और एशिया में सबसे बड़ा स्नातकोत्तर शिक्षा का केन्द्र था। पाँचवीं शताब्दी के आरम्भ से ७०० वर्ष तक यहाँ बोद्ध धर्म दर्शन तथा अन्य विषयों की शिक्षा दी जाती थी। चीन, जापान, कोरिया, मंगोलिया, तिब्बत तथा श्रीलंका आदि देशों से विद्यार्थी यहाँ आकर कई वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करते थे और कठोर जीवन बिताते थें। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वांग-चांग ने भी यहीं आकर पाँच वर्ष तक शिक्षा प्राप्त की थी। इस विद्यालय

में १० हजार विद्यार्थी और १५०० आचार्य थे। नागार्जुन, शीलभद्र, आर्यदेव, संतरक्षित, वसुबंधु, दिग्नाग, धर्मकीर्ति, कमलशील, अतिस, दीपकर, कुमार जीव तथा पद्मसम्भव आदि आचार्यों ने यहीं से शिक्षा प्राप्त की थी और विद्या की ज्योति विदेशों में ले गये थे।

संस्कृत के अनुसार 'नालम् ददाति इति नालन्दा' नालम् का अर्थ कमल का फूल है। कमल के फूल के डंठल को ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। दा का अर्थ देना अतः जहाँ ज्ञान देने का अंत ही न हो उसे नालंदा कहा गया है।

नालंदा का इतिहास बहुत प्राचीन है। ईसा से पाँचवीं तथा छठी शताब्दी पूर्व में भगवान महावीर और भगवान बुद्ध के युग तक यहाँ का इतिहास फैला हुआ है। जैन ग्रंथों के अनुसार नालंदा राजगीर के उत्तर-पश्चिम में एक उपनगर था और महावीर स्वामी ने नालंदा और इसके निकट राजगीर में १४ वर्ष गुजारे थे।

दिगम्बर जैन मत के अनुसार नालंदा से केवल दो कि० मि० दूर कुंडल पुर में भगवान महावीर स्वामी का जन्म हुआ था; परन्तु वास्तव में महावीर स्वामी का जन्म वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था। बौद्ध धर्म के साहित्य के अनुसार भगवान बुद्ध अक्सर यहाँ आते-जाते थे। यह नगर बहुत खुशहाल था और घनी आबादी थी। यहाँ एक आम का बाग था जिसे पवारिक कहते थे।

भगवान बुद्ध के दो प्रमुख शिष्यों - सारिपुत्र और मार्दगलापन का जन्म नालंदा में ही हुआ था। सारिपुत्र का देहान्त नालंदा में उसी कमरे में हुआ जिसमें वह पैदा हुआ था। उसकी मृत्यु का कमरा बहुत पवित्र माना जाने लगा और बौद्धों के लिए तीर्थस्थान बन गया। सम्राट अशोक ने नालंदा में इस स्थान पर मंदिर बनवाया। इसलिए सम्राट अशोक को नालंदा विहार का संस्थापक माना जाता है।

नालंदा की खुदाई में समुद्रगुप्त के समय का एक ताम्रपत्र और कुमारगुप्त का एक सिक्का मिला है। इसलिए नालंदा विहार कुमारगुप्त आदि गुप्त सम्राटों के बनवाये हुए माने जाते हैं। कन्नौज के राजा हर्षवर्धन (६०६-४७) ने नालंदा विश्वविद्यालय को बहुत धन दिया था। उसने लगभग १०० गाँव की मालगुजारी इस विश्वविद्यालय के नाम छोड़ दी थी। उन गाँवों से विश्वविद्यालय की आवश्यकता के अनुसार चावल, घी और दूध आदि आने लगा। इसलिए नालंदा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को पूरी खुराक इन गाँवों से मुफ्त मिलने लगी और उनको कहीं भिक्षा माँगने नहीं जाना पड़ता था।

कुछ मतों के अनुसार सम्राट अशोक ने १२०० गाँव नालंदा विश्वविद्यालय के लिए दे दिए थे कि इनसे जो आमदनी हो उससे नालंदा विश्वविद्यालय का खर्च चलाया जाए। विद्यार्थियों से कोई फीस नहीं ली जाती थी और उनको खाना-पीना भी मुफ्त दिया जाता था। ह्वांग चांग के कथन के अनुसार नालंदा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को खाने-पीने के लिए भिक्षा नहीं माँगनी पड़ती थी। ह्वांग-चांग के बाद इतिसंघ ६७३ ई० में भारत पहुँचा था। उसने भी कई वर्ष तक नालंदा में विद्या ग्रहण की।

नवीं शताब्दी के आरम्भ में बंगाल के राजा देवपाल के समय में नालंदा उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँच गया था। हिन्देशिया, जावा, सुमात्रा के सम्राटों ने राजदूतों द्वारा देवपाल के पास धन भेजा जिससे वहाँ विहार बनाये गये।

तिब्बत के सम्राट सौंग-यांन गाम्पो ने आचार्य देवविद् से बौद्ध और ब्राह्मण साहित्यों का ज्ञान प्राप्त किया। तत्पश्चात् राजा खौ दे उत्सान ने संतरक्षित को तिब्बत बुलाया। उसी समय के लगभग पदमूसम्भव भी तिब्बत गये और उन्हें तिब्बत में लामा पंथ के संस्थापक के नाते बहुत प्रसिद्धि मिली। नालंदा विश्वविद्यालय के लिए यह एक बहुत गौरव की बात थी कि उसके एक विद्वान् ने तिब्बती धर्म को एक विशेष रूपरेखा दी। नालंदा के विद्वान् कोरिया में भी गए थे।

नालंदा विश्वविद्यालय का अंत कैसे हुआ ?

पाँचवीं शताब्दी में ब्राह्मण दार्शनिक कुमारिल और शंकराचार्य के प्रयत्नों से तथा उपदेशों से बौद्ध धर्म को बहुत धक्का लगा। उन्होंने सारे भारत में घूम-घूम कर तर्क तथा शास्त्रार्थ द्वारा बौद्धों को हराया और उनसे अपना मत मनवाया। इसलिए प्राचीन बौद्ध केन्द्र वीरान हो गये। बिहार और बंगाल में सरकारी संरक्षण के कारण बौद्ध धर्म जीवित था; परन्तु अन्य राज्यों में उसका प्रभाव घट रहा था। आँखिरी चोट जो बौद्ध धर्म पर पड़ी, वह सन् १२०५ में मुहम्मद बखत्यार खिलजी का नालंदा विश्वविद्यालय पर आक्रमणं था। उसने इसे कोई किला समझा और इसे नष्ट कर दिया।

मुहम्मद खिलजी के आक्रमण के पश्चात् मुद्रित मुद्रा नाम के एक व्यक्ति ने इसका पुनर्निर्माण कराया और शीघ्र पश्चात् मगध के राजा के मंत्री कुकूटा सिद्ध ने यहाँ मंदिर बनवाया। एक धर्म उपदेश के समय दो क्रोधित ब्राह्मण तीर्थ करने

यहाँ आये। कुछ नटखट भिक्षुओं ने उनके ऊपर हाथ-पैर धोने का पानी फेंक दिया। उन ब्राह्मणों ने १२ वर्ष तक सूर्य को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की और तपस्या के बाद यज्ञ किया। उन्होंने यज्ञ की अग्नि के सुलगते हुए अंगारे नालंद विश्वविद्यालय तथा बौद्ध मंदिर आदि में फेंक दिए जिसकी प्रचंड आग से विश्वविद्यालय में आग लग गई और नालंदा विश्वविद्यालय नष्ट हो गया। उसके पश्चात् यहाँ कोई निर्माण नहीं हुआ।
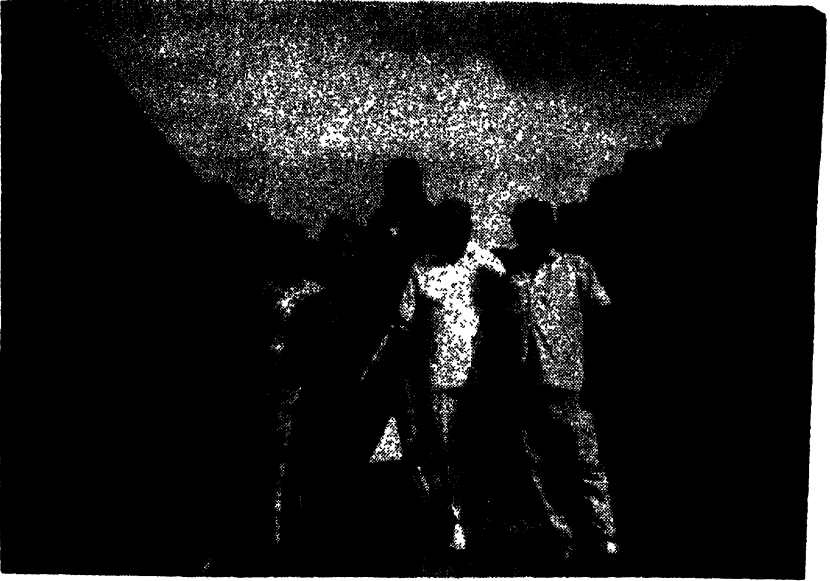
नालंदा का पता कैसे चला ?

सन् १८१२ में बकानन हैमिल्टन को बड़ा गाँव जहाँ नालंदा के खंडहर हैं वहाँ से कुछ ब्राह्मण मूर्तियाँ और कुछ बौद्ध मूर्तियाँ मिली थीं। कनिन्घम ने इन्हें नालंदा से संबंधित ठहराया। कुछ वर्ष बाद ब्रैडली ने चेत्या स्थान न० १२ की खुदाई करवाई। बीस साल तक पुरातत्त्व विभाग ने भी वहाँ खुदाई कराई जिससे नालंदा विश्वविद्यालय के खंडरात का पता चला।

श्री चैतन्य गाइड ने हमें नालंदा विश्वविद्यालय तथा मंदिरों के खंडरात दिखाए उसने बताया कि नालंदा विश्वविद्यालय सात मील लम्बी और तीन मील चौड़ी भूमि

में फैला हुआ था; किन्तु केवल एक वर्ग मील में ही इसकी खुदाई का काम हुआ जिसमें विश्वविद्यालय के दो भाग मिले। एक भाग में होस्टल कम कॉलिज था जो एक लाइन में है और दूसरे भाग में एक लाइन में भगवान बुद्ध के मंदिर मिले, ग्यारह बौद्ध विहार एक लाइन में मिले हैं। अब इन्हें ११ ब्लाक कहते हैं। जो कुछ एक ब्लाक में है वैसा ही सब ब्लाकों में है। इनकी दो मंजिल नीचे दबी हुई हैं और हम तीसरी मंजिल देखते हैं। तल पर पहली मंजिल कुमार गुप्त काल की है। सातवीं शताब्दी में पहली मंजिल को ढक कर दूसरी मंजिल हर्षवर्धन ने बनवाई थी और दूसरी मंजिल ढक कर देवपाल ने तीसरी मंजिल बनवाई।

प्रत्येक ब्लाक में एक लैक्चर हॉल है, यहाँ आचार्य पढ़ाते थे। एक ब्लैक बोर्ड था। लैक्चर हॉल में ही एक कुआँ था। लैक्चर हाल के चारों तरफ कमरे थे जिनमें विद्यार्थी तथा आचार्य रहते थे, कॉलेज आवासीय था। कमरों तथा लैक्चर हॉल के बीच में चारों तरफ बरामदा था। एक तरफ बाथरूम था जिसमें लैक्चर हॉल के कुँए से पानी जाता था। कपड़े धोने के लिए चबूतरा था। रोशनदान भी थे। ब्लाकों को समझाने के लिए सरकार ने यहां एक नक्शा बना दिया है.

मोनास्ट्रीः--- पूजाघर या मंदिर थे। खुदाई में ऐसे चार मंदिर मिले।

स्तूपाः--- यहाँ पर भगवान बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र की समाधि मिली। सारिपुत्र की मृत्यु यहीं पर हुई थी। यहाँ पर उनका स्तूपा बना। यह नालंदा विश्वविद्यालय का सबसे ऊँचा मुख्य स्तूपा है।

बुद्ध के दूसरे प्रमुख शिष्य मोर्दगलापन की मृत्यु साँची, मध्य प्रदेश में हुई थी। इसलिए उसका स्तूपा साँची में बना। ये दोनों स्तूपा सम्राट अशोक ने बनवाये। नालंदा विश्वविद्यालय में सारिपुत्र का स्तूपा ढ़ाई हज़ार साल पुराना है। यह स्तूपा सात बार बना और सात बार नष्ट हुआ; लेकिन यहाँ तीन काल का सबूत है, बाकी चार काल के स्तूपा ज़मीन में दबे हुए हैं।

वर्तमान स्तूपा १५०० साल पुराना है। यह स्तूपा भी मिट्टी में ढका हुआ था जो खुदाई करने पर प्राप्त हुआ। ये तीनों स्तूपा एक के ऊपर दूसरा और दूसरे के ऊपर तीसरा पाँचवीं सातवीं तथा नौवीं शताब्दी के बनाये हुए हैं। पाँचवीं शताब्दी में कुमारगुप्त का बनवाया हुआ है। उसने इस स्तूपा पर धनुष का चिह्न दिया है और चारों तरफ से ढक कर इसमें मूर्तियाँ बनवाईं। सातवीं शताब्दी में हर्षवर्धन ने कुमार गुप्त के बने हुए स्तूपा के ऊपर स्तूपा बनवाया और उसके ऊपर नौवीं

शतांब्दी में बंगाल के राजा देवपाल ने स्तूपा बनवाया। उसके काल की सीढ़ियाँ मिली हैं। इन तीनों के नीचे सम्राट अशोक का बनाया हुआ स्तूपा है। यदि उसे खोदा जाए तो ऊपर के तीनों स्तूपा गिर जाएँगे इसलिए खुदाई रोक दी। जो भी सम्राट स्तूपा बनवाता था वह नीचे वाले को ढक देता था इसलिए सब स्तूपा नीचे दबते चले गयें। स्तूपा के पास ड्रेन (नाली) मिली है। यह कुमारगुप्त काल की है। दूसरी नाली हर्षवर्धन के काल की है।

प्रमुख बौद्ध मंदिर

यद्यपि यहाँ पर छोटे; बड़े कई बौद्ध मंदिरों के खंडरात मिले हैं.; परन्तु इनमें सबसे प्रमुख मंदिर संख्या तीन है। यह छोटे स्तूपों से घिरा एक चकोर बोद्ध मंदिर है जो क्रमशः सात बार एक दूसरे से बड़ा बना। पहले दो मंदिर भीतर दबे हुए हैं। पिछले पाँच मंदिर दिखाई देते हैं। पाँचवा मंदिर सबसे सुंदर और सुरक्षित है। इसके चारों कोनों पर स्तूप के आकर बने हुए हैं और दीवारों पर बुद्ध और बोद्ध सत्वों की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। उत्तर की ओर तीन सीढ़ियां दिखाई पड़ती हैं जो कि पाँचवें, छटे और सातवें मंदिर की हैं।

विद्यालय में जितने भी बौद्ध मंदिर थे उनमें हर एक मंदिर के सामने या अगल-बगल में छोटे-बड़े स्तूपा बने हुए हैं। विश्वविद्यालय में जो लोग मरते थे चाहे वे विद्यार्थी हों या आचार्य उनकी राख के ऊपर एक स्तूप छोटा या बड़ा जूनियर सीनियर के दर्जे से बना दिया जाता था।

आस-पास के स्थान

पाली इंस्टीट्यूटः--- अब नालंदा में १६५१ में पालि इंस्टीट्यूट खोला गया है जिसे नव नालंदा महाविहार संस्था कहा जाता है। इसमें पालि भाषा और बौद्ध धर्म शास्त्र की उच्च शिक्षा दी जाती है। यहाँ पर जापान, फ्रांस तथा तिब्बत आदि देशों से विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं।

म्यूजियमः--- सड़क के दूसरी ओर नालंदा का म्यूजियम है। इसमें नालंदा तथा आस-पास के स्थानों से प्राप्त हुई वस्तुएँ रखी हैं।

नोटः--- नालंदा विश्वविद्यालय के खंडरात देखने के लिए टिकट लेना पड़ता है। यहाँ पर "जौंनी मेरा नाम" फिल्म के एक लोकप्रिय गाने की शूटिंग भी हुई थी।

सूर्य मंदिरः--- नालंदा के खंडहरों से मिला हुआ सूर्य मंदिर है इसमें हिंदू देवी देवता तथा बौद्ध मूर्तियाँ हैं। मंदिर में सूर्य, विष्णु, शिव-पार्वती की मूर्तियाँ हैं। पार्वती की पाँच फीट ऊँची मूर्ति बहुत ही सुंदर है। मंदिर के पास सूर्य तालाब है। यहाँ साल में दो बार सूर्यछठ का मेला लगता है।

कुंडलपुरः--- जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कुंडलपुर नालंदा के खंडहरों से दो कि० मी० दूर है। कुछ लोग इसे भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि मानते हैं। परन्तु उनकी जन्म भूमि कुंडग्राम वैशाली में है।

वैशालीः---(कुंडग्राम) यह भगवान महावीर स्वामी की वास्तविक जन्मभूमि है। उनका जन्म वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था। वैशाली मुजफ्फरपुर ज़िले के हाजीपुर से ३५ कि० मी०, पटना से मुकामे होते हुए १४७ और स्टीमर द्वारा महेन्द्र घाट होते हुए १०८ कि० मी० है। भगवान महावीर स्वामी के पिता सिद्धार्थ कुंडग्राम वैशाली के राजा थे। वैशाली में आम्रपाली नाम की अति सुंदर नगर वधु (गणिका) रहती थी जो बाद में भगवान बुद्ध की परम शिष्या हो गई थी और उसने अपना आम्रकुंज तथा सब धन बौद्ध संघ को दान कर दिया था।

बिहार शरीफः---बिहार शरीफ पटना से ६०, नालंदा से १३ और राजगीर से भी १३ कि० मी० दूर है। यह बिहार का मुख्य मुस्लिम तीर्थ है। यहाँ प्रसिद्ध सूफी संत हजरत मखदूम शाह शरीफ्फुद्दीन का मकबरा है। बिहार शरीफ मुस्लिम शासकों की राजधानी थी।

पटनाः---वर्तमान बिहार की राजधानी है। इसका प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था। वास्तव में पटना सिटी और पटना जंक्शन के बीच में ६ कि० मी० पर रेलवे लाइन के पास कुम्रहार नाम का गाँव है। यहाँ पर एक बाग में खुदाई करने पर सम्राट अशोक के महल के अवशेष मिले हैं। इसलिए यही प्राचीन पाटलिपुत्र है। वर्तमान पटना १६वीं शताब्दी में शेरशाह सूरी ने बसाया था। सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज का जन्म भी पटना में ही हुआ था। इसलिए पटना साहिब सिक्खों का प्रमुख तीर्थ-स्थान है। पटना दिल्ली से ९९२, आगरा से ७९३, बनारस से २३०, कलकत्ता से ५३३ और गया से १०० कि० मी० दूर है। नालंदा से ९०, राजगीर से १०३ और गया से १७५ कि० मी० है।

जैन धर्मावलम्बियों का पवित्र तीर्थस्थान पावापुरी

पावपुरी जैनधर्मावलम्बियों का प्रमुख तीर्थ स्थान है क्योंकि जैनियों के २४वें तीर्थंकर भगवान वर्द्धमान महावीर स्वामी ने ईसा से ४६० वर्ष पूर्व यहाँ पर परिनिर्वाण प्राप्त किया था।

भगवान वर्द्धमान महावीर स्वामी का जन्म ईसा से लगभग ६०० वर्ष पूर्व हुआ था। उनका बचपन का नाम वर्द्धमान था। उनका जन्म वैशाली के पास कुंडग्राम (आधुनिक बिहार राज्य के मुज्जफरपुर जिले) में हुआ था। कुंडग्राम में ज्ञातक नामक क्षत्रियों का गणराज्य था। वर्द्धमान के पिता का नाम सिद्धार्थ था और वे इस गणराज्य के प्रमुख थे। वर्द्धमान की माता का नाम विशला देवी था जो वैशाली गणराज्य के अधीन छोटे से लिच्छवी नामक राज्य के राजा चेतक की बहन थी। जब वर्द्धमान बड़े हुए तब उनका विवाह यशोदा नामक एक युवती से कर दिया गया उस युवती से उनकी एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका विवाह आगे चलकर जमालि नामक क्षत्रिय के साथ हुआ। जमालि वर्द्धमान महावीर के प्रधान शिष्यों में से एक थे, परन्तु कुछ लोगों का मत है कि महावीर स्वामी का विवाह हुआ ही नहीं था।

जब वर्द्धमान की आयु ३० वर्ष की थी तब उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। वर्द्धमान गृहस्थ मार्ग को छोड़कर उन्नति के मार्ग की ओर जाना चाहते थे। इसलिये उन्होंने ३० वर्ष की आयु में अपने निकट संबंधियों से आज्ञा लेकर

अपना घर त्याग दिया। उन्होंने अपने बाल कटवा कर तपस्या आरम्भ कर दी और १२ वर्ष तक कठोर तपस्या की। लोगों ने उनकी तपस्या भंग करने के लिए उनपर ईंट-पत्थर बरसाये, उन्हें लाठियों से मारा और उनकी हंसी उड़ाई; परन्तु वर्द्धमान अपनी तपस्या में लीन रहे और अन्त में १३वें वर्ष वर्द्धमान को अपनी तपस्या का फल प्राप्त हुआ । उन्हें पूर्ण सत्य का ज्ञान प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप उन्होंने "कैवल्य" पद प्राप्त कर लिया।

सत्य का ज्ञान होने पर उन्होंने सांसारिक बन्धनों को तोड़कर मोहमाया से छुटकारा पा लिया। उसी दिन से वर्द्धमान को "निर्ग्रन्थ" (बन्धन मुक्त) कहने लगे। वर्द्धमान को अपनी इन्द्रियों पर विजय पाने के कारण "जिन" कहने लगे और जिन अथवा जितेन्द्रिय बन जाने से जैन कहने लगे और वे जैन धर्म के प्रवर्त्तक बने। वे १२ वर्ष की कठोर तपस्या करने पर जुपालिका नदी के तट पर जूम्भिक ग्राम के बाहर "कैवल्य" ज्ञान की प्राप्ति होने पर (अर्हत) पूजनीय कहलाये। वर्द्धमान बिना नहाये, धोये व खाये पीये ही अपनी तपस्या में लीन रहे थे और उनके शरीर पर घाव हो गये थे; परन्तु उन्होंने कभी अपने घावों को भरने का प्रयत्न नहीं किया और न ही उनकी मरहम पट्टी की। इसलिये उन्हें महावीर कहने लगे। बनारस के राजा अश्वसैन जो इक्षवाकु वंश के थे उनके पुत्र पार्श्वनाथ जैनियों के २३ वे तीर्थंकर थे। इसलिये भगवान महावीर स्वामी जैनियों के २४ वे तीर्थंकर माने जाने लगे और उनके शिष्यों को मुनि, भिक्षु या निर्ग्रन्थ या जैन कहने लगे। उनके प्रमुख शिष्य गौतम इन्द्रभूति थे।

सत्य का ज्ञान प्राप्त हो जाने पर भगवान वर्द्धमान महावीर अपनी शिक्षाओं का प्रचार करने लगे। वे अपनी शिष्य मन्डली के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर अपने धर्म सन्देश को जनता तक पहुँचाने लगे। वे मगध, कौशल, मिथिला और काशी में भी गये।

मगध में सम्राट श्रेणिक राज्य करता था। वह भगवान महाबीर स्वामी के उपदेशों से बहुत प्रभावित हुआ और उसने अपनी सेना के साथ महावीर स्वामी

के लिये बहुत बड़ा समारोह किया। नालन्दा में वर्द्धमान महावीर स्वामी की भेंट घोषाल नाम के व्यक्ति से हुई। वे ६ वर्षों तक उसके साथ कोल्लांग नामक स्थान पर रहे। बाद में महावीर स्वामी व घोषाल में मतभेद हो गया था।

भगवान महावीर स्वामी ने पाँच सिद्धान्त (पंचयम) स्थापित किये (१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (४) अपरिग्रह (५) ब्रह्मचर्य। वे अहिंसा, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य पर बहुत ज़ोर देते थे। उनका कहना था कि इन तीन सिद्धान्तों का पालन करने से ही व्यक्ति "कैवल्य" प्राप्त कर सकता है।

मनुष्यों को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पडता है। क्रोध, माया, लोभ आदि के कारण आत्मा बन्धन में पडती है। उन बन्धनों का अन्त करके ही मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकता है। आत्मा पूर्ण व निर्विकार है, परन्तु कर्मो के कारण बन्धन में पड जाती है। उन्होंने आत्मा के अस्तित्व व उसके अमरत्व को माना है। उनके अनुसार मनुष्य कर्मों का फल भोगने के लिए बार-बार जन्म लेता है।

कर्मों के बन्धन से मुक्त होने के लिये भगवान महावीर स्वामी ने तीन रत्न बताये **(१) सम्यक् दर्शन** सभी जीवधारियों को एक समान समझना **(२) सम्यक् ज्ञान** समयक् दर्शन से ही मनुष्य को सम्यक् ज्ञान होता हे ओर मनुष्य अज्ञानता, काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार से छुटकारा पा लेता है। **(३) सम्यक् कर्म** सम्यक् दर्शन व सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति होने, पर मनुष्य सम्यक् कर्म या चरित्र की प्राप्ति के लिए यत्न करता है जो इन्द्रियों, विचारों व भाषणों पर नियंत्रण रखने से होता है। इन तीनों रूपों के प्राप्त हो जाने पर मनुष्य और उसकी आत्मा दोनों ही कर्मो के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं।

भगवान महावीर स्वामी ने कहा था कि सभी लोग न तो तप कर सकते हैं और न ही योग कर सकते हैं। इसलिये उन्होंने तप, योग व यज्ञ सन्यासियों के लिये मानकर गृहस्थियों के लिये अहिंसा, (हिंसा न करना) असत्य (झूठ न बोलना), अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (किसी वस्तु में आशक्ति न रखना) और ब्रह्मचर्य (विषय वासनाओं को त्याग देना) का उपदेश दिया। इन उपदेशों को पंच महाशील

भी कहा जाता है। उन्होंने १८ मुख्य पाप बताये हैं। हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मोह, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, दोषारोपण, चुगली, असमय में रति व संयम में अरति, निन्दा, छल, कपट, मिथ्या दर्शन आदि।

महावीर स्वामी का विश्वास था कि जीव केवल मनुष्य पशु व वनस्पति में ही नहीं; बल्कि विश्व के कण-कण में है। पत्थरों, चट्टानों, जल व अन्य वस्तुओ में भी जीव है। संसार में अनगिनत जीव हैं और सब एक समान हैं। केवल आकाश, धर्म, अधर्म, काल, (समय) स्पर्श, रस, गन्ध व वर्ण अजीव हैं। संसार जीव-अजीव के घात-प्रतिघात से ही चलता व कार्य करता है।

वे ईश्वर को सृष्टि का कर्त्ता धर्ता नहीं मानते थे। उनका कहना है कि निर्माण कर्त्ता के हाथ पैर होते हैं। वह अपने हाथों से निर्माण करके किसी वस्तु का निर्माण कर सकता है; पर ईश्वर जिसका कोई रूप नहीं, वह सृष्टि का कर्त्ता धर्ता कभी नहीं हो सकता। यह संसार शाश्वत, अन्नत, अनादि स्वाधारित है। वह ईश्वर को सर्वज्ञ तथा वीतराग मानते हैं।

मनुष्य की आत्मा में जो कुछ महान् है तथा जो शक्तिवान् नैतिकता है, वही भगवान है। जैनियों का कहना है कि सृष्टि को चलाने के लिये परमेश्वर जैसी किसी आलौकिक शक्ति की आवश्यकता नहीं। वे अपने २४ तीर्थंकरों को ही परमेश्वर मानते हैं। उनके मन्दिरों में देवी देवताओं की बजाय तीर्थंकरों की ही पूजा होती है।

महावीर स्वामी ने कठिन तपस्या पर भी बहुत ज़ोर दिया है। जैन साधु इन्द्रियों को वश में करने के लिये तपस्या को अपूर्व साधन मानते हैं। अनशन व्रत धारण करके प्राण त्यागना जैन धर्म की सबसे उत्तम तपस्या है। उस समय ऐसे मनुष्यों का उल्लेख आता है जो नंगी चट्टानों पर बैठे हुए असीम वेदना सहन करते थे और अन्त में अपने प्राणों का त्याग करते थे। महावीर स्वामी के अनुसार गृहस्थियों को निर्वाण प्राप्त नहीं हो सकता। निर्वाण प्राप्त करने के लिये सांसारिक बन्धनों का यहाँ तक कि वस्त्रों का भी परित्याग आवश्यक है।

भगवान महावीर स्वामी ने ३० वर्षों तक अपने धर्म का प्रचार किया और अन्त में ७२ वर्ष की अवस्था में पावापुरी में परिनिर्वाण प्राप्त किया। यह स्थान अब जैन लोगों का प्रमुख तीर्थ स्थान बन गया है।

महावीर स्वामी के निर्वाण प्राप्त करने के पश्चात् सुधर्मन जैनियों का प्रधान बना। चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में जब भयंकर अकाल पड़ा तब आधे से अधिक जेनी मगध छोडकर चले गये और जब १२ वर्ष के बाद अकाल खत्म हुआ तब वे मगध में वापिस आये। उन्होंने मगध में आकर उन भिक्षुओं की निन्दा की जिन्होंने उनका साथ नहीं दिया था और जैन धर्म दो भागों में बँट गया।

इन दोनों दलों का मतभेद दूर करने के लिए पाटलि-पुत्र में एक जेन सभा बुलाई गई; पर जो भिक्षु दक्षिण से लौटे थे उन्होंने इस सभा मे भाग नहीं लिया। इसलिये पाटलिपुत्र की जैन सभा ने जैन सिद्धान्तों के एक भाग को स्वीकार कर लिया। इस सभा में भाग लेने वाले श्वेताम्बर कहलाये और उन्होंने श्वेताम्बर के सिद्धान्तों की उत्पत्ति की। जिन्होंने इस सभा में भाग नहीं लिया वे दिगम्बर कहलाये। दिगम्बर मुनि वस्त्र धारण नहीं करते। वे बिल्कुल नंगे रहते हैं। उनके मन्दिरों में भी नंगी मूर्तियों की पूजा होती है; लेकिन श्वेताम्बर सम्प्रदाय का उनके इन विचारों से मेल नहीं खाता। वे सफ़ेद वस्त्र धारण करते हें तथा उन्होंने नियमों की कटोग्ता भी कम कर दी है।

पावापुरी बिहार शरीफ रेलवे स्टेशन से लगभग १५ कि० मी०, नालन्दा से लगभग २४ कि० मी० तथा राजगीर से ३७ कि० मी० हे। इसका प्राचीन नाम 'अदायापुरी' था। हम दिनांक १२-१०-६२ को राजगीर तथा नालन्दा देखकर सायंकाल पावापुरी श्री दिनेश जी की जीप द्वारा पहुँचे थे।

दर्शनीय स्थान

पावापुरी में जैनियों के कई मन्दिर हैं। इनमें पाँच मुख्य मन्दिर हैं।

(१) जल मन्दिर

जल मन्दिर यहाँ का मुख्य मन्दिर है। यहाँ पर भगवान महावीर स्वामी का दाह संस्कार हुआ था। महावीर स्वामी का सारा शरीर कपूर बनकर उड़ गया था

केवल बाल और नाखून का ही अग्नि संस्कार किया गया। संस्कार के समय इतने लोग एकत्रित हुए कि राख उठाते-उठाते मिट्टी उठाने लगे। इससे एक छोटे तालाब का रूप बन गया। जिस को अब बड़ा तालाब बनवाया गया जो ८५ बीघे में है और इसके बीच कमल सरोवर पर एक भव्य मन्दिर बनाया गया जो जल मन्दिर नाम से विख्यात है।

(२) श्वेताम्बर जैन मन्दिर

यह मन्दिर गाँव के अन्दर है। भगवान महावीर स्वामी की इस स्थान पर मृत्यु हुई थी। यहां से भगवान महाबीर स्वामी के पार्थिव शरीर को दाह संस्कार करने के लिये जल मन्दिर के स्थान पर लाये थे।

(३) समोसरन मन्दिर

भगवान महावीर स्वामी इस स्थान पर उपदेश दिया करते थे। उन्होंने इसी स्थान पर प्रथम और अन्तिम उपदेश दिया था। अन्तिम उपदेश देकर वे यहाँ से श्वेताम्बर जैन मन्दिर में चले गये थे। जहाँ उनका शरीरान्त हो गया था।

(४) दिगम्बर जैन मन्दिर

इस स्थान पर भगवान महावीर स्वामी दिगम्बर रूप में ध्यान किया करते थे।

(५) दादा गुरु देव का मन्दिर

इस मन्दिर को दादा बाड़ी मन्दिर भी बोलते हैं। यहाँ महावीर स्वामी के बताये गये रास्ते पर चलने वाले गुरुओं का मन्दिर है। इस में भगवान महावीर स्वामी के प्रथम गणधर, पंचम गणधर श्री सुधर्मा स्वामी तथा भगवान वर्द्धमान तीर्थंकर की मूर्तियाँ हैं। यह मन्दिर श्री जैन श्वेताम्बर समवशरण तीर्थ पावापुरी (समोसरण मन्दिर) के निकट है। दोनों मन्दिर एक ही जगह में हैं। यह भगवान महावीर स्वामी का आराधना मन्दिर भी है।

भगवान महावीर स्वामी जैन धर्म के २४ वें तथा अन्तिम तीर्थंकर माने जाते हैं। इस धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव थे। पावापुरी में सब मन्दिर भगवान महावीर स्वामी के हैं। दीपावली पर सारे भारत से जैन धर्म के मानने वाले लोग पावापुरी की यात्रा करने आते हैं; क्योंकि दीपावली को ही महावीर स्वामी ने परिनिर्वाण प्राप्त किया था। जैनियों का कहना है कि दीपावली का त्योहार महावीर स्वामी के परिनिर्वाण की याद में मनाया जाता है।

नोटः---"१" पावापुरी के जैन मन्दिरों की जानकारी श्री मनोज कुमार मालाकार ने दी। इनके पिताजी श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में कार्यरत हैं तथा श्री मनोज कुमार इन्टर क्लास में पढ़ते हैं।

"२" गया, बोधगया, राजगीर, पावापुरी तथा नालन्दा की जानकारी स्थानीय लोगों से ली है और कुछ प्रमुख स्थानों को देखा है।

बिहार शरीफ निकट ही था; परन्तु अधिक रात हो जाने के कारण वहाँ के दर्शन नहीं कर सके।

"३" उपरोक्त सभी स्थान बिहार में हैं।

"४" रांची, गया, बोधगया, राजगीर, नालन्दा, तथा पावापुरी की यात्राओं का श्रेय श्री कल्याण बैनर्जी, ईशानी बैनर्जी, श्री एवम श्रीमती व परिवार के सदस्य श्री बिनोद कुमार लाल (गया) तथा श्री दिनेश जी नवादा निवासी को जाता है। यह सब स्थान देखकर हम दिनांक १४-१०-६२ को डीलक्स गाड़ी से प्रातः नई दिल्ली पहुँच गए थे।

बैजू के नाथ---बैजनाथ (बैद्यनाथ धाम देवघर) बिहार

देवघर को ही वैद्यनाथ धाम कहा जाता है। यह बिहार प्रान्त में है तथा द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह ५१ शाक्तिपीठों में से भी एक है (यहाँ सती जी का हृदय गिरा था। वैसे दो अन्य वैद्यनाथ भी हैं एक परली वैद्यनाथ (मध्य प्रदेश) तथा दूसरा बैजनाथ पपरोला (कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश); परन्तु प्राचीन वैद्यनाथ देवघर बिहार ही है। यह आंडल, पटना रेलवे लाइन पर चितरंजन से ८६ कि० मी० दूर जसडीह जंकशन के निकट है। जसडीह से एक ब्राँच लाइन वैद्यनाथ धाम जाती है जो लगभग ६ कि० मी० पर है। आटोरिक्शा भी देवघर जाने के लिये मिलती हैं। चितरंजन, शान्तिनिकेतन, तारापीठ, रामपुरहट, दुमका आदि से सीधी बसें भी देवघर जाती हैं।

यहाँ पर ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें हैं जिनमें स्टेशन के पास हजारीमल दूध वाले की धर्मशाला, मन्दिर के पास मुखराम लक्ष्मी नारायण की धर्मशाला, शिवगंगा पर हरिकिशन दास भट्ठर की धर्मशाला, बड़े बाज़ार में रामचन्द्र गोयंका की धर्मशाला, चौक में शंकर धर्मशाला, ज्ञान गुदड़ी के पास ताराचन्द रामनाथ पूना वाले की धर्मशाला तथा मन्दिर के पास मारवाड़ी कांवर संघ देवघर धर्मशाला है। हम इसी धर्मशाला में ठहरे थे। यहाँ पर यात्रियों के ठहरने की बहुत अच्छी व्यवस्था है। धर्मशाला में ४६ फ्लैट हैं जिनमें लैटरिन बाथरूम अटैच हैं। दो दिन ठहरने के लिये चन्दे के रूप में १०१ रुपया लिया जाता है। एक फ्लैट में ८-१० व्यक्तियों तक आराम से ठहर सकते हैं। फ्लैट में बड़े-बड़े रईसों की बैठकों की तरह बहुत मोटा लम्बा चौड़ा गद्दा बिछा हुआ है। सफ़ेद चादर तथा गोल तकिये लगे हुए

है। बिजली, पानी तथा पखे का पूरा प्रबन्ध है। ५१ जनरल रूम है जिनमे लेटरिन बाथरूम कॉमन है। जो हर फ्लोर पर है। प्रत्येक रूम मे पख लगे है। यात्री अपना बिछावन बिछा कर आराम करते है। ३१ रुपये चदे के रूप मे देकर ३ दिन के लिये कमरा मिल जाता है। एक कमरे मे १०-१५ आदमी ठहर सकते है।

जनरल ब्लाक मे दो बडे-बडे हॉल है जिनमे १०० व्यक्ति आ सकते है। ३ दिन ठहरने वाले से २०१ रुपये और एक दिन ठहरने वाले से १०१ रुपये चद के रूप मे लिया जाता है। बिजली, पानी, नौकर आदि की सब व्यवस्था नि शुल्क होती है। बिजली चली जाने पर जनरटर से बिजली दी जाती है। धर्मशाला मे लगभग २२ कर्मचारी है जो सब व्यवस्था करते है और सब वतन भोगी है। दो हजार रुपये से लेकर ५०० रुपये तक वतन दिया जाता है। कर्मचारियो के नाम इस प्रकार है--- मैनेजर श्री घनश्याम शर्मा, असिस्टेट मेनेजर श्री ओम प्रकाश शर्मा, बुकिग क्लर्क श्री गणेश नारायण तथा श्री रामचन्द्र सिह, स्टोर कीपर श्री बाबू लाल जी सर्राफ, फ्लैट इचार्ज श्री नरेन्द्र कुमार, सफाई इचार्ज श्री घनश्याम मिश्र, भवन निर्माण इचार्ज श्री तरलोकी राम मिश्र, बिजली, पानी एवम् जनरटर इचार्ज श्री जयप्रकाश चौधरी, दरबान श्री कार्तिक मिश्र, श्री वसी सिह, श्री लक्ष्मण सिह, श्री अरुण सिह, श्री जीतन है। सफाई मे श्री बामोसा, शामित मडल, सानेराम, हेमराम, मुनाल हेमराम, भीम रमण, नरेश रमण, श्री अयोध्या यादव, श्री सजीव कुमार। स्वीपर अमर जमादार, अर्जुन जमादार, नरेश जमादार और गणश जमादार आदि है।

नोटः--- जिन लोगो के पास पैसा नही है उनको भी धर्मशाला मे नि शुल्क ठहरा लेते है लेकिन रजिस्टर म एटरी जरूर करते है।

मारवाडी कावर सघ देवघर धर्मशाला कार्यकारणी समिति १९९२-९३ के उपाध्यक्ष श्री त्रिलोक चन्द बाजला है जो अनेक सस्थाओ के फाउडर तथा सैक्रेटरी भी है जिनमे गीता देवी बालविद्यालय (फाउडर और सैक्रेटरी) गुरुकुल महाविद्यालय (प्रेजिडैट) हिन्दी विद्यापीठ (खजाची) रमादेवी बाजला महिला महाविद्यालय (लाखो रुपये दान दिये) मारवाडी कावरसघ (फाउडर, वाइस प्रेजिडैट) गौशाला (सैक्रेटरी ७ साल के लिये) बी० एन० झा० मारवाडी कॉलेज (प्रैजिडैट) बी० एन० झा० सस्कृत स्कूल (सैक्रेटरी) है।

हम सायकाल श्री त्रिलोक चन्द बाजला जी के दर्शन करने उनके निवास स्थान जमना निवास, पुराना मीना बाजार देवघर गये, परन्तु श्री बाजला जी देवघर से

बाहर गये हुए थे इस लिये उनसे मुलाकात नहीं हुई। श्री बाजला जी के सुपुत्र श्री रमेश कुमार बाजला जी से मुलाकात हुई जो एक बहुत शिष्ट, विद्वान्, उदारशील, सज्जन तथा अतिथि सत्कार करने वाले व्यक्ति हैं। उनसे मुलाकात करके मन प्रसन्न हो गया। श्री सोनाराम पंडा मुझे उनके निवास स्थान पर ले गया था।

बैद्यनाथ महात्म्य

वैद्यनाथ 'सिद्धपीठ' 'शक्तिपीठ'' तथा द्वादश ज्योतिर्लिंगों'' में से एक है। सिद्धपीठ उस स्थान को कहा जाता है जहाँ तपस्या, योग और तांत्रिक प्रयोग शीघ्र सिद्ध होते हैं या जहाँ योग अथवा तप से सिद्धि प्राप्त व्यक्ति, ज्ञानी, भक्त. महात्मा, तपस्वी आदि रहते हैं। सिद्धपीठ देवताओं का निवास स्थान कहलाता है। सिद्धपीठ को सिद्धभूमि, सिद्धक्षेत्र और सिद्ध आश्रम भी कहते हैं।

देवघर (वैद्यनाथ धाम) में महाकाल के साथ महाकाली प्रत्यक्ष रूप में रहती हैं। कल्याणकारी वटुक भैरव भगवान सूर्यदेव विघ्नविनाशक गणेशजी भी यहाँ निवास करते हैं। यहाँ का सामान्य जल भी गंगा जल के समान है और मिट्टी स्वर्ण के समान है। यहाँ साक्षात् कामनालिंग वैद्यनाथ भगवान शिव विद्यमान हैं जो अपने भक्तों की कामना शीघ्र पूरी करते हैं। देवताओं का निवास स्थान होने के कारण यह सर्वोत्कृष्ट सिद्धपीठ है।

शक्तिपीठ

शक्तिपीठ वे स्थान हैं जहाँ पर सती जी के अंग गिरे थे। सती जी ब्राह्मणों के अधिपति दक्ष की पुत्री थीं। दक्ष ने उनका विवाह शिव से किया था। एक बार भृगु ऋषि के ब्रह्मयज्ञ में ब्रह्मा, विष्णु और शिव बैठे हुए थे। उस यज्ञ में दक्ष भी आये। दक्ष को देख कर ब्रह्मा, विष्णु और शिव बैठे ही रहे। उन्होंने खड़े होकर दक्ष का स्वागत नहीं किया। दक्ष, शिव जो कि उनके दामाद थे, को भी बैठे हुए देखकर क्रोध में आ गये और अपना अपमान समझकर भृगु से शिव को यज्ञ में भाग न देने के लिये कहा; किन्तु भृगु ने दक्ष की यह बात नहीं मानी। इस लिये दक्ष ने अपने घर जाकर एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया और इस यज्ञ में सब देवताओं को तथा ऋषि मुनियों को तो आमंत्रित किया; परन्तु अपने दामाद शिव और पुत्री सती को यज्ञ में नहीं बुलाया। सती बिना बुलाये ही जिद्द करके अकेली अपने पिता के घर यज्ञ मंडप में चली गई और यज्ञ में शिव का स्थान न देखकर अपने पिता से इसका कारण पूछा। दक्ष ने कटाक्ष करके कहा कि मैंने देवयज्ञ

किया है प्रेतयज्ञ नहीं। देवयज्ञ में प्रेत सम्मिलित नहीं होते। सती ने कहा कि यदि तुम यज्ञ में शिव की पूजा नहीं करोगे तो यज्ञ में विघ्न पड जायेगा। इस पर दक्ष ने क्रोध में आकर शिव की बहुत निन्दा की। सती अपने पति शिव की निन्दा सुनकर बहुत दुःखी हुई और यज्ञ के अग्निकुड में कूद पडी। जब शिव को इस बात का पता चला तो उनको भयंकर क्रोध उत्पन्न हुआ और उन्होंने अपनी जटा का एक बाल उखाड कर वीरभद्र को उत्पन्न किया और उसे दक्ष के यज्ञ का नाश करने का आदेश दिया। वीरभद्र यज्ञ का नाश करके शिव के सामने उपस्थित हुआ। शिव ने यज्ञस्थल पर जाकर सती के शरीर को अपने कधे पर रख लिया और उन्हे ऐसा मोह उत्पन्न हुआ कि वे सती के शरीर को अपने कधे पर लिये हुए समस्त भूमडल में घूमने लगे। उसी समय तारकासुर दैत्य ने देवताओं को सताना आरम्भ कर दिया। देवताओं ने भगवान विष्णु के पास जाकर प्रर्थना की कि शिव देवताओ की रक्षा करते थे लेकिन इस समय सती के शरीर को लिये हुए भूमडल मे घूम रहे है। इस लिये कोई ऐसा उपाय कीजिये कि सती के शरीर की गति हो और शिव देवताओ की रक्षा के कार्यो में संलग्न हो। भगवान विष्णु ने देवताओ की बात स्वीकार करके अपने सुदर्शन चक्र द्वारा शिव के कधे पर स्थित सती के शरीर के टुकडे टुकडे कर दिये। जहॉ जहॉ सती के अग गिरे वहॉ शक्तिपीठ बन जो ५१ स्थान माने गये हैं। कुछ लोग ५३ शक्तिपीठ बताते हें परन्तु ५१ शक्तिपीठ ही माने गये है। (शक्तिपीठ प्राक्कथन में देखें)।

देवघर बेद्यनाथधाम में सती जी का हृदय गिरा था। इसलिये यह ५१ शक्तिपीटो में से एक हे और हृदय-पीठ बैद्यनाथ धाम कहलाता है। पीठ की देवी का नाम जय दुर्गा तथा शिव-बैद्यनाथ हे।

देवघर बैद्यनाथ धाम १२ ज्योतिर्लिगों में से एक है। ज्योतिर्लिग शब्द ज्योति एवम् लिंग का समास (जोड) है। ज्योति का अर्थ प्रकाश और लिग का अर्थ चिह्न होता है। कहा जाता है कि ब्रह्मा जी और विष्णु भगवान मे इस बात पर झगडा हो गया था कि उन दोनों में कौन बडा है। उन दोनों के झगड़े के दोरान एक शिवलिंग रूप ज्वाला (ज्योति) प्रकट हुई। ब्रह्मा ने उस ज्यौति के ऊपरी भाग का पता लगाने के लिये हंस का रूप धारण किया और विष्णु ने नीचे के भाग का पता लगाने के लिये वाराह का रूप धारण किया। बहुत प्रयत्न करने पर भी ब्रह्मा और विष्णु को उस लिंग के अंत का पता नहीं चला और उस शिवलिंग की ज्योति सारे संसार

में व्याप्त हो गई। ब्रह्मा, विष्णु ने हार मान कर शिव को सब से बड़ा माना और तभी से लिंग रूप में शिव पूजा होने लगी। प्राचीन काल में शिव भक्तों ने जिस किसी स्थान पर तपस्या करके अपनी भक्ति द्वारा शिव लिंग रूप में ज्योति का अनुभव किया वहीं पर ज्योतिर्लिंग की स्थापना हुई। भारत में ऐसे १२ स्थान माने गये हैं जहाँ पर ज्योतिर्लिंग की स्थापना हुई जिन्हें १२ (द्वादश) ज्योतिर्लिंग कहा जाता है। ये स्थान निम्नलिखित हैं :---

(१) **सोमनाथः** सौराष्ट्र (गुजरात)

(२) **मल्लिकार्जुनः** (मद्रास) (तमिलनाडु) प्रान्त के कृष्णा ज़िले में कृष्णा नदी के तट पर यह ज्योतिर्लिंग हैं। इसे दक्षिण का कैलाश कहा जाता है।

(३) **महाकालः** यह मध्यप्रदेश में क्षिप्रा नदी के तट पर उज्जैन नगर में है।

(४) **ओंकार-अमरेश्वरः** उज्जैन से खंडवा जाने वाली पश्चिम रेलवे की छोटी लाइन पर ओंकारेश्वर रोड स्टेशन है। यहाँ से ओंकारेश्वर मन्दिर ७ मील दूर है।

(५) **श्री केदार नाथः** यह उत्तर प्रदेश के उत्तराखंड में हिमालय पर्वत पर है। हरिद्वार से १५० मील तथा ऋषिकेश से १३२ मील है। समुद्र तट से ११५० फुट ऊपर है।

(६) **भीम शंकरः** यह बम्बई प्रदेश में है। नासिक से १२० मील दूर, भीमा नदी के किनारे पर है।

(७) **विश्वनाथः** यह उत्तर प्रदेश में वाराणसी में है। गादोलिया चौक से गली के अन्दर मन्दिर का रास्ता है।

(८) **त्रयम्बकः** बम्बई प्रान्त में नासिक पंचवटी से १८ मील दूर गोदावरी के उद्‌गम स्थान ब्रह्मगिरि पहाड़ी के निकट है। इसी जगह सूर्पनखा की नाक काटी गई थी।

(९) **वैद्यनाथः** यह बिहार प्रान्त में जसडीह रेलवे जंकशन से ६ कि० मी० दूर है। इसे रावणेश्वर वैद्यनाथ भी कहते हैं। पुराणों के अनुसार यह चिता भूमि में स्थित है। कभी किसी जमाने में यहाँ जंगल ही जंगल था और हिंसक पशु तथा जंगली हाथियों के झुंड के झुंड रहते थे और हरितकी के वृक्ष थे इस लिये इस क्षेत्र का नाम हरितकी वन कहा जाता था जहाँ पर वैद्यनाथ शिवलिंग स्थापित है, यह भूमि चिता समान चैतन्य हृदयपीठ है। इस क्षेत्र को चिता भूमि की संज्ञा दी गई

है। कहा जाता है कि मन्दिर के आसपास विशेषकर उत्तर दिशा की ओर से अब भी राख और अस्थियों के अवशेष निकलते हैं। देवघर चिता भूमि कभी घोर जंगल के बीच में थी और साधकों के लिये कठिन साधना भूमि थी। बाबा वामाखेपा भी यहाँ साधना करने आये थे; परन्तु उन्होंने तारापीठ की श्मशान भूमि में ही साधना की औरं वहीं सिद्धि प्राप्त की। बैद्यनाथ शक्तिपीठ का श्मशान बहुत जागृत और साधको के लिए कठिन भूमि है। यहाँ साधकों को सफलता नहीं मिलती ऐसा सुना गया है। भगवान शिव का एक नाम 'भूतेश' भी है और भूतप्रेत का निवास शमशान या चिता भूमि में ही होता है।

(१०) नागेश्वरः यह गुजरात राज्य के अन्तर्गत हे और गोमती द्वारका से इशान कोण में १२ मील दूर है। इसे दारुका वन भी कहते हैं। यह द्वारका जाते हुए २५ कि० मी० उत्तर पूर्व में है। द्वारका से नागेश्वर जाने के लिये बस तथा घोड़ तांगे मिलते हैं। राजकोट (गुजरात) रेलवे स्टेशन से द्वारका जाते हैं।

(११) रामेश्वरम्ः मद्रास प्रांत के रामनाथम् या रामनन्द ज़िले में एक द्वीप है। ३१ मील लम्बा और ७ मील चौड़ा रामेश्वरम् द्वीप है। पुराणों में इसे 'गन्ध मादम' कहा गया है। रामेश्वरम् मन्दिर द्वीप के पूर्वी तट पर है। श्रीराम के नाम पर रामेश्वरम् कहा गया है।

(१२) घुष्णेश्वरः इसे घृष्णेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। यह एलोरा की गुफाओं के पास है। महाराष्ट्र राज्य में दौलताबाद स्टेशन से १२ मील दूर वेरुल गाँव के पास है। मनमाड़ से १३५ कि० मी० पर औरंगाबाद है ओर औरंगाबाद से ३० कि० मी० पर बस द्वारा घुष्णेश्वर जाते हैं। यह महाराष्ट्र प्रान्त में है।

रावणेश्वर बैद्यनाथ

रावणेश्वर वैद्यनाथ असली नाम है। कहा जाता है कि रावण ने विचार किया कि यदि भगवान शिव लंका में निवास करें तो मेरा राज्य सदा सम्पन्न तथा स्थिर रहेगा वह शिव का बड़ा भक्त था और शिव की याद आते ही वह उनको लंका में लाने के लिए अधीर हो गया। वह उसी समय कैलाश पर्वत पर जाने के लिए तैयार हो गया और नंगे पांव ही प्रस्थान किया। मार्ग में हिंसक जीव जन्तुओं, घने वनों, नदी-नालों तथा पर्वत मालाओं को पार करता हुआ हरिद्वार में पवित्र गंगा के तट पर पहुँचा। वह पवित्र गंगा में स्नान तथा स्तुति करके कैलाश पर्वत की

ओर बढ़ा और कैलाश की स्तुति करके भगवान शिव के दर्शन करने के लिये उनके निवास स्थान पर गया। प्रथम बार में उसे दर्शन नहीं हुए। उसने निश्चय किया कि जब तक मुझे शिव के दर्शन नहीं होंगे तब तक मैं भोजन, शयन तथा वार्तालाप आदि कुछ नहीं करूँगा। ऐसा निश्चय करके वह शिव जी के ध्यान मे मग्न हो गया। वह अपने हृदय पट पर शिव की मूर्ति रखकर ध्यान रहित हुआ और भगवान शिव के द्वार पर पहुँचा, उस समय नन्दी द्वार पर पहरा दे रहा था। जगदम्बे पार्वती प्रणय-कुपिता हो अन्य शिला पर बैठी थी। रावण जैसे ही अन्दर जाने लगा, नन्दी ने उसे रोक दिया। रावण ने गुस्से में आकर नन्दी को नन्दन वन में फेंक दिया और अपने भुजदंड से केलाश पर्वत को हिलाने लगा। कैलाश पर्वत के हिलने से पार्वती जी डर गईं और शिवजी की गोद में आ गिरीं। शिव जी प्रसन्न हो गये और अपने अगूठे से कैलाश पर्वत को दबा कर स्थिर किया। रावण अपनी शक्ति का घमंड भूल गया और बहुत लज्जित हुआ। उसने अन्दर प्रवेश करके शिवजी के सामने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि हे प्रभु, आपके दर्शनों के लिये आया था। नन्दी ने अन्दर आने से रोक दिया तो मैंने अपना अपमान समझकर उसे नन्दन वन में फेंक दिया और केलाश पर्वत को हिला डाला। मैं अपराधी हूँ, आप जो दण्ड देना चाहें, उसे भुगतने के लिये तैयार हूँ। रावण के इस प्रकार सत्य वचन सुनकर शिव प्रसन्न हुए और वरदान माँगने के लिये कहा। रावण ने कहा हे प्रभु, यदि मुझ पर प्रसन्न होकर वरदान देते हो तो आप मेरे साथ लंका में चल कर सदा वहीं पर रहें। शिव ने स्वीकार करके उसे एक कामलिंग दिया और कहा कि यदि रास्ते में तुम ने इस काम लिंग को भूमि पर रख दिया तो इसे वहाँ से तुम, या कोई भी देवता या दैत्य उठा नहीं सकेगा और तुम इसे लंका नहीं ले जा सकोगे। यह सुनकर रावण ने अपने दिल में प्रसन्न होकर वह कामलिंग उठाना चाहा कि उसी समय पार्वती जी ने कहा कि पहले तुम्हें आचमन करना चाहिये; क्योंकि बिना आचमन किये शिव लिंग स्पर्श करने से आयु, विद्या तथा बल नष्ट हो जाता है। रावण ने पार्वती जी की बात मान ली। पार्वती जी ने रावण को आचमन के लिये जल दिया जो मेवाभी मंत्रित था अर्थात् उसमें वरुण देवता का वास था।

तत्पश्चात् रावण आचमन करके उस कामलिंग को लेकर चल दिया; परन्तु रास्ते में हरितकी वन (जहाँ अब वैद्यनाथ धाम है) में पहुँचकर लघुशंका से पीड़ित हुआ। वह कामलिंग को पृथ्वी पर नहीं रख सकता था। उसी समय विष्णु भगवान एक ब्राह्मण का भेष बना कर वहाँ आये। रावण ने कामलिंग उनके हाथ में दे दिया

और एक ओर जाकर लघुशंका करने लगा। पार्वती जी ने उसे मेवाभी मंत्रित जल पिलाया था जिससे उसके पेट में जल भर गया था और वह बहुत देर तक लघुशंका करता रहा। इतने में विष्णु भगवान ने कामलिंग को हरितकी वन मे भूमि पर स्थापित कर दिया था। रावण ने मूत्र त्याग करके लौटने पर कामलिंग को भूमि पर स्थापित देखा तथा वह व्यक्ति भी वहाँ नहीं था। रावण लिंग को उठाने लगा; परन्तु पूरा बल लगाने पर भी नहीं उठा सका। तब रावण ने शिव का घोर तप किया और अपने नो सिर काट कर हवन में होम कर दिये। रावण की ऐसी घोर तपस्या देखकर शिवजी प्रकट हुए और कहा कि हे रावण तुमने मेरा वचन नहीं माना और कामलिग पृथ्वी पर रख दिया। अब में उठ नहीं सकता। मै यहीं पर तुम्हारें नाम मे स्थिर रहूँगा। इसलिये बैद्यनाथ धाम का असली नाम रावणेश्वर बैद्यनाथ धाम है।

बैजु के नाथ बैजनाथ

कहा जाता हे कि प्राचीन समय में ब्राह्मणो का एक दल इस पवित्र स्थान पर आया और उन्होंने जंगलों को साफ करके शिवालय के निकट जलाशय के किनारे अपना निवास स्थान बनाया। कुछ संथाल भी यहॉ रहते थे। ब्राह्मण अपने अभीष्ट देव की पूजा करते थे। धनवान होने पर ब्राह्मण आलसी हो गये। बैजु नामक भील जो संथालों का राजा था, ने सोचा कि अब ब्राह्मणों के देवता का प्रभाव नहीं रहा है, इसलिये वह प्रतिदिन देव मूर्ति पर डंडा मार कर भोजन करने तथा जल पीने लगा। एक दिन वन में उसकी गाय खो गई। गाय को खोजते-खोजते संध्या हो गई। गाय को घर लाने के बाद वह भोजन करने बैठा कि उसे याद आया कि आज तो शिव पर डंडा मारा ही नहीं। याद आते ही वह भूखा प्यासा उठकर शिव पर डंडा मारने के लिये चल दिया। उसके इस प्रबल संकल्प को देख कर शिव प्रसन्न हुए और प्रकट होकर उसे दर्शन दिये तथा वरदान माँगने के लिये कहा। बैजु ने कहा कि हे प्रभु, मुझे धन की कोई इच्छा नहीं मेरे पास बहुत धन है और मैं संथालों का राजा भी हूँ। मेरी तो केवल यह इच्छा है कि लोग आपके नाम के साथ मुझे भी पुकारें तब से इस स्थान का नाम बैजु के नाथ बैजनाथ हुआ।

देवघर के पंडे

बैद्यनाथ धाम में लगभग दस-पन्द्रह हज़ार घर पंडों के हैं जो यात्रियों के मित्र, संरक्षक, सहायक, तथा गाइड हैं। वे यात्रियों को सम्पूर्ण जानकारी देते हैं और अपना

पूरा सहयोग देते हैं। उनका ठहरने का प्रबन्ध कराते हैं। यदि यात्री स्वयम् अपना खाना बनाना चाहें तो वे उनको जिस सामान की तथा बर्तनों आदि की आवश्यकता होती है वह देते हैं। यदि किसी यात्री के पास पैसा खत्म हो जाये तो वे उनको पैसा भी देते हैं। वास्तव में यहाँ के पंडे घर के सदस्यों की तरह होते हैं और बहुत सच्चे, ईमानदार, धार्मिक, नैतिक, श्रद्धालु, भक्त, नियमों का पालन करने वाले तथा इच्छा रहित हैं। यहाँ के नियम निराले हैं। महीने में ३० दिन होते हैं। और ३० दिनों में पूजा पाठ के प्रतिदिन अलग-अलग नियम निभाते हैं। इनमें किसी प्रकार का आधुनिकीकरण नहीं आया है। ये प्राचीन ऋषि मुनियों जैसा नियमपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। यद्यपि ये लोग उच्च कोटि के विद्वान्, लेखक, कवि तथा समाज सेवी है तथापि इन में किसी प्रकार का घमण्ड, लालच या स्वार्थ नहीं है तथा यात्रियों को दिल खोलकर अतिथि सत्कार देते हैं।

मेरी यहाँ पर बहुत विद्वानों तथा पंडों से वार्त्तालाप हुई। जिन्होंने मुझे अपना समझ कर मेरी पूर्ण रूप से सहायता की। यहाँ पर यदि कोई व्यक्ति कुछ भी चीज़ भले ही पान या चाय ले तो; तुरन्त हाथ धोता है। यहाँ अद्‌भुत नियमावली का पालन करने वाले अद्‌भुत लोगों से मेरा यह अद्‌भुत संयोग था।

हमारा पंडा श्री सोनाराम कितना मृदुल स्वभाव का, स्वच्छ, पवित्र, धर्मात्मा तथा सौम्य रस से परिपूर्ण, त्याग की मूर्ति के समान है। किस प्रकार उसने दो दिन मुझे अपने साथ रखकर बैद्यनाथ धाम के दर्शन कराये तथा यहाँ की विख्यात विभूतियों से मुलाकात कराई।

दर्शनीय स्थान

भगवान शिव का मुख्य मन्दिर

बैद्यनाथ मन्दिर के प्रांगण के बीच में भगवान शिव का मुख्य मन्दिर है। यह बहुत विशाल तथा भव्य मन्दिर है। कहा जाता है कि इसे विश्वकर्मा ने बनाया था। यही यहाँ का ज्योतिर्लिंग का स्थान है। शिवलिंग की ऊँचाई बहुत कम है। शिवलिंग भूमि से केवल ८ ऊंगल है और फैले हुए रूप में है। मन्दिर के ऊपर एक विशाल स्वर्ण कलश है। इस कलश से पहले यहाँ पर ताम्र कलश था जो अब स्वर्ण कलश के भीतर है। मन्दिर के भीतरी परकोष्ठ में शिखर के नीचे एक चमकता हुआ रत्न है जिसे चन्द्रकान्त मणि कहते हैं। इस रत्न का पता १९६२ ई० में उस समय लगा जब शिवलिंग के ऊपर का चन्दवा खोला गया और ऊपर सर्च लाईट फेंकी गई।

तब देखा गया कि चतुपशिव के आकार में अष्टदल कमल बना हुआ है और उसके बीच में यह लाल चमकता हुआ रत्न है। इसमें से प्रत्येक मिनट पर एक शीतल जल की बूंद शिव के मस्तक पर पड़ती है। कहा जाता है कि यह मणि रत्न धन कुबेर की राजधानी अलकापुरी में थी। रावण ने वहाँ से इस मणि को लाकर इस मन्दिर में जड़ित किया।

मन्दिर में एक बहुत बड़ा छिद्र युक्त चाँदी का अभिषेक कलश है जिसे त्रिपदी पर रख कर गर्मियों में शीतल जल से भगवान शिव का अभिषेक किया जाता है। कहा जाता है कि यह चाँदी का कलश गिद्धौर के राजा श्रीयुत पूर्ण सिंह ने दिया था। उन्होंने जब शिवमन्दिर का निर्माण कराया तब चाँदी के दरवाजों की जोड़ी दी और सोने के भोगपात्र दिये और वैशाख की तपत के समय शिव अभिषेक के लिये यह चाँदी का कलश दिया था।

मुख्य मन्दिर के चारों तरफ प्रांगण में २२ अन्य देवी देवताओं के मन्दिर हैं जो निम्नलिखित हैं:---

(१) पार्वती मन्दिरः---यह कामदा गौरी सर्वशक्ति स्वरूपणी माँ पार्वती का मन्दिर है। यह प्रांगण के बीच मुख्य शिव मन्दिर के बिल्कुल सामने पूर्व दिशा में

है। यह मन्दिर एक बहुत ऊँची चबूतरी पर स्थित है तथा बहुत सुन्दर तथा कलात्मक है। मन्दिर में पार्वती और दुर्गा की दो सुन्दर मूर्तियाँ हैं। मन्दिर की ऊँचाई से प्रतीत होता है कि शिव ने स्वयम् नीचे स्थान पर रहकर शक्ति का स्थान अपने से ऊपर दिया है। शक्ति के बिना शिव शव हो जाते हैं। इसी लिये शक्ति का स्थान ऊँचा है। इसी स्थान पर सती का हृदय गिरा था इसलिये यही शक्तिपीठ एवम् हृदयपीठ का स्थान है।

(२) **जगत् जननी मन्दिरः**---पार्वती मन्दिर से दक्षिण की तरफ जगत् जननी माँ का मन्दिर है जो देव आराधना मुद्रा में ध्यान मग्न बैठी हैं। दाहिनी ओर अन्य मूर्तियाँ हैं।

(३) **सिद्धि दाता गणेशः---**विघ्न विनाशक गणेश अष्टभुज और नृत्य मुद्रा में हैं। अष्टभुजाओं में खड़ग, शंख, गदा, चक्र तथा लड्डू इत्यादि हैं। उदर बड़ा और जनेऊ युक्त हैं। नीचे रिद्धि सिद्धि हैं।

(४) **चतुर मुख ब्रह्मा जी**

(५) **माँ संध्या जी**

(६) **महाकाल भैरव जी**

(७) **श्री हनुमानजी**

(८) **माँ मनसा देवी जी**

(९) **माँ सरस्वती देवी जी**

(१०) **सूर्य मन्दिर**

(११) **बगुलामुखी भगवती माँ**

(१२) **राम लक्ष्मण जानकी**

(१३) **गंगा माँ**

(१४) **आनन्द भैरों**

(१५) **गौरी शंकर मन्दिर**

(१६) **नर्मदेश्वर महादेव**

(१७) **माँ तारा**

(१८) **माँ काली**

(१६) माँ अन्नपूर्णा देवी

(२०) लक्ष्मी नारायण जी

(२१) नीलकंठ मन्दिर

(२२) नन्दी बैल बसाहा

उपरोक्त २२ मन्दिर एक ही प्रांगण में हैं और मुख्य मन्दिर के चारों तरफ हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे यह सब देवी देवता भगवान शिव शंकर महादेव की परिक्रमा कर रहे हैं। प्रांगण में दक्षिण की ओर संध्या और कालभैरव मन्दिर के बीच पीतल का एक बड़ा घंटा लटकता दिखाई देता है। यह घंटा नेपाल नरेश ने दिया था।

चन्द्रकूपः---यह एक पुराना और ऐतिहासिक कुँआ है। रावण ने अनेक तीर्थो के जल इस कूप में डाले थे। सरदार पंडा वंशज के स्वर्गीय चन्द्रपाणि ओझा ने इस कूप का जीर्णोद्धार कराया था।

मन्दिर के तीन दरवाज़े हैं। उत्तर दिशा में सिंह द्वार है, यह चन्द्रकूप के पास है। काँवर इसी प्रवेश द्वार से लेकर आते हैं। दूसरा पूर्व द्वार है, तीसरा पश्चिम द्वार है। तीनों द्वारों के ऊपर कीर्तन भवन हैं और तीनों द्वारों की अलग-अलग कीर्तन मंडलियाँ है जो प्रतिदिन सायंकाल कीर्तन करती हैं। पूर्व दरवाजा कीर्तन मंडली का नाम पंडा कीर्तन मंडली है। दूसरी उत्तर दरवाजा कीर्तन मंडली का नाम बमबम ब्रह्मचारी कीर्तन समाज है। तीसरी कीर्तन मंडली जो पश्चिम दरवाजे पर है उसका नाम रामकृष्ण कीर्तन मंडली है। इसके अतिरिक्त बाजार में बालेश्वरी कीर्तन मंडली तथा फूलचन्द कीर्तन मंडली है। वसन्त कीर्तन समाज मंडली भी है। यह मंडली श्री पंकज जी (कवि) के पिता जी की है। कीर्तन का समय प्रतिदिन लगभग साढ़े सात से साढ़े नौ बजे सायंकाल है।

हम भगवान शिव मन्दिर में पूजा अर्चना करके पूर्व दरवाजा कीर्तन भवन में गये। वहाँ पर श्री सोनाराम पंडा ने कीर्तन मंडली की एक सभा बुलाई थी और हमें सब सदस्यों से मिलाया था तथा विचार विमर्श किया था। इस सभा के निम्नलिखित पद अधिकारी तथा सदस्यों से हमें सत्संग करने का अवसर मिला। श्री पिताम्बर लाल झा (मंत्री) श्री सुशील चरण मिश्र (उपमंत्री) श्री गंगानाथ झा (संचालक) श्री कार्तिक खवाड़े (सदस्य) श्री गंगा खवाड़े (देवघर के महान समाज

सेवी तथा राजनीतिज्ञ) श्री सोनाराम मिश्र (सदस्य) श्री बुद्धिनाथ मिश्र महाराज (पंडा समाज के पंडा, कुल पुरोहित) श्री मोती चरण मिश्र (पंडों के भी पंडा) श्री रामशंकर पंकज मिश्र (महान् कवि एवम् साहित्यकार) श्री पंकज जी ने हमें वैद्यनाथ धाम के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी, जिसके लिये मैं उनका आभार प्रकट करती हूँ। श्री विजय शंकर पंडा (सदस्य) श्री गेंदा लाल बालयास (प्रधान कीर्तन) श्री गणेश राज रजवाड़ (मूल गायक) श्री विनोद दत्त द्वारी (वादक) श्री लाल कर्म (सदस्य) श्री शिव पूजन (सहयोगी) से सत्संग हुआ। श्री पंकज जी ने सुझाव दिया कि आप कुछ समय देवघर में रहकर यहाँ के निवासियों की परंपराओं, नियमों आदि की शोध करके 'अद्भुत योग, अद्भुत लोग'' शीर्षक से पुस्तक लिखिए और पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

तत्पश्चात् श्री सोनाराम मिश्र के पिता जी ने हमारे परिवार के सदस्यों तथा हमारे आगमन की तिथि आदि अपनी पंडा बहीखाते में लिखीं। हमारे पंडा का पताः---श्री सोना राम मिश्र पंडा, सदाराम मिश्र पंडा, कालूराम मिश्र पंडा, वैद्यनाथधाम मारवाड़ी का पंडा, स्थान लक्ष्मी नारायण मन्दिर, पोस्ट मुकाम बैद्यनाथधाम देवाार ज़िला देवघर (बिहार)।

इसके अलावा कार्यालय मन्दिर उत्तरी दरवाजें में पंडा धर्म रक्षणी सभा बैद्यनाथधाम देवघर पोस्ट मुकाम वैद्यनाथ धाम (बिहार) है। यह हजार घर ब्राह्मणों की संस्था है जिससे कि यहाँ के गरीब ब्राह्मणों में कन्यादान, जनेऊ भोज दिया जाता है। पढ़ाई में गरीब बच्चों को सहायता दी जाती है। कई आधुनिक स्कूल, लायब्रेरी, वेद विद्यापीठ चलते हैं, जहाँ पूर्ण भारतीय सनातन धर्म पद्धति के अनुसार शिक्षा दी जाती है। खर्च यात्रियों के दान स्वरूप चंदे से चलाया जाता है। सिलाई मशीन प्रशिक्षण, टाइपिंग कोचिंग सैंटर आदि हैं। मेरी इस संस्था के क़ई सदस्यों तथा श्री बी. एन. झा प्रोफैसर मैथेमैटिक्स झाझा कॉलेज से भी भेंट हुई। श्री किशोर चरण झा पंडे ने मुलाकात कराई तथा समय-समय पर हमारे पास धर्मशाला में आकर हमें देवघर के बारे में जानकारी दी।

अन्य दर्शनीय स्थान

शिवगंगाः---यह एक अति प्राचीन सरोवर है जो मुख्य मन्दिर से उत्तर की ओर बाज़ार के आखिर में है। कहा जाता है कि रावण ने लघुशंका करने के बाद अपने हाथ धोने के लिए पृथ्वी में मुट्ठी मार कर जल प्रवाहित किया था जिससे

यह सरोवर बना। सरोवर के किनारे पक्के घाट हैं। यात्री शिव गंगा में स्नान करके वैद्यनाथ मन्दिर के दर्शन करने जाते हैं।

बैजु मन्दिरः---यह भगवान् शिव का प्राचीन मन्दिर है। यह मुख्य मन्दिर से दक्षिण की ओर बस स्टैंड की तरफ सिनेमा हाल के पास है। पहले यहाँ हरतिकी वन था और बैजु अपनी गाय चराता था उसने अपनी भोली भाली भक्ति से भगवान् शिव को प्रसन्न किया और भागवान् शिव बेजु के नाथ बैजनाथ हुए।

हरिला जोड़ी

शिव गंगा सरोवर से उत्तर की ओर देवघर बलसरा रोड से तीन मील दूर प्रसिद्ध उपतीर्थ हरिला जोड़ी है। जाने के लिये कच्ची सड़क है। यहाँ एक जोड़ा हरितकी वृक्ष का था। इसीलिये इसे हरिला जोड़ी कहा जाता है।

युगल मन्दिर (नौ लखा):---बालानन्द रोड पर बस अड्डे से दक्षिण की ओर लगभग ३-४ की० मी० के फासले पर युगल मन्दिर है। इसे नौ लखा मन्दिर भी कहते हैं। यह मन्दिर रानी चारूशिला (रानी पाथुरिया घाट कलकत्ता) ने बनवाया था। बाल गोपाल चारूशिला रानी के ईष्ट देवता थे। मन्दिर में एक तरफ भगवान श्री कृष्ण लड्डू गोपाल की मूर्ति है तथा दूसरी तरफ रानी चारुशिला के गुरु बालानन्द ब्रह्मचारी की मूर्ति है। रानी ने अपने पुत्र की यादगार में यह मन्दिर बनवाया। उनका एक ही लड़का था जो ८ साल की उम्र में ही गुजर गया था। उन्होंने एक लड़का गोद लिया। उस लड़के की पाँच लड़कियाँ हुईं। लड़का कोई भी नहीं हुआ। वह गोद लिया हुआ लड़का भी गुजर गया। रानी विरक्त हो गई और उसने यह मन्दिर निर्माण कराया। १६३२ में इसकी नींव रखी और १६४१ में निर्माण पूरा हुआ। इसका असली नाम युगल मन्दिर है। युगल मन्दिर नाम इसलिये रखा क्योंकि इसमें गुरू बालानन्द तथा भगवान गोबिन्द का जोड़ा है। एक तरफ गोबिन्द हैं और दूसरी तरफ गुरु बालानन्द हैं। इस मन्दिर पर नौ लाख रुपये खर्च करने की योजना थी। इसलिये इसे नौ लखा मन्दिर कहते हैं। परन्तु रुपया नौ लाख से भी अधिक (लगभग साढ़े ११ लाख) खर्च हुआ। मन्दिर के बाहर दीवार पर यशोदा माता बालरूप श्री कृष्ण को लिये हुए, की मूर्ति है। मन्दिर के पीछे की दीवार पर कालिया दमन के दृश्य की मूर्ति अंकित है। मन्दिर में प्रवेश करते ही कुछ सीढ़ियाँ चढ़ कर रानी चारुशिला की संगमरमर की मूर्ति है। श्री जोगिन्द्र मिश्र ने हमें मन्दिर के विषय में जानकारी दी।

तपोवन

यह युगल मन्दिर से आगे पहाड़ी पर है। बाबा वैद्यनाथ मन्दिर से लगभग ८ कि० मी० है। यहाँ पर श्री बालानन्द ब्रह्मचारी की ध्यान कुटी है। यहीं पर उनको सिद्धि प्राप्त हुई थी। यहाँ पर बालेश्वर शिव तथा दुर्गा माँ का मन्दिर है।

त्रिकुटाचल पहाड़

यह मयूराक्षी नदी का उद्‌गम है। तपोवन से १० कि० मी० दूर त्रिकुट नामक पहाड़ी है। यहाँ त्रिकुटेश्वर (शिव) मन्दिर है।

नन्दन पहाड़

वैद्यनाथ मन्दिर से लगभग डेढ़ मील दूर पश्चिम की ओर एक छोटी-सी पहाड़ी है जिसे नन्दन वन कहते है। यहाँ शिव, पार्वती, गणेश, काली एवम् कार्तिकेय का मन्दिर है।

रामाकृष्ण विद्यापीठ

यह एक आवासीय विद्यालय है। यहाँ केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक तक की शिक्षा दी जाती है।

अजगेबी नाथ मन्दिर सुलतान गंज

यह गंगा की धारा के मध्य स्थित महादेव का मन्दिर है। इसे देखने के लिए नाव से जाया जा सकता है।

मुख्य मन्दिर वासुकि नाथ

यह मन्दिर देवघर से लगभग २८ मील दूर है। देवघर दुमका सड़क के पास वासुकि नाथ नामक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है।

इसके अतिरिक्त ध्यान कुटी, स्फटिक स्वयम्भु लिंग, चंडी पहाड़ी, कुंडेश्वरी देवी, रामनिवास ब्रह्मचर्य आश्रम, मानसिंही (मानसरोवर) देवसंघ (नवदुर्गा) सत्संग नगर, शीतला मन्दिर, पागल बाबा (श्रीमद् लीला आश्रम), पहाड़ कोठी (जसीडीह), आरोग्प भवन (जसीडीह), आदि भी देखने योग्य स्थान हैं।

हमने देवघर में बैद्यनाथ मन्दिर तथा प्रांगन में अन्य २२ मन्दिर, प्राचीन बैद्यनाथ मन्दिर, शिव गंगा तथा युगल मन्दिर ही देखे और प्रातः पटना साहिब के लिये प्रस्थान किया।

गुरु गोबिन्द सिंह का जन्म स्थान-पटना साहिब

देवघर से जसीडीह का फासला ६ कि० मी० है तथा आटोरिक्शा का किराया ढाई रूपये है। प्रातः ६ बजकर ५० मिनट पर टाटा नगर पटना एक्सप्रैस आती है; परन्तु रविवार के दिन नहीं चलती। इसलिये हमें वह ट्रेन नहीं मिली। सौभाग्य से पाटलि एक्सप्रैस जो प्रातः ७-५० पर जसडीह आनी थी, वह ३ घंटे लेट थी, इस लिये हमें १०-५० पर वह रेल मिल गई और हम तीन बजे पटना साहिब पहुँच गये। जसडीह से पटना जंकशन २२३ कि० मी० है तथा किराया ५३ रुपये है। पटना साहिब, पटना जंकशन से पहले आ जाता है। पटना साहिब पहुँच कर हम रिक्शा द्वारा गुरुद्वारा श्री हरिमन्दिर साहिब पहुँचे। वहाँ पर हमें २ दिन के लिये कमरा न० ८५ निःशुल्क मिल गया तथा भोजन निःशुल्क लंगर में किया।

पटना शहर के कई नाम थे जिनमें पाल पोखरा, पुष्पपुर, कुसुमपुर, कुसमावती, मौर्य नगर तथा पाटलिपुत्र आदि थे। इन सब में पाटलिपुत्र अधिक प्रचलित रहा। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि इस शहर को महाराजा पत्रक ने अपनी रानी पाटल के नाम से बसाया था और कुछ का कहना है कि इस शहर की स्थापना कुशनाग के पुत्र महाबली पाली ने अपनी रानी पटल के नाम पर की थी। राजा अजातशत्रु ने जिस की राजधानी राजगृह थी, उसने अपने शत्रु लिछिवी गणतंत्र का मुकाबला करने के उद्देश्य से गंगा के किनारे बसे इस नगर को एक किले की शक्ल दी थी और चारों तरफ दीवारें बना कर भगवान बुद्ध को आमंत्रित किया था।

पटना शहर भारत का धार्मिक, साहित्यक तथा राजनीतिक केन्द्र रहा है। यहाँ

पर जैनियां का तीसरा महान् सम्मेलन जो आपसी जैन वार्त्तालाप से प्रसिद्ध है, हुआ था और इस सम्मेलन में २० हजार जैनियों ने भाग लिया था। इसकी अध्यक्षता आचार्य भद्रभाव ने की थी और यह नन्द राजाओं के समय में हुआ था।

पटना में ही सम्राट अशोक की अध्यक्षता में बौद्ध भिक्षुओं का सम्मेलन हुआ था और सम्मेलन के बाद बौद्ध मत के शान्तिदूत सारे संसार में भेजे गये थे।

संसार के महान् अर्थशास्त्री कौटिल्य ने भी अपने 'अर्थशास्त्र' की रचना पटना में ही की थी। यहीं पर संसार के महान् वैयाकरण पाणिनि ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अष्टाध्यायी' की रचना की थी।

३२० ई० पूर्व में यह नगर नन्द राजा की राजधानी था। मौर्यों के समय में सेल्यूकश निकेटर का राजदूत मैगस्थनीज चन्द्रगुप्त के राज्य में काफी समय तक यहाँ ठहरा था। चीनी यात्री ह्यूनसांग और फाहियान यहाँ आये थे और फाहियान ने यहाँ रहकर ३ साल तक संस्कृत पढ़ी थी। यहाँ के व्यापारी जावा, सुमात्रा और बालद्वीप तक जाते थे।

मुग़ल बादशाह का कब्ज़ा होने के बाद इस शहर का नाम कुछ समय के लिये अजीमाबाद भी रहा। इस शहर के कुछ हिस्से का नाम कूचा फारूख खां भी था।

पटना साहिब को गुरु नानकदेव जी, श्री गुरु तेगबहादुर साहिब जी तथा श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने पावन चरणों से पवित्र किया।

धार्मिक दृष्टिकोण से इसकी महत्ता श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी (सिंह धर्म के दसवें तथा अन्तिम गुरु) का जन्म स्थान होने के कारण अधिक है। जिसका वर्तमान नाम तख़्त श्री हरि मन्दिर जी पटना साहिब है। यह सिख धर्म का दूसरा महान् तख़्त है।

पटना शहर बिहार प्रान्त की राजधानी है। यह शहर विद्या तथा साहित्य का केन्द्र भी रहा है।

हम सायंकाल स्नान करके गुरुद्वारा श्री हरिमन्दिर जी पटना साहिब में मत्था टेकने तथा दर्शन करने गये और गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज के शोभनीय पवित्र जन्म स्थान के दर्शन कर के भाव भक्ति तथा श्रद्धा से आत्मविभोर हो गये।

गुरुद्वारा श्री हरिमन्दिर (पटना साहिब)

यह पाँच मंजिली भव्य इमारत है। इमारत के नीचे तहखाना है। ग्राउण्ड फ्लोर जन्मस्थान में गुरुग्रन्थ साहिब, दशमग्रन्थ गुरु जी के शस्त्र, गुरु गोबिन्द सिंह तथा गुरु तेगबहादुर जी के खड़ाऊँ, दसवें पातशाह का ३०० वर्ष पुराना चोंगा वस्त्र आदि वस्तुएँ दर्शनीय हैं तथा माता गुजरी का कुँआ है। पहली मंजिल में साध संगत की ओर से अखंड पाठ रखे जाते हैं। दूसरी मन्जिल पर अजायबघर है यहाँ पर तैल चित्र लगे हुए हैं जिनमें (१) शेरे पंजाब रणजीत सिंह के समक्ष नजराने भेंट किये जा रहे हैं। (२) भाई नन्दलालजी (३) गुरु अर्जुन सिंह जी (४) भाई गुरदास जी (५) सांई मियाँ मीर (६) सिखों को महान् कष्ट (७) भाई मणिसिंह जी शहीद (८) भाई मतिदास जी शहीद (६) बहादुर सिघंनियाँ (१०) भाई तारू सिंह जी शहीद (११) वीर भीखन शाह (१२) बाबा बन्दा सिंह बहादुर (१३) कुँवर दलीप सिंह (१४) प्रकाश जन्म आदि हैं।

तीसरी मंजिल पर अमृत पान तथा विवाह (आनन्द कारज) की व्यवस्था है। चौथी मंजिल में पुरातन हस्तलिपि और पत्थर के छाप की पुरानी बड़ी (गुरु ग्रन्थ साहिब की प्रति) को सुरक्षित रखा गया है जिस पर गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने तीर की नोक से केसर के साथ मूल मंत्र लिखा था। इसके दर्शन गुरु पर्व सक्रान्ति में कराये जाते हैं इसके अतिरिक्त पवित्र जन्म स्थान तख्त हरिमन्दिर गुरुद्वारा में गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का युवावस्था में आयल पेंट से तैयार किया हुआ एक चित्र है तथा चार पाँव का छोटा झूला पंगुड़ा साहिब है। इस पर गुरु जी बचपन में बैठा करते थे। यह सोने की प्लेटों से मढ़ा हुआ है। गुरू जी की छोटी तलवार जो बचपन में पहना करते थे, गुरुजी के गुलेल की गोली तथा चार तीर जिनसे घड़े फोड़ते थे, लोहे की छोटी चक्री जो गुरु जी अपने केशों में धारण करते थे। चन्दन की लकड़ी का कंघा जिससे केश साफ़ किया करते थे, लोहे का खंडा तथा लोहे के दो चक्र जो दस्तार में सजाया करते थे, गुरु जी के लिये हाथी दाँत की बनाई खड़ाऊँ, गुरु तेगबहादुर जी की सन्दल की लकड़ी के खड़ाऊँ का एक जोड़ा, गुरु तेगबहादुर साहिब, गुरु गोबिन्द सिंह जी तथा माता सुन्दरी जी के हुक्मनामों की एक पुस्तक, भक्त कबीर जी की खड्डी जिससे कपड़े बुना करते थे आदि दर्शनीय हैं।

लगभग १५०७ ई० में प्रथम गुरु नानक देव जी अपनी पूर्व की पहली यात्रा के समय पटना में आये थे और भक्त जैतामल (अभी गुरुद्वारा गाय घाट) के पास ठहरे थे। उन्होंने अपने शिष्य मरदाना को जो भूखा था, एक कीमती हीरा देकर बेचने के लिये भेजा। मरदाना एक जौहरी की दुकान में पहुँचा, उस जौहरी का नाम सालिसराय था और उसके नौकर का नाम अधरका था। अधरका ने हीरा देखते ही मरदाना की अपने मालिक सालिसराय से मुलाकात कराई। हीरा कीमती होने के कारण सालिस राय ने उसकी दर्शन भेंट १०० रुपये देकर मरदाना को हीरा वापिस कर दिया। गुरु नानकदेव जी ने नाराज होकर मरदाना को हीरा सालिसराय को देने के लिये पुनः वापिस भेजा। सालिसराय गुरुजी की इस उदारता को देखकर बहुत प्रभावित हुए और गुरु नानकदेव जी के दर्शन की इच्छा जाहिर की। तत्पश्चात् अधरका व सालिसराय गुरु नानक देव जी के दर्शन करके उनके अनन्य भक्त हो गये और गुरुजी को अपने निवास स्थान पर पधारने के लिये निमंत्रित किया। गुरूजी सालिसराय के निमंत्रण को स्वीकार करके उसके निवास स्थान पर गये और लगभग चार महीने वहाँ पर ठहरे और सुबह शाम संगत को उपदेश देते थे। सालिसराय ने धर्म के नाम पर यह स्थान दान कर दिया था। गुरु जी ने जाते समय इस स्थान को पूज्य स्थान (संगत) बनाकर सालिसराय को उत्तराधिकारी बना दिया था।

गुरु नानकदेव जी के बाद (नौवें गुरु) गुरुतेग बहादुर जी पूर्व की यात्रा पर लगभग १६६६ ई० में पटना साहिब आये। गुरुजी के साथ उनकी माता नानकी जी तथा धर्मपत्नी गूजरी जी तथा माता गूजरी जी के भाई कृपाल चन्द जी और दरबारी भी आये थे। गुरु तेग बहादुर जी कुछ समय बड़ी संगत गाय घाट ठहरने के बाद परिवार सहित सालिसराय जौहरी की संगत में एक जुलूस के रूप में लाये गये। उस समय इस संगत का संचालक अधरका का पड़पोता घनश्याम था। गुरुजी कुछ दिन ठहरने के बाद परिवार को यहाँ छोड़कर बंगाल तथा आसाम चले गये। उन्होंने मुँगेर जाकर पटना जी संगत के नाम एक हुक्म नामा (संदेशपत्र) जारी किया और परिवार को एक अच्छी हवेली में रखने का आदेश देते हुए संगत को आशीर्वाद दिया। इसी हुक्मनामा में पटना को गुरु का घर कहा है।

यहीं पटना साहिब में पौष शुदी सप्तमी स० १७२३ तदनुसार २२ दिसम्बर १६६६ ई० को गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का जन्म हुआ। उस समय गुरु तेग बहादुर जी ढाका में थे जहाँ कि उनको पटना से गोबिन्द राय जी के जन्म का संदेश मिला। गुरु तेग बहादुर जी ने बहुत खुशियाँ मनाई।

गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने अपने बचपन के लगभग ७ वर्ष पटना में बिताये और पटना वासियों को अपनी बाल लीलाओं का सुख दिया। वे अपने नन्हें नन्हें पैरों की अमिट छाप इस भूमि पर छोड़ गये।

(१) गुरुद्वारा गोबिन्द सिंह घाट या गुरुद्वारा कंगन घाट

यह गुरुद्वारा तख्त हरिमन्दिर पटना साहिब गुरुद्वारे के उत्तर की ओर थोड़ी सी दूर पर है, पैदल का रास्ता है और गंगा के किनारे पर है। यहाँ पर गुरु गोबिन्द सिंह जी गंगा के किनारे पर खेलने आया करते थे और अपने साथियों के साथ यहाँ गतका, बाज, तीर अंदाजी तथा गुलेल के निशाने किया करते थे। इसके अलावा यहाँ आकर गंगा में तैरा करते थे और किश्ती चलाया करते थे। एक दिन अपने साथियों को जो कि सैनिक फौज बनाई हुई थी, उनको साथ लेकर यहाँ गंगा पर आकर स्नान करने लगे और तैरते-तैरते बहुत दूर तक चले गये। उनके दूसरे साथियों ने कहा कि गोबिन्द राय आप बाहर आ जायें क्योंकि गंगा बहुत तेज़ लहर में है। बड़े आदमियों ने भी कहा कि लाल जी बाहर आ जाओ। मगर उनकी आवाज़ सुनकर गोबिन्द राय जी ने उत्तर दिया कि मैं गंगा माता की गोद में खेल रहा हूँ और यह माता मुझे लोरियाँ दे रही है। इसलिये मैं अभी नहीं आ रहा हूँ। यह उत्तर

सुनकर सब हैरान हो गये। छोटी-सी नन्हीं जान और इनको कितना ज्ञान है।

थोड़ी देर के बाद गोबिन्दराय जी गंगा से वापिस चले आ रहे थे तो अपना सोने का एक कंगन गंगा में फेंक दिया। उसके बाद आप कपड़े पहनकर अपने घर आये तो माता गूजरी जी जो कि गोविन्द राय जी की माता थी और बहुत-सी संगत उनके पास बैठे हुए थे। माता जी ने गोबिन्दराय जी को देखकर अपने पास बुलाया और कहा लाल जी, इधर आओ और यह बताओ कि कंगन जो तुम्हारे हाथ में नहीं है वह कहाँ है ? गोबिन्द राय जी ने उत्तर दिया कि माता जी खेलते-खेलते हाथ से कंगन गंगा नदी में गिर गया। हमें ढूँढने पर भी नहीं मिला। इसलिये आप को कह दिया कि आप चल कर वह कंगन नदी से निकलवा दीजिये। यह बात सुनकर माता गूजरी जी तैयार हो गईं और अपने भाई कृपाल सिंह जी और बहुत-सी संगत साथ लेकर गोविन्दराय जी के साथ यह कौतुक देखने के लिये गंगा के किनारे आ पहुँचे और गंगा के किनारे सीढ़ियों के ऊपर खड़े होकर माता गूजरी जी ने अपने लाल गोबिन्दराय जी से पूछा, "बेटा जी, वह कंगन कहाँ गिरा, हम उसको निकलवा दें तब लाल गोबिन्दराय जी ने दूसरे हाथ का कंगन उतार कर वह भी गंगा में फेंक दिया और कहने लगे, "माता जी, जहाँ यह कंगन गिरा है वहीं पहला कंगन भी है।" माता जी हैरान होकर कहने लगीं, लाल जी मैं तो एक कंगन ढुंढवाने के लिये आई थी। मगर आप ने दूसरा भी फेंक दिया।" गोबिन्द राय जी ने उत्तर दिया कि माता जी जहाँ एक कंगन निकलवाना था वहाँ दूसरा भी निकलवा लेना। घाट पर दो मल्लाह किश्ती लगा कर बैठे हुए थे। माता जी ने उनको कहा कि भाई आप हमारे दोनों कंगन निकाल दीजिये और दोनों मल्लाह माता जी का हुक्म मान कर गंगा में उतरे तो गोबिन्दराय जी ने कहा कि भाई हमारे कंगनों को छेड़ना मत। मल्लाहों ने गंगा में गोता लगाया और देखा कि नदी में कंगनों के ढेर पड़े हुए हैं और कंगन ही कंगन दिखाई पड़ते हैं। उनमें से कुछ कंगन बाहर निकाल कर माता जी के आगे ढेरी लगा दी और कहा कि माता जी इन में से अपने कंगनों को पहचान लीजिये। तो माता जी ने कहा कि भाई इन कंगनों को नदी में ही फैंक दो क्योंकि लाल जी ने यह कोई कौतुक खेला है। माता जी ने गोबिन्दराय से पूछा कि बेटा तुमने अपने कंगन नदी में किस लिये फेंके थे, इस बात का वर्णन करो तो गोबिन्दराय जी ने माता को उत्तर दिया कि ये कंगन मेरी मौत की निशानी थी क्योंकि मुगलों का जमाना है। हमें कोई पकड़ कर मार देता या गंगा में फेंक देता और कंगन उतार कर ले जाता तो न तो आप को कंगन मिलते

और न लालजी मिलते, दोनों मे से कोई नहीं मिलता। इस लिये अपनी मोन को गगा में फेंक दिया। इस बात को सुनकर माता जी हैरान हो गईं और यह कोतुक देखकर सब समझ गये कि गोबिन्दराय ने कगन नदी मे फेंक कर माया का त्याग प्रकट किया है।

दूसरा चमत्कार

इसी स्थान पर पंडित शिवदत्त जी जो कि पटना शहर के विद्वान् थे तथा ज्योतिष विद्या के जानने वाले थे और शहर मे उनकी बडी महानता थी, व यहा आकर तपस्या किया करते थे। पडित शिवदत्त जी राम के पुजारी थ और राम की मूर्ति को अपने आगे रखकर तथा प्रसाद रखकर राम क नाम पर लवलीन हो जाते थे और ऑखे मूँदकर कितनी कितनी देर तक बेठे माला फेरते ओर प्रार्थना करते रहते थे। एक दिन गोबिन्द राय अपने सेनिक साथियो को लेकर वही गगा क किनारे आ रहे थे कि उन्होंने शिवदत्त पडित को रामजी क आग बड मग्न मे ऑख बन्द किये बेठे देखा। गोविन्द राय जी ने चुपके से राम की मूर्ति के आगे से प्रसाद उठाकर बच्चों मे बॉट दिया ओर आप भी भोग लगा लिया। गोबिन्दराय जी बहुत दिना तक ऐसा करते रहे तो एक दिन पडित जी बहुत गुस्से मे होकर कह रह थ कि न तो हमें राम मिलता है और न ही राम के आगे रखा हुआ प्रसाद मिलता है। वे बहुत कल्पना में रहकर कहने लगे कि देखो रामजी मेरे साथ केसी ऑख मिचोली खेल रहे हैं। प्रसाद भी ले जाते हे और दर्शन भी नही देते। इस बात को सुनकर जो लोग पास बेठे थे, कहने लगे कि पडित जी आप तो बडे विद्वान् हे। इस समय में आपको राम कहाँ मिलेंगे। मगर एक बात कहें कि आप के प्रसाद क जो चोर हैं, वो माता गूजरी जी के लाल गोबिन्दराय हैं। वह अपने सेनिक साथियो के साथ यहाँ आता है और मूर्ति के आगे से प्रसाद उठाकर अपने साथियो म बॉट देता है और आप भी भोग लगा लेता है। तो पंडित जी ने यह बात सुनकर कहा कि हम ध्यान लगा कर उसको पकडेंगे और पडित जी नित नियम की तरह प्रसाद और मूर्ति रख कर ध्यान मग्न हो गये। उधर मे गोबिन्दराय अपनी बालक सैना को लेकर वहाँ आ गये। उस दिन उन्होंने प्रसाद को हाथ नही लगाया और पडित जी के पीछे बैठकर कहने लगे पंडित जी झात, पंडित जी झात, ऐसी चक्री चला दी कि पंडित जी का ध्यान टूट गया और नेत्र खुल गये।

पंडित जी ने गोबिन्दराय जी को देख लिया और उनके बाजू पकड कर कहा

कि लालजी आप यह क्या करतब करते थे कि आप भगवान का प्रसाद उठा कर उसे झूठा कर देते थे। आगे गोबिन्द राय जी ने उत्तर दिया कि पंडित जी आप हमें बुलाते थे तो हम आते थे और अपना प्रसाद लेकर चले जाते थे, इसमें हमारा क्या दोष ? यह सुनकर पंडित जी हैरान होकर बोले कि आप जो रूपधारण कर इस पृथ्वी पर आये हैं, तो मैं कैसे पहचान करूं ? आप कृपा करके मुझे असली रूप श्री राम चन्द्र जी में दर्शन दीजिये। पंडित जी की यह पुकार सुन कर गुरु गोबिन्द राय जी अपने शरीर को राम के रूप में ले आये और पंडित जी को दर्शन दिये। गुरु गोबिन्द राय का यह प्रताप देखकर पंडित शिव दत्त जी शहर की तरफ दोड़ पड़े और यह शोर मचाने लगे कि गोबिन्द राय मेरे को राम मिल गये। इस तरह पंडित शिवदत्त जी का उद्धार हुआ।

गुरुद्वारा गोबिन्द घाट-कंगन घाट एक छोटा गुरुद्वारा है। श्री अमरजीत सिंह जी इस गुरुद्वारे के ग्रन्थी हैं, उन्होंने ही हमें उपरोक्त जानकारी दी।

गुरुद्वारा बाललीला

यह गुरुद्वारा भी तख्त हरिमन्दिर गुरुद्वारे के समीप ही है। यहाँ पर भी गुरु जी ने बचपन के चमत्कार किये थे। इस गुरुद्वारे को "मैनी संगत" भी कहा जाता है। फतहचन्द मैनी एक स्थानीय राजा था। उनकी कोई संतान नहीं थी। गोबिन्द राय अपने साथियों के साथ खेलते-खेलते प्रति दिन उनके महल में जाते थे। रानी प्रति दिन भगवान के आगे गोबिन्द राय जैसा बालक का संकल्प करती हुई प्रार्थना करती थी। एक दिन गोबिन्द राय अंतर्यामी रानी की गोद में जाकर बैठ गये और माँ कहकर पुकारा। रानी तृप्त हुई और उन्होंने गोबिन्द राय को धर्म का पुत्र स्वीकार कर लिया। गोबिन्दराय जी को खेलते-खेलते भूख लगी थी। तब रानी ने उबले हुए चने तथा पूरी खिलाई। धर्मपुत्र बनने के नाते गुरु जी ने राजा फतह चन्द मैनी परिवार को हमेशा के लिये अमर दान दिया। इस गुरुद्वारे में अब भी चने का प्रसाद मिलता है। इस गुरूद्वारे में निम्नलिखित वस्तुएँ देखने योग्य हैं (१) खीमखाप का जूता जो गुरुजी बाल्यावस्था में पहना करते थे (२) करौंदे का वृक्ष गुरुजी ने दतवन गाड़ दी थी, उसी से ही यह वृक्ष हुआ था जो अब भी हरा भरा रहता है।

गुरुद्वारा गुरु का बाग

यह गुरुद्वारा तख्त हरिमन्दिर साहिब गुरुद्वारा से ६-७ कि० मी० पूर्व की ओर

है यहाँ पर स्थानीय नवाब रहीम बक्स तथा करीम बक्स दो भाइयों का बाग था जो बिल्कुल सूखा पडा था। गुरु तेग बहादुर जी ने आसाम से वापिस लोटते हुए इस बाग में आकर डेरा डाला था। डेरा डालते ही सूखा हुआ बाग हरा भरा हो गया। जब दोनो भाइयों को इसकी सूचना मिली कि किसी संत महापुरुष के आने पर बाग हरा भरा हो गया है तो वे अपने दरबारियों के साथ वहाँ पहुँचे। उन्होंने यह बाग गुरु जी के नाम कर दिया।

इसी बाग मे गोबिन्द राय जी पहली बार अपने पिता गुरु तेगबहादुर जी से मिले थे। इस बाग में एक कुआँ है जिसमें से गुरु तेगबहादुर जी ने एक साधु का कमडल और आसन निकाल कर उसका भ्रम दूर किया था और इस पवित्र कुएँ को वर दिया था कि श्रद्धालु स्त्रियाँ के इस कुएँ के जल में स्नान करने से उनकी कोख हरी होगी। यहाँ पर एक बहुत सुन्दर स्वच्छ निर्मल जल का सरोवर बना हुआ है जिसके चारो तरफ पक्की सीढियाँ बनी हुई है। कुएँ के जल से पम्प द्वारा इस सरोवर को भरा जाता है और संगत तथा श्रद्धालु व्यक्ति इस सरोवर में स्नान करते है। महिलाओ के स्नान करने के लिये सरोवर पर महिला स्नान गृह बना हुआ है। यहाँ पर बेशाख शुदी सप्तमी को हर वर्ष गुरुपर्व बडी धूमधाम से मनाया जाता है तथा हजारो स्त्री पुरुष सरोवर में स्नान करते है। हर महीने शुदी सप्तमी का भी स्नान करने का बडा महात्म्य है। इसी दिन बाल गोबिन्द राय जी अपने पिता गुरु तेग बहादुर से पहली बार यहाँ मिले थे। यहाँ पर बहुत सुन्दर गुरुद्वारा है तथा आम, अमरुद, केले, के वृक्ष है। इस गुरुद्वारे के ग्रन्थी श्री मनोहर सिह जी है। उन्होंने ही हमे उपरोक्त जानकारी दी तथा दर्शनीय स्थान दिखाये जो निम्नलिखित है।

(१) इमली के पेड की डाली दिखाई। गुरु तेगबहादुर जी जिस इमली के पेड के नीचे आकर बैठे थे।

(२) नीम का पेड गुरुद्वारे के बिल्कुल सामने है। यह नीम का पेड गुरु जी के दतवन से बडा हुआ है।

(३) थडा, जहाँ पर गुरु जी आकर बैठे थे। यह थडा नीम के पेड के पास तथा गुरुद्वारे के सामने है।

(४) गुरुजी का लोहे का कडा।

(५) पवित्र कुआँ, तालाब के पास प्रवेश द्वार से पहले है।

हमने उपरोक्त सभी वस्तुएँ देखीं तथा सरोवर में स्नान किया।

नोटः---पटना शहर में चाहे कोई किसी भी धर्म जाति का है, उसका पूर्ण विश्वास है कि गुरुद्वारा गुरु के बाग के सरोवर में विवाहित महिलाओं के स्नान करने से उनको उत्तम संतान की उत्पत्ति होती है। यह बात हमें तब मालूम हुई कि जब हम यह गुरुद्वारा देखने गये तो कितने ही नवविवाहित जोड़े बैंड बाजों के साथ जुलूस की शक्ल में गाते बजाते गुरुद्वारा गुरु के बाग में आकर दर्शन तथा स्नान कर रहे थे। पूछने पर पता चला कि चाहे कोई किसी भी धर्म सम्प्रदाय का व्यक्ति हो, इस सरोवर में स्नान करने से उनको उत्तम संतान की उत्पत्ति होती है इस लिये हमारा यह सुझाव है कि जिन स्त्रियों को काफी उम्र होने पर भी संतान नहीं हुई उनको गुरुद्वारा गुरु के बाग पटना साहिब में जाकर सरोवर में स्नान करना चाहियें तो उनकी मनोकामना अवश्य पूरी होगी।

गुरुद्वारा गाय घाट

यह गुरुद्वारा तख्त हरिमन्दिर पटना साहिब से लगभग ५-६ कि० मी० पश्चिम की ओर है। तख्त श्री हरिमन्दिर साहिब से प्रथम स्थान यह गुरुद्वारा गाय घाट बड़ी संगत है। पहले गुरु नानकदेव जी और गुरु तेगबहादुर जी का पहला गुरुद्वारा है। यह गाँव बिसम्भरपुर था। जयतामल भगत गुरु नानकदेव जी का शिष्य था। उसके पास नानकदेव जी आकर रहे। उस समय शिष्य भक्त जयतामल जी की उम्र ३५० वर्ष की थी।

भक्त जयतामल जी ने गुरु नानक देव जी से प्रार्थना की कि मैं इतना वृद्ध हो गया हूँ जो अपना क्रियाक्रम भी नहीं कर सकता। मुझे मुक्ति देने की कृपा करें। गुरु नानक जी ने कहा कि अभी तुम्हारा सांसारिक सुख भोगना बाकी है। गुरु तेग बहादुर नौवां जामा आयेगा। उनके दर्शन के बाद तुम्हें मुक्ति होगी। गुरु तेगबहादुर का रूप मेरे समान होगा और इसी स्थान पर ही दर्शन होंगे। भक्त के स्नान के लिये गंगा को गऊ रूप में पैदा किया और इस स्थान का नाम गऊ घाट पड़ा।

(२) नौवां जामा गुरु तेगबहादुर जी तीर्थ यात्रा करते हुए, सब परिवार सहित जयतामल के पास पहुँचे। उन्होंने द्वार पर खड़े होकर आवाज दी --- "द्वार खोलो, गुरु साहब खड़े है"। तब अन्दर से उत्तर मिला कि गुरु साहिब के लिये द्वार क्या खोलें; वे तो स्वयम् आ जायेंगे। उसी समय जो एक छोटी-सी खिड़की खुली थी,

उसी रास्ते से छोटा सा रूप होकर घोड़े पर सवार हुए गुरु साहब अन्दर आ गये। उन्होंने एक लकड़ी का खूंटा गाड़ कर अपने हाथ से घोड़ा बाँधा। गुरु नानक देव जी की गद्दी पर बैठकर और गुरु नानकदेव जी के सदृश होकर भक्त जयतामल जी को दर्शन दिये, पश्चात् मुक्ति दी और शिष्य का मृतक संस्कार किया।

(३) इसी मकान की नींव रख कर अपना घर गुरुद्वारा बनाया। उस समय राजा बिशुन सिंह, बेटा मान सिंह योधपुर, आसाम देश से गुरु साहब के पास सहायता के लिये आये थे। राजा बिशुनसिंह गुलजार खां सूबेदार के पास बिसम्भर पुर में ठहरा था। उस वक्त गुरु साहब के दरबार में बढ़ई लगे हुए थे। गुरु साहब ने उनको इमारती लकड़ी के दो खम्बों को अपनी शक्ति से छोटा बड़ा करके दिखाया। लेकिन बढ़ई इस इमारती लकड़ी को काम में नहीं लाया। क्योंकि इस लकड़ी में शक्ति हो गई थी। गुरु साहब ने उन लकड़ियों को वर दिया कि जो रोगी इस स्थान पर आकर श्री थम्भ साहिब के गले लगेगा। उस रोगी का रोग नाश हो जायेगा और मन वांछित फल मिलेगा। वर्तमान समय में भी यह प्रत्यक्ष है और दोनों लकड़ियाँ मौजूद हैं जिनका नाम थम्भ साहिब है और कितने ही लोग प्रति दिन थम्भ साहिब के गले लग कर मन वांछित फल पाते हैं तथा रोगों से मुक्त हो जाते हैं।

(४) श्री गुरुतेग बहादुर साहिब आसाम देश चले गये। माता गूजरी जी (गुरु गोबिन्द सिंह जी की माता) इसी स्थान में सात महीने तक रहीं। सालिसराय जौहरी के घर भोजन के निमित्त गईं, जो स्थान पटना हरिमन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है।

(५) गुरुद्वारा गऊ घाट में निम्नलिखित वस्तुएँ दर्शनीय हैं (१) सिंहासन (मंजी साहिब) (२) गंगा जी का कुंड (गाय घाट है) (३) थम्भ साहिब है (करामाती लकड़ियाँ) (४) गुरु साहिब के आने का रास्ता, घोड़े सहित भीतर आये थे वह खिड़की है।

(५) खूँटा (घोड़ा बाँधने वाली लकड़ी) जो अब वृक्ष रूप में है (६) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब हस्ताक्षर गुरु जी के हैं (७) माता गूजरी जी के भवन हैं।

गुरुद्वारा हांडी साहिब

गुरुद्वारा हांडी साहिब तख्त पटना साहिब से लगभग २० कि० मी० दूरी पर दानापुर में है। गुरु गोबिन्द सिंह जी अपने बचपन के लगभग ७ वर्ष पटना में बिता

कर जब पंजाब जा रहे थे तो उन्होंने अपना पहला पड़ाव दानापुर में किया था। यहाँ पर एक वृद्ध माई जिसका नाम जमना देवी, बताया जाता है, के छोटे से घर को पवित्र किया था। जमना देवी ने गुरु जी के आने की याद में खिचड़ी बना रखी थी; परन्तु 'संगत' अधिक होने के कारण माई ने घबरा कर प्रभु के आगे लाज रखने की प्रार्थना की। प्रभु की कृपा से सभी लोगों के खिचड़ी खाने पर भी हांडी से खिचड़ी खत्म नहीं हुई थी। यह सब प्रभु की कृपा और गोबिन्द राय के प्रति श्रद्धा का परिणाम था।

गुरुद्वारा सोनार टोली

यह गुरुद्वारा ऐतिहासिक नहीं है। परन्तु इसकी देखभाल तख्त साहिब के अंतर्गत है और लगभग दो कि० मी० के फासले पर है।

ठहरने की व्यवस्था

गुरुद्वारा तख्त हरिमन्दिर साहब में निःशुल्क तीन दिन ठहरने की व्यवस्था है। यहाँ लगभग २०० कमरे हैं। सुपरिण्डैंट साहिब प्रबन्धक कमेटी की अनुमति से ६-७ दिन भी रह सकते हैं। प्रातः छः बजे तथा सायं चार बजे लंगर में निशुल्क चाय दी जाती है। साढ़े ११ बजे तथा रात्रि ८ बजे निःशुल्क लंगर दिया जाता है। गुरुद्वार का कार्य प्रातः ३ बजे गुरू बाणी के पाठ से आरम्भ हो जाता है और सवा पाँच बजे तक पाठ चलता है। सवा पाँच से नौ बजे तक कीर्तन अरदास कथा गुरु ग्रन्थ साहिब जी होती है। नौ बजे गुरु गोबिन्द साहिब जी के शस्त्र दिखाये जाते हैं उसके बाद ११ बजे तक विलावर चलता है और उसके बाद लंगर।

इसके अतिरिक्त ठहरने के लिये पटना में बिड़ला धर्मशाला (सब्जी बाग) फ्रैजर रोड पर माड़वाड़ी होटल, राजस्थान होटल, अमर होटल और प्रिंस होटल हैं। पटना जंकशन पर रिटायरिंग रूम है।

अन्य दर्शनीय स्थान

गोल घरः---यह तख्त हरिमन्दिर साहिब से लगभग १८ कि० मी० है। यह एक गोलाकार भवन है जिसकी ऊँचाई ६६ फुट है। शिखर तक जाने के लिये सीढ़ियाँ हैं। १७८४ में यह अनाज भंडार के लिये बनाया गया था। इसके एक कोने में की गई हल्की सी आवाज दूसरे कोने में साफ सुनाई देती है।

स्टेट म्यूजियमः---यह भी गोल घर की तरफ है और लगभग १४ कि० मी० पर है और बहुत बड़ा संग्रहालय है।

पादरी की हवेली:---यह लगभग १ कि० मी० है इसमें २०० अंग्रेजों की कब्रें हैं। इन्हें मीर कासिम ने मारा था। यह एक रोमन कैथोलिक चर्च है जो १७७५ में बनाया गया था।

ओपियम फैक्टरी:---यह गुलजारी बाग में है। लगभग १० कि० मी० पर है। यहाँ ईस्ट इंडिया कम्पनी का पुराना गढ़ था। यहीं पर ब्रिटिश लोग चीन को अफीम भेजते थे। मुगल सम्राट शाह आलम का राज्याभिषेक यहीं हुआ था। अब यहाँ सरकारी प्रैस है।

सदाकत आश्रम:---यह स्टेट म्यूजियम के पास है डॉ० राजेन्द्र प्रसाद यहाँ रहा करते थे।

शाही मस्जिद:---यह स्टेशन के पास है। इसे शेरशाह ने बनवाया था।

नवाब शहीद का मकबरा:---यह भी रेलवे स्टेशन के पास है। इसे नवाब शिराजुदौला ने अपने पिता की याद में बनवाया था।

किला हाउसः---यह लगभग डेढ़ कि० मी० पर है। यह शेरशाह का किला है। यहाँ बहुत कीमती वस्तुएँ रखी हैं। देखने के लिए अनुमति लेनी पड़ती है।

पटना देवी का मन्दिरः---यह ३ कि० मी० की दूरी पर है। यहाँ पर महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती की मूर्तियाँ हैं। इसे बड़ी पटनादेवी मन्दिर भी बोलते हैं। सम्पूर्ण मन्दिर में मुजायक का काम श्री तारकचन्द्र साहा (बंगाली बाबू लोहा वाले) किला रोड, पटना सिटी द्वारा दिनांक १६-७-१६७५ को कराया गया। यह ५१ शक्ति पीठों में गिना जाता है। इस मन्दिर में एक विशेष बात यह है कि यहाँ पर प्रति दिन सैकड़ों शादियाँ कराई जाती हैं। लोग आपस में ब्याह-शादी की बात पक्की करके और मन्दिर में आकर शादी कर लेते हैं। इस से उन्हें दहेज-प्रथा, बेकार के आडम्बर तथा दावतों की फजूल खर्ची से छुटकारा मिल जाता है। हमने स्वयम् अपनी आँखों से इन शादियों को होते हुए देखा।

बिड़ला मन्दिरः---यह गुलजार बाग में है और लक्ष्मी नारायण जी का बहुत सुन्दर मन्दिर है।

हनुमान मन्दिरः---यह पटना जंकशन रेलवे स्टेशन के बिल्कुल निकट है और

बहुत आलीशान मन्दिर है। और हमने पटना से वापिस आते हुए यह मन्दिर देखा था।

श्री जैन तीर्थ कमलदह सिद्ध क्षेत्र दिगम्बर जैन मन्दिर

यह मन्दिर सुदर्शन नगर सुदर्शन पथ गुलज़ार बाग पटना में है।

खुदाबक्स औरियंट लायब्रेरी:---इस में अरबी फारसी की पांडुलिपियाँ हैं जिन्हें देखने के लिये अनुमति लेनी पड़ती है।

हमने ७० रुपये में एक साईकल रिक्शा कर लिया था। रिक्शा चालक का नाम श्री मुजीद मियाँ था। उसने हमें गुरुद्वारा हरिमन्दिर साहिब से लेकर गुरुद्वारा गुरु का बाग, किला हाउस (बिना पास के हम अन्दर नहीं जा सके) गुरुद्वारा गोबिन्द सिंह घाट, पादरी की हवेली (जिस समय हम वहाँ गये हवेली बंद थी और पादरी जी कहीं बाहर गये हुए थे) गुरुद्वारा गाय घाट, बड़ी पटनादेवी मन्दिर तथा जैन मन्दिर दिखाये।

छोटा नागपुर की पहाड़ियों से घिरा धार्मिक नगर---रांची

श्री कल्याण बैनर्जी व उनके परिवार के आमंत्रण पर हम कलकत्ता का दुर्गापूजा का त्योहार देखकर दिनांक ७-१०-९२ को सायं ६-१५ बजे हतिया एक्सप्रेस से अपने मित्र डॉ० एन० मी० दास के साथ रांची के लिये रवाना हुए और अगले दिन हम रांची पहुँच गये थे। श्री कल्याण कुमार व कुनाल बैनर्जी हमें लेने के लिए स्टेशन पर आये हुए थे। श्री कल्याण कुमार बैनर्जी ने हमें रांची, गया, बोधगया, राजगीर, नालन्दा तथा पावापुरी दिखाने के लिये बुलाया था।

रांची हावड़ा से ३९६ कि० मी०, पटना से २४८ कि० मी० है। हजारी बाग, बोकारो, धनबाद, आसनसोल, वर्धमान, पटना, गया, जमशेदपुर, नेत्रहट तथा पुरुलिया से सीधे बस द्वारा रांची जा सकते हैं। नई दिल्ली से प्रातः ४-५५ पर अमृतसर हतिया एक्सप्रैस रेल रांची जाती है।

रांची छोटा नागपुर की पहाड़ियों से घिरा बिहार राज्य का बहुत सुन्दर हिल स्टेशन है। यह समुद्र तल से लगभग २२०० फीट की ऊँचाई पर है। इसके चारों तरफ घने जंगल हैं। यहाँ की जलवायु बहुत स्वास्थ्यवर्धक है। १२ महीने वर्षा होती रहती है। थोड़ी वर्षा होती है, फिर धूप निकल आती है। थोड़ी गर्मी होते ही फिर वर्षा हो जाती है। इस तरह से दिन में कई बार धूप निकलती है और कई बार वर्षा हो जाती है।

रांची में मुख्य बाज़ार अपर बाज़ार है। पहले यहां पर खाद्यान का व्यापार होता था, अब पंडारा में जो यहाँ से ५ कि० मी० है वहाँ चला गया है। अब यहाँ पर रैडिमेड कपड़े जूते तथा अन्य दैनिक ज़रूरत की चीज़ें मिलती है। दूसरा मुख्य

बाज़ार मेन रोड़ या महात्मा गांधी पथ है। तीसरा मुख्य बाज़ार रातु रोड़ है। आकाशवाणी और दूरदर्शन इसी रोड़ पर हैं। गाड़ियों के कारखाने है। यहीं पर आकाशवाणी होटल है। होटल से थोड़ी दूर रांची पहाड़ी है। पहाड़ी के नीचे रांची पहाड़ी मन्दिर विकास समिति का काली देवी मन्दिर है। लगभग साढ़े तीन सौ सीढ़ियां चढ़कर पहाड़ों के शिखर पर शिव मन्दिर है। हम दिनांक ८-१०-६२ को श्री कल्याण बैनर्जी के परिवार के साथ रांची हिल देखने गये थे और रातु रोड़, अपर बाजार तथा महात्मा गांधी पथ पर भी घूमे थे। रातु नाम की बस्ती रांची से १५ कि० मी० के फासले पर है। यहाँ पर भूतपूर्व राजा रातु का किला है। यहाँ पर दुर्गा पूजा का त्यौहार राज परिवार की ओर से मनाया जाता है जिसमें सब लोग बहुत हर्ष और उल्लास के साथ भाग लेते हैं।

रांची से १५ कि० मी० दूर हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन का कारखाना, मैरीन डीजल प्लांट तथा एच० एम० वी० पी० प्लांट है। रांची अंग्रेजों के समय से सैकिंड गजधानी है। यहाँ गवर्नर भी रहता है। गर्मियों में यहाँ की राजधानी है।

स्वर्ण रेखा नदी का उद्‌गम स्थल रांची से १५-२० कि० मी० नगड़ी के पास है। यह नदी अकेली कलकत्ता जाकर समुद्र में मिल जाती है। इस नदी के निकट पांडू गाँव है। कहा जाता है कि पांडव लोग अज्ञातवास के समय यहाँ आकर रुके थे। इसी क्षेत्र में मदरा मुंडा नाम के राजा थे। जिनका नाम मद्र नरेश भी था। वे माद्री के पिता थे। माद्री पांडु के साथ ब्याही गई थी। इसलिये यहाँ पांडवों की ननिहाल थी।

रांची से ८० कि० मी० दूर राज रप्पा मन्दिर है। १२० कि० मी० पर घाटी स्थान है। यहाँ काली का छीनो मस्तक मन्दिर है। वहाँ से १० कि० मी० जाना पड़ता है। कहा जाता है कि हनुमान जी का जन्म इसी स्थान पर हुआ था। रांची से १६० कि० मी० पर सिमोगा है। वहाँ से २५ कि० मी० पर राम रेखा नाम का स्थान है। सीता हरण से पहले बनवास के समय राम, लक्ष्मण और सीता जी यहाँ आये थे। यहाँ पर दो कुण्ड है। एक धनुष की तरह का और दूसरा बाण की तरह का है। धनुष की तरह का कुण्ड बड़ा है और तीर की तरह का कुण्ड बहुत छोटा है। इन कुण्डों की गहराई का अभी तक कुछ पता नहीं लग सका है कि कितने गहरे है। यहाँ पर सीता जी का चूल्हा है जो हमेशा अपने आप जलता रहता है। यह पहले की मान्यता है। अब आग खत्म हो गई है, केवल निशान रह गया है।

रांची में मुख्य फसल चावल है। मक्का भी होती है, गेहूँ कम होता है। सब्ज़ियों

की पैदावार बहुत है। उड़ीसा और कलकत्ता तक यहां से सब्जियाँ जाती है। रांची से पचास कि० मी० पर कोयला, ताम्बा, यूरेनियम तथा अबरक की खानें हैं। हजारी बाग छोटा नागपुर में ही आता है।

रांची में दशहरा, दीपावली, छट, मोहर्रम, गुरु नानक देव जी का प्रकाश उत्सव तथा सभी भारतीय उत्सव भाई चारे से मनाये जाते हैं। आदिवासियों का सरहूल त्योहार मनाया जाता है। यहाँ पर सभी जातियों के लोग रहते हैं। आपस में बर्ताव अच्छा है। लोगों में सूझ-बूझ है। आर्थिक रूप से गरीबी अधिक है।

नोटः---रांची की तथा उसके आस पास की उपरोक्त जानकारी श्री राधे श्याम शर्मा जी, कल्याण बैनर्जी तथा श्रीमती इशानी बैनर्जी ने दी।

रांची में देखने योग्य स्थान

१. रांची हिल्ज रेलवे स्टेशन से चार कि० मि० पर है। २. रांची लेक दो कि० मी० ३. टैगोर हिल्ज साढ़े सात कि० मी० ४. रांची धाम ६ कि० मी० । (५) श्री जगन्नाथपुर मन्दिर १० कि० मि० (६) जोन्हा फाल्ज ४० कि० मी० (७) राजरप्पा मन्दिर ८० कि० मी० (८) नेत्रहट ११५ कि० मी० और हुन्दू फाल्ज ५० कि० मी० के फासले पर है।

इसके अतिरिक्त रांची में इंडियन मैंटल होस्पिटल १० कि० मि० पर। हाईटेशन इंशुलेट फैक्टरी और वैंक्सीन इंस्टीच्यूट ७ कि० मि० और म्यूजियम ४ कि० मी०, होडप फौरेस्ट १६ कि० मी०, हतिया डैम और एच० ई० सी० १३ कि० मी० तथा बिरला इन्स्टीच्यूट ऑफ टैक्नोलोजी है।

हमने दिनांक ८-१०-६२ को रांची हिल्ज देखा था और अगले दिन प्रातः ८ बजे मारुति वैन द्वारा हुन्दू तथा जोन्हा (गौतम धारा) फाल्ज देखने गये थे। मारुति वैन का प्रबन्ध श्री कल्याण बैनर्जी ने किया था।

सुहावना मौसम था। कभी धूप निकलती थी और कभी जोर से वर्षा होने लगती थी। जंगलों से घिरी पतली, लम्बी, सर्प के समान बलखाती सड़कों पर मारुति वैन दौड़ रही थी। टेपरिकार्ड पर दिलखुश गाने चल रहे थे। एकान्त और मनोरम प्राकृतिक दृश्य था। कितनी खुशगवार यात्रा थी'। यात्रा का आनन्द लेते हुए हम हुन्दू फॉल्ज पहुँच गये थे और वहाँ पहुँचते ही भारी वर्षा होने लगी थी। वर्षा में भीगते हुए ही हमने हुन्दू फाल्ज देखने का आनन्द लिया था।

हुन्दू फाल्ज

बिहार राज्य में बिजली के उत्पादन के लिये हुन्दू फाल्ज एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर ऑल इन्डिया ट्रैकिंग एन. सी. सी. महिला विद्यार्थियों का कैम्प लगा हुआ था। श्री सुदर्शन चौबे जी बी. आई. टी. मैस्त्रा, विद्यार्थियों के साथ कैम्प में आये हुए थे। उन्होंने यहाँ के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हुन्दू फाल्ज से ६५ मेघावाट बिजली और ६५ मेघावाट बिजली सिन्द्री में जो कि हुन्दू फाल्ज के निकट है, वहाँ तैयार होती है। इस प्रकार १३० मेघावाट बिजली तैयार करके स्टौक करने के लियें हतिया को दी जाती है। इस बिजली का पटना से विभाजन होता है कि किस क्षेत्र को कितनी बिजली देनी है। वहीं पर बिजली का कंट्रोल होता है। बिहार में विद्युत् बोर्ड के चार पावर हाऊस हैं। बरौनी, पतरातु, हुन्दू आदि।

हुन्दू फाल्ज में पहाड़ के ऊपर डैम बनाया गया है। वहाँ पर पानी इकट्ठा किया जाता है। वहाँ से पानी हुन्दू पावर हाउस में आता है और उससे यहाँ बिजली बनाई जाती है। पानी के स्टाक का मेन प्वायन्ट सिंद्री में है। यहाँ का पानी टाटा नगर में जाता है और वहाँ से बचा पानी रांची तथा हतिया में पीने के प्रयोग के लिये फिल्टर करके लाया जाता है और वहाँ से घूम कर फिर यहीं आ जाता है। बिजली भी इसी पानी से दी जाती है। यहां पर न तेल का खर्चा है और न ही कोयले का, केवल पानी से ही पावर हाऊस चलता है। प्रथम प्लांट सिंद्री में है और दूसरा हुन्दू में है। ये दोनों निकट ही हैं।

श्री बाबूलाल राउत परिचालक हुन्दू फाल्ज डैम ने हमें बताया और पावर हाउस दिखाया कि जब पानी सिन्द्री से चलता है तो हुन्दू में चैनल द्वारा आता है और पावर हाउस में जाता है। वहाँ पर टरबाइन हैं और पंखे की तरह ब्लेड है तथा ऊपर जनरेटर है।

सिन्द्री से १० कि० मी० आगे नदियों, पहाड़ों, फाल्ज तथा वर्षा का पानी जमा होता है। जिसे गैतल सूत्र कहते हैं। वह एक तरह से डैम है। वहाँ से चैनल द्वारा पानी पहले सिन्द्री में स्टाक एक नम्बर में आता है और वहाँ से नम्बर एक यूनिट में चला जाता है। वह पानी प्लाण्ट को चलाकर जब बाहर निकलता है तो इसे पेनस्टाक में जमा करते हैं फिर चैनल के द्वारा पानी दो नम्बर यूनिट के लिये चलाने हेतु लिया जाता है जिसे टरबाइन शेप से लगा जनरेटर घुमाता है। जनरेटर को ठन्डा करने के लिये कूलर लगा हुआ है।

हुन्दू फाल्ज बिहार में प्रथम नम्बर पर है; परन्तु बिजली बनाने के कारण फाल्ज बहुत कम रह गया है।

जोन्हा फाल्जः--हुन्दू फाल्ज देखकर हम वापिम श्री कल्याण बैनर्जी के घर ५३ सी सर्कुलर रोड़ पर आये और वहाँ पर खाना खा कर जोन्हा फाल्ज देखने गये। रास्ते में हम स्वर्ण नदी के ऊपर से गुजरे। रांची से लगभग १ कि० मी० पर नामकुम आया। यहाँ पर मिलिट्री की छावनी है। इस से आगे सारा इन्डस्ट्रियल ऐरिया है। टाटा सिलवे फैक्टरी तथा टाटा ऊषा मारटिन वायर रोप फैक्टरी है। यहाँ पर वायर के रस्से बनते हैं। वाक्मपोल कम्पनी भी है जिममें कार गैस ब्रेक ऑयल बनता है। इस तरह से रास्ते में हम सब चीजें देखते हुए जोन्हा फाल्ज पहुँचे जो लगभग ४० कि० मी० है। वहाँ पहुँचते पहुँचते दिन छिप गया था और सीढ़ियों के रास्ते जाने में बहुत देर लगती इसलिये हमने दो लड़के गाइड कर लिये जो हमें पहाड़ी रास्ते से जोन्हा फाल्ज दिखाने ले गये। अन्धेरा हो जाने के कारण हम बड़ी कठिनाई से फाल्ज के निकट पहुँचे। वे दोनों लड़के हमें बारी-बारी बाजू पकड़ कर नीचे उतारते थे।

जोन्हा फाल्ज को गौतम धारा भी कहते हैं। पहाड़ी पर विश्राम करने के लिये एक शैड भी बना हुआ है और एक चाय की दुकान भी है। जोन्हा फाल्ज का प्राकृतिक सौन्दर्य, पर्वत पर अनगिनित वृक्ष तथा गिरता हुआ दूध जैसा जल मनुष्य को आत्म-विभोर कर देता है।

वैसे तो रांची में यात्रियों के ठहरने के लिए अनेक धर्मशालायें तथा होटल हैं; किन्तु मैं तो अपने प्रिय मित्र श्री कल्याण कुमार बैनर्जी के घर ठहरा था। उनकी मैत्रता व अतिथि सत्कार लाजवाब है।

बिहार के कुछ अन्य धार्मिक स्थल कुशेश्वर, महिषि, सोनपुर, जनकपुर, बक्सर, जय मंगला भगवती

कुशेश्वर स्थान (दरभंगा):---पटना से १४४ कि० मि० की दूरी पर दरभंगा है और दरभंगा से ७५ कि० मी० की दूरी पर कुशेश्वर स्थान है। जनश्रुति के अनुसार भगवान राम के पुत्र कुश ने यहाँ पर शिवलिंग की स्थापना की थी।

महीषिः---सहरसा जिले के अन्तर्गत महीषि नामक एक ग्राम है। वहाँ मुनि वशिष्ठ द्वारा आराधित उग्रतारा भगवती प्रतिष्ठित है जो सिद्ध पीठों में से एक है।

कहा जाता है कि मुनि वशिष्ठ हिमालय के ऊपर शक्ति की उपासना कर रहे थे। भगवती ने उन्हें दर्शन दिये और वशिष्ठ जी की इच्छा के अनुसार साथ रहना स्वीकार किया; लेकिन भगवती ने एक शर्त लगा दी कि जिस समय तुम्हें मेरे रूप पर संदेह होगा उसी समय मैं लुप्त हो जाऊँगी। तदानुसार हिमालय से महीषि तक भगवती ने एक क्वांरी लड़की के रूप में साथ दिया। यहाँ आने पर वशिष्ठ को संदेह हो गया कि यह भगवती है या कोई लड़की। संदेह करते ही भगवती लुप्त हो गई और वशिष्ठ वहाँ से पश्चाताप करते हुए चले गये।

महीषि गाँव काशी नदी के तट पर है वहाँ पर पीपल के बहुत वृक्ष थे। एक दिन भगवती ने रानी को स्वप्न में कहा कि मैं पीपल के वृक्ष में हूँ मुझे वहाँ से निकाल कर मन्दिर बनवाओ। रानी ने वृक्ष काटने का हुक्म दिया लेकिन मंत्री ने वृक्ष कटवाने से मना कर दिया। क्योंकि हिन्दू धर्म में पीपल को नहीं काटते। तब रानी ने भगवती से प्रार्थना की कि यहाँ पर हजारों पीपल के वृक्ष हैं, हम कौन से वृक्ष को काटें। प्रार्थना करने पर जिस वृक्ष में भगवती की प्रतिमा थी वह वृक्ष अपने

आप फट कर गिर गया और भगवती की प्रतिमा निकल आई। वहीं पर भगवती का मन्दिर स्थापित किया गया।

सोनपुर हरिहरनाथ महादेव मन्दिर

यहाँ गंगा और बूढ़ी गंडक का संगम है।

सोनपुर:।---पटना से १८ कि० मी० पर है। यहाँ स्टीमर में बैठ कर जाते है। सोनपुर में दुनिया का सबसे लम्बा प्लेटफार्म है और यहाँ पर कार्तिक महीने में विश्व-विख्यात मेला लगता है। पौराणिक कथा है कि एक बार गज और ग्रह में भयंकर युद्ध हुआ और बहुत दिन तक होता रहा। गज ने परेशान होकर सुदर्शन चक्रधारी भगवान श्री कृष्ण की स्तुति की और भगवान् हरिहर रूप धारण करके गज की रक्षा करने आये। उन्होंने अपने सुदर्शन चक्र से ग्रह को मार डाला और गज का उद्धार किया। इस पवित्र स्थान का नाम "कौन हारा"? साथ ही संगम पर हरि और हर के विग्रह का लिंग स्थापित है।

जनकपुर धाम:---यह स्थान बिहार की मिथिला भूमि से सटे नेपाल राज्य में स्थित है। यहीं भगवान राम ने धनुष तोड़ा था और सीता से विवाह किया था।

बक्सर का अहिल्या स्थान:---यह स्थान गंगा के किनारे है। यहीं गौतम ऋषि और अहिल्या का आश्रम था। जहाँ देवताओं के राजा इन्द्र ने छल कपट से अहिल्या का सतीत्व नष्ट कर दिया था। क्रुद्ध ऋषि ने अपनी धर्मपत्नी अहिल्या को पत्थर बना दिया था।

जय मंगला भगवती:---बिहार के बेगुसराय ज़िला में यह स्थान है। यहाँ पर ३६ कि० मी० लम्बाई और १२ कि० मी० चौड़ाई क्षेत्र में १२ महीने जल भरा रहता है और हर प्रकार के पक्षी यहाँ जल क्रीड़ा करते रहते हैं। भारत सरकार के सहयोग से उसे पर्यटक स्थल में परिवर्तित किया जा रहा है। यहाँ पर जय मंगला भगवती का भव्य मन्दिर है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में एक राक्षस ने जय मंगला भगवती से शादी करने का अनुरोध किया। लेकिन जय मंगला ने शर्त लगा दी कि वह रात भर में तालाब बना देगा तो मैं शादी करूँगी। राक्षस ने शर्त पूरी कर दी। भयभीत जय मंगला ने मुर्गे का रूप धारण करके बांग लगा दी। राक्षस क्रुद्ध हो गया और उसने जय मंगला का एक स्तन काट लिया। जय मंगला वहीं पर प्रस्तर (पत्थर) हो गई और अभी भी भगवती के रूप में पूजित है।

नोटः---बिहार के उपरोक्त अन्य तीर्थ-स्थानों की जानकारी दरभंगा निवासी श्री नवल किशोर सिंह जी ने दी।

जब कलकत्तावासी सड़कों और गलियों में उमड़ पड़े-'दुर्गा पूजा' कलकत्ता

अपने प्रिय मित्र डॉ० नारायण चन्द्र दास के निमंत्रण पर इस बार हम दुर्गा पूजा का त्योहार देखने कलकत्ता गये। दिल्ली से २.१०.६२ को सायं साढे चार बजे ए० सी० एक्सप्रैस से रवाना होकर अगले दिन ३.१०.६२ को रात्रि ६ बजे कलकत्ता पहुँचे थे।

कलकत्ता शहर भिन्न-भिन्न रंगों की रोशनियों से जगमगा कर नई नवेली दुल्हन की तरह सजा हुआ था। जगह-जगह संगीत, ढोल 'नगाड़े' मां दुर्गा की आरती में बज रहे थे। कलकत्तावासी सजधज कर सड़कों और गलियों में निकल पड़े थे, मानो मनुष्यों का सैलाब आ गया था। घरों में शायद ही कोई रहा हो। हाँ, यदि कुछ इस परम पावन दुर्गा पूजा के आनन्द का देखने मे वंचित रह गये थे तो वे केवल डॉ०, नर्सें, रेल, बस कर्मचारी, टैक्सी ड्राइवर या आवश्यक सार्वजनिक सेवा कर्मचारी थे जो अपना मन मसोस कर अपनी ड्यूटी कर रहे थे।

दुर्गा पूजा कलकत्ता का सबसे बड़ा त्योहार माना गया है। इस त्योहार की दो महीने पहले तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं और जगह-जगह प्रत्येक मोहल्ले, बाजार तथा सार्वजनिक स्थानों पर बड़े-बड़े पंडाल बनाये जाते हैं जिनमें माँ दुर्गा, गणेश जी, लक्ष्मी जी, कार्तिकेय तथा सरस्वती देवी की विशाल मूर्तियाँ सजाई जाती हैं। मां दुर्गा के दस हाथ होते हैं और वे शेर की सवारी पर महिषासुर को मारते हुए विराजमान होती हैं। उनकी एक तरफ गणेश तथा लक्ष्मी और दूसरी तरफ कार्तिकेय तथा सरस्वती देवी विराजमान रहती हैं। एक-एक पंडाल बनाने में कई-कई लाख रुपये खर्च हो जाते हैं। श्रद्धालु लोग दिल खोलकर खर्च करते हैं।

षष्टी को बोधन होता है अर्थात् वन्दना होकर दुर्गा पूजा आरंम्भ हो जाती

है। सप्तमी, अष्टमी, नौमी और दसमीं तक दुर्गा पूजा चलती है। चार दिन का सार्वजनिक अवकाश होता है जिससे कि सब लोग दुर्गा पूजा का उत्सव आनन्दपूर्वक मना सकें। सारी रात स्त्री पुरुष तथा बच्चे अपने नये और सबसे बढ़िया कपड़े पहन कर कलकत्ता शहर में पैदल घूमते हुए पंडालों में जाकर दुर्गा मां की पूजा करते हैं इस तरह सारा कलकत्ता नगर सिमट कर एक मोहल्ले की तरह नजर आता है और सब कलकत्ता वासी चाहे वे किसी भी धर्म, जाति या संप्रदाय के हों, सब एक हो जाते हैं। दुर्गा पूजा में निश्चित समय पर प्रसाद दिया जाता है।

कलकत्ता का दुर्गा पूजा का त्योहार साम्प्रदायिक एकता का प्रतीक है। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सब नये-नये कपड़े पहनते हैं। सड़कें और गलियां मनुष्यों से भरी रहती हैं। लगभग प्रातः तीन बजे आरती होती है। पाँचों मूर्तियों की पूजा एक साथ होती है। अलग-अलग नहीं होती। दुर्गा मां के दो पुत्र तथा दो पुत्रियां मानी गई हैं गणेश तथा कार्तिकेय जी पुत्र और लक्ष्मी जी तथा सरस्वती जी पुत्रियां मानी गई हैं। काली माँ दुर्गा का ही एक रूप माना गया है।

दुर्गा पूजा का त्योहार साल में दो बार आता है - एक चैत्र में और दूसरा अश्वनि मास में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नौवी तक। अश्वनि मास का दुर्गा पूजा का त्योहार बड़ा माना गया है; क्योंकि भगवान श्री रामचन्द्र जी ने इसी मास में लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व मां दुर्गा का आह्वान किया था।

पूजा दसमीं को खत्म हो जाती है और मूर्तियों को रथों, ट्रकों और टेम्पुओं में सजाकर बैंड बाजों के साथ विसर्जन करने के लिए नदी पर ले जाते हैं। वहाँ पर मंत्रोच्चारण के साथ मूर्तियों को जल में विसर्जित कर देते हैं; लेकिन जो बड़े पंडाल हैं उनको पब्लिक देखने के लिए दो-चार दिन बाद तक भी आती रहती है। इलाहाबाद, बिहार, त्रिपुरा तथा बहुत दूर-दूर से लोग दुर्गा पूजा देखने आते हैं। इसलिए बड़े-बड़े पंडालों में मूर्तियां दो-चार दिन बाद तक भी रखी जाती हैं और बाद में उनका विसर्जन किया जाता है।

महिषासुर को मारने के लिए मां ने दुर्गा का रूप धारण किया था। प्राचीन काल में देवता तथा दैत्यों में दो वर्ष तक युद्ध हुआ। दैत्यों का स्वामी महिषासुर था और देवताओं का स्वामी इन्द्र था। युद्ध में देवता हार गये और महिषासुर इन्द्रलोक पर राज्य करने लगा। देवता ब्रह्मा जी को अपने साथ लेकर विष्णु तथा शंकर जी के पास गये और कहा कि महिषासुर ने स्वर्ग को जीत लिया है और सभी देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया है अब हम आपकी शरण में आये हैं। आप उसके वध का कोई उपाय कीजिए, यह सुनकर भगवान विष्णु की भौहें

क्रोध से तन गईं और ब्रह्मा तथा शंकर के मुख से भी तेज प्रकट हुआ। इन्द्र आदि देवताओं के मुख से भी तेज प्रकट हुआ। सभी तेज मिलकर एक हो गये और एक होने पर उस तेज से मां दुर्गा का रूप प्रकट हुआ। मां दुर्गा ने प्रकट होते ही शेर पर सवार होकर ऊँचे स्वर में गर्जना की। उनके भयानक नाद से सारा आकाश भर गया। देवता गण प्रसन्न होकर मां दुर्गा की जय-जयकार करने लगे। उन्होंने नम्र होकर मां दुर्गा की स्तुति की।

देवताओं को प्रसन्न देख तथा मां दुर्गा का सिंहनाद सुनकर महिषासुर अपनी सेना लेकर मां दुर्गा से युद्ध करने आया। उसने अपने सेनापति चिक्षुर को मां दुर्गा के साथ युद्ध करने भेजा। दोनों का युद्ध होने लगा। चामर, उद्रग, महाहनुदैत्य, असिलोमा, वाष्पकाल, पारिबरित, विडाल आदि अन्य दैत्य भी अपनी-अपनी सेनायें लेकर आये। माँ दुर्गा ने उन पर अस्त्रों-शस्त्रों की वर्षा करके उन सबको तोड़ हरा दिया। देवी जी का वाहन सिंह भी क्रोध में आ गया और दैत्यों की सेना को मारने लगा। देवी जी ने युद्ध करते हुए जितने श्वास छोड़े, वे सब सैंकड़ों-हजारों गणों के रूप में प्रकट हो गये। उन गणों ने भी दैत्यों के साथ युद्ध आरम्भ कर दिया। कुछ गणों ने नगाड़े, शंख तथा मृदंग बजाये जिससे कि युद्ध का उत्साह बढ़े। देवी जी ने त्रिशूल, गदा तथा शक्तियों की वर्षा करके हजारों दैत्यों को मार गिराया महा असुर चिक्षुर के बाणों को काटकर उसका धनुष और ऊँची लहराती ध्वज काट डाली। उसके सारथी और घोड़ों को मार डाला। चिक्षुर पैदल ही तलवार ढाल लेकर देवी जी की ओर दौड़ा और देवी के वाहन सिंह पर प्रहार किया। फिर देवी जी की बाईं भुजा पर प्रहार किया; लेकिन तलवार देवी जी की भुजा पर पहुँचते ही अपने आप टूट गई। तब चिक्षुर ने शूल चला दिया। देवी जी ने अपने शूल से उस शूल को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिये और चिक्षुर महादैत्य को अपने शूल से मार डाला। चिक्षुर के मरने पर चामर हाथी पर चढ़ कर देवी जी से युद्ध करने आया। देवी जी ने उसे भी अपने शूल से मार डाला। इसी तरह देवी जी ने वाष्पकाल, अंधक, उग्राश्य, उग्रवीर्य तथा महाहनु दैत्यों को भी मौत के घाट उतार दिया। विडाल दुर्धर तथा दुर्मुख को भी यमपुरी पहुँचा दिया। महिषासुर अपने सेनापति तथा अन्य महादैत्यों को देवी जी द्वारा मरते देख कर भैंसे का रूप बना कर उनसे युद्ध करने आया और अपने थुथनों, खुरों तथा पूंछ से देवी जी के गणों को मारने लगा। गण सेना को गिरा कर अपने खुरों से पृथ्वी खोदने लगा। सींगों से बड़े-बड़े पहाड़ उठा कर फेंकने लगा। पूँछ से समुद्र पर प्रहार किया। पर्वत टूटने लगे, पृथ्वी डूबने लगी और बादल फटने लगे और फिर महिषासुर गरजता हुआ

देवी जी के वाहन सिंह पर झपटा। महिषासुर का यह सब उत्पात देख कर मां दुर्गा को बहुत क्रोध उत्पन्न हुआ। उन्होंने क्रोध में भर कर उसकी ओर अपना पाशा फेंका और उसे बाँध लिया। महिषासुर ने देवी जो के पाशे में बन्धने पर अपना भैंसे का रूप त्याग दिया और सिंह का रूप धारण कर लिया। जैसे ही मां दुर्गा उसका सिर काटने लगी तो उसने सिंह रूप त्याग कर पुरुष रूप बना लिया और हाथ में तलवार लेकर मां दुर्गा के सामने आया। मां दुर्गा ने उसे अपने बाणों से बींध डाला। तब उसने हाथी का रूप बना लिया। देवी जी ने अपनी खड़ग से उसकी सूंड काट डाली तब फिर महिषासुर भैंसे के रूप में आ गया तब मां दुर्गा मधुपान करने लगी और लाल-लाल नेत्र करके हंसने लगी और क्रोध में भरकर अपनी तलवार से महिषासुर का सिर काट कर नीचे गिरा दिया। महिषासुर के मरने पर देवी जी ने उसकी सारी सेना को भी नष्ट कर दिया।

महिषासुर के मरने पर सभी देवता देवी जी की जय-जयकार करने लगे और उन पर फूलों की वर्षा करने लगे। गंधर्व गाना गाने लगे और अपसरायें नाचनें लगीं। इस प्रकार मां दुर्गा ने महिषासुर का वध कर दिया था। मां दुर्गा का यही रूप दुर्गा पूजा में दर्शाया जाता है जो सत्य की असत्य पर विजय का प्रतीक है।

माँ दुर्गा के नौ नाम है (१) शैल पुत्री (२) ब्रह्मचारिणी (३) चन्द्रघंटा (४) कुष्मांडा (५) स्कंध माता (६) कात्यायनी (७) कालरात्रि (८) महागौरी (६) सिद्धिदात्री। महादेव जी के तेज से मां का मुख, यम के तेज से केश, विष्णु के तेज़ से भुजायें, चन्द्रमा के तेज से दोनों स्तन, इन्द्र से कटि, वरुण से जंघा व अरु-स्थल, पृथ्वी से नितम्ब, ब्रह्मा से दोनों चरण, सूर्य से चरणों की उंगलियाँ, वसुओं से हाथों की उंगलियाँ, कुबेर से नासिका, प्रजापति से दांत, अग्नि से तीन नेत्र, दोनों संध्याओं से दोनों भौहें, वायु से दोनों कान उत्पन्न हुए थे।

इस प्रकार माँ दुर्गा का प्रादुर्भाव होने पर महादेव जी ने मां दुर्गा को अपने त्रिशूल से शूल, विष्णु जी ने अपने सुदर्शन चक्र से चक्र, वरुण ने शंख, अग्नि ने शक्ति, मारुति ने धनुष बाण और तरकश, देवराज इन्द्र ने वज्र, सहस्त्र नेत्र इन्द्र ने ऐरावत हाथी का घंटा, यमराज ने लाल दंड, सागर ने रुद्राक्ष माला, ब्रह्मा ने कमण्डल, सूर्य ने किरण, काल ने तलवार और ढाल, क्षीर सागर ने हार, चूड़ामणि, दिव्य कुण्डल, कभी पुराने न होनें वाले दो वस्त्र, चमकता हुआ अर्धचन्द्र, भुजाओं के लिए बाजुबंद, चरणों के लिए नूपुर, कंठ के लिए सर्वोत्तम कंठुला तथा उंगलियों के लिए रत्नजड़ित मुद्रिकायें, विश्वकर्मा ने निर्मल परशु तथा अनेक रूपों वाले अस्त्र, दिये थे।

वैसे तो दुर्गा पूजा का त्यौहार सारे भारत में मनाया जाता है परन्तु बंगाल में विशेषकर कलकत्ता में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस वर्ष यह त्यौहार २-१०-६२ षष्ठी को प्रारम्भ हुआ था। कलकत्ता में २१६० पैंडल बनाये गये थे। इसके अतिरिक्त छोटी-छोटी गलियों में भी अनेक पैंडल बनाये गये थे। इन पैंडलों में जो प्रसिद्ध पैंडल सजाये गये थे वे निम्नलिखित हैं:---

(१) आदि बालीगंज (२) कालिज स्केयर (३) युवा मैत्री (कालीघाट फायर स्टेशन के निकट) (४) कासीबोस लेन (५) लेक गार्डनज़ सर्वोजोनिन (६) दुर्गोत्सव (७) मैडक्स स्केयर (८) मुदियाली क्लब (९) नाइंथ पाली (सेवा बाजार) (१०) फल्गुनी संघ (११) नाइंटी फोर्थ पाली (सलिमपुर) (१२) संधानी बलिया घाट पुलिस स्टेशन के निकट) (१३) शिमला व्यायाम समिति (१४) श्री भूमि स्पोर्टिंग क्लब (लेन टाउन के निकट) (१५) मुनील नगर पूजा कमेटी (पिकनिक गार्डन) तथा (१६) युवा बरिंडा (उल्टा डांगा)।

कलकत्ता में एशियन पेंटस की ओर से उत्तम पैंडलों को शरदशमन पुरस्कार दिया जाता है। एक जूरी (जजों की कमेटी) बनाई जाती है जो सारे पैंडलों में घूमकर उत्तम पैंडलों का चुनाव करती है तथा दसवीं के दिन उन पैंडलों में जाकर वहीं पर पुरस्कार वितरण करती है। पुरस्कार में एक ट्राफी तथा एक सर्टिफिकेट होता है। इस बार जूरी में श्री दिब्येन्दु पालित (उपन्यासकार), श्री पी. सी. सरकार (जूनियर) मैजिशियन, प्रीती पटेल (मणिपुरी डांसर तथा श्री सुनीलदत्त थे। उन्होंने लगातार १२ घंटे घूमकर शहर के भिन्न-भिन्न पैंडलों को देखा और फिर अपना निर्णय दिया। उन्होंने मुदियाली क्लब, युवा बरिंडा तथा सुनील नगर को पुरस्कार के लिए चुना। फलगुनी संघ तथा श्री भूमि को दूसरे नम्बर के निकट पाया। मुदियाली क्लब १६८८ से ६२ तक तीन बार पुरस्कृत हो चुकी है जबकि युवा बरिंडा और सुनील नगर पहली बार पुरस्कृत हुए हैं। इन में प्रथम, द्वितीय, तृतीय नहीं होता। केवल तीन सर्वोत्तम पैंडलों को एक जैसा (ट्राफी तथा सर्टिफिकेट) दिया जाता है। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पोजिशन होती है। मुदियाली प्रथम पोजीशन, युवा बरिंडा द्वितीय तथा सुनील नगर तृतीय पोजिशन पर रही।

हमने दिनांक ४. १०. ६२ से ५. १०. ६२ तक कलकत्ता के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में घूमकर सारे सुन्दर-सुन्दर पैंडल देखे। बिहाला चौरास्ता के निकट एक गली में बहुत ही भव्य पैंडल बनाया गया था और गली तथा सड़क दर्शकों से खचाखच भरी हुई थी। पूजा करने वाला पुरोहित हाथ में दीपक लेकर ढाकी (ढोल) की ताल पर नृत्य करते हुए माँ की आरती कर रहा था। कितना रोमांचकारी दृश्य था। घंटों

नृत्य होता रहा और हम मंत्रमुग्ध होकर उसे देखते रह गये।

बीडन स्ट्रीट तथा मुहम्मद अली पार्क के पैंडल भी बहुत आकर्षण का केन्द्र बने हुए थे। हजारों की संख्या में लोग पूजा करने आ रहे थे।

कालिज स्ट्रीट में तो और भी रोमांचकारी दृश्य देखने को मिला। वहाँ पर प्रकाश तथा ध्वनि के माध्यम से माँ दुर्गा और महिषासुर की लड़ाई के दृश्य दिखाये जा रहे थे।

कालिज स्केयर के पैंडल की सजावट का तो जवाब ही नहीं था। बहुत बड़े क्षेत्र में तालाब के किनारे माँ दुर्गा का विशाल पैंडल सजाया गया था। तालाब के चारों तरफ भिन्न-भिन्न रगों की रोशनी की गई थी और तालाब के पानी में रोशनी की परछाईं कितनी सुन्दर लग रही थी। एक तरफ बड़े-बड़े झूले लगे हुए थे, मेला-सा लगा हुआ था। दर्शकों की इतनी भीड़ थी कि जैसे सारा कलकत्ता वहीं पर उमड़ पड़ा था। काफी हाउस के सामने से लेकर पीछे तक मीलों लम्बी दर्शकों की लाइनें लगी हुई थीं। कम से कम चार-पाँच घंटे में पैंडल तक पहुँचा जा सकता था। पैंडल में माँ दुर्गा की भव्य मूर्ति सजाई गई थी। सुन्दरता, सजावट, रोशनी, वातावरण, विस्तृत क्षेत्र, तालाब, मनोरंजन के लिए झूले, दर्शकों की आपार भीड़, सुनियोजित प्रबंध एवं हर दृष्टि से यह पैंडल उत्तम प्रतीत होता था। हमने यहाँ के प्रबन्धकों में से श्री सुबेन्दु दास (सदस्य) तथा श्री अमरनाथ, मंत्रियों में से एक, से साक्षात्कार किया उन्होंने हमें दुर्गा पूजा त्यौहार के विषय में जानकारी दी। हमारे साथ मेरा प्रिय मित्र नारायण चन्द्रदास भी था और हम अतिथि गेट से पैंडल के अन्दर गये थे जिससे हमें समय की बचत हो गई थी।

हम जूरी द्वारा घोषित सर्वोत्तम मुदियाली क्लब का पैंडल भी देखने गये। मुदियाली पैंडल में पहुँचने से पहले सड़क के दोनों ओर भारतीय उत्सवों के नाम थोड़े-थोड़े फासले पर तख्तियों पर लिखकर लगा रखे थे जिनमें लगभग २८ त्यौहारों के नाम थे। दुर्गा पूजा, ईस्टर, बीहू, (भोगली) जन्माष्टमी, नाग पंचमी, तारनेत्र फेचर, वैसाखी, शिवरात्रि, पूरम, महावीर जयन्ती, लोहड़ी, दशहरा, पोंगल, वट पूर्णिमा, महामस्तक अभिषेक, दीवाली, ओनम, होली, गणगौर गणेश चतुर्थी, रामनौमी, बीहू रंगोली, रथ यात्रा, गंगा सागर मेला, छत्रपूजा, गुरुपर्व, ईद आदि। रोशनी दीपों की तरह की गई थी। प्रतिमा सफेद रंगों में सुशोभित थीं।

जहाँ से त्यौहारों की तख्तियाँ शुरू होती थीं वहाँ पर एक गली में भी बहुत सुन्दर पैंडल सजाया गया था और दर्शकों की भीड़ भी कहीं अधिक थी। इस पैंडल में गोल्डन कलर में मूर्तियाँ जगमगा रही थीं।

मुदियाली क्लब पैंडल में हमारी मुलाकात श्री अरुण भुवानिया (सदस्य) श्री रणजीत डे (सदस्य कार्यकारिणी) तथा श्री मोहन (ज्वांइट सैक्रेट्री) से हुई। उन्होंने हमें दुर्गा पूजा के त्यौहार के उपलक्ष में काफी जानकारी दी तथा हमें पुरस्कार वितरण समारोह में आने के लिए आमन्त्रिण किया। अगले दिन ६. १०. ६२ को हम मुदियाली क्लब का पुरस्कार वितरण समारोह देखने गये थे जो पैंडल के सामने एक सादे से समारोह में हुआ था।

कलकत्ता में दुर्गा पूजा देखने का यह हमारा प्रथम अवसर था। केवल २ दिनों में ही मैं जितने भी पैंडल देख सके, वे सब एक से एक बढ़कर थे। प्रत्येक में तन, मन और धन से सजावट की गई थी। हमारा एशियन पेंटस के जजों से अनुरोध है कि वे जनता की रुचि को ध्यान में रखकर निर्णय दें। इतने बड़े नगर में जहाँ हज़ारों पैंडल लगते हैं, केवल तीन पुरस्कार क्या मायने रखते हैं। कम से कम ३०, ४० पैंडलों को हर वर्ष पुरस्कृत किया जाना चाहिए। एशियन पेंटस के अतिरिक्त और भी बड़ी-बड़ी कम्पनियों को पैंडलों को पुरस्कृत करने के लिए आगे आना चाहिए। जिस पैंडल को एक बार पुरस्कार मिल जाये उसे तीन वर्ष तक लिस्ट में नहीं लाना चाहिए।

नोटः---मेरी कलकत्ता यात्रा का श्रेय डॉ० नारायण चन्द्र दास एवं उनके परिवार को जाता है जिन्होंने दुर्गा पूजा के इस पावन अवसर पर हमें निमन्त्रित किया था।

कलकत्ता में धार्मिक स्थल

(१) पारस नाथ मन्दिर (जैन मन्दिर) शाम बाजार के पास है। यह मन्दिर १८६७ में बनाया गया था। यह कलकत्ता में सबसे सुन्दर जैन मन्दिर है।
(श्री के. के बैनर्जी, इशानि बैनर्जी, हमें पारस नाथ मन्दिर दिखाने ले गए थे)

(२) नखादा मस्जिद, धर्मतल्ला के पास है। यह मस्जिद १६२६ में बनाई गई। इसमें दस हज़ार व्यक्ति एक साथ नमाज पढ़ सकते हैं।

(३) सैंटपॉल कैथेड्रल (चर्च) रविन्द्र सदन के पास है। यह १८४७ में बिशप विलसन ने बनवाया था जो ७३ मीटर लम्बा २४ मीटर चौड़ा और ६१ मीटर ऊँचा है।

(४) कालीघाट (कालीघाट ५१ शक्तिपीठों में से एक है। यहाँ पर सती जी के केश गिरे थे। यहाँ की देवी का नाम देवी काली है और भैरव

का नाम नकुलेश्वर भैरव है। यह मन्दिर १८०६ में बना था।

(५) गुरुद्वारा, रासबिहारी एवेन्यू के पास है।

(६) दाक्षिणेश्वरः-इसे रानी रश्मणि ने १८४७ में बनवाया था। यहाँ मुख्य मन्दिर काली माँ का है। चार श्री कृष्ण और बारह शिव मन्दिर भी हैं।

(७) बैलूर मठः-हुगली के पश्चिमी किनारे पर है। यह १८६६ में बनाया गया। भिन्न-भिन्न कोनों से देखने पर चर्च, मस्जिद तथा मन्दिर दिखाई देता है। यह मन्दिर स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु रामाकृष्णा परम हंस की स्मृति में बनवाया था।

(८) लाल बाबा आश्रम (बैलूर मठ के पास) है।

(६) राम मन्दिर, बीडन स्ट्रीट में है।

(१०) राम टाकुर आश्रम, जादवपुर में है।

(११) हरिसभा, जादवपुर में है।

(१२) महानिर्वाण रेंगुलर पार्क के पास है।

(१३) रामाकृष्णा इंस्टीच्यूट ऑफ कलचर दर्शनीय है।

(१४) जोड़ा गिरजा (डबल चर्च) आदि हैं।
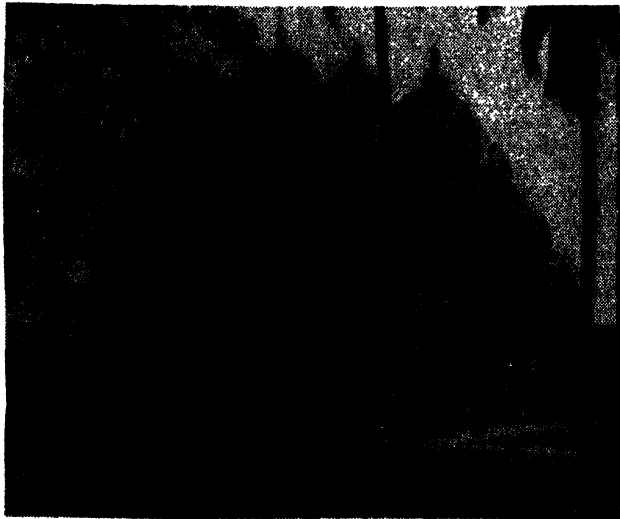
लाइट हाउस फॉर दी ब्लाइंड, कलकत्ता

दुर्गा पूजा के दौरान हमें कलकत्ता का अनूठा अंधविद्यालय---लाइट हाउस फॉर दी ब्लाइंड देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह विद्यालय भारत में अपनी किस्म का प्रथम प्रौढ़ अंध शिक्षा---केन्द्र के रूप में सन १६४१ में आरम्भ किया गया था। इसके संस्थापक विशिष्ट दृष्टिहीन विद्वान स्वर्गीय डॉ० सुबोध च० राय पी०एच०डी० हैं तथा दूसरे विशिष्ट संस्थापक सदस्य स्वर्गीय डॉ० बी०सी० राय, स्वर्गीय डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी, स्वर्गीय रायपुर के बौरोन सिन्हा, स्वर्गीय मिस्टर एन०सी० चटर्जी तथा श्री तुषार कान्ति घोष हैं। इस विद्यालय के वर्तमान, प्रेजिडेन्ट श्री डॉ० वीरेश्वर राय चौधरी हैं।

यह विद्यालय १७४ श्यामा प्रसाद मुखर्जी मार्ग कलकत्ता---७०००२६ में स्थित है। आरम्भ में यह भवन विद्यालय के लिए किराये पर लिया गया था परन्तु १६६१ में पश्चिमी बंगाल सरकार ने इस भवन को अधिग्रहण करके विद्यालय को सौंप दिया जिससे कि विद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चल सके और उसका विकास हो सके।

लाइट हाउस फॉर दी ब्लाइंड विद्यालय का मुख्य उद्देश्य दृष्टिहीन व्यक्तियों का पूर्ण विकास करना है। उनको शैक्षणिक तथा प्रशिक्षण सुविधाएँ प्रदान करके समाज में उत्तम नागरिक बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस स्कूल को १६६३ में ८वीं कक्षा तक मुख्य निरीक्षक। टैक्नीकल एजुकेशन, पश्चिमी बंगाल सरकार के साथ मिला दिया गया। १६७६ में एक नई दो मंजिला इमारत बनाई गई जिसमें समाज कल्याण विभाग भारत सरकार ने सहायता (ग्रान्ट) दी और कुछ समाज सेवी संस्थाओं से चंदा इक्ट्ठा किया गया और वर्षों के परिश्रम के पश्चात् १६८१ में इस विद्यालय को ८वीं कक्षा से बढ़ाकर दसवीं कक्षा तक किया गया,

परन्तु अभी तक दसवीं कक्षा का विद्यालय वैस्ट बंगाल बोर्ड सैकेन्डरी एजुकेशन द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं है। इसलिए दसवीं के विद्यार्थियों को बाहरी विद्यार्थी के रूप में बोर्ड की परीक्षा देनी होती है। तो भी कितने गर्व की बात है कि इस विद्यालय की एक विद्यार्थी मिस गीता बोस १६८१ में एक्सटर्नल कैंडिडेट सैकेंडरी परीक्षा में प्रथम आई। श्री तपन ब्रह्मचारी, श्री सनत श्रीमल और श्रीमती उमा बैनर्जी जो इस स्कूल के अध्यापक हैं, इन तीनों को भिन्न-भिन्न वर्षों में स्टेट अवार्ड मिल चुका है और इस विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी श्री संतोष सेन गुप्ता को एक सर्वोत्तम कार्यकर्ता के रूप में राष्ट्रपति अवार्ड मिल चुका है। श्रीमती प्रतिमा आचार्य तथा कोडेफा खातून भारत में प्रथम अंध महिलाएँ हैं जिन्होंने क्रमशः स्नात्तक तथा मैट्रिक परीक्षा पास की है।

१६७३-७४ में इस विद्यालय में एक प्लेसमेंट प्रोजेक्ट शुरू किया गया, जिसका उद्देश्य दृष्टिहीन व्यक्तियों को व्यवस्थापित करना है। १६७६ में दृष्टिहीन लड़कियों को व्यवस्थापित करने के लिए इस विद्यालय में एक प्रोडक्शन सेंटर खोला गया जिसमें कापियाँ बनाने, कार्ड बोर्ड बॉक्स बनाने, केन तथा इंजीनियरिंग का काम शुरू किया गया। इस समय ३५ पुरुष तथा महिलाएँ इन दोनों प्रोजेक्टों में काम करके अपनी आजीविका कमा रहे हैं। इन प्रोजेक्टों को १. ४. ६० को पश्चिमी बंगाल सरकार ने संरक्षण (स्पोन्सर) दे दिया है, लेकिन वर्कशाप को संरक्षण दिया जाना बाकी है।

१६७८ में इस विद्यालय में दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिए औद्योगिक ट्रेनिंग कोर्स चालू किया गया। तत्पश्चात् १६८२-८३ में टेलीफोन आप्रेटर्स ट्रेनिंग यूनिट चालू की गई और १६८८-८६ में टाइप राइटिंग यूनिट चालू की गई। इन तमाम प्रशिक्षणों से प्रशिक्षण प्राप्त करके दृष्टिहीन व्यक्ति सरकारी दफतरों में तथा संस्थानों में 'हैंडीकैप रिजर्वेशन स्कीम" के अंतर्गत नौकरियाँ प्राप्त कर रहे हैं। कुमारी शुक्ला घोष और श्रीमती डोली रानी मंडल सफलतापूर्वक टेलीफोन आपरेटर का कोर्स करके क्रमशः इलाहाबाद बैंक और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में काम कर रही हैं। मिस मोना साहा, श्री सूखन सरकार और श्री अरुण सेन जो इस विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी तथा पूर्व परीक्षार्थी हैं। वे अब रेलवे वर्कशाप में काम कर रहे हैं। कुछ विद्यार्थियों ने वहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने निजी व्यावसायिक प्रोजेक्ट चालू कर लिए हैं। उन्होंने बैंकों से आर्थिक सहायता ली है।

यह विद्यालय एक आवासीय विद्यालय है जिसमें किसी धर्म, जाति या समुदाय के भेदभाव के बिना दृष्टिहीन लडके-लडकियों को दाखिल किया जाता है। विद्यार्थियों की कुल अस्सी सीटें हैं जिनमें से इस समय ७८ विद्यार्थी शिक्षण एवं प्रशिक्षण ग्रहण कर रहे हैं।

डॉ० नारायण चन्द्र दास इस विद्यालय के प्रधानाचार्य हैं। वे एक अनुभवशील, कार्यकुशल, कर्मठ, सच्चे समाजसेवी, लग्नशील, परिश्रमी तथा उत्साही व्यक्ति हैं। उन्होंने ही मुझे इस विद्यालय के बारे में जानकारी दी तथा विद्यालय के सब कक्षों, यूनिटों, प्रोजेक्टों तथा प्रशिक्षण कक्षों को दिखाया। वास्तव में यह विद्यालय अंधेरे में रहने वालों को उजाला दिखाने वाला घर है और श्री डॉ० एन०सी० दास के निर्देशन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर है।

मैं दिनांक ७-१०-९२ को यह विद्यालय देखने गयी थी।

अद्वितीय पूजा-स्थल-केयर एण्ड कौन्सलिंग सेन्टर-कलकत्ता

कलकत्ता के पूजा स्थलों की यात्रा के दौरान हमें एक ऐसे अद्वितीय पूजा स्थल को देखने का अवसर मिला जिसे पढ़कर आप हैरान रह जायेंगे। यह पूजा स्थल कोई मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा या गिरजा नहीं है, बल्कि मन्द बुद्धि बच्चों को बुद्धिमान एवम् गूंगे बहरे बच्चों को सुनने व बोलने योग्य बनाकर समाज का एक उपयोगी अंग बनाने का मन्दिर है। इस मन्दिर का नाम है, केअर एण्ड कौंसलिंग सैंटर (स्पेशल स्कूल फौर डिसएबल्ड चिल्डरन) ४ बी, गोपाल बैनर्जी लेन, कलकत्ता ७०००२६।

बाटा नगर (बजंबज) की रोट्रेक्ट तथा रोटरी क्लब ने वर्ड डिजिबल डे मनाने का आयोजन किया था जिसमें कलकत्ते की भिन्न-भिन्न संस्थाओं ब्लाइड स्कूल कलकत्ता, लाइट हाउस फौर दी ब्लाइंड, केअर एण्ड कौंसलिंग सैंटर तथा अन्य संस्थाओं ने भाग लिया था। श्री एन.सी. दास प्रधानाचार्य लाइट हाउस फौर दी ब्लाइंड मुझे अपने साथ इस महान् उत्सव में ले गये थे और एक लेखक के रूप में रोटरी क्लब के आयोजकों से मेरा परिचय कराया था। मन्द-बुद्धि तथा दृष्टिहीन छात्र-छात्राओं ने स्टेज पर ऐसे रंगारंग नृत्य, गाने तथा मौनो एक्टिंग के दृश्य पेश किए थे, जिन्हें देखकर दिल खुशी से झूम उठा था। इसी अवसर पर मिस बासन्ती **राय चौधरी, आनरेरी सैक्रेटरी केअर एण्ड कौंसलिंग सैंटर ने मुझे इस संस्थान को देखने के लिये आमान्त्रित किया था।**

केअर एण्ड कौंसलिंग सैन्टर

यह एक ऐसा स्कूल है जिसमें मन्द बुद्धि एवम् गूंगे-बहरे बच्चों की देखभाल

की जाती है। उनको विभिन्न प्रकार की हस्तकला, पेंटिंग, सिलाई-कढ़ाई, लिफाफे तथा कार्ड बनाने आदि का काम सिखाया जाता है तथा उनको स्वावलम्बी बनाकर समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग बनाया जाता है।

बच्चों की देखभाल के अतिरिक्त इस स्कूल का दूसरा काम ऐसे बच्चों के माता-पिता को सलाह मशवरा देना है कि वे अपने मंदबुद्धि अथवा गूंगे बहरे बच्चों को अपने ऊपर बोझ न समझकर, उनकी अच्छी प्रकार देखभाल करें ताकि उनमें अपने अन्य भाई-बहनों की समानता का अभाव न हो और वे अपने आप का परिवार का महत्त्वपूर्ण सदस्य समझें।

इस स्कूल की स्थापना सन १६७६ में हुई। इस स्कूल के संस्थापक चार व्यक्ति हैं। (१) मिस बासन्ती राय चौधरी (२) श्रीमती गीता बैनर्जी (३) मि० सुनील कुमार सैन गुप्ता (४) श्रीमती लूना दत्ता। इसके अतिरिक्त श्री शंकर घोष, श्रीमती सुनीता चैटर्जी, श्रीमती मंजु चैटर्जी तथा बहुत लोग शुभ कामनायें देने वाले थे।

यह स्कूल तीन बच्चों से आरम्भ किया गया था और स्कूल की अपनी कोई इमारत न होने के कारण सात स्थान बदलने पड़े। संस्था के पास पैसे की कमी थी और जो बच्चे स्कूल में पढ़ने आते थे, उनकी आर्थिक स्थिति भी बहुत खराब थी। अब स्कूल की अपनी इमारत है जिसमें तीन कमरे कक्षाओं के लिए हैं। एक बड़ा बरामदा है। इस बरामदे में भी दो कक्षायें लगती हैं। एक रसोई घर है, स्टोर तथा कार्यालय के कमरे निर्माणाधीन हैं जो शीघ्र बनकर तैयार हो जायेंगे। इस समय स्कूल में ६५ बच्चे हैं जिनमें लड़के और लड़कियाँ दोनों शामिल हैं। अधिकतर युवक तथा युवतियाँ हैं। इनमें आधे बुद्धि की कमी वाले और आधे बोलने तथा सुनने की कमी वाले बच्चे हैं। यह संस्था इन दो तरह के विकलांग बच्चों की स्थिति में सुधार लाने का कार्य कर रही है और धीरे-धीरे बच्चों की मानसिक बुद्धि तथा सुनने बोलने में विकास हो रहा है।

इस संस्था में टीम ऑफ वर्करज है जिसमें मनोवैज्ञानिक, समाज सेविकाएँ और विशेष शिक्षिकायें हैं जो बच्चों को विभिन्न वैज्ञानिक तरीकों से पढ़ाई-लिखाई या दूसरे दस्तकारी आदि के काम सिखाती हैं। स्कूल में जितने भी बच्चे आते हैं, उनमें से एक तिहाई बच्चे गरीब घराने के हैं। ऐसे बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती बल्कि उनको स्कूल की तरफ से खाना भी दिया जाता है।

यहाँ पर सलाह मशवरा देने वाले जितने भी व्यक्ति काम करते हैं, वे सब

सरकारी अस्पतालों में डॉक्टर हैं और अस्पताल में काम करने के पश्चात् अपने अवकाश के समय में यहाँ आकर बच्चों की देखभाल तथा उनके माता पिता को सलाह मशवरा देने का काम करते हैं। यही नहीं वे बच्चों के घरों में जाकर उनके माता-पिता से सम्पर्क स्थापित करते हैं और उनको बच्चों के सुधार तथा विकास की जानकारी देते हैं। किसी बच्चे को दवाई की आवश्यकता हो तो उसका भी बन्दोबस्त किया जाता है।

बच्चों को पढ़ाई-लिखाई, सिलाई-कढ़ाई तथा अन्य दस्तकारी के कार्य सिखाने के अतिरिक्त उनके मनोरंजन का भी ध्यान रखा जाता है और उनको नृत्य, संगीत मोनो एक्टिंग तथा खेल कूद आदि सिखाये जाते हैं।

बच्चों को पिकनिक पर ले जाते हैं। चिड़िया घर तथा पर्यटन स्थल भी दिखाने ले जाते हैं। साल में एक बार खेल कूद प्रतियोगिता होती है। जीतने वाले बच्चों को पुरुस्कार दिया जाता है। गत दो वर्षों से यहाँ के बच्चे औलम्पिक में भाग ले रहे हैं। पिछले साल बच्चों का स्पेशल औलम्पिक फौर मैन्टली हैंडिकैप चिल्डरन हुआ था। इसमें बच्चे ३५ मैडल लाये थे और इस साल ३७ मैडल लाये हैं।

बच्चों को सिलाई सिखाते हैं। ग्रीटिंग कार्ड बनवाते हैं और संस्था वाले स्वयम् खरीद लेते हैं। उस पैसे को बच्चों के फंड में जमा कर देते हैं।

यहाँ से चार बच्चों को जिनको सुनने और बोलने में समस्या थी, उनको सुधार कर यानि ठीक करके सामान्य स्कूल में दाखिल किया गया है। तीन लड़कियों को सामान्य जीवन व्यतीत करने योग्य बनाकर उनकी शादी भी हो गई है। कई बच्चों को पेंटिंग के लिए स्पौंसर किया गया है। हर साल दो-दो बच्चों को रिहैब्लीटेट कर रहे हैं। इसके अलावा तीन महीने में बच्चों का असैसमेंट किया जाता है कि वे कितना सीख गए हैं।

इस स्कूल में बच्चों की शिक्षा की पद्धति चार भागों में बंटी हुई है। (१) प्रि-प्राइमरी (२) प्राइमरी (३) प्रि-वोकेशनल (४) वोकेशनल ग्रुप।

अभी स्कूल में जगह की कमी है। इस लिए अधिक बच्चों को दाखिला नहीं दे सकते। दाखिले के लिए बहुत बच्चे आते हैं। गत वर्ष सरकार ने स्कूल चलाने के लिए सात हजार रुपए दिए थे; क्योंकि मासिक व्यय ८ हजार से भी अधिक है। अध्यापिकाओं का वेतन, बच्चों का टिफन, बिजली का खर्च तथा दफतर का खर्च आदि करना पड़ता है। एक विदेशी संस्था (सी.टी.डब्लू) से कुछ मदद मिलती

है परन्तु वह भी कोई खास नहीं है।

स्कूल की उपरोक्त जानकारी डॉ० नमिता बसु (साइकोलोजिस्ट) ने दी तथा क्लासों का निरीक्षण कराया। स्कूल का समय दोपहर डेढ़ बजे से साढे चार बजे तक है। बुधवार तथा रविवार को अवकाश रहता है।

मैंने निम्नलिखित क्लासें देखीं। प्रथम क्लास बरामदे में लगी हुई थी। यह बोलने और सुनने में कठिनाई वाले बच्चों की क्लास थी। दूसरी क्लास बोलने में कठिनाई तथा मन्द बुद्धि बच्चों की क्लास थी। तीसरी क्लास प्रि-वोकेशनल क्लास थी जिसमें लिफाफे इत्यादि बनाने का काम सिखाया जा रहा था। मिस सोबिता दास हाथ का काम सीख रही थीं, कैंची कैसे पकड़ना आदि। चौथी वोकेशनल क्लास, पांचवीं क्राफट क्लास, छटी नृत्य, संगीत क्लास। एक क्लास में गूंगे बच्चों को शीशे के द्वारा बोलना सिखा रहे थे। हीयरिंग एड के द्वारा भी बोलना सिखाते हैं, पिक्चर तथा मॉडल दिखाकर सिखाते हैं। कैलेंडर दिखाकर रविवार से शनिवार तक सप्ताह के दिन सिखाते हैं। काऊँटिंग सिखाते हैं। रंगों के द्वारा पढ़ना तथा गिनना सिखाया जाता है। यहाँ पर सभी लोग परिश्रम तथा ईमानदारी से काम करते हैं।

स्कूल में निम्नलिखित पदाधिकारी तथा अध्यापिकायें हैं:---

(१) प्रैजिडैंट---डॉ० श्यामलकुमार डे।

(२) सैक्रेटरी---मिस बासन्ती राय चौधरी।

(३) ज्वायंट सैक्रेटरी---मिसिज गोपा सरकार, मिसिज चित्रा राय।

(४) खंजाची---मिस रत्ना गंगुली।

(५) वाइस प्रैजिडैंट---मिस मीनाक्षी चटर्जी, मि० राजेश्वर भट्टाचार्य, मिसिज गीता बैनर्जी।

(६) साइकोलोजिस्ट---डॉ० नमिता बसु।

(७) मैडिकल फैजिशियन---डॉ० रॉबिन सैनियाल।

नोटः---डॉ० श्यामलकुमार डे ई.एन.टी विशेषज्ञ तथा अन्तर्राष्टीय व्यक्ति हैं। मिस बासन्ती राय चौधरी पी.जी. अस्पताल में काम करती हैं तथा यहाँ पर सोशल वैलफेयर औफिसर हैं। मिसिज गोपा सरकार भी.पी.जी अस्पताल में काम करती हैं तथा यहाँ पर न्यूट्रोलोजिस्ट हैं। मिसिज चित्रा राय आर.के अस्पताल में काम करती हैं तथा सोशल वैलफेअर औफिसर हैं।

अध्यापिकायें:---

(१) मिंसिज राधा मैनन (स्पेशल एजुकेशन टीचर इंचार्ज)

(२) मिसिज दीपा बैनर्जी (स्पेशल एजुकेटर)

(३) मिसिज पपोबी चटर्जी (स्पेशल एजुकेटर)

(४) मिस रत्ना राय (जनरल टीचर)

(५) मिसिज मोनिया घोष (म्यूजिक टीचर)

(६) मिसिज शिखा राय चौधरी (जनरल टीचर)

(७) मिसिज मौनिका चौधरी (जनरल टीचर)

(८) मिसिज गीता गंगुली (औनरेरी टीचर)

(९) मिस मोनी बैनर्जी (औनरेरी टीचर वोकेशनल)

(१०) मिस रूमा शर्मा (औनरेरी टीचर)

(११) मिसिज रीबा बैनर्जी (औनरेरी टीचर)

कर्मचारीः---

(१) मि० शंकर दत्त (केअर टेकर)

(२) मिसिज शंकरी देवी (मेड)

वास्तव में मानव सेवा ही ईश्वर की सेवा है। अतः कैयर एण्ड कौंसलिंग सेन्टर के उपरोक्त सभी पद-अधिकारी एवम् स्टाफ मन्द बुद्धि तथा कम सुनने व बोलने वाले बच्चों को सुधार कर तथा समाज-उपयोगी बनाकर सच्चे अर्थों में ईश्वर की सेवा कर रहे हैं।
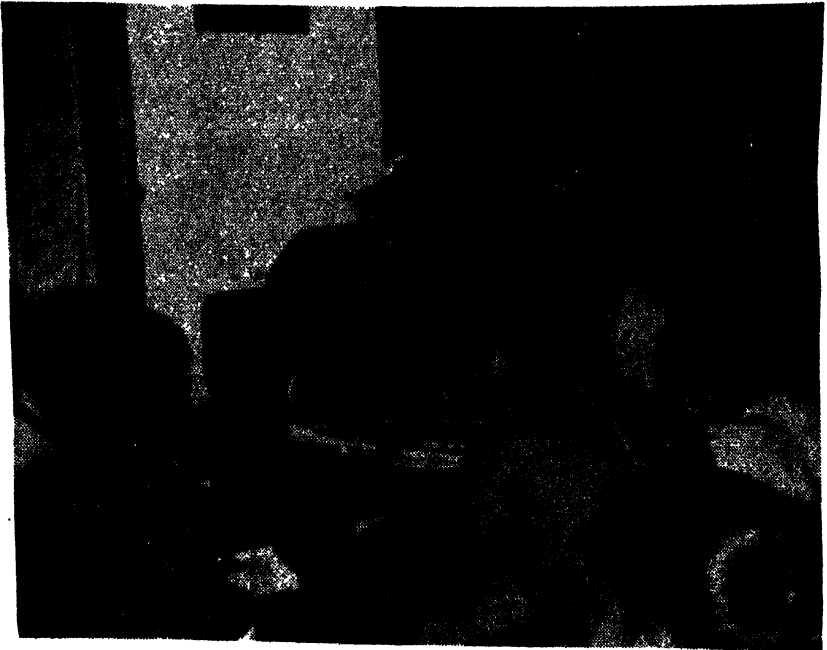
भारतवासियों का पवित्र तीर्थ---गंगा सागर

गंगा सागर जाने के लिए पहले कलकत्ता जाते हैं। दिल्ली रेलवे स्टेशन से कालका मेल तथा नई दिल्ली से राजधानी एक्सप्रैस, डिलैक्स, तूफान आदि कई गाड़ियाँ कलकत्ता जाती हैं। कलकत्ता दिल्ली से लगभग १४५० कि. मी. है। कलकत्ता (धर्मतल्ला) से बसें नामखाना जाती हैं जो लगभग १०५ कि. मी. है। नामखाना से लांच द्वारा नौ कि.मी. चैमा गाड़ी जाती हैं। वहाँ से नौ कि.मी. रिक्शा द्वारा गंगा सागर जाते हैं।

दूसरा रास्ताः---नामखाना वाली बस में थोड़ी दूर पहले ८ न० मोड़ है। यहाँ से ४ कि.मी. पर ८ न० घाट या हुडवुड जाते हैं। रिक्शा जिसे वैन बोलते हैं मिल जाते हैं। ८ न० घाट में लॉच (छोटा जहाज) में बैठकर नदी पार करके कोचुबेड़िया जाते हैं। कोचुबेड़िया से गंगा सागर ३० कि.मी. है और यहाँ से बस में बैठकर जाते हैं। गंगा सागर मेले के समय स्पेशल बसें चलाई जाती हैं तथा स्पेशल लाँच कलकत्ता (बाबूघाट) से कोचुबेड़िया तक जाते हैं।

तीसरा रास्ताः---कलकत्ता (धर्मतल्ला) से हर दस मिनट के बाद ७६ न. बस, डायमंड हार्बर जाती है जो लगभग ५३ कि.मी. है। डायमंड हार्बर से ४२ न० बस कॉकदीप जाती है जो ४३ किमी है। वहाँ से फिर ८ न० घाट वाला रास्ता आ जाता है।

गंगा सागर में ठहरने के लिए भारत सेवाश्रम संघ बहुत अच्छा स्थान है जिसमें निःशुल्क तीन दिन ठहर सकते हैं। अपनी इच्छा से कोई कुछ देना चाहें तो दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त कलकत्ता युवक संघ की धर्मशाला, योगानन्द मठ, कपिला नन्द का आश्रम, सरकारी डाक बंगला, यूथ होस्टल तथा साधुओं के आश्रम हैं।

गंगा सागर में केवल मेले के दिनों में ही तीन-चार एकड़ भूमि में दुकानें लगाई

जाती हैं। आम दिनों में कोई विशेष रौनक नहीं है। केवल १५-२० झोंपड़ी नुमा दुकानें हैं। सुनसान वातावरण है। प्राकृतिक सौंदर्य देखने योग्य है।

यहाँ पर हर वर्ष मकर सक्रांति (१४ जनवरी) को बहुत बड़ा मेला लगता है और भारत के कोने-कोने से श्रद्धालु लोग गंगा सागर में स्नान करने आते हैं। गंगा सागर में स्नान करने का बड़ा महात्म्य है। सब तीर्थ बार-बार गंगा सागर एक बार।

गंगा सागर बंगाल की दक्षिण सीमा में बंगाल की खाड़ी के तट पर सुन्दर वन द्वीप ममूह है। यह २४ परगणा का दक्षिण भाग है। प्राचीन काल में इसे पाताल लोक कहा जाता था। भगवान कपिल देव का आश्रम यहीं पर था। पौराणिक कथा के अनुसार राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ किया था और अपने ६० हजार पुत्रों को अश्वमेध के घोड़े की रक्षा के लिए भेजा था। इन्द्र देवता ने छल कपट से यज्ञ का घोड़ा चुरा लिया और भगवान कपिल देव के आश्रम में लाकर बांध दियां। भगवान कपिल देव अपनी तपस्या में लीन थे इसलिए उनको इन्द्र के आने और घोड़ा बांधकर चले जाने का कुछ पता नहीं चला। राजा सगर के ६० हजार पुत्र घोड़े को तालाश करते हुए कपिल देव के आश्रम में पहुँचे और घोड़ा वहाँ बंधा देखकर कपिल देव को बुरा भला कहने लगे और कहने लगे कि तुमने हमारा घोड़ा चुराया है और अब डर के मारे अपनी आंखें बन्द कर ली हैं। उनका शोर सुनकर भगवान कपिल देव का ध्यान टूट गया और उन्होंने क्रोधित होकर अपनी आंखें खोलीं। उनकी क्रोधाग्नि से सगर के ६० हजार पुत्र जलकर राख हो गए। राजा सगर ने अपने पोते अंशुमान को यज्ञ के घोड़े तथा अपने ६० हजार पुत्रों को ढूंढने के लिए भेजा। अंशुमान उन्हें ढूंढता हुआ कपिल देव के आश्रम में पहुँचा और वहाँ घोड़ा बंधा देखा। उसने कपिलदेव से प्रणाम करके पूछा कि मेरे ६० हजार चाचा इस घोड़े की रक्षा करने आये थे, उनका क्या हुआ ? कपिलदेव ने कहा कि उन्होंने मुझे चोर समझकर बुरा भला कहा, वे मेरी क्रोध अग्नि से जलकर राख हो गए। अंशुमान ने पूछा कि उनका उद्धार कैसे होगा ? कपिलदेव ने कहा कि गंगा का स्वर्ग लोक से भू लोक में अवतरण होकर यहाँ आने पर ही उनका उद्धार हो सकता है। तुम यह घोड़ा लेकर अयोध्या चले जाओ। अंशुमान घोड़ा लेकर अयोध्या आया और अपने दादा राजा सगर को उनके ६० हजार पुत्रों की विनाशलीला का वृत्तांत सुनाया। राजा सगर बहुत दुःखी हुए और राजपाठ त्यागकर गंगा की खोज में निकल पड़े, परन्तु गंगा नहीं मिली। राजा सगर की मृत्यु के पश्चात उसके पोते राजा

अंशुमान और अंशुमान के पश्चात् उनके पुत्र राजा दलीप ने गंगा की खोज की परन्तु वे भी गंगा का पता नहीं लगा सके। तत्पश्चात् राजा दलीप के पुत्र भागीरथ ने महादेव की उपासना करके उन्हें प्रसन्न किया और गंगा का पता पूछा। महादेव ने कहा:---गंगा जी विष्णु भगवान के आंसुओं से उत्पन्न हुई है और ब्रह्मा जी के कमंडल में बन्द है। तुम गंगा जी को पृथ्वी पर लाने के लिए तपस्या करो। भागीरथ ने गंगा जी की तपस्या की और गंगा जी ने प्रसन्न होकर भागीरथ को दर्शन दिये। भागीरथ ने गंगा को भूलोक में आने के लिए प्रार्थना की। तब गंगा जी का भूलोक में अवतरण हुआ। परन्तु गंगा के वेग से पृथ्वी फट जाने के डर से शिवजी ने गंगा को अपने सिर पर उतारा और अपनी जटाओं में समा लिया। गंगा १२ वर्ष तक महादेव की जटाओं में बन्द रही। भागीरथ ने महादेव की स्तुति की। महादेव ने भागीरथ को हवा से भी तेज गति का रथ देकर कहा कि तुम आगे-आगे अपना रथ दौड़ाओ। गंगा जी तुम्हारे पीछे-पीछे आयेंगी। यह कहकर महादेव जी ने अपनी जटाओं को निचोड़ दिया और गंगा जी मुक्त होकर भागीरथ के रथ के पीछे दौड़ने लगीं। गंगा जी गंगोत्री से पहाड़ों में से होती हुई मैदान में पहले पहल हरिद्वार में आई थी और वहाँ से वाराणसी होती हुई प्रयाग में आई और वहाँ से कलकत्ता आई और वहाँ गंगा का नाम हुगली हो गया। वहाँ से डायमंड हार्बर होती हुई गंगा सागर में आई और कपिल देव के आश्रम में राजा सगर के ६० हजार पुत्रों की भस्मी के ऊपर से बहकर, उनका उद्धार किया तथा यहीं पर सागर में समा गई। इसीलिए इसे गंगा सागर कहा जाता है।

पूजा स्थल

गंगा सागर में कपिल मुनि का नया मन्दिर है जो १९७३ में बनाया गया है। मन्दिर के बीच में कपिल देव की मूर्ति है। मूर्ति के एक ओर चतुर्भुजी माँ गंगा की गोद में राजा भागीरथ की मूर्ति है तथा दूसरी ओर राजा सगर और हनुमान जी की मूर्तियाँ है।

इसके अतिरिक्त यहाँ पर सांख्य योग्य आचार्य स्वामी कपिला नन्द का आश्रम है। महादेव का मन्दिर, योगेन्द्र मठ, शिवशक्ति महानिर्वाण आश्रम तथा भारत सेवाश्रम संघ का विशाल मन्दिर है।

बंगाल का प्रमुख शिव तीर्थ
तारकेश्वर महादेव

तारकेश्वर बंगाल का मुख्य शिव मन्दिर है। यह हावड़ा (कलकत्ता) से ५८ कि० मी० है। यहाँ पर आने-जाने के लिये प्रति दिन एक-एक घंटे बाद हावड़ा स्टेशन से लोकल ट्रेनों का प्रबन्ध किया गया है।

कहा जाता है कि भारमल राव जो राजा विष्णु दास का भाई था। उसके महल में एक बहुत सुन्दर गाय थी जिसका नाम कपिला था। भारमल का महल तारकेश्वर से ३ मील दक्षिण में रामनगर गाँव में था। गाय को मुकन्द गोप जंगल में चराने के लिये तारकेश्वर में लाता था। अचानक कपिला गाय का दूध बहुत कम हो गया। राजा भारमल ने मुकन्द गोप से उसका कारण पूछा लेकिन मुकन्द गोप कुछ भी उत्तर नहीं दे सका। इस पर भारमल ने मुकंद का तिरस्कार किया।

एक दिन मुकन्द ने देखा कि जंगल में एक बहुत सुन्दर पत्थर है और उस पत्थर में एक सुराख है। गाय ने वहाँ जाकर उस पत्थर के ऊपर अपने चारों थन कर दिये और उसके चारों थनों में से दूध निकल कर सुराख में जाने लगा। मुकंद को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने वापिस आकर राजा भारमल को यह बात बताई। राजा भारमल ने वहाँ जाकर वह पत्थर देखा। उनको वह पत्थर बहुत अच्छा लगा। उन्होंने वह पत्थर निकालने के लिये आदमी लगाये परन्तु उस पत्थर का कहीं अन्त नहीं था। रात्रि में तारकनाथ महादेव ने राजा को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि तुम को मुझमें भक्ति है तो उस जगह पर मेरा मन्दिर बनवाओ। तत्पश्चात् राजा भारमल ने उसी स्थान पर तारकेश्वर महादेव का यह मन्दिर बनवाया।

यह मन्दिर तारकेश्वर स्टेशन पर उतरने के बाद थोड़ी दूर पर ही है और पैदल का ही रास्ता है। यह अठाहरवीं शताब्दी में बना था। मन्दिर के पास में ही एक सरोवर है जिसका नाम दूधपोखर अर्थात् दूध का तालाब है। यात्रि पहले इस तालाब में स्नान करते हैं फिर तारकेश्वर महादेव पर जल, फल, फूल तथा प्रसाद चढ़ाते हैं। स्त्रियों और पुरुषों की अलग-अलग बहुत लम्बी लाइन होती है। जल्दी वाले यात्री बाहर से ही तारकेश्वर महादेव के दर्शन कर लेते हैं और पुजारी द्वारा जल, फल, फूल तथा प्रसाद चढ़ाते हैं। पुजारी की दक्षिणा पांच रुपये है।

मन्दिर के पूर्व में काली माँ का मन्दिर है। पश्चिम में शिव गंगा तथा उत्तर में दामोदर ठाकुर का मन्दिर है। दक्षिण में नौबतखाना तथा गद्दीघर है। यहाँ पर प्रति दिन कई हजार यात्री तारकेश्वर महादेव के दर्शन करने आते हैं। बंगाल में जितने भी शिव तीर्थ हैं उनमें तारकेश्वर प्रधान शिव तीर्थ है। यहाँ पर राजा का मकान भी है जो देखने योग्य है। मन्दिर के आसपास प्रसाद, जल, फल, फूल, तथा मालाओं की दुकाने हैं और खाने पीने के लिये कई भोजनालय हैं। ठहरने के लिये कई धर्मशालायें हैं। प्रायः यात्री दर्शन करके उसी दिन वापिस आ जाते हैं। यहाँ पर फाल्गुन में शिवरात्रि मेला, चैत में गाजन मेला तथा श्रावण में मारवाड़ी मेला लगता है।

सिद्ध पीठ---तारापीठ (पश्चिमी बंगाल)

हम कलकत्ता से तारापीठ जाने के लिये तैयार हुए और प्रातः साढ़े पांच बजे हावड़ा स्टेशन पर पहुँचे। श्री के. के. बैनर्जी द्वारा बनाये गये कार्यक्रम के अनुसार हमें कंचनजंघा एक्सप्रैस से रामपुरहट जाना था। परन्तु हावड़ा स्टेशन पर पहुँचने पर पता चला कि कंचनजंगा हावड़ा की बजाय स्यालदा रेलवे स्टेशन से प्रातः ६-२५ पर जाती है। इसलिये हम तुरन्त स्यालदा स्टेशन पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर पता चला कि गाड़ी तीन घंटे लेट है। हम टिकट लेकर रेलवे कैन्टीन में नाश्ता करने लगे तो तभी घोषणा हुई कि आज कंचनजंगा एक्सप्रैस कैंसल कर दी गई है। सवारियों की अपने टिकट के पैसे वापिस लेने के लिए खिड़की पर इतनी लम्बी लाइन लग गई कि तीन घंटे में भी नम्बर नहीं आता। मैंने कांउटर खिड़की के कमरे के अन्दर जाकर एक रेलवे अधिकारी को अपना परिचय पत्र दिखाया और उन्होंने मुझे तुरन्त टिकटों के पैसे वापिस दिला दिये। इसके लिये मैं रेलवे अधिकारी तथा कर्मचारियों का आभार प्रकट करती हूँ। तत्पश्चात् हम स्यालदा रेलवे स्टेशन से दोबारा हावड़ा रेलवे स्टेशन आये और वहाँ से शान्ति निकेतन एक्सप्रैस रेल द्वारा बोलपुर (शान्ति निकेतन) गये। शान्ति निकेतन हावड़ा से १४७ कि० मी० है और किराया ३६ रु. है। प्रातः ६-५५ पर गाड़ी चलकर १२-३० बजे बोलपुर पहुँच गई।

नोटः---(स्याजदा से रामपुरहट २१३ कि० मी० है तथा किराया ५३ रुपये है)

बोलपुर पहुँच कर हम साईकिल रिक्शा द्वारा सिवड़ी के बस स्टैंड पर गये और वहाँ से डेढ़ बजे बस में बैठकर पौने चार बजे सिवड़ी पहुँचे। किराया ५ रुपये और दूरी ३५ कि० मी० है। बसें इतनी भरी हुई जाती हैं कि ऊपर की छत भी सवारियों से भर जाती है और अन्दर भेड़ बकरियों की तरह सवारियाँ ठुसी रहती हैं तथा दरवाजों पर भी सवारियाँ लटकी रहती हैं। अतः प० बंगाल सरकार को

यहाँ पर और अधिक बसें चलाकर यातायात की सुविध। उपलब्ध करानी चाहिये। हमें तो बस अधिकारियों और कांउटर क्लर्क की कृपा से सीट मिल गई थी जिस के लिये उनका हार्दिक धन्यवाद। सिवड़ी से ४ बजे बस द्वारा ६ बजे तारापीठ पहुंचे।

तारापीठ में पश्चिम से पूर्व की ओर एक लम्बा और संकरी बाजार है। बाजार शुरु होते ही बस स्टैंड है और बाजार खत्म होने पर भी बस स्टैंड है। बाजार के बीच में तारा माँ का मुख्य मन्दिर है और इसी बाजार में निगमानन्द सिद्धपीठ, तारा माँ का प्रथम् मन्दिर महाश्मशान में सिद्धपुरुष वामाखेपा समाधि मन्दिर, साधू (सेवा) वामा मिशन, श्री वामाखेपा बाबा आश्रम मन्दिर तथा वामदेव मन्दिर हैं।

बंगाल में यहाँ की बहुत महानता है। अमावस को यहाँ पर इतने तीर्थ यात्री आते हैं कि सब धर्मशालायें, लौज, होटल आदि यात्रियों से भर जाते हैं और उनको बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। जगह न मिलने पर यात्रियों को ठहरने के लिये होटल तथा लौजों में दुगना तिगना पैसा देना पड़ता है। बंगला की पौष मास में सातवीं पौष को शान्तिनिकेतन, बोलपुर में बहुत बड़ा मेला लगता है। यात्री मेला देखकर बकरेश्वर जाते हैं और बकरेश्वर देखकर तारापीठ आते हैं और दस बारह लाख यात्री यहाँ आ जाते हैं।

हम लगभग ६ बजे तारापीठ पहुँचे। वैसे हमने अधिक जानकारी न होने के कारण एक तीर्थ स्थान छोड़ दिया। हमें सिवड़ी से बकरेश्वर जाना चाहिये था जो शक्तिपीठों में गिना जाता है और वहाँ से अगले दिन वापिस सिवड़ी आकर फिर तारापीठ जाना चाहिये था। और सिवड़ी से मैसनजोर भी जा सकते थे।

तारापीठ में पहुँचकर हमें निकट ही एक धर्मशाला मिल गई। धर्मशाला का नाम फुलझड़िया देवी भक्त धर्मशाला तारापीठ है और श्री उमापद गुप्ता मैनेजर हैं जो एक बहुत अनुभवी व्यक्ति हैं और पिछले पचास वर्षों से तारापीठ में ही रह हैं। उन्होंने ने ही हमें तारापीठ की जानकारी दी। धर्मशाला में आठ रुपये प्रति दिन चंदे के रूप में देना पड़ता है। तीन दिन तक ठहरा जा सकता है। धर्मशाला के बाहर एक लकड़ी के खोखे में चाय की दुकान है जो कहने पर रोटी भी बना देते हैं। हम जितने दिन भी ठहरे, यहीं पर भोजन किया जो बड़ा सस्ता और स्वादिष्ट था। श्रीमती अनीमा मालाकार भोजन बनाती थी और उनके पति श्री देवचरण मालाकार उनको भोजन बनाने में सहयोग देते थे।

तारापीठ के बाजार में दुकानों के आगे मांस, मछली, अंडे, मुर्गे, सब्जियाँ, चावल, अनाज, दालें आदि की दुकाने लगा कर अधिकतर महिलायें बैठती हैं और बाजार में से निकलने का रास्ता बड़ा तंग हो जाता है। सब्जियों में आलू, केला, झिंगा, भिंडी पेठा तथा पपीता आदि होता है। खीरा भी बहुत होता है। यह बाजार सुबह-सुबह लगता है बाकी बाजार में मिठाई, प्रसाद, मूर्तियों, मालाओं, कचौरियों तथा पकौड़ियां आदि की दुकाने हैं जो सारा दिन खुली रहती हैं।

यहाँ पर मुख्य फसल चावल की है और साल में दो फसलें हो जाती है सरसों भी बहुत होती है। रेशम, जिसे पुलु कहते हैं वह बहुत घरों में बनाते हैं। यह आमदनी का मुख्य जरिया है। रेशम का कीड़ा जिसे पोका कहते हैं वह सरकार की तरफ से दिया जाता है।

पहले फाइबर बनाते हैं। फाइबर तांती के घर चला जाता है। वह उससे कपड़ा बनाता है। यहाँ की प्रसिद्ध मिठाई लेनचा है। यात्रियों के ठहरने के लिये काफी होटल तथा लॉज हैं और धर्मशालायें हैं। राम कन्हाई जमींरजन धर्मशाला, तारासंघ धर्मशाला, नागन बगची धर्मशाला तथा भारत सेवाश्रम संघ आदि हैं।

तारापीठ में पंचायत है। किसी बिल्डिंग पर कारपोरेशन का कोई टैक्स नहीं देना पड़ता। पानी के लिये कोई वाटर टेप नहीं है। सब अपने-अपने हैंडपम्प लगाकर

पानी का प्रबन्ध करते हैं, लेकिन बिजली सब को मिल गई है। खेती के लिये पानी की कमी होती है। डीजल पम्प लगा कर नदी तालाब तथा कुएँ से पानी निकलवा कर खेतों में देते हैं। लोगों की जनरल कंडीशन अच्छी नहीं है। कोई कोई आदमी बहुत पैसे वाला है और कोई बहुत गरीब है। श्री उमापद गुप्ता धर्मशाला के मैनेजर ५० साल पहले जब यहाँ आये थे तो यहाँ पर न कोई लॉज था और न कोई धर्मशाला थी। सब जंगल ही जंगल था। इसको महाश्मशान कहते थे।

तारापीठ बंगाल के वीरभूमि जिले में है यह जिला बहुत प्रसिद्ध है। हिन्दुओं के ५१ शक्तिपीटों में से पाँच शक्ति पीठ वीरभूमि जिले में ही हैं जो निम्नलिखित है :

(१) बकरेश्वर:---तारापीठ से सिवड़ी होते हुए सीधी बस बकरेश्वर जाती है। यहाँ पर बकरेश्वर शिव मन्दिर है जो मुख्य मन्दिर है तथा देवी मन्दिर है। बकरेश्वर में गर्म पानी के नौ चश्में हैं। इनमें पापहर नामक कुंड को मुख्य तथा पवित्र माना जाता है। कलकत्ता से आंडल और आंडल से दुबराजपुर और दुबराजपुर से बकरेश्वर जा सकते हैं।

(२) नालहाटी:---नालहाटी रेलवे स्टेशन का नाम है और शक्तिपीठ का नाम बालहाटेश्वरी है यहाँ सती जी के गले का भाग गिरा था।

(३) बन्दीकेश्वरी:---स्टेशन-का नाम सेथिया है जो तारापीठ से ३० की० मी० पर है। यहाँ सती जी के कंधे का भाग गिरा था।

(४) फुलोरा देवी:---स्टेशन का नाम लाभपुर है छोटी गाड़ी जाती है। यहाँ सती जी के होंठ गिरे थे।

(५) तारापीठ स्टेशन का नाम रामपुरहाट है। यह तारापीठ से छः कि० मी० दूर है। यहाँ पर सती जी के नेत्रों के बीच का भाग (नापन मोनी गिरा था)

उपरोक्त जानकारी श्री उमापद गुप्ता मैनेजर धर्मशाला, दीप्ती मंडल जो धर्मशाला के सामने रहती है तथा राधा मंडल, गुलाल चन्द्रदास और मणिक चन्द्रदास ने दी।

तारापीठ मुख्य मन्दिर के सामने महाश्मशान है। उसके बाद द्वारिका नदी है। इस नदी में आश्चर्य की बात यह है कि भारत की सब नदियाँ उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं; लेकिन यह नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है।

तारापीठ एक सिद्धपीठ है। यहाँ पर एक सिद्ध पुरुष का जन्म हुआ था। उनका

पैतृक आवास आटला गाँव है जो तारापीठ मंदिर से २ कि० मी० दूर है। रिक्शा से आ जा सकते हैं। सिद्ध पुरूष का नाम वामाखेपा है। उनको माँ तारा के मन्दिर के सामने महाश्मशान में तारा माँ के दर्शन हुए थे। वहीं पर उनको सिद्धि लाभ हुआ और सिद्धपुरुष हुए।

तारापीठ राजा दशरथ के कुलपुरोहित वशिष्ट मुनि का "सिद्धासन" और तारा माँ का अधिष्टान हैं। इसलिये यह हिन्दुओं का महातीर्थ है। सुदर्शन चक्र छिन्न होकर सती देवी की आँख में गिरा था। इसलिये इसका नाम तारापीठ है।

यहाँ पर एक बार रतनगढ़ के प्रसिद्ध वैश्य रमापति अपने पुत्र को लेकर नाव द्वारा व्यापार करने आये थे। तारापीठ के पास उनका पुत्र सर्प काटने से मर गया। उन्होंने अपने पुत्र की मृत देह को दूसरे दिन दाह संस्कार करने के लिये रखा और उस दिन तारापुर में ही ठहर गये। उनके एक सेवक ने उनको तारापीठ के एक बड़े तालाब के पास ले जाकर एक आश्चर्यजनक दृश्य दिखाया। उन्होंने देखा कि मरी हुई मछलियाँ तालाब के जल से स्पर्श करके जीवित हो उठती हैं। यह देखकर उनको बहुत खुशी हुई और अपने पुत्र की मृत देह को वहाँ लाकर तालाब में फैंक दिया। उसी समय उनका पुत्र जीवित हो गया। उसी दिन से उस तालाब का नाम 'जीवन कुंड' पड़ा। रमापति वैश्य ने तालाब के पास एक टूटा हुआ मन्दिर देखा और उसमें उन्होंने चन्द्रचूड़ अनादि शिवलिंग और तारा माँ की मूर्ति देखी। उन्होंने अपने आप को धन्य माना और अपने पैसे से ही उन्होंने मन्दिर की मरम्मत कराई और पूजा की। वे वहाँ भगवान नारायण की एक मूर्ति स्थापित करना चाहते थे किन्तु किसी ऋषि के आदेश अनुसार तारा माँ की मूर्ति में ही नारायण की पूजा होगी। काली और कृष्ण अलग-अलग नहीं। उनकी जिस तरह पूजा होनी चाहिये उसी तरह ही उन्होंने पूजा की और काली तथा कृष्ण की मूर्ति के भाव अनुसार एक ही मूर्ति प्रतिष्ठित कराई। तत्पश्चात् चन्द्रचूड शिव और तारा माँ की पूजा करके अपने पुत्र को लेकर आनन्दपूर्वक अपने घर चले गये। तारा माँ का मन्दिर बहुत ही प्राचीन और सिद्ध पीठ है।

सिद्ध पुरुष वामाखेपा

तारापीठ से दो कि० मी० दूरी पर स्थित आटला गाँव में १२४४ साल के फाल्गुन महीने में शिव चतुर्दशी के दिन वामाखेपा का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम सर्वानन्द चट्टोपाध्याय था। माता जी का नाम राजकुमारी था। इन का बचपन का नाम वामाचरण था और छोटे भाई का नाम रामचरण था। चार बहनें

थीं। एक बहन का लड़का भी रहता था। इस तरह परिवार में नौ सदस्य थे। घर में खाने पीने की चीजों का सदा अभाव रहता था। माता-पिता बहुत धार्मिक थे और भजन कीर्तन करते रहते थे।

५ वर्ष की आयु में ही वामाचरण ने माँ तारा की बहुत सुन्दर मूर्ति बना कर उसमें चार हाथ, गले में मुंडमाला और अपने बाल उखाड़ कर तारा माँ के बाल लगाये थे। पास में ही एक जामुन का पेड़ था। जामुन मे ही माँ तारा का प्रसाद लगाते थे और कहते थे कि माँ तारा जामुन खा लो। अगर तुम नहीं खाओगी तो मैं कैसे खाऊँगा ?

वामाचरण धीरे-धीरे बड़े होने लगे जब वह ११ वर्ष के थे और उनका भाई केवल पाँच वर्ष का था तब उनके ऊपर बड़ी भारी मुसीबत आई। उनके पिता सर्वानन्द जी बहुत बीमार हो गये और माँ काली, माँ तारा कहते हुए स्वर्ग सिधार गये। वामाचरण ने पिता जी की मृत देह को तारापीट के श्मशान में ले जाकर, उनका अंतिम संस्कार किया। विधवा माँ ने किसी तरह से मांग कर श्राद्ध का काम पूरा किया। घर की हालत खराब सुनकर वामाचरण के मामा आकर दोनों भाइयों को अपने घर नवग्राम में ले गये। वामा चरण गाय चराने लगे और रामचरण गाय के लिये घास काट कर लाते और आधापेट झूटा भात खाकर रहते। एक दिन रामचरण के हँसिये से घास काटते हुए वामाचरण की उंगली कट गई और गाय खेत में जाकर फसल खाने लगी। खेत के मालिक ने मामा को शिकायत कर दी। मामा ने वामाचरण को छड़ी लेकर बहुत मारा। तत्पश्चात् वामाचरण भाग कर अपनी माँ के पास आटला ग्राम में चले आये। उधर रामचरण को एक साधु गाना सिखाने के लिये अपने साथ ले गये। वामा चरण ने घर आकर निश्चय किया कि वे अब श्मशान में रहेंगे। उस दिन पूर्णमासी थी। वहाँ पर कई आदमी बैठे थे। वामाचरण उनके पैर दबाते-दबाते सो गये।

एक बार वामाचरण ने एक वैरागी से गांजा पीकर उसकी आग असावधानी से फैंक दी। उस से भंयकर आग लग गई और कई घर जल गये। सभी लोग वामाचरण को पकड़ने लगे। वामाचरण उस आग में कूद पड़े और जब वे आग से बाहर निकले तो उनका शरीर सोने की तरह चमक रहा था। माँ तारा ने अपने पुत्र वामाचरण की अग्नि से रक्षा की थी। इस बात को देखकर सभी अवाक् रह गये थे।

तत्पश्चात् वामाचरण का साधक जीवन आरम्भ हुआ। मोक्षदानन्द बाबा व

साईं बाबा आदि ने उन्हें महाश्मशान में आश्रय दिया। कैलाश पति बाबा उन्हें बहुत प्यार करते थे। एक दिन कैलाश्पति बाबा ने रात में वामा को गांजा तैयार करने के लिये बुलाया। उस रात वामाचरण को बहुत डर लगा। असंख्य दैत्याकार आकृतियाँ उनके चारों ओर खड़ी थीं। वामा ने जयगुरु, जयतारा पुकारा और वे सब आकृतियाँ लुप्त हों गईं और वामाचरण ने कैलाश्पति बाबा के आश्रम में जाकर गांजा तैयार किया।

काली पूजा की रात में वामाचरण का अभिषेक हुआ। सिद्ध बीज मंत्र पाकर वामा का सब उलट-पुलट हो गया और सैमल वृक्ष के नीचे जप-तप करने लगे। शिव चौदस के दिन वामाचरण ने सिद्ध बीज मंत्र जपना शुरु किया। सुबह से शाम तक ध्यान मग्न होकर तारा माँ के ध्यान में लगे रहे। खाना पीना भी भूल गये। रात में दो बजे उनका शरीर कांपने लगा। सारा श्मशान अचानक फूलों की महक से महक उठा। नीले आकाश से ज्योति फूट पड़ी और चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश फैल गया। उसी प्रकाश में वामाचरण को तारा माँ के दर्शन हुए। बाघ की खाल पहने हुए एक हाथ में तलवार, एक हाथ में कंकाल की खोपड़ी, एक हाथ में कमल फूल और एक हाथ में अस्त्र लिये हुए, आलता लगे पैरों में पायल पहने, खुले हुए केश, जीभ बाहर निकली हुई, गले में जावा फूल की माला पहने, मंद-मंद मुसकाती हुई माँ तारा वामा के सन्मुख खड़ी थी। वामाचरण उस भव्य और सुन्दर देवी को देखकर खुशी से भर गये। १८ वर्ष की अल्पायु में और विश्वास के बल पर वामा को सिद्धि प्राप्त हुई और वे वामचरण संसार में पूज्य हुए। जिस प्रकार परमहंस रामा कृष्णा को दक्षिणेश्वर में माँ काली के दर्शन हुए थे। उसी प्रकार वामाचरण को भी तारापीठ के महामशान में माँ तारा के दर्शन हुए थे।

वामाचरण की माता का स्वर्गवास हो गया। उस समय द्वारका नदी में बाढ़ आई हुई थी। किन्तु वामाचरण तारा माँ, तारा माँ कहते हुए नदी में कूद गये और नदी के दूसरे किनारे पर पहुँच कर अपनी माता के मृत शरीर को अपनी पीठ पर रखकर फिर पानी में कूद पड़े और महाश्मशान में लाकर अपनी माता का अन्तिम संस्कार किया। माँ के श्राद्ध के दिन खाली जमीन साफ करा कर सब गाँव वालों को निमंत्रण भेज दिया। अपने आप अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पकवान वामाचरण के घर में आने लगे। सारे गाँव के अतिथि गण राजाओं के खाने योग्य जैसे छत्तीस प्रकार के पकवान खाने लगे। तभी आकाश में घने बादल छा गये। वामाचरण ने माँ तारा को याद करके लकड़ी लेकर उससे चारों तरफ एक घेरा खींच दिया

मूसलाधार वर्षा हुई परन्तु घेरे के अन्दर एक बूंद पानी नहीं गिरा और अतिथियों ने आनन्दपूर्वक भोजन किया। जब अतिथि गण भोजन करके जाने लगे तो वामाचरण ने माँ तारा को याद करके बादलों को साफ कर दिया और बारिश रुक गई।

वामाचरण को देखने से लगता था कि वह बड़े कठोर हैं लेकिन उनका हृदय बड़ा पवित्र तथा कोमल था। वे अपने भक्तों के अनुरोध पर कई असाध्य रोगों को ठीक कर दिया करते थे।

धीरे-धीरे वामाचरण की उम्र भी बढ़ती गई और वे ७२ साल के हो गये। कृष्णाष्टमी का दिन था। वामाचरण तारा माँ का प्रसाद खा रहे थे। अचानक कुत्ते बड़ी जोर से चिल्लाने लगे। फिर एक कंकाल की तरह के चेहरे वाला एक सन्यासी आया और फीकी सी हंसी हंसते हुए बोला अब क्या बाबा, चलो, तुम को अपने साथ ही ले चलूंगा। उस दिन भक्त लोग उनको घेर कर बैठे रहे। बाबा की साँस जोर-जोर से चल रही थी, अचानक उनकी नाक का अग्र भाग लाल हो उठा। सभी लोग तारा माँ, तारा माँ पुकारने लगे और तारा माँ, तारा माँ सुनाई पड़ने के साथ ही वामाचरण का शरीर स्थिर हो गया और एक महायोगी योगमाया में लीन हो गया। चारों ओर वामाचरण के स्वर्ग सिधारने की खबर फैल गई और वीरभूमि जिले के सभी लोग उस सिद्ध पुरुष के दर्शन करने के लिये उमड़ पड़े। महाश्मशान के पास ही एक नीम के पेड़ के नीचे उनको समाधि दी गई। तारा माँ का सब से योग्य पुत्र तारा माँ में ही समा गया।

महाश्मशान में तारा माँ का पादपद मन्दिर है। यह असली जगह है। यहाँ पर आकर यात्री लोग अपनी मनोकामना के लिये ध्यान करते हैं और उनकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है। इस मन्दिर के पास में ही वामाचरण (वामाखेपा) का समाधि मन्दिर है। श्मशान में बड़े-बड़े साधु संतों की समाधियाँ भी हैं। साथ में कई समाधि मन्दिर भी हैं। अभी भी श्मशान में बहुत साधु अपनी-अपनी कुटी बना कर रहते हैं। यहाँ पर बहुत मुर्दे भी जलाये जाते हैं। नदी में बाढ़ आने पर भी चिता पर पानी नहीं आयेगा। यह एक विशेष बात है।

तारापीठ में बहुत साधु अपना आश्रम बना चुके हैं जैसा कि पदानिकेतन आश्रम है जो धर्मशाला के सामने है। कोई-कोई समय में यहाँ बहुत बड़ा उत्सव होता है। यहाँ के ब्रह्मचारी का नाम ब्रह्मापदे है। श्री सुधीरपाल भी यहाँ रहते हैं।

एक पहाड़ी बाबा आश्रम है। नौगन बागची-आश्रम है। निगामा नंदा (निगमानन्द) तथा कई छोटे-छोटे आश्रम हैं। वामानिकेतन, वामदेवसंघ तथा वामामिशन भी हैं। इन सब में बड़े-बड़े उत्सव होते रहते हैं।

तारापीठ में एक और जगह देखने योग्य है। उसका नाम है मुंडुमालनीतला। वहाँ पर भी तारा माँ की मूर्ति है। सुना है कि काली माँ अपने गले की मुंडुमाला वहाँ रखकर द्वारका नदी में स्नान करके माला पहन लेती हैं। इसलिये इस का नाम मुडुमालनी है। यहाँ पर भी एक श्मशान है। तारापीठ के मुख्य मन्दिर से १५ मिनट का रास्ता है। किसी भी आदमी के पूछने पर वह बतला देगा। यहाँ पर तारापीठ का अन्त है। पश्चिम में फुलोडागा अन्त है।

तारापीठ से प्रातः ८-५० पर बस वाया रामपुरहट हो कर दुमका जाती है। किराया १३ रु० है। साढ़े बारह बजे दुमका पहुँच जाती है जो ७५ कि० मी० है। दुमका से एक बजे बैद्यनाथ धाम (देवघर) जाने वाली बस मिल जाती है। किराया दस रुपये तथा दूरी ६७ कि० मी० है और लगभग ३ बजे देवघर पहुँच जाती है।

तारापीठ से रामपुरहट लगभग छः कि० मी० है और तारापीठ तथा रामपुरहट के बीच में मुनसुबा पार्क है। मुनसुबा पार्क से निम्नलिखित स्थानों की सड़क मार्ग द्वारा दूरी रामपुरहट ३ कि० मी०, नालहाटी १७ कि० मी० मोरग्राम ३७ कि० मी०, मालदा १४३ कि० मी०, सिवड़ी ४७ कि० मी०, बकरेश्वर ६६ कि० मी०, बोलपुर (शान्तिनिकेतन) ८२ कि० मी०, पानागढ़ १२६ कि० मी० है। रामपुरहट से ८-१० कि० मी० पर बिहार प्रान्त शुरू हो जाता है।

प. बंगाल के कुछ अन्य धार्मिक स्थल---वर्धमान, शान्तिनिकेतन, जलपाइगुडि, सिलिगुडि, कालिमपोंग, दार्जिलिंग, कृष्ण नगर---मायापुर

वर्धमान ---हावडा तथा स्यालदा रेलवे स्टेशन से वर्धमान जाने के लिये अनेक गाडियॉ है। लोकल ट्रेने एक-एक घटे बाद वर्धमान जाती है। वर्धमान ओर तारकेश्वर दानो समानान्तर दिशा म है। कुछ स्टेशन चल कर तारकेश्वर की लाइन अलग हो जाती है। वर्धमान शान्तिनिकेतन तथा दिल्ली वाली लाइन पर है।

वर्धमान के निकट बोरहट मे भगवान कमलाकान्त का साधना का स्थान है। कमलाकान्त ने काली मॉ की पूजा की। कंचन नगर काली मन्दिर के लिये प्रसिद्ध है। आजमगज शिव मन्दिर के लिये विख्यात है। वर्धमान रेलवे स्टेशन स चार कि० मी० दूर नबाबहटा में १०८ शिव मन्दिर हैं। ये मन्दिर अठाहरवीं शताब्दी के अन्त में महारानी विष्णु कुमारी ने बनवाये थे। यहॉ शिवरात्रि का बहुत बडा मेला लगता है, जिसमें लाखों यात्री आते हैं।

बहुत बड़ा शिवलिंगः---अभी हाल ही में वर्धमान मे जमीन की खुदाई करते समय एक बहुत बडा शिव लिंग मिला है। इसे क्रेन से उठा कर जहॉ से निकला था उसके पास रखा गया है। इतना बड़ा शिवलिंग भारत मे सम्भवतः और कहीं

नहीं है। यह काले रंग का शिवलिंग है। यह वर्धमान के राजा के महल से लगभग एक कि० मी० के फासले पर है। वर्धमान कलकत्ता से ६५ कि० मी० उत्तर की ओर है। राजा के महल में अब वर्धमान युनिवर्सिटी है।

वर्धमान का चावल बहुत मशहूर है। यहाँ की मुख्य मिठाई मिही दाना और सीता भोग है। यहाँ पर एशिया का सबसे बड़ा कोल्ड स्टोरिज भी है तथा गुलाब बाग और मृग उद्यान देखने योग्य हैं :। वर्धमान के पास पीर-बहराम नाम का स्थान है। नूरजहाँ के दो पति हुए, पहला शेर अफगन था। जो युद्ध में मारा गया था। नूरजहाँ विधवा हो गई थी। उसकी शेर अफग़न से एक कन्या थी बाद में नूरजहाँ ने सम्राट जहाँगीर से पुर्नविवाह कर लिया था, नूरजहाँ के पहले पति शेर अफगन की समाधि पीर बहराम में है।

वर्धमान नगर में दाखिल होने से पहले एक बहुत बड़ा गेट है। १९०३ में

लार्ड कर्जन यहाँ आया था और उसके स्वागत में वर्धमान के राजा ने यह गेट बनवाया था। इसे कर्जन गेट या विजय तोरण भी कहते हैं।

यहाँ पर दामोदर महानद बहता है जिस में बाढ़ आती है और सारी फसलें तबाह हो जाती हैं; लेकिन अब सरकार ने इस महानद पर एक बहुत बड़ा पुल बना कर वर्धमान के निवासियों को कुछ राहत पहुँचाई है।

शान्तिनिकेतन

वर्धमान से ६४ कि० मी० आगे शान्तिनिकेतन है। स्टेशन का नाम बोलपुर है। यहाँ गुरु रविन्द्रनाथ ने १६२३ में विश्वभारती, विश्वविद्यालय की स्थापना की। यहाँ पर नाच, गाना, ड्रामा, नाटक, कला, विज्ञान तथा हर प्रकार की शिक्षा एम० एं० तक दी जाती है। यहाँ लड़के-लड़कियाँ खुले तथा अलौकिक वातावर्ण में वृक्षों के नीचे बैठकर पढ़ते हैं। शान्तिनिकेतन में पाँच मुख्य भवन हैं, कोनार्क, अदयन, श्यामली, पुनश्च, उदीची है। इन भवनों को मिलाकर उत्तरायण का नाम दिया गया है।

सन् १८६१ में रविन्दर नाथ ठाकुर के पिता जी देवेन्द्र नाथ ठाकुर ने यहाँ एक आश्रम स्थापित किया था। १९०१ में रविन्द्रनाथ ठाकुर ने ब्रह्मचर्य आश्रम शुरू किया जो एक पूजा स्थल है।

रेलवे स्टेशन से लगभग दो कि० मी० पर शान्तिनिकेतन है। पैदल या रिक्शा द्वारा जा सकते हैं। यहीं से सिवड़ी जाने के लिये बस मिलती है। सिवड़ी से बकरेश्वर, मैंसन जोर, तारापीठ, रामपुरहट, विष्णुपुर, दुमका आदि जा सकते हैं।

जलपाइगुडि:---कलकत्ते से दार्जिलिंग एक्सप्रैस सिलीगुडि जाती है जो रात्रि नौ बजे चलकर प्रातः ८ बजे पहुँच जाती है। यहाँ से २५-30 कि० मी० पर जलपाईगुडि है। जलपाइगुडि से लगभग १६ कि० मी० पर जलपेश महादेव का मन्दिर है। यहाँ शिवलिंग स्वयम् प्रकट हुआ था। यह शिवलिंग जल में प्रकट हुआ था। इसलिये इसे जलपेश महादेव कहते हैं और इसी नाम पर इस नगर का नाम जलपाइगुडि पड़ा। यहाँ से लगभग ४४ कि० मी० के फासले पर न्यू जलपाईगुडि है।

जलपाइगुडि में देवी चौधरायण का मन्दिर देखने योग्य है। राजबाड़ी पाड़ा (राजमहल) में काली मन्दिर देखने योग्य है। मूर्ति अष्टधातु की बनी हुई है। राज बाड़ी के सामने सड़क के दूसरी तरफ बहुत बड़ा तालाब है और तालाब के साथ शिव मन्दिर और बहुत सारे छायादार वृक्ष हैं। यहाँ मनसा पूजा होती है।

इसके अलावा जलपाईगुडि में पंचमुखी हनुमान मन्दिर, तिस्ता नदी, उद्यान, जुबली पार्क, शिशु उद्यान तथा कारोला नदी देखने योग्य हैं। कारोला नदी तिस्ता में ही मिल जाती है। दुर्गा पूजा, काली पूजा, दीपावली पूजा, के उत्सव मनाये जाते हैं। जलपेश मन्दिर के प्रागंण में १५ दिन तक मेला लगता है। राजबाड़ी में रास पूर्णिमा में १५ दिन मेला लगता है।

जलपाइगुडि में पानी का स्तर बहुत ऊपर है। १०-१५ फुट पर ही पानी निकल आता है। इस लिये हरेक घर में कुएँ है और कुओं का पानी ही प्रयोग में लाया जाता है।

सिलिगुडिः---यह कलकत्ता से ६९१ कि० मी० ब्रह्मपुत्र से ३८४ कि० मी०, बैलूर घाट से २६० कि० मी०, रायगंज से १८० कि० मी०, मालदा से २६० कि०

मी०, कूच विहार से १६० कि० मी०, कालिमपौग से ७० कि० मी०, मीरिक से ५२ कि० मी०, दार्जिलिंग से ८० कि० मी०, पटना से ४६६ कि० मी०, आमनसोल से ६३० कि० मी०, जयगांव (भूटान बार्डर) से १४२ कि० मी०, गुवाहाटी से ५१३ कि० मी० तथा गंगटौक से ११४ कि० मी० है। रेल तथा बस द्वारा जा सकते हे। यह उत्तर पूर्व भारत का प्रवेश द्वार हे। स्टेशन का नाम न्यूजलपाइगुडि है। सिलिगुडि से नेपाल तथा भूटान भी जा सकते हैं।

सिलिगुडि एक धार्मिक नगर है। दुर्गा पूजा, काली पूजा विश्वकर्मा पूजा तथा अन्य भारतीय देवी देवताओं की पूजा होती हे तथा आये दिन यहॉ पर कोई न कोई उत्सव मनाया जाता है। दशहरा, दीपावली, भाई दूज, मकर मक्रांति, गगा दशहरा, रक्षा बन्धन, गणेश चतुर्थी आदि त्यौहार भी मनाये जाते है।

कालिमपोंग:---यह प्रकृति की गोद मे बसा बगाल का पहाडी स्थान है। यह सिलिगुडि से ७० कि० मी० हे। यहाँ से कंचनजघा की चॉदी जैसी सफेद चोटियाँ बहुत मनोरम दिखाई देती हैं।

१६५६ में बंगालियां ने यहाँ काली देवी का पवित्र मन्दिर बनवाया था। इस मन्दिर के निकट ही शिव मन्दिर है। कालिमपोंग में मुख्य पूजा स्थल जेगडाग पालगी फोडंग है जो बहुत ऊपर पहाडी की चोटी पर है। यह मन्दिर १६ स्तम्भों पर खडा हे। इस मन्दिर में द्वितीय बुद्ध की मूर्ति हे। दीवारों पर सुन्दर चित्रकारी हे। प्रतिदिन १०८ दीप जलाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त कालिंगपोंग मं डॉ० ग्राहमस होम हे। यह एक अंडरसन ग्राहम नाम के मिशनरी ने आरम्भ किया था। यह एक अद्वितीय शैक्षणिक संस्थान है।

ऋषि बंकिमचन्द्र पार्क, चन्द्रलोक बिल्डिंग, आर्मी गौल्फ प्ले ग्राउंड, दीप्र चौक, व्यू प्वाइंट, फलावर नर्सरी भी देखने योग्य हैं।

यहाँ पर गवर्नमैंट टूरिस्ट लौज हैडक्वाटर, क्राफ्ट टीचर ट्रेनिंग सैन्टर, क्राफ्ट एण्ड आर्ट सैंटर, स्विस वैलफेअर डेरी, कलचर फार्म एवम् ब्लाइंड स्कूल भी हैं।

दार्जलिंग:---सिलिगुडि से ८० कि० मी० पश्चिमी बंगाल का सुन्दर हिल स्टेशन है, यह पर्यटन स्थल के साथ-साथ एक धार्मिक पूजा स्थल भी है। यहाँ पर बहुत आलीशान भगवान बुद्ध का मन्दिर है। दुर्गा पूजा, काली पूजा, दशहरा, दीवाली

भैया दूज, महासंक्रान्ति, होली तथा अन्य सभी भारतीय त्यौहार मनाये जाते हैं। यहाँ पर चाय के बाग हैं। टाइगर हिल से सूर्योदय का दृश्य देखा जाता है। टाइगर हिल से वापसी पर घूम मोनस्ट्री है। यहाँ पर नेपाली लड़कियाँ शाल दुशाले, स्वैटर मफलर आदि गरम कपड़े बेचती हैं। घूम मोनिस्ट्री के पास ही "बतासा तूप" नाम का स्थान है। यहाँ से दूरबीन द्वारा कंचनजंघा का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है। दार्जलिंग में हिमालयन मौंटेरियन इन्स्टीच्यूट है। स्वर्गीय शेरपा तेनसिँह इस इन्स्टीच्यूट के प्रिसिंपल थे। उन्होंने एवरेस्ट की चोटी पर विजय पाई थी। इन्स्टीच्यूट के सामने शेरपा तेनसिंह की समाधि है। थोड़ी दूर पर चिड़ियाघर है।

और आगे चल कर चाय के बाग हैं तथा रोप वे (ट्राली) है। लाल कोठी, जापानी टैम्पल, आभार गैलरी विक्टोरिया फॉल तथा नेशनल म्यूजियम भी देखने योग्य हैं।

कृष्ण नगर-मायापुर:---कलकत्ता से १०० कि० मी० पर कृष्ण नगर है। यह मूर्ति कला में भारत में सर्वश्रेष्ठ नगर माना गया हे स्यालदा रेलवे स्टेशन से रेल द्वारा जाते हैं यहाँ पर मिट्टी की आदम कद मूर्तियाँ बनवाने के ऑर्डर आते हैं।

कृष्ण नगर से २०-२५ कि० मी० पर नवादित घाट है वहाँ से नौका में बैठकर दूसरे किनारे पर मायापुर है। यहाँ पर हरे राम, हरे कृष्ण मन्दिर तथा मुख्यालय है जो विदेशियों ने बनवाया है। इस मन्दिर का नाम श्री मायापुर चन्द्रउदय मन्दिर है। यहाँ पर ठहरने तथा खाने-पीने की भी व्यवस्था है। मन्दिर के पार्क में बच्चों के मनोरंजन के लिये चिड़ियाघर के समान कुछ जानवर हाथी वगैरा भी रखे हुए हैं। मायापुर से २-३ कि० मी० पर चैतन्य महाप्रभु का जन्म स्थान है।

गंगटोक (सिक्किम)---

गंगटोक सिक्किम की राजधानी है। यह दार्जिलिंग के उत्तर में हिमालय की गोद में बसा हुआ है। चारों ओर २०,००० फुट से भी अधिक कंचनजंघा तथा मांउट एवरेस्ट जैसे ऊँचे शिखर हैं। यहाँ बौद्धों की संख्या अधिक है तथा भुटान से आये नेपाली, हिन्दू बहुत हैं यहाँ के मूल निवासी मंगोलियन जाति के लपचा हैं परन्तु उनकी संख्या कम है। निकटतम रेलवे स्टेशन सिलिगुडि है। वहाँ से बस द्वारा कालिंम पौंग होते हुए गंगटोक जाते हैं जो लगभग ११८ कि० मी० है तथा कलिमपौंग से ७२ कि० मी० है। दार्जिलिंग से भी गंगटोक जा सकते हैं जो ९३ कि० मी० है।

यहाँ पर देखने योग्य स्थान दो-द्रूड-चोर्टन है। यह पवित्र धार्मिक स्थान है। यहाँ पर एक स्तूप है जिसके चारों तरफ १०८ धर्म चक्र हैं। भगवान बुद्ध के अनुयायी दिन में तीन बार इन चक्रों को घुमाते हुए तथा मंत्रों का उच्चारण करते हुए स्तूप की परिक्रमा करते हैं। स्तूप के निकट भगवान बुद्ध का मन्दिर है जो १०-१५ साल पहले बना। यहाँ पर १०८ दिये जलाये जाते हैं। बुद्ध मन्दिर के पास कुछ सीढ़ियाँ उतर कर गुरु लाहखंग मन्दिर है। यह सब से प्राचीन धार्मिक स्थान है।

मन्दिर में गुरु पदमा सांबुवा की मूर्तियाँ हैं। गुरु पदमा सांबुवा ने ही ८ वीं शताब्दी में इस छिपी हुई भूमि को खोज कर जिसे हबडी मोल जौंगज (सिक्किम) कहते हैं, बसाया था। पवित्र किया था तथा गुरु स्नेग जीसिल गनोम जो उनके शिष्य थे, उन्होंने इस भूमि को उन्नत करके प्रकाशमान किया था। यहाँ पर बोद्ध धर्म की पवित्र पुस्तकों का पुस्तकालय भी है।

रूमटेक धर्मचक्र केन्द्रः---यह गंगटोक से लगभग २४ कि० मी० है और कागयू

शिक्षाओं का केन्द्र है। कागयू तिब्बत के मुख्य चार बुद्धिस्ट वर्गों में से एक है। संसार में इस वर्ग के लगभग २०० केन्द्र हैं। १९६० में चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया था। इसलिये १६वाँ ग्यालपा, कर्मम्पा जो कि कागयू औंर्डर का मुखिया है वह तिब्बत से आकर सिक्किम में इस स्थान पर रह रहा है।

इसके अतिरिक्त सिक्किम रिसर्च इंस्टीच्यूट ऑफ तिब्बित्योलाजी, ताशीलिंग सचिवालय, राजा का महल, हिरन उद्यान, फलावर, फैस्टीवल, डायक्टरेट ऑफ हैंडिक्राफट एण्ड हैंडलूम, आर्चड सैंचुअरी तथा सरमसा गार्डन भी देखने योग्य हैं।

एन० के० मोनास्ट्रीः---गंगटोक में तिब्बतियों के १४० मन्दिर पवित्र दर्शनीय स्थान हैं, जिन्हें गुम्फा कहा जाता है परन्तु इन सब में प्रसिद्ध तथा देखने योग्य गुम्फा एन० के० मोनास्ट्री है जो कि फलावर शो से कुछ दूर ऊपर पहाड़ी पर है। यह मोनास्ट्री १८४० में बनी थी।

कामाख्या देवी शक्तिपीठ---गुवाहाटी

गुवाहाटी दिल्ली से १९३७, कलकत्ते से ६६१ और सिलीगुडि से ४४५ कि० मी० है। यहाँ पर ठहरने के लिये बहुत होटल हैं। रेलवे स्टेशन के साथ ही टूरिस्ट होटल है जो बहुत सस्ता और बहुत अच्छा है। इसके अलावा अनेक होटल हैं। पलटन बाजार में जनता होटल तथा हैपी लॉज हैं और फैंसी बाजार में अलका होटल है।

गुवा का अर्थ सुपारी, हाटी का अर्थ बाजार, इस तरह गुवाहाटी का अर्थ सुपारी का बाजार है। यहाँ पर सुपारी का एक व्यावसायिक केन्द्र था।

गुवाहाटी को प्राग्ज्योतिषपुर भी कहा जाता है। यहाँ पर ब्रह्माजी ने सृष्टि के आरम्भ में नवग्रहों की रचना की थी।

गुवाहाटी का नाम कामरूप भी है। कहा जाता है कि कामदेव ने यहीं पर महादेव की तपस्या भंग की थी। महादेव ने अपने नेत्रों की अग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया था। इसलिये इस स्थान का नाम भस्मास्थल है। कामदेव की पत्नी रति ने महादेव की आराधना करके उन्हें प्रसन्न किया और अपने पति को पुनर्जीवित तथा रूप देने की प्रार्थना की। महादेव ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करके कामदेव को पुनः जीवित कर दिया और उसका रूप दे दिया। काम देव ने इसी स्थान पर अपना रूप पुनः प्राप्त किया था। इसलिये इसे कामरूप कहते हैं।

यहाँ पर अहोम राजाओं ने लगभग ६०० वर्ष तक शासन किया। अहाम या आहोम शब्द से कामरूप राज्य का नाम असम या आसाम प्रसिद्ध हुआ। गुवाहाटी

का नाम कामाख्या भी है। यह हिन्दू और बौद्ध तांत्रिकों का केन्द्र रहा है। आज भी कामरूप और कामाख्या के जादू के विषय में अनेक दंतकथायें सुनी जाती हैं। पहले मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा कोई अलग राज्य नहीं थे। सब आसाम में शामिल थे। आसाम की राजधानी शिलाँग थी लेकिन जब मेघालय आसाम से अलग हुआ तब गोवाहाटी को आसाम की राजधानी बनाया गया। लेकिन अब आसाम की राजधानी गुवाहाटी से दस कि० मी० दूर दिसपुर है। पहले आसाम को कामरूप कहते थे अब कामरूप एक जिला बनकर रह गया है।

त्रेतायुग में पृथ्वी का पुत्र नरकासुर राज्य करता था। वह सोनितपुर के राजा वाणासुर की संगति में पड़ कर अत्याचार करने लगा। एक दिन उसने कामाख्या देवी को अपनी पत्नी बनाने के लिये आग्रह किया। देवी भगवती ने उसकी मृत्यु निकट जानकर कहा कि तुम रात में नीलांचल पर्वत के चारों तरफ पत्थरों की सीढ़ियों के चार रास्तों का निर्माण करो। यदि प्रातः काल होने से पहले यह काम कर दोगे तो मैं तुम्हारी पत्नी बन जाऊँगी। नरकासुर ने रात होते ही सीढ़ियों के चारों रास्तों का निर्माण शुरू कर दिया। काम समाप्त होने वाला ही था कि कामाख्या देवी ने एक कुक्कर (मुर्गे) द्वारा रात्रि समाप्त होने की सूचना दी। नरकासुर क्रोधित होकर कुकर को मारने के लिये दौड़ा और ब्रह्मपुत्र के दूसरे किनारे पर जाकर उसका वध कर दिया। यह स्थान आज भी "कुकर काटा चीक" के नाम से प्रसिद्ध है। तत्पश्चात् विष्णु भगवान ने नरकासुर का वध कर दिया। नरकासुर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र भगदत्त कामरूप का राजा बना था।

देखने योग्य स्थान

कामाख्या मन्दिर:---यह गुवाहाटी का सब से प्रमुख पूजा स्थल है। यहाँ पर कामाख्या देवी का मन्दिर है। आटोरिक्शा या लोकल बस द्वारा दर्शन करने जाते हैं। लगभग १० कि० मी० दूर कामाख्या पहाड़ी पर है। एक बजे से तीन बजें तक मन्दिर बन्द रहता है। आषाढ़ महीने में यहाँ पर तीन दिन अम्बूवाची का मेला लगता है। यह विधवाओं का त्योहार है। कामाख्या देवी ५१ शक्तिपीठों में से एक है। यहाँ

सती की योनि गिरी थी। इस मन्दिर को कूचविहार के राजा नरनारायण ने १५६५ में बनवाया था। मन्दिर का नक्शा मधुमक्खी के छत्ते की तरह बनाया गया है। इस मन्दिर की देवी कामाख्या, कालीदेवी का रूप है।

भुवनेश्वरी मन्दिर यह मन्दिर नीलांचल पर कामाख्यादेवी मन्दिर के बिल्कुल निकट है, केवल १०-१५ मिनट का पैदल का रास्ता है।

उमानन्द मन्दिर:---यह मन्दिर ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में स्थित "पीकॉक आयलैंड" नामक द्वीप पर है। यह एक शैल द्वीप अर्थात् पहाड़ी द्वीप है। इसे उमानन्द पहाड़ भी कहते हैं। इस पहाड़ के ऊपर उमानन्द भैरों का मन्दिर है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर कामदेव ने महादेव की तपस्या भंग की थी और यहीं पर वह महादेव की नेत्र अग्नि से जल कर भस्म हो गया था।

जनार्दन मन्दिर:---यह मन्दिर नगर के बीच में सुक्लेश्वर पहाड़ी पर है। इस मन्दिर में भगवान बुद्ध की मूर्ति है।

नवग्रह मन्दिर:---यह मन्दिर चित्रांचल पहाड़ पर है। ब्रह्मा जी ने यहीं पर बैठकर ग्रह तथा नक्षत्रों की रचना की थी। यहाँ पर नौ ग्रहों का मन्दिर है। यहाँ पहले ज्योतिष का केन्द्र था, इसीलिये प्राग ज्योतिषपुर कहते थे।

वशिष्ठाश्रमः---गुवाहाटी शहर से दक्षिण की ओर १२ कि० मी० दूर वशिष्ठ मुनि का आश्रम है वशिष्ठ ऋषि यहीं रहते थे। यह बहुत सुन्दर तथा मनमोहक स्थान है। चारों तरफ पहाड़ों की श्रेणियाँ है। यहाँ पर तीन पहाड़ी नदियाँ बहती हैं जिनके नाम संध्या, ललिता तथा कान्ता हैं। ये तीनों नदियाँ वशिष्ठ आश्रम के पास से बहती हैं। कहा जाता है कि वशिष्ठ ऋषि ने ही अपने तप के बल पर इन्हें प्रवाहित किया और तीनों को मिला कर त्रिवेणी संगम बना दिया। वशिष्ठ ऋषि इस त्रिवेणी संगम में प्रति दिन स्नान करके त्रिसंध्या किया करते थे। त्रिवेणी के समीप ही, वशिष्ठ ऋषि का बहुत सुन्दर मन्दिर है। मन्दिर के साथ ही गणपति मन्दिर है। यह स्थान पवित्र पूजा स्थल तो है ही इसके साथ-साथ पर्यटन स्थल भी है। यात्रियों को त्रिवेणी संगम में स्नान करने में बड़ा आनन्द आता है।

इसके अतिरिक्त गांधी मंडप, आसाम स्टेट ज्यू (चिड़ियाघर), म्यूजियम, कॉटेज इंडस्ट्री. इम्पोरियम, विश्वविद्यालय तथा ब्रह्मपुत्र पर बना पुल सरई घाट बृज देखने योग्य स्थान हैं। गुवाहाटी ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसा हुआ है। टूरीजम डिपार्टमैंट की कंडक्टिड टूर बसें दर्शनीय स्थानों को दिखा देती हैं।

हाजो गुवाहाटी से २४ कि० मी० दूर हिन्दुओं. बौद्धों ओर मुसलमानों का पूजा स्थल है। यहाँ पर हिन्दुओं का ध्यग्रीव महादेव का मन्दिर है। भूटिया बौद्धों के मतानुसार भगवान बुद्ध ने यहीं पर निर्वाण प्राप्त किया था। मुसलमानों की पाव मक्का नाम की मस्जिद है। स्थानीय मुस्लिम इसे मक्का से चोथाई पवित्र मानते हैं। यह मस्जिद पीर ग्यासुद्दीन औलिया ने बनवाई थी।

शिलाँग (मेघालय)

शिलांग गुवाहाटी से सड़क मार्ग द्वारा १०० कि० मी० है तथा ५००० फुट की ऊँचाई पर है। यह मेघालय की राजधानी है। मेघालय भारत का इक्कीसवाँ राज्य है। शिलाँग खासी और जयन्तिया पहाड़ियों के बीच में बसा हुआ है।

शइलौंग का अर्थ घर का देवता है। शिलाँग पीक जो यहाँ से लगभग १० कि० मी० है। वह शिलाँग के देवता का घर है। यह पर्यटन स्थल अधिक है। यहाँ पर दर्शनीय स्थान शिलाँग पीक, वार्ड लैक, वाटर फॉल्स, बड़ा बाजार, सुमिट, लेडी हैदरी पार्क तथा स्टेट म्यूजियम आदि हैं। यहाँ से लगभग ५५ कि० मी० पर चिरापूंजी है। यहाँपर संसार में सब से अधिक वर्षा होती है। यहाँ पर देखने योग्य मौसमयी फॉल्स, मौसमयी केवज तथा रामकृष्ण मिशन हैं तथा गवर्मैंट सिमेंट फैक्टरी है।

इटानगर---(अरुणांचल प्रदेश)

गुवाहाटी से इटानगर का १० घंटे का रास्ता है। गुवाहाटी से सायंकाल ८ बजे बस चलकर प्रातः छः सात बजे इटानगर पहुँच जाती है। लेकिन पहले दिन गुवाहाटी में इटानगर जाने के लिये परमिट बनवा लेना जरूरी है।

इटानगर अरुणाचल प्रदेश की राजधानी है। यह प्रदेश बिल्कुल पूर्व में होने के कारण सूर्य का आंचल कहा जाता है। सब से पहले सूर्य के दर्शन यहीं पर होते हैं। ईटानगर में धार्मिक स्थान बौद्ध मन्दिर है। यह मन्दिर अभी ८-६ साल पहले बना है जो कि अरुणाचल प्रदेश के बौद्ध लोगों का पवित्र पूजा स्थान है। बौद्ध लोगों ने महसूस किया था कि बौद्ध कलचर और बुद्धिस्ट तिब्बतियन मैडिकल डिसपैंसरी इटानगर में होनी चाहिये तदनुसार बुद्धिस्ट कलचरल सोसाइटी बनाई गई और इसे रजिस्टर्ड कराया गया। अरुणाचल प्रदेश सरकार ने जमीन अलाट

की तथा आर्थिक सहायता दी और इस जगह का नाम सिद्धार्थ विहार रखा। दलाइलामा चौदहवें ने ५-५-८३ को नीव रखी और निर्माण कार्य शुरू हुआ। मन्दिर का निर्माण होने पर श्री टी शेरिंग ताशी मन्त्री अरुणाचल प्रदेश, भगवान बुद्ध की ब्रास की बनी मूर्ति अलीगढ से लाये जो २२-४-८४ को मन्दिर में स्थापित की गई। मन्दिर के पास दलाइलामा ने ५-५-८३ को एक पीपल का वृक्ष लगाया था जो अब बडा हो गया है।
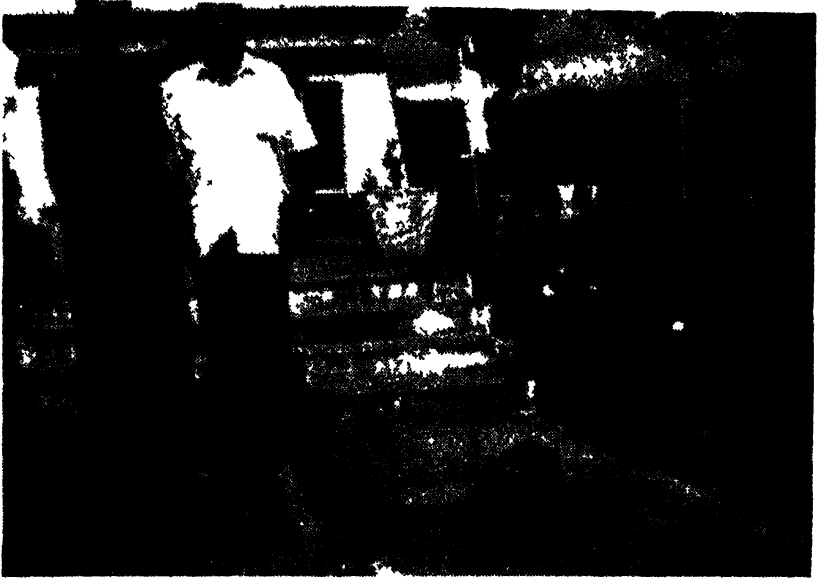
इटानगर में दूसरा धार्मिक स्थल गंगा झील है जो बहुत दूर है। इसलिये हम वहाँ नहीं जा पाये।

डीमापुर (नागालैंड)---नागालैड की राजधानी कोहिमा है। यह भारत का सब से छोटा राज्य है। यहाँ अधिकतर लोग ईसाई हैं तथा स्वतत्रता प्रिय हैं। तथा अपनी प्राचीन परम्पराओं को कायम रखना चाहते है। अपनी सस्कृति पर किसी भी प्रहार को सहन नहीं कर सकते। इसीलिये वहाँ पृथकतावादी तत्त्व सक्रिय होते जा रहे हैं और भारत से अलग होने की आवाज उटाई जाती है।

कोहिमा की सुन्दरता देखने योग्य है। यहाँ की छरहरी मगोलियन महिलायें उनके रंग-बिरगें चमकीले भड़कीले वस्त्र दर्शको को मत्र मुग्ध कर देते हैं। महाभारत

में नागालैंड का वर्णन है। अर्जुन यहाँ आया था और उसने नागकन्या अलूपी के साथ विवाह किया था। १८७६ में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने नागालैंड और जापानी लोगों की सहायता से यहाँ पर अंग्रेजों के साथ युद्ध किया था। इस युद्ध में बहुत अंग्रेज लोग मारे गये थे। १४२१ ब्रिटिश सैनिकों की यहाँ एक स्मिट्री (कब्रिस्तान देखने योग्य है।

कोहिमा में जाने के लिये परमिट बनवाना जरूरी है। इस लिये हम कोहिमा नहीं जा सके तथा कोहिमा से ७० कि० मी० पहले डीमापुर नगर देखकर वापिस आ गये। डीमापुर एक धार्मिक नगर है यहाँ पर जैन मन्दिर, कालीबाड़ी गुरुद्वारा, हिन्दूमिलन मन्दिर, हनूमान मन्दिर, सत्संग विहार, श्री रामाकृष्ण सेवाश्रम विद्या मंदिर, श्री दुर्गा मन्दिर, शिव मन्दिर तथा चर्च पूजा के स्थान हैं। डीमापुर गुवाहाटी मे २५० कि० मी० हैं।

इम्फाल (मणिपुर)

इम्फाल मणिपुर की राजधानी है। डीमापुर मे हाइवे न० ३९, कोहिमा और इम्फाल होती हुई बर्मा की सीमा तक चली जाती है। कोहिमा से इम्फाल १४१, डीमापुर से २१५ और गुवाहाटी से ४६५ कि० मी० है।

इम्फाल २६०० फुट की ऊँचाई पर है। यहाँ पर अधिक जनसंख्या वैष्णव हिन्दुओं की है और राधाकृष्ण के पक्के भक्त हैं। यहाँ पर गाँव-गाँव में रासलीला के लोक नाटक होते हैं। यहाँ का मणिपुर नृत्य भी कृष्ण की पूजा में होता है। यहाँ पर श्री गोबिन्द जी का मन्दिर है जिसमें प्रतिदिन रासलीला होती है।

यहाँ पर लंग्थाबल ८ कि० मी० है। यहाँ पर प्राचीन महलों और मन्दिरों के खंडहर हैं। पोलो का खेल मणिपुर से ही शुरू हुआ। यहाँ पर बहुत सुन्दर पोलो ग्राउंड है। पोलो ग्राउंड के समीप ही स्टेट म्यूजियम है।

ख्वेराम बन्द बाजारः---यहाँ का मुख्य बाजार है दुकानें महिलायें चलाती है।

इम्फाल से सिलचर तथा सिलचर से अगरतला जा सकते हैं। अगरतला से वापिस सिलचर आकर आइजोल जा सकते हैं। सभी जगह परमिट बनवाना आवश्यक है।

अगरतला (त्रिपुरा):---अगरतला त्रिपुरा की राजधानी है। त्रिपुरा की प्राचीन राजधानी उदयपुर थी। उदयपुर का नाम अब राधा किशोरपुर है। राधा किशोरपुर

(उदयपुर) अगरतला से ४३ कि० मी० है। यहाँ पर त्रिपुरा देवी का मन्दिर जो ५१ शक्तिपीठों में से एक है। यहाँ सती के चरण गिरे थे। निकट ही महादेव बाड़ी (शिव मन्दिर) है जिसे त्रिपुरेश कहते हैं

त्रिपुरा में चतुर्दशी देवता बाड़ी (मन्दिर) है। महाराजा वीर विक्रम कॉलेज तथा उजयन्त पैलेस देखने योग्य स्थान हैं।

आइजोल (मिजोरम):---आइजोल मिजोरम की राजधानी है। मिजोरम में लूसा तथा मिजो की पहाड़ियाँ हैं। मिजोरम में बहुत कबीलें हैं जो ईसाई हैं और इसाई त्योहार मनाये जाते हैं। यहाँ का तीसरा भाग जंगल है तथा पेड़ों से दवाइयाँ बनती हैं। यहाँ पर पानी की बहुत कमी है। वर्षा के पानी को सुरक्षित रख कर सारा साल प्रयोग किया जाता है।

श्री अरविन्द आश्रम-पांडिचेरी

पांडिचेरी मद्रास से १६७ चिदम्बरम् से १२१, तंजबूर से १५५ और तिरुचि से २०४ कि० मी० है। विलूपुरम् से पांडिचेरी के लिये रेल मार्ग हैं जो केवल ३८ कि० मी० है। पांडिचेरी, कारेकाल, चानाम और महि मिलकर भारत का एक केन्द्र-शासित संघीय राज्य है। पांडिचेरी इनकी राजधनी है।

पांडिचेरी कारेकाल तथा यानाम ये तीनों खाड़ी बंगाल के पूर्वी तट पर हैं परन्तु महि लक्षद्वीप सागर के पश्चिमी तट पर है। सन् १६७४ में फ्रैंच ईस्ट इंडिया कम्पनी ने पांडिचेरी में अपनी बस्ती बनाई थी। १७७२ में फ्रैंच ईस्ट इंडिया कम्पनी का सेनापति डुप्ले था। वह चाहता था कि अंग्रेजों को भारत के पश्चिमी तट से निकाल दें और दक्षिण भारत में फ्राँसीसियों का राज्य हो। परन्तु वह युद्ध में अंग्रेजों से हार गया और फ्रैंचों का अधिकार पांडिचेरी तक ही रह गया। १९४७ में भारत ने इसे फ्रैंचों से स्वतंत्र करा कर भारतगण राज्य में शामिल कर लिया।

पांडिचेरी में श्री अरविन्द आश्रम है जो यहाँ का मुख्य आकर्षण है। श्री अरविन्द घोष ने इस आश्रम की स्थापना की। वे महान कवि तथा दार्शनिक थे और अपने समय के सबसे बड़े संत योगी महर्षि थे। पहले वह सुभाष चन्द्र बोस की तरह क्रान्तिकारी थे और बंगाल में रहकर भारत की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करते थे। १९१० में वे राजनीति छोड़कर अध्यात्मिक कार्य करने के लिये पांडिचेरी में आ गये। उन्होंने कई ग्रन्थ लिखे जिनमें "दि डिवाइन लाइफ" सर्वश्रेष्ठ है। वे चाहते थे कि लोग साधारण तथा शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करें। वे संसार के सभी धर्मों और लोगों में एकता लाना चाहते थे। संसार के लोग पांडिचेरी में उनसे अध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये आते थे। १९२६ में उन्होंने आश्रम के

संचालन का काम अपनी फ्रैंच शिष्या मैडम रिचर्ड को सम्भाल दिया और आप एकांत में रहकर मनन चिन्तन करने लगे। १६५० में श्री अरविन्द जी का स्वर्गवास हो गया। उनकी मृत्यु के पश्चात् मैडम रिचर्ड ने आश्रम के कार्य को सम्भाला। १६७४ में मैडम रिचर्ड की मृत्यु हो गई। उनके अनुयायी उन्हें मदर कहते थे। आश्रम के बीच में श्री अरविन्द और मदर की समाधियाँ हैं।

पांडिचेरी में नगर के बाहर अरोविल (अरविन्द नगर) एक नई आधुनिक बस्ती है। इसे युनेस्को की सहायता से १६६८ में बसाया गया। इसके अतिरिक्त पांडिचेरी में गणेश मन्दिर, विल्लयानर मन्दिर, तिरुवंदार मन्दिर, डुप्ले पैलेस, गवर्मेंट पैलेस, बोटानिकल गार्डन, लाइट हाउस, फ्रैंच इंस्टीच्यूट (पुस्तकाल्य) देखने योग्य हैं।

अयोध्या दर्शन---श्री राम जन्म भूमि---
अयोध्या

पटना जंकशन से फरक्का एक्सप्रैस (गंगा जमना) द्वारा, अयोध्या के लिये प्रस्थान किया। परन्तु रास्ते में पता चला कि यह ट्रेन केवल सोमवार, बुधवार तथा शनिवार को ही अयोध्या जाती है। इसलिये इस ट्रेन से मुगलसराय में उतर कर देहरादून एक्सप्रैस ट्रेन में सवार हुए और लगभग ६ बजे सायं अयोध्या पहुँचे।

अयोध्या में ठहरने के लिये कई धर्मशालायें हैं जिन में कन्हैया लाल की धर्मशाला, छंगामल कपूर की धर्मशाला, जैन मन्दिर की धर्मशाला, बच्चू बाबू की धर्मशाला रायगंज मोहल्ले में हैं। गंगा बाई की धर्मशाला नया घाट में है। मानस भवन धर्मशाला जन्मभूमि के पास है। कनक भवन धर्मशाला राकोट में है। विन्धवासिनी की धर्मशाला, बम्बई की सेठानी की धर्मशाला, भाव नगर की रानी की धर्मशाला, लखनऊ वाले सेठ की धर्मशाला, सेठ सूरजमल की धर्मशाला, सेठ शिवनारायण की धर्मशाला, स्वर्ग द्वार में हैं। गुजराती धर्मशाला (गुजराती भवन) दतुन कुंड में है। सत्यनामी की धर्मशाला छपिदा मन्दिर के पीछे है। हनुमान गढ़ी की धर्मशाला हनुमान गढ़ी में है। हरिसिंह की धर्मशाला तुली उद्यान के पास है। सेठ मोहन लाल हलवाई की धर्मशाला तथा सेठ बिरला की धर्मशाला खिरोनिया में है।

हम सेठ बिरला की धर्मशाला में ठहरे थे। यहाँ पर यात्रियों के ठहरने की बहुत उत्तम व्यवस्था है। चन्दे के रूप में ३०/- रुपये दिन के हिसाब से डबल बैड रूम लैट्रिन बाथरूम अटैचड कमरा ३ दिन के लिये मिल सकता है। यह धर्मशाला

रेलवे स्टेशन के निकट ही है। केवल १०-१५ मिनट पैदल का रास्ता है। धर्मशाला के ठीक सामने बसों का अड्डा है। यहाँ से बसें लखनऊ, दिल्ली, इलाहाबाद, बनारस, गोरखपुर आदि सभी स्थानों पर जाती हैं।

अयोध्या में दर्शनीय स्थान

रात्रि बिड़ला धर्मशाला में कमरा न० २२ में विश्राम करके अगले दिन प्रातः अयोध्या के दर्शनीय स्थानों के दर्शन किये। श्री रामलखन पांडे ने हमें मन्दिरों के बारे में बताया।

अयोध्या दर्शन को हम चार चरणों में बांट सकते हैं:

पहले चरण में

(१) सरयू नदी तथा आस पास के दर्शनीय स्थान

सरयू नदी बिड़ला धर्मशाला से लगभग डेढ़ कि० मी० के फासले पर है। आटोरिक्शा वाले एक रुपया प्रति सवारी लेते हैं। हम आटो रिक्शा में बैठकर सरयू नदी में स्नान करने गये क्योंकि अयोध्या में सर्वप्रथम् श्री सरयू नदी में स्नान करने का बहुत महत्त्व है। सरयू नदी के विषय में कहा जाता है कि गुरु वशिष्ठ इस नदी को अयोध्या में लाये थे।

सृष्टि की रचना से पूर्व भगवान विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमलनाल पर बैठे हुए ब्रह्माजी ने विचार किया कि बिना तप किये मैं सृष्टि की रचना नहीं कर सकता। इसलिये उन्होंने भगवान विष्णु की आराधना, पूजा तथा ध्यान किया। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु प्रकट हुए और प्रेमवश उनके नेत्रों में आंसू भर आये उन आंसुओं को ब्रह्मा जी ने अपने कमंडल में रख लिया और उनको रखने के लिये मानसिक सरोवर का निर्माण किया जिसका स्थूल रूप मानसरोवर हुआ। इसी में उस जल को रखा।

तत्पश्चात् अयोध्या में वैवस्तमनु नामक राजा हुए जिनके पुत्र इक्ष्वाकु थे। नगर में कोई नदी न होने के कारण राजा इक्ष्कवाकु ने अपने गुरु वशिष्ठ से अयोध्या में एक नदी लाने की प्रार्थना की। वशिष्ठ जी अपने पिता ब्रह्मा जी के पास गये और तप द्वारा ब्रह्मा जी को प्रसन्न करके उनसे सरयू नदी को अयोध्या में लाने की प्रार्थना की।

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को श्री सरयू नदी मानस सरोवर से निकल कर

अयोध्या में आई। यह नदी अयोध्या को पश्चिम, उत्तर और पूर्व तीन ओर से घेरे हुए है। सरयू नदी का महत्त्व गंगा यमुना नदियों से भी बढ़कर है। सरयू नदी के ऊपर एक बहुत लम्बा पुल बना हुआ है। पुल के नीचे राम पैड़ी है नदी के किनारे पंडों के छप्पर तख्त आदि लगे हुए हैं जहाँ यात्री अपना सामान तथा कपड़े रखकर सरयू नदी में स्नान कर सकते हैं। स्नान के पश्चात् गऊदान का महत्त्व है। यात्री अपनी श्रद्धानुसार गऊ दान कर सकते हैं। हमने भी सरयू नदी में स्नान किया और पूजा अर्चना की।

सरयू नदी के निकट पश्चिम की ओर अनेक सुन्दर घाट तथा विशाल मन्दिरों का समूह है। घाटों में लक्ष्मण घाट, रामघाट, दशरथ घाट, भरत घाट, शत्रुघ्न घाट, मांडवी घाट, अहिल्या घाट, सुमित्रा घाट, उर्मिला घाट तथा सूरती कीर्ति घाट, सीता घाट, श्री रूपकला घाट आदि घाट हैं। सीता राम संकीर्तन भवन है।

लक्ष्मण किला:--यह उपरोक्त घाटों के पास उत्तर की ओर है। कथानक और मान्यता के अनुसार लक्ष्मण किला लक्ष्मण जी का बैठकखाना था और लक्ष्मण घाट जो लक्ष्मण किले के बगल में ही है वहीं से लक्ष्मण जी ने स्वर्ग आरोहण किया था। लक्ष्मण घाट पर ही सहस्त्रधारा नामक एक दिव्य स्थल है। यहीं पर शेष अवतार श्री लक्ष्मण जी का मन्दिर है। मन्दिर में श्री लक्ष्मण जी की मूर्ति है। अदालतों में कसम खाने वाले लोग यहाँ लाये जाते हैं। यहाँ पर झूठी कसम खाने वाले का सर्वनाश हो जाता है।

राम मन्दिर:---सहस्त्रधारा पर ही लक्ष्मण घाट पर शेष अवतार लक्ष्मण जी के मन्दिर के पास भगवान राम का मन्दिर है।

स्वर्ग द्वार:---सरयू नदी के किनारे ही स्वर्ग द्वार घाट है। यहाँ पर स्नान ध्यान व दान करने तथा ब्राह्मणों को भोजन कराने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

नागेश्वर नाथ मन्दिर:---श्री नागेश्वर नाथ मन्दिर स्वर्ग द्वार घाट पर ही स्थित है। यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यहाँ पर शिवलिंग की स्थापना श्री राम चन्द्र जी के पुत्र महाराज कुश ने की थी। कहा जाता है कि एक दिन महाराज कुश सरयू नदी में स्नान कर रहे थे कि उनकी उंगली का एक आभूषण जिसे माता अनुसूइया जी ने उनकी माता सीता जी को दिया था, सरयू नदी में गिर गया और उसे एक नागकन्या उठा ले गई। बहुत खोजने पर भी जब वह नहीं मिला तो कुश

जी ने क्रोधित होकर अग्निबाण चला दिया जिससे जल जन्तु जलने लगे। तब नागराज स्वयम् उस कर भूषण को लेकर महाराज कुश के पास आया। उसी समय भगवान शंकर भी प्रकट हो गये उन्होंने अपने भक्त नागराज को कुश से मिला दिया। नागराज ने अपनी कन्या का पाणिग्रहण करने के लिये महाराज कुश से प्रार्थना की। भगवान शंकर जी के समझाने बुझाने पर महाराज कुश ने नागराज की कन्या के साथ विवाह किया और इस घटना की याद स्वरूप इस स्थान पर श्री नागेश्वर नाथ जी की स्थापना की।

नोटः—नागेश्वर ज्योतिर्लिंग गुजरात प्रान्त में माना जाता है।

श्री त्रेतानाथ जी का मन्दिर:—यह मन्दिर अहिल्याबाई घाट पर है। कहा जाता है कि रावण के वध से पाप मुक्त होने के लिये भगवान राम ने इसी स्थान पर अश्वमेघ यज्ञ किया था। त्रेतानाथ मन्दिर कुल्लू के राजा राघवेन्द्र दास ने बनवाया था। कहा जाता है कि राजा राघवेन्द्र दास कहा करते थे कि अयोध्या सोने की है परन्तु उनका मंत्री विश्वास नहीं करता था। एक बार कुल्लु का कोई यात्री अयोध्या में रामनौमी पर स्नान करने आया। कुल्लू के राजा के कहने पर वह यात्री अयोध्या के किसी मन्दिर की एक ईंट उखाड़ कर और उसे कपड़े में लपेट कर राजा के पास ले गया। मन्त्री ने राजा के सामने कपड़े को खोला तो ईंट सोने की निकली तब उस को विश्वास हुआ। राजा राघवेन्द्र दास ने उस सोने की ईंट की भगवान की मूर्ति बनवाई और उसे लेकर अपनी रानी तथा मंत्री सहित अयोध्या आये और यह मन्दिर बनवाकर उस मूर्ति को स्थापित किया। इस मन्दिर के पट केवल एकादशी के दिन खुलते हैं और भगवान के दर्शन होते हैं।

भगवान कालेराम मन्दिर:—नागेश्वर नाथ मन्दिर से सटा हुआ श्री कालेराम जी का ट्रस्ट मन्दिर है। इस मन्दिर में महाराजा विक्रमादित्य के समय की प्राचीन मूर्तियाँ हैं।

वासुदेव घाट:—नया घाट से कुछ दूर निकलने पर वासुदेव नामक स्थान है। कहा जाता है कि मनुजी ने प्रथम महाप्रलय काल में इस स्थान पर मत्स भगवान के दर्शन किये थे।

इसके अतिरिक्त सरयू नदी के समीप इन घाटों पर प्राचीन लक्ष्मी नारायण मन्दिर, अवध बिहारी मन्दिर, उदासीन मन्दिर, महन्त श्री राजाराम की समाधि (सम्मत १८६२ विक्रमी) तथा अनेक भव्य एम् विशाल प्राचीन मन्दिर हैं। ये सब मन्दिर इन घाटों पर एक ही लाइन में एक दूसरे से सटे हुए हैं। सरयू नदी में स्नान करके लक्ष्मण किला देखें और इसके साथ ही सब मन्दिर देखते हुए वापिस सरयू नदी के किनारे पर जहाँ पर आटोरिक्शा से उतरे थे वहाँ पर आ जायें। सरयू नदी के निकट मन्दिरों से लगभग आधा कि० मी० पर श्री स्वामी मणिराम जी महाराज की छावनी है।

अयोध्या में चार बड़ी छावनियाँ हैं जहाँ हजारों साधूसंत रहते हैं। ये छावनियाँ निम्नलिखित हैं।

(१) श्रीमणि दास जी की छावनी (२) श्री तपस्वी जी की छावनी (३) श्री रघुनाथ दास जी की छावनी (४) श्री बाबा राम प्रसाद जी की छावनी।

श्री मणिराम दास जी की छावनी:—इसके संस्थापक श्री बाबा मणिराम दास जी हैं। कहा जाता है कि यह भगवान श्री रामचन्द्र जी का राजमहल है। यहाँ पर लगभग एक हजार साधु ५०० विद्यार्थी तथा २५० गाय रहती हैं। यहाँ सबको निःशुल्क भोजन (भंडारा) दिया जाता है। यहाँ पर कोई भी भोजन कर सकता है।

दाईं तरफ पक्के भोजन की रसोई तथा बांई तरफ कच्चे भोजन का रसोई घर है। प्रातः सबको दूध तथा चना निःशुल्क दिया जाता है। दोपहर को दाल चावल रोटी सब्जी का भंडारा होता है। सायंकाल पूरी और सब्जी का भंडारा होता है। चौबीस घंटे भगवान सीताराम का कीर्तन चलता है। यहाँ भगवान श्री रामचन्द्र जी का राजमहल मन्दिर है तथा श्री रंगनाथ जी का मन्दिर है। मन्दिर की दीवारों पर संगमर्मर में सम्पूर्ण गीता अंकित है।

श्री बाल्मीकि रामायण भवनः---यह श्री मणिरामदास जी की छावनी के अन्तर्गत बिल्कुल सामने पूर्व की ओर एक विशाल तथा भव्य भवन है। इसमें श्री बाल्मीकि जी की प्रतिमा है। उनके दायें बायें लवकुश की मूर्तियाँ हैं। दीवारों पर सम्पूर्ण बाल्मीकि रामायण अंकित है। इस भवन की पहली मंजिल पर एक बहुत बड़ी लायब्रेरी है। लायब्रेरी में २५००० पुस्तकें हैं। दूसरी मंजिल पर अन्तर्राष्ट्रीय श्री सीता राम नाम का बैंक है इसमें कोई भी नर नारी बाल वृद्ध वर्णाश्रामी लेखक हो सकता है अर्थात् सीता राम नाम लेखक अर्थात् स्वच्छ कापियों में दोनों तरफ लाल स्याही से सीताराम या श्री सीताराम या श्री राम नाम लिख सकते हैं और उन कापियों को बैंक की तरह यहाँ जमा किया जाता है और बैंक की तरह लेखक का खाता खोला जाता है। कापियाँ, लिखने के लिए यहाँ पर मुफ्त मिल सकती हैं। डाक द्वारा नहीं भेजी जा सकतीं। कम से कम सवा लाख नाम लिखने पर ही बैंक में खाता खुलता है। एक करोड़ नाम लिखने वाले को स्वर्ण पदक, ५० लाख वाले को रजत पदक और २५ लाख वाले को ताम्रपत्र दिया जाता है।

श्री बाल्मीकि रामायण भवन उसी स्थान पर है जहाँ पर अश्वमेध यज्ञ के समय बालक लव और कुश बाल्मीकि जी के साथ यहाँ पर आये थे और उन्होंने संगीत के माध्यम से श्री रामचन्द्र जी व अयोध्यावासियों को बाल्मीकि रामायण सुनाई थी।

चारधाम मन्दिरः---यह मन्दिर भी श्री मणिराम दास छावनी ट्रस्ट के अन्तर्गत है। इसे संत निवास खाक चौक भी कहते हैं। मन्दिर के बरामदे में साधु संत रहते हैं। प्रत्येक साधु की एक-एक अल्मारी रखी है। यहीं पर उनको खाना मिलता है। मन्दिर में श्री रामेश्वर भगवान जी, श्री द्वारिकाधीश भगवान जी, श्री जगन्नाथ भगवान जी तथा श्री बदरीनाथ धाम जी (चारों धामों) के दर्शन होते हैं।

चलचित्र कृष्ण लीला, आदर्श शीश महल

एक फर्लांग चलकर उक्त मन्दिर है। मन्दिर के दरवाजे पर हनुमान जी की विशाल मूर्ति है। मन्दिर की पहली मंजिल पर एक रुपए का टिकट लेकर चलचित्र द्वारा झांकियाँ दिखाई जाती हैं। जिनमें तुलसीदास जी चन्दन घिस रहे हैं और हनुमान जी वृक्ष पर छिपे हुए इशारे से उनको राम लक्ष्मण के दर्शन करा रहे हैं। दूसरी झाँकी में राम जन्म चतुर्भुज रूप में कौशल्या को दर्शन दिये। दर्शन देकर बच्चा रूप हो जाते हैं। तीसरी झाँकी में भगवान राम पालने में झूल रहे हैं और कुछ लोग खुशी में नाच गाना कर रहे हैं। चौथी झाँकी में जनकपुर की फुलवारी में सीता रामचन्द्र की प्रथम भेंट। पांचवीं झाँकी में श्री रामचन्द्र जी का धंनुष तोड़ना और सीता जी का उनके गले में जयमाला डालना। छठी झाँकी में चारों भाइयों के जोड़े फेरे लेते हुए। सातवीं झाँकी में श्री रामचन्द्र जी का बनवास के बाद राजगद्दी पर बैठना। आठवीं झाँकी में श्रीकृष्ण जन्म और नौवी झाँकी में रासलीला के दृश्य दिखाये गये हैं। दोपहर २ बजे तक उपरोक्त सभी मन्दिर देखकर हम वापिस धर्मशाला आ गये। ये सभी मन्दिर सरयू नदी से पैदल ही देखे जा सकते हैं।

दूसरे चरण में:---राम जन्म भूमि तथा आसपास के मन्दिर भी पैदल ही देखे जा सकते हैं, क्योंकि राम जन्मभूमि मन्दिर प्रातः १० बजे बन्द हो जाता है। सायंकाल ३ बजे खुलता है। इसलिए हम दोपहर का भोजन करके और एक घंटा धर्मशाला में विश्राम करके राम जन्मभूमि तथा उसके आस पास के मन्दिर देखने गये। धर्मशाला से थोड़ा आगे चलकर हनुमान गढ़ी है। यहीं से सब मन्दिर शुरू हो जाते हैं। इन सब जगहों पर पैदल ही जा सकते हैं। वैसे एक रुपया प्रति सवारी देकर साईकल रिक्शा या ऑटोरिक्शा में बैठकर भी हनुमान गढ़ी जा सकते हैं।

हनुमान गढ़ी (हनुमान जी का मन्दिर)

कहा जाता है कि महाराजा विक्रमादित्य ने इस स्थान पर श्री हनुमान जी का मन्दिर बनवाया था। जब वह प्राचीन मन्दिर विनष्ट हो गया तो इस स्थान को हनुमान टीला कहने लगे और लखनऊ के नवाब मंसूर अली खां सफदर जंग के शासन काल में एक महात्मा बाबा अजयराम दास त्यागी जी यहाँ एक कुटी बना कर रहने लगे, वे एक सिद्ध संत थे और हनुमान जी ने उन्हें साक्षात् दर्शन दिये थे।

एक बार नवाब मंसूर अली साहब बहुत बीमार हो गये। बड़े-बड़े हकीम और वैद्यों की दवा की गई। सैंकड़ों मुसलमान फकीरों की दुआ ताबीज आदि की परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। तब महाराज टिकैत राय के द्वारा नवाब साहब ने महात्मा अजयराम दास जी को बुलवाया। महात्मा जी ने हनुमान जी का नाम लेकर उन्हें कोई दवा खाने के लिए दी। उस दवा को खाने से नवाब साहब ठीक हो गये। नवाब मंसूर अली खाँ सफदर जंग साहब ने महाराज टिकैत राय की अध्यक्षता में यहाँ पर हनुमान जी का मन्दिर बनवा दिया जिसे हनुमान गढ़ी कहते हैं। यह हनुमान जी का विशाल मन्दिर है कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर मन्दिर में जाते हैं। नीचे प्रसाद बेचने वालों की दुकानें हैं। पेड़े, लड्डू का प्रसाद लगता है। हनुमानगढ़ी में लगभग ५०० साधु निवास करते हैं जिन्हें मन्दिर के चढ़ावे में से कच्चा भोजन आटा, दाल, चावल, लकड़ी आदि दिया जाता है तथा एकादशी के दिन प्रति व्यक्ति ५ रुपया फलाहार के लिए दिया जाता है। हनुमान गढ़ी में चार पट्टियाँ हैं। हरद्वारी, बसंतिया, उज्जैनिया और सागरियाँ। चारों पट्टियों के अलग-अलग चार महन्त हैं और चारों महन्तों के ऊपर एक बड़े महन्त हैं जिन्हें लोग गद्दीनसीन जी कहते हैं।

राम-भरत मिलाप मन्दिरः---हनुमान गढ़ी के दर्शन करके थोड़ा आगे चलकर राम-भरत मिलाप मन्दिर है।

श्री चक्रवर्ती महाराज दशरथ जी का महलः---राम-भरत मिलाप मन्दिर से थोड़ा आगे चलकर श्री महाराजा दशरथ जी का महल है।

श्री लवकुश भवन बाल्मीकि आश्रमः---यह आश्रम महाराज दशरथ जी के महल से थोड़ा आगे चलकर है।

श्री राम कचहरी चारों धाम प्राचीन मन्दिरः---यह मन्दिर श्री लवकुश भवन बाल्मीकि आश्रम से थोड़ा आगे है। यहाँ पर भगवान रामचन्द्र जी चौदह वर्ष के बनवास के बाद तथा रावण को मारकर और लंका का राज्य विभीषण को देकर आये तो यहाँ पर ३३ करोड़ देवता, ३६० तीर्थ और ५६ कोटी भवानी एकत्रित होकर दरबार लगाया था। भगवान श्री रामचन्द्र जी यहीं पर अपनी कचहरी लगाते थे और प्रजा के दुखों को सुनकर न्याय करते थे। मन्दिर के बीच में श्री रामचन्द्र जी दाहिने लक्ष्मण जी और बायें सीता जी हैं और उनके पीछे दो मूर्ति राम सीता की हैं राम सीता की मूर्ति प्राचीन हैं। यह मूर्तियाँ महाराज विक्रमादित्य को सरयू नदी में स्नान करते हुए प्राप्त हुई थीं। उन्होंने ही अपने हाथों से स्थापित की थीं। नीचे

में कागभुशण्डी जी लक्ष्मण जी के साथ खेल रहे हैं। भगवान का जो कुछ झूठन गिरता था उसी को खाकर कागभुशण्डी जी अमर हो गए थे। कागभुशण्डी की मूर्ति बाबा बैजुदास फरहारी ने स्थापित की। बीच में नरसिंह भगवान हैं जिन्होंने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद का उद्धार किया, सबसे किनारे में बालरूप भगवान रामलाल विराजमान हैं जिनके दर्शन मात्र से धन पुत्र का सुख शान्ति प्राप्त होती है। इनको दूध का महात्म्य है जिसकी जो श्रद्धा हो, दे सकते हैं।

इसी मन्दिर में सवा लाख सालिगराम भगवान बदरी प्रसाद जी, जगन्नाथ बलदाऊ तथा सुभद्रा जी के भी दर्शन होते हैं। इस मन्दिर के उत्तराधिकारी महन्त जयराम दास जी व्यास हैं। श्री बैजुदास पुजारी हैं।

उपरोक्त जानकारी श्री रामसनोहर पांडे जी ने दी।

कैकेयी कोप भवनः---थोड़ा आगे चलकर कैकेयी कोप भवन है। मन्थरा के सिखाने पर कैकेयी यहीं पर आकर लेटी थी। भगवान श्रीराम चौदह वर्ष बनवास काटकर सबसे पहले यहीं पर आकर माता कैकेयी से मिले थे।

रंग महलः---कैकेयी कोप भवन के सामने रामचन्द्र जी का रंग महल है। यहाँ पर भगवान राम फाल्गुन में होली खेले थे। रंग महल के साथ ही श्री सीता जी का प्राचीन राजमहल है तथा श्री राम निवास मन्दिर है।

राम जन्मभूमि मन्दिरः---थोड़ा आगे चलकर श्री राम जन्म मन्दिर है। यह विवाद ग्रस्त क्षेत्र है। चारों तरफ पुलिस का कड़ा पहरा है। बहुत जबरदस्त लोहे की रेलिंग बनी हुई है। रेलिंग में से गुजरते हुए राम जन्म भूमि अस्थाई मन्दिर के निकट पहुँचते हैं और कुछ फासले से भगवान राम लल्ला तथा हनुमान जी के दर्शन करते हैं। फोटों खींचना मना है। थोड़ी ऊँचाई पर यह अस्थाई मन्दिर बना हुआ है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर भगवान श्री रामचन्द्र जी का जन्म हुआ था।

कुबेर टीलाः---राम जन्मभूमि मन्दिर के दक्षिण की ओर प्राचीन कुबेर टीला है। यहाँ पर कुएँ की मुंडेर की तरह गोलाई में छोटी-सी दीवार है। इसमें प्राचीन शिवलिंग स्थापित है। यहाँ पर भी पुलिस का पहरा है। वैसे तो यह रामजन्म भूमि के समीप ही है लेकिन पुलिस सुरक्षा के कारण थोड़ा चक्कर काटकर कुबेर टीले पर जाते हैं। कहा जाता है कि यहाँ पर भगवान श्री रामचन्द्र जी का खजाना था। कुबेर टीले से दक्षिण पश्चिम कोण में नीचे उतरकर बहुत सुन्दर कुबेर पार्क है। इस पार्क का नाम राजकीय उद्यान कुबेर टीला अयोध्या है।

कुबेर पार्क से बाहर निकलकर पश्चिम की ओर सड़क आ जाती है। यहाँ पर शान्ति भवन नया मन्दिर बना है। गोकुल भवन है। गुरु वशिष्ठ कुंड है जो देखने योग्य है। इसी रोड पर वापिस आते हुए रामजन्म भूमि के पीछे पश्चिम की ओर घूमते हुए अनेक मन्दिर आते हैं जिनमें मुख्य वेद मन्दिर बहुत सुन्दर है तथा श्री रामकृष्ण मन्दिर, मारुति धाम, जैन मन्दिर तथा जैन धर्मशाला, श्री कागभुशंडी मन्दिर तथा श्री कनक भवन देखने योग्य हैं।

कनक भवनः---कनक भवन महारानी कैकेयी का महल था और सोने का बना हुआ था। जब श्री रामचन्द्र जी सीता जी को विवाह कर अयोध्या में लाये तो कैकेयी माता ने मुँह दिखाई में यह महल सीता जी को दे दिया था। यहाँ पर जानकी कूप भी है।

वेद भवनः---कहा जाता है कि यहाँ पर कैकेयी भवन था इसी स्थान पर महारानी कैकेयी के गर्भ से श्री भरत जी ने जन्म लिया था।

सुमित्रा भवनः---श्री राम जन्म भूमि के दक्षिण की तरफ थोड़ी दूर पर सुमित्रा भवन नामक स्थान है। इसी स्थान पर महारानी सुमित्रा के गर्भ से श्री लक्षमण जी तथा शत्रुघन जी का जन्म हुआ था।

श्री आनन्द भवनः---इस स्थान पर भगवान राम का बालपन व्यतीत हुआ था। इस मन्दिर में श्री कागभुशंडी जी के दर्शन होते हैं।

सीता कूपः---इसे ज्ञान कूप भी कहते हैं। यह स्थान रामजन्म भूमि से ४० गज की दूरी पर पूर्व की ओर है। कहते हैं कि जब सीता जी विवाह कर आई तो इसी कुएँ की पूजा हुई थी।

रत्न सिंहासन (राजगद्दी):---कनक भवन मन्दिर के दक्षिण की ओर रत्न सिंहासन मन्दिर है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर श्री रामचन्द्र जी का राज्य-अभिषेक हुआ था।

इच्छा भवनः---कनक भवन के समीप ही इच्छा भवन मन्दिर है। इस मन्दिर के विषय में कहा जाता है कि:---जो इच्छा करिये मन माही, राम कृपा कछु दुर्लभ नाहीं। इस मन्दिर में राजा दशरथ जी के सम्पूर्ण परिवार के दर्शन होते हैं।

इस तरह से दूसरे चरण में हम श्री राम जन्मभूमि तथा अनेक उपरोक्त मन्दिरों के दर्शन करके सायंकाल आठ बजे वापिस धर्मशाला आ गये और भोजन करके रात्रि विश्राम किया।

नोटः---उपरोक्त सभी मन्दिर राम जन्म भूमि के इर्द गिर्द हैं और पैदल ही घूमकर देखे जा सकते हैं। इनमें मुख्य राम जन्म भूमि है।

तीसरे चरण में:---अगले दिन प्रातः हमने तीसरे चरण में अयोध्या दर्शन आरम्भ किया और हम पैदल ही स्टेशन पर रेलवे लाइन पार करके मणि पर्वत पहुँचे जो लगभग आधा कि०मी० है।

मणि पर्वतः---यह स्थान श्री सीता जी का क्रीड़ा स्थल है। इसका प्राचीन नाम मणिपुर एवम् मणि पर्वत है। यहाँ पर तपस्या करने से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। भगवान गौतम बुद्ध ने काम को जीतने के लिए पाँच वर्ष तक यहीं पर तपस्या की थी।

कहा जाता है कि जब नागनाथ ने अपनी कन्या का विवाह श्री रामचन्द्र जी के पुत्र श्री महाराज कुश से किया तो विवाह के उपलक्ष्य में नागलोक के सभी नागों ने एक-एक नागमणि लाकर महाराज कुश को भेंट में दी। वह मणियाँ इतनी संख्या में थीं कि उनको रखने के लिए जगह कम पड़ गई तब महाराज कुश ने उन मणियों को यहाँ पर रखवा दिया और उन मणियों का पहाड़-सा लग गया तभी से लोग इस स्थान को मणि पर्वत कहने लगे। महाराज कुश ने मणि पर्वत के चारों ओर ऊँची चार दीवारी बनवा दी थी। नागराज स्वयं इस स्थान की रक्षा किया करते थे। कालान्तर में वह दीवार गिर गई और मणि पर्वत ने एक छोटी-सी पहाड़ी और जंगल का रूप धारण कर लिया। अब यहाँ पर श्री हनुमान जी का मन्दिर है। शिवलिंग है। मणि भगवान सीताराम का मन्दिर है। श्रावण शुक्ल की तीज को यहाँ पर झूलन उत्सव मनाया जाता है और अयोध्या के सभी मन्दिरों के भगवान यहाँ पर झूला झूलने आते हैं। मणि पर्वत के ऊपर चढ़कर अयोध्या के सभी मन्दिर देखे जा सकते हैं।

विद्याकुंड मन्दिरः---यह भगवान सीताराम लक्ष्मण जी का तथा हनुमान जी का मन्दिर है और विद्यादेवी जी का मन्दिर है। बिहार के महात्मा अनन्त विभूषित श्री रघुवर दास जी ने यहाँ आकर यहीं वास करते हुए भगवान की स्थापना की। इसलिए इसे बिहारी मन्दिर भी कहते हैं। मन्दिर में सब बिहार के लोग रहते हैं। कहा जाता है कि भगवान श्री रामचन्द्र जी, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न इसी स्थान पर गुरु वशिष्ठ जी से शिक्षा प्राप्त करते थे। यहाँ पर एक बहुत बड़ा सरोवर भी है जो अब सूखा पड़ा है।

सूर्य कुण्डः---विद्याकुंड मन्दिर के साथ पश्चिम की ओर लगभग डेढ़-दो कि०मी० पर सूर्यकुण्ड है। इसके साथ ही भगवान सूर्य देव का सुन्दर मन्दिर बना हुआ है।

हम सूर्य कुंड मन्दिर देखने नहीं जा सके और मणि पर्वत तथा विद्याकुंड मन्दिर देखकर वापिस धर्मशाला चले आये।

चौथे चरण में अयोध्या के आसपास के दर्शनीय स्थान देखे जा सकते हैं। अयोध्या से लगभग सात कि०मी० पर फैजाबाद है जो जिला नगर है। यहाँ से कुछ दूर गुप्तार घाट है जो अयोध्या से लगभग १२-१३ कि०मी० दूर पड़ता है।

गुप्तार घाटः---यह वह स्थान है जहाँ श्री रामचन्द्र जी सरयू नदी में गुप्त अर्थात् अन्तर्ध्यान हो कर स्वर्ग में चले गये थे। यहाँ गुप्त हरि भगवान का एक प्राचीन मन्दिर है और हर वर्ष शरद पूर्णिमा को स्नान पर्व का बहुत बड़ा मेला लगता है।

नन्दी ग्राम (भरत कुंड):---अयोध्या से दक्षिण की ओर चौदह मील पर नन्दी ग्रम नामक स्थान है। यह भरत जी की तपोभूमि है। श्री रामचन्द्र जी के बनवास जाने पर भरत जी १४ वर्षों तक कुटी बनाकर यहीं पर रहे थे और श्री रामचन्द्र जी की चरण पादुका की आज्ञा लेकर प्रजा का पालन करते थे। यहाँ पर कमल पुष्पों से खिला हुआ एक सुन्दर सरोवर है। इस स्थान से डेढ़ फरलांग पूर्व पिशाची नामक कुंड है। चैत्र कृष्ण चौदस को यहाँ की परिक्रमा होती है।

मकबराः---फैजाबाद में नवाब शूजाउद्धौला की पत्नी बहूबेगम का मकबरा है।

शुजाउद्दौला का मकबरा भी इसी के साथ है। बहु बेगम का मकबरा उत्तर प्रदेश का सुन्दरतम भवन माना जाता है।

सीता रसोई घरः---यह प्राचीन स्थान है। सीता जी ने सर्वप्रथम रसोइ बनाकर अपने ससुर महाराज दशरथ तथा चारों भाइयों राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघ्न को भोजन खिलाया था।

सप्त सागरः---यह एक बहुत बड़ा सरोवर था। इसे ब्रह्म मानस तीर्थ भी कहते थे। अयोध्या के चक्रवर्ती राजाओं का राजतिलक इसी के जल से होता था। सरोवर में सातों समुद्रों का जल संचित था। अब यह सरोवर सूखा पड़ा है।

जनकपुर की गिरजा देवीः---सीता जी अपने नेहर (जनकपुर में) गिरजा देवी

की पूजा किया करती थीं। विवाह हो जाने पर वह गिरजा देवी को अपने साथ अयोध्या ले आईं। महाराजा दशरथ ने सप्त सागर के निकट एक सुन्दर मन्दिर बनवा कर उस में गिरजा देवी की विधिवत स्थापना कराई। सीता जी अपने महल (कनक भवन) से आकर प्रतिदिन गिरजा देवी की पूजा किया करती थी।

धर्महरिः---स्थानीय हरिसिंह धर्मशाला के पीछे श्री धर्महरि जी का मन्दिर है। इस मन्दिर में श्री धर्मराज सहित श्री चित्रगुप्त जी के दर्शन होते हैं।

विल्वहरिः---यह स्थान अयोध्या से १५ कि०मी० दूर पूर्व सरयू नदी के किनारे पर है। यहाँ पर विल्वहरि महादेव की प्राचीन मूर्ति स्थापित है। इससे थोड़ी दूर उत्तर की ओर महाराज दशरथ जी का प्राचीन स्थल है। इस स्थान पर भरत जी ने महाराज दशरथ का अन्तिम संस्कार किया था।

मंडना ग्रामः---विल्वहरि से तीन कि०मी० पूर्व सरयू नदी के किनारे मंडना नामक ग्राम है। यह भरत जी की धर्मपत्नी मांडवी जी का तपोस्थल है। राम बन गमन के पश्चात् श्री भरत जी नन्दी ग्राम में कुटिया बनाकर रहने लगे थे। उनके वियोग में मांडवी जी ने चौदह वर्षों तक केवल सरयू नदी का जल पीकर रहते हुए यहाँ पर कठोर तपस्या की थी।

बोध तप स्थलः---यह हनुमान गढ़ी के पूर्व में एक कुंड है। कुंड के दक्षिण की तरफ बोध चरण चिह्न अंकित एक चबूतरा बना है कुछ लोग कहते हैं कि श्री राम चन्द्र जी यहाँ पर आकर दातुन किया करते थे और कुछ लोगों का कहना है कि भगवान बुद्ध ने यहाँ पर सोलह वर्षों तक रहकर घोर तपस्या की थी और धर्म सिद्धान्त निर्धारित किये थे।

तुलसी स्मारक भवनः---यह स्मारक भारत सरकार द्वारा साढे चार लाख रुपए से निर्मित देखने योग्य भवन है। प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को साधारण तथा श्रावण शुक्ल सप्तमी को विशेष रूप से तुलसीदास जी की जयन्ती मनाई जाती है।

ब्रह्मकुंड (सिख गुरुद्वारा)ः---कहा जाता है कि कमल नाल से प्रकट होने पर ब्रह्मा जी को सबसे पहले यही स्थान दिखाई दिया था। इसका मूल नाम ब्रह्म तीर्थ है। यहाँ पर सिक्खों का गुरुद्वारा है। गुरु नानक देव जी हरिद्वार से जगन्नाथ पुरी जाते हुए जब अयोध्या आये थे तब उन्होंने इसी स्थान पर विश्राम किया था। गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने भी जब वह ६ वर्ष के थे, अपनी माता जी के साथ

पटना साहिब से आनन्दपुर साहिब (पंजाब) जाते समय एक रात्रि इसी स्थान पर अयोध्या में निवास किया था। यहाँ पर रखे हुए धर्म ग्रन्थों का दर्शन करने के लिए प्रति वर्ष हजारों सिक्ख यात्री अयोध्या आते हैं।

अयोध्या महात्मय

त्रेता युग में भगवान् विष्णु के अवतार भगवान् श्री राम चन्द्र जी का जन्म अयोध्या में हुआ था और द्वापर युग में भगवान् विष्णु के अवतार श्री कृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ था। इसलिए अयोध्या श्रीराम की जन्म भूमि होने के कारण और मथुरा श्रीकृष्ण का जन्म स्थान होने के कारण हिन्दुओं के लिए दोनों प्रमुख तीर्थ स्थल हैं और सप्त पुरियों में गिने जाते हैं। अयोध्या को साकेत तथा अवध भी कहते हैं। यह प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जन्मभूमि भी है। इसलिए जैनियों का प्रमुख तीर्थ-स्थल भी है।

अयोध्या लखनऊ से १३५, वाराणसी से १८६, इलाहाबाद से १५७, गोरखपुर से १२० तथा दिल्ली से लगभग ६०० कि०मी० दूर है। इन सभी स्थानों पर अयोध्या से यू०पी० रोडवेज की सीधी बसें आती जाती हैं। दिल्ली, लखनऊ और वाराणसी से ट्रेनें भी सीधी अयोध्या जाती हैं। अयोध्या से सात कि.मी. पर फैजाबाद जंकशन है। अन्य स्थानों से आने वाले फैजाबाद उतरकर आटोरिक्शा या बस द्वारा या रेल द्वारा अयोध्या आ सकते हैं। किराया लगभग तीन रुपए है।

आज से लाखों वर्ष पूर्व अयोध्या में वैवस्वत मनु (श्राद्धदेव मनु) नामक राजा हुए। उन्होंने सबसे पहले अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया। इन्हीं राजा के पुत्र इक्ष्वाकु हुए और ६२वीं पीढ़ी में अज ६३वीं पीढ़ी में दशरथ और ६४वीं पीढ़ी में श्री रामचन्द्रजी का जन्म हुआ। वैवस्वत मनु से लेकर इक्ष्वाकु, रघु, दलीप, हरिश्चन्द्र, दशरथ और श्री रामचन्द्र तक सभी सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी अयोध्या रही।

भगवान श्री राम चन्द्र जी के स्वर्ग सिधारने के पश्चात् अयोध्या उजड़ गई। किन्तु जन्म-भूमि सुरक्षित रही। कुछ दिनों के बाद श्री रामचन्द्र जी के छोटे पुत्र महाराज कुश ने राजधानी अयोध्या का पुनर्निमाण कराया और उनकी ४४ पीढ़ियों के बाद महाराज वृहद्वल तक इसका सम्मान रहा। महाभारत के युद्ध में महाराज वृहद्वल अभिमन्यु के हाथों वीर गति को प्राप्त हुए और एक बार फिर अयोध्या उजड़ गई किन्तु श्री राम जन्म-भूमि उसी प्रकार रही। ११६वीं पीढ़ी में सिद्धार्थ

(भगवान बुद्ध देव) हुए। उन्होंने बौद्ध धर्म चलाया। उनके निर्वाण के पश्चात् जब सारे भारत में बौद्ध धर्म प्रचलित हो गया तो राम जन्मभूमि का विशाल मन्दिर भग्न अवस्था में हो गया था और बौद्ध धर्म वालों का ध्यान इस ओर नहीं गया। इसलिए कुछ समय बाद मन्दिर गिरकर नष्ट हो गया। किन्तु मन्दिर में स्थापित मूर्ति उसी प्रकार सुरक्षित रही और उस समय की सनातन धर्मी जनता एक वृक्ष के नीचे उसी पर श्री राम नौमी के दिन पुष्प आदि चढ़ाकर उत्सव मनाया करती थी।

ईसा की एक शताब्दी पहले भारत के एक बौद्ध राजा मिहिर गुप्त ने जो सनातन धर्म का घोर विरोधी था, जन्म-भूमि के उस प्राचीन श्री राम मन्दिर को जिसकी स्थापना भगवान श्री रामचन्द्र जी के पुत्र लव कुश ने की थी, जबरदस्ती गिरवा दिया। इस पर सनातनी हिन्दुओं ने घोर संग्राम किया परन्तु मिहिर गुप्त को सफलता मिली किन्तु उसकी सफलता चिर स्थायी न रह सकी। उसके तीन महीने २० दिन पश्चात् शुंगवंशी राजा धूमसेन ने मिहिर गुप्त की राजधानी कौशाम्बी पर अधिकार कर लिया और मिहिर गुप्त युद्ध में मारा गया। लेकिन राम जन्मभूमि की ओर किसी का ध्यान नहीं गया।

ईसा की शताब्दी के एक शतक पूर्व अवन्ति के राजा महाराज चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य श्री अयोध्या में आये और धर्म स्थल पर सरयू नदी के किनारे रसातल वन में एक आम के पेड़ के नीचे घोड़े से उतरकर आराम करने लगे। इतने में उन्होंने देखा कि एक बहुत सुन्दर युवक काले रंग के घोड़े पर चढ़कर वहाँ आया। उस युवक का रंग, वस्त्र तथा आभूषण भी काले थे। उस के गले में काले रंग के फूलों की माला पड़ी थी। वह युवक अपने घोड़े सहित श्री सरयू नदी में स्नान करने चला गया और जब वह स्नान करके नदी से बाहर निकला तो उसका शरीर, आभूषण, वस्त्र, माला तथा घोड़ा सब सफेद रंग के हो गये थे। उसके इस परिवर्तन को देखकर महाराजा विक्रमादित्य बहुत चकित हुए। उन्होंने उस युवक के पास आकर इस परिवर्तन का कारण पूछा। युवक ने महाराजा विक्रमादित्य का परिचय पूछा। महाराजा विक्रमादित्य ने कहा कि मैं अवन्ति का राजा विक्रमादित्य हूँ। हमारे पिता गन्धर्व सैन के दो पुत्र हुए। पहला महाराज भर्तृ और दूसरा मैं। मेरे बड़े भाई महाराज भर्तृ सिंहासन त्यागकर सन्यासी हो गये और श्री गोरख नाथ की शरण में चले गये। इस लिए मुझे राजगद्दी प्राप्त हुई। अब आप मुझे अपना परिचय दें। युवक

ने कहा कि मैं तीर्थराज प्रयाग हूँ। प्रत्येक वर्ष मकर सक्रांति के दिन करोड़ों लोग प्रयाग पहुँच कर त्रिवेणी में स्नान करते हैं तो उनके सब पाप त्रिवेणी में ६ ुल जाते हैं और उनके सब पाप मैं अपने शरीर में धारण कर लेता हूँ जिससे मेरा शरीर काला हो जाता है और फिर जब मैं श्री राम चन्द्र जी की इस अयोध या पुरी में आकर सरयू नदी में स्नान करता हूँ तो मेरा शरीर पहले की तरह दिव्य हो जाता है और पाप सरयू नदी के जल में विसर्जित हो जाता है और लक्ष्मण घाट सहस्त्र धारा पर स्थित रहने वाले बड़वानल के कड़ाह में भस्म हो जाता है। भस्म होते हुए कड़ाह से जो छींटे उड़ते हैं वे मछलियाँ बन जाते हैं और जो लोग उन मछलियों को खाते हैं उन्हीं के ऊपर वह पाप चढ़ जाता है।

महाराजा विक्रमादित्य ने यह सुनकर प्रयाग राज को प्रणाम किया और कहा कि मुझे बड़े पुण्य से आपके दिव्य दर्शन हुए। अब मुझे बताइये कि मैं क्या करूँ। तीर्थराज प्रयाग ने कहा कि भगवान श्री रामचन्द्र जी की जन्मभूमि नष्ट-भ्रष्ट हो गई है। आप उसका पुनः उद्धार कीजिए। तब महाराज विक्रमादित्य ने पूछा कि अयोध्या तो उजड़ गई है और चारों तरफ मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे टीले दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में मुझे कैसे पता चले कि अयोध्या का क्षेत्रफल कितना है और किस स्थान पर कौन-सा तीर्थ है।

तीर्थराज प्रयाग ने उत्तर दिया कि यहाँ से लगभग आधे योजन की दूरी पर मणि पर्वत है, उसके ठीक दक्षिण-चौथाई योजन के अर्ध भाग में गवाक्ष कुंड है। गवाक्ष कुंड के पश्चिमी तट से सटा हुआ राम नौमी वृक्ष अयोध्या की परिधि नापने के लिए पितामह ब्रह्मा जी ने लगाया था। सहस्त्रों मन्वन्तरों से यह वृक्ष अभी तक वहाँ उपस्थित है। मणि पर्वत के ठीक पश्चिम में सटा हुआ गणेश कुंड नामक सरोवर है। उसके ऊपर शेष भगवान का मन्दिर बना हुआ है जोकि अब जीर्ण अवस्था में है। वहाँ से पाँच सौ धनुष पर ठीक वायव्य कोण पर भगवान श्री राम की पावन जन्मभूमि है। उस रामनौमी वृक्ष के तने डालियाँ आदि सभी श्री रामनाम से अंकित हैं। एक नवप्रसूता गाय लेकर बछड़े सहित तुम रामनौमी वृक्ष से एक मील इई गिर्द इस गाय को घुमाओ। जिस स्थान पर वह गाय गोबर कर दे वही स्थान मणि पर्वत है। फिर वहाँ से पाँच सौ धनुष नाप कर उसी ओर उस को ले जाकर घुमाओ, जहाँ उसके थनों से लगातार दूध की धारा गिरने लगे तो समझ लेना कि वहीं श्री राम की जन्मभूमि है। बस उसी स्थान से पुराणों में वर्णित क्रम के अनुसार तुम्हें

अयोध्या के समस्त तीर्थों का पता लग जायेगा। इतना कहकर तीर्थराज प्रयाग वहाँ से अदृश्य हो गए और ठीक रामनौमी के दिन महाराज विक्रमादित्य ने एक नवप्रसूता गाय तीर्थराज प्रयाग द्वारा बताये गये क्रम से घुमाई। जब वह गाय भगवान श्री राम चन्द्र की जन्म भूमि पर पहुँची तो उसके थनों से अपने आप दूध की धारा गिरने लगी। बस उसी स्थान पर महाराज विक्रमादित्य ने भगवान श्री राम जन्म-भूमि के भव्य मन्दिर का निर्माण कराया था तथा पुरानों में वर्णित क्रम के अनुसार अयोध्या के समस्त तीर्थों का पता लगाकर उनका निर्माण कराया था। इस प्रकार महाराजा विक्रमादित्य ने प्राचीन अयोध्या को खोजकर उसका पुननिर्माण किया था।

श्री रामचन्द्र जी की वंशावली

(१) श्री महाराज श्राद्धदेव वैवस्वत मनु (२) इक्ष्वाकु (३) शशाद (४) कुकुत्स्थ (५) अनेनस (६) पृथु (७) विश्वगाश्व (८) आर्द्र (९) युवनाश्वल (१०) श्रीवस्त (११) बृहदश्व (१२) कुवलयाश्व (१३) दृढाश्व (१४) प्रमोद (१५) हर्यश्व (१६) निकुम्भ (१७) संहिताश्व (१८) कृशाश्व (१९) प्रसेनजित (१) (२०) युवनाश्व (२) (२१) मान्धाता (२२) पुरुकुत्स (२३) त्रयदस्यु (२४) सम्भूत (२५) अनरण्य (२६) पृषदश्व (२७) हर्यश्व (२) (२८) वसुमनस (२९) तृघन्वन (३०) त्रैयारूण (३१) त्रिशंकु (३२) हरिश्चन्द्र (३३) रोहित (३४) हरित (३५) चंचु (चम्प) (३६) विजय (३७)रूरूक (३८) बृक (३९) बाहु (४०) सगर (४१) असमंजस (४२) अंशुमन (४३) दिलीप (१) (४४) भगीरथ (४५) श्रुत (४६) नाभाग (४७) अम्बरीष (४८) सिन्धुद्वीप (४९) अयुतायुस (५०) ऋतुपर्ण (५१) सर्वकाम (५२) सुदास (५३) कल्माषापाद (५४) अश्मक (५५) मूलक (५६) शतरथ (५७) बृद्धशर्मन (५८) विश्वसह (१) (५९) दलीप (२) (६०) दीर्घबाहु (६१) रघु (६२) अज (६३) दशरथ (६४) रामचन्द्र (६५) कुश (६६) अतिथि (६७) निषद (६८) नल (६९) नभस (७०) पुण्डरीक (७१) क्षेमधन्वन (७२) देवानीक (७३) अहीनगु (७४) पारिपात्र (७५) दल (७६) शल (७७) उक्थ (७८) बज्रनाभ (७९) शंखन (८०) व्युषिताश्व (८१) विश्वसह (२) (८२) हिरण्यनाथभ (८३) पुष्य (८४) ध्रुवसन्धि (८५) सुदर्शन (८६) अग्निवर्ण (८७) शीघ्र (८८) मरू (८९) पृथुश्रुत (९०) सुसन्धि (९१) अमर्ष (९२) महाश्वत (९३) विश्रुतवत (९४) बृहद्बल (९५) बृहत्क्षय (९६) उरुक्षय (९७) वत्सद्रोह (९८) प्रतिव्योम (९९) दिवाकर (१००) सहदेव (१०१) ध्रुवाश्व (१०२) भानुरथ (१०३)

प्रतीताश्व (१०४) सुप्रतीप (१०५) मरुदेव (१०६) सुनक्षत्र (१०७) किन्नराव (१०८) अन्तरिक्ष (१०६) सुषेण (सुपर्ण) (११०) सुमित्र -(१) (१११) ब्रहद्व्रज (११२) धर्म (११३) कृतंजय (११४) ब्रज (११५) रणंजय (११६) संजय (११७) शाक्य (११८) शुद्धोदन (११६) सिद्धार्थ (१२०) राहुल (१२१) प्रसेनजित (२) (१२२) क्षुद्रक (विरुधक) (१२३) कुलक (१२४) सूरथ (१२५) सुमित्र (२)

नोटः---समय अभाव के कारण हम चौथे चरण में उपरोक्त स्थानों के दर्शन नहीं कर सके तथा तीन बजे यू०पी रोडवेज की बस में बैठकर साढे ६ बजे लखनऊ पहुँचे। अयोध्या से लखनऊ १३५ कि०मी० है। और लखनऊ से दिल्ली ५३४ कि०मी० है। हम उसी दिन सायं सात बजे रोडवेज की रात्रि सेवा बस में बेठकर अगले दिन प्रातः साढे ८ बजे दिल्ली पहुँच गये।

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि-मथुरा

दिल्ली से दक्षिण की ओर मथुरा १४५ कि० मी० की दूरी पर है। मथुरा से आगे ५८ कि० मी० पर आगरा है। दिल्ली से बम्बई, नागपुर, हैदराबाद, विजयवाड़ा, बंगलौर तथा मद्रास को जाने वाली सभी रेलगाड़ियां मथुरा होकर जाती हैं। हम दिनांक २४-१०-६२ को मारुति वैन द्वारा मथुरा देखने गये थे।

मथुरा को मधु नामक दैत्य ने बसाया था। इस लिये इस नगर का सब से पहला नाम मधूपुरी था और मधुपुरी से ही इसे मधुरा, महुरा, मधुपर, मथुला तथा मथुरा कहा जाने लगा। यह नगर भारत की सात पुरियों में गिना जाता है (१) अयोध्यापुरी (२) मथुरापुरी (३) मायापुरी (४) काशीपुरी (५) कांचीपुरी (६) अवंतिका पुरी (७) द्वारिका पुरी।

प्राचीन काल में यह नगर यदुवंशियों के "सूरसेन" नामक गणराज्य की राजधानी था। सूरसेन वंश में राजा उग्रसेन हुए। उग्रसेन का पुत्र कंस बहुत अत्याचारी और दैत्य था। कहा जाता है कि उग्रसेन की रानी पवन रेखा बहुत सुन्दर तथा आज्ञाकारी थी। एक दिन वह अपने पति की आज्ञा पाकर अपनी सखियों के साथ वन विहार करने गई। उसने वहाँ पर बहुत सुन्दर फूल देखे और यमुना जी को टंडी हवा में आत्मविभोर करने वाली लहरें लेते देखा। ऐसी शोभा देख कर पवन रेखा रथ से उतरी और अकेली घूमती हुई एक सघन वन में जा पहुँची। दुमलिक नाम का एक दैत्य भी घूमता हुआ अचानक वहाँ आ पहुँचा और पवन रेखा के रूप पर मोहित हो गया। उसने राजा उग्रसेन का रूप बना कर पवन रेखा से भोग किया। भोग करने के बाद वह अपना असली दैत्य का रूप बना कर पवन रेखा के सामने खड़ा होकर कहने लगा कि हे रानी, मेरे भोग से तुम्हारा बड़ा बलवान पुत्र उत्पन्न होगा जो अपनी भुजाओं के बल से सब राजाओं को जीत कर चक्रवर्ती राजा बनेगा। तत्पश्चात् पवन रेखा के गर्भ से दसवें महीने माघ सुदी १३वीं, दिन ब्रहस्पतिवार को कंस का जन्म हुआ था।

कंस बड़ा होकर बहुत अत्याचार करने लगा। उसने अपने पिता उग्रसेन् को बन्दी बनाकर कारावास में डाल दिया और स्वयम् राजा बन गया।

कंस ने अपनी बहन देवकी का विवाह अपने मित्र वसुदेव से किया और उनको विदा कर के रथ में बिठा कर कुछ दूर छोड़ने गया तब उस ने आकाश वाणी सुनी कि हे कंस, तू जिस देवकी को छोड़ने जा रहा है। उसका आटवां पुत्र तुम्हें मारने वाला होगा। आकाश वाणी सुनकर कंस ने देवकी और वसुदेव को कैद किया ओर पहरेदारों को बिठाकर कहा कि देवकी के गर्भ से जो बालक उत्पन्न हो उसे ला कर मुझे दो। इस तरह कंस देवकी के उत्पन्न होने वाले बालकों को मारने लगा।

देवकी का सातवाँ गर्भ बलराम जी का हुआ। परमेश्वर की आज्ञा से योग माया ने देवकी के गर्भ से बलराम जी को निकाल कर वसुदेव जी की बड़ी रानी रोहणी के गर्भ में स्थापित कर दिया। रोहणी को वसुदेव जी कंस के भय से गोकुल में अपने मित्र नन्द के घर छोड़ आये थे। वहाँ पर बलराम जी का जन्म हुआ। इस तरह बलराम जी वसुदेव के ही पुत्र थे। वसुदेव ने कंस के पास सातवें बालक का गर्भपात होने का संदेश भेज दिया।

भादों बदी अष्टमी, दिन बुधवार रोहणी नक्षत्र में आधी रात के समय कंस की जेल में भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। जन्म लेते ही परमेश्वर की माया से वसुदेव देवकी की हथकड़ी बेड़ी खुल गई और पहरेदार सो गये। दरवाजों के ताले अपने आप खुल गये। वसुदेव जी श्रीकृष्ण को छाज में लिटा कर अपने मित्र नन्द के पास गोकुल गाँव में गये। उस समय आकाश में काली घटा छाई हुई थी और मूसलाधार वर्षा हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपना फन फैला कर श्रीकृष्ण के ऊपर छत्र बना दिया और अपने शरीर की सड़क बना दी जिससे कि वसुदेव जी के पाँव में काँटे न चुभें। जब वसुदेव जी यमुना को पार करने लगे तब यमुना जी का जल श्रीकृष्ण जी के चरण छूने के लिये ऊपर उठने लगा। वसुदेव जी डरकर छाज को और ऊपर करने लगे तब श्रीकृष्ण जी ने अपना पैर यमुना जल को स्पर्श करा दिया। उसी समय जल उतर कर घुटनों तक रह गया।

वसुदेव जी श्रीकृष्ण को लेकर जब अपने मित्र नन्द के घर गोकुल में पहुँचे तो वहाँ पर नन्द जी के घर यशोदा के गर्भ से एक कन्या उत्पन्न हुई थी। वसुदेव जी बालक श्रीकृष्ण जी को नन्द जी को देकर, उनकी कन्या को लेकर मथुरा में आये। जब वे कारावास में आ गये, तब कारावास के दरवाजें बंद हो गये, ताले अपने आप लग गये, उनके हाथ पैरों में हथकड़ी बेड़ी लग गई और चौकीदार जाग गये। पहरेदारों ने कंस को जाकर देवकी के गर्भ से कन्या उत्पन्न होने की खबर

दी। कंस ने कारावास में आकर वह कन्या जमीन पर पटक दी। उसी समय वह कन्या योगमाया होकर आकाश में चली गई और कंस को कह गई कि हे कंस तुम्हें मारने वाला श्री कृष्ण जन्म ले चुका है और वह गोकुल में है। वह तुम्हें मारकर पृथ्वी का भार उतारेगा।

भगवान श्री कृष्ण ने कंस को मारने के लिये मथुरा में कंस के कारावास में जन्म लिया था। उनका पालन-पोषण गोकुल गाँव में नन्द यशोदा जी ने किया था। गोकुल में ही उन्होंने अपनी बाल लीलायें दिखाईं। कंस के भेजे हुए पूतना, शक्टासुर आदि अनेक दैत्यों को मारा। वृंदावन में गाय चराई। गोप-गोपियों को अपनी मधुर बांसुरी की तान सुनाई तथा रास लीलायें रचाईं। नन्द गाँव में गोपियों का माखन चुराया तथा राधा के साथ विहार किया। बरसाना में होली खेली और अंत में अपने मामा कंस को मार कर बृजवासियों के दुःखों को दूर किया।

मथुरा भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि होने के कारण प्रमुख पूजा-स्थान माना जाता है। प्राचीन काल से भारतीय धर्म, दर्शन, कला, संस्कृति तथा सभ्यता का भी प्रमुख केन्द्र रहा है। महाकवि सूरदास संगीताचार्य स्वामी हरिदास, स्वामी दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द तथा कवि रसखान ने इस नगर में पधार कर इस की शोभा बढ़ाई। जैन तथा बोद्ध धर्म के मन्दिर व मूर्तियों के अवशेष भी इस क्षेत्र में मिले हैं। यह एक धार्मिक नगर है। यहाँ पर धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन भी बहुत बड़ी संख्या में होता है। यहाँ के पेड़े तथा खुरचन बहुत प्रसिद्ध हैं। ठहरने के लिये सैंकड़ों धर्मशालाएँ है तथा बहुत सारे होटल हैं।

दर्शनीय मन्दिर

(१) श्री कृष्ण जन्मभूमिः---मथुरा में जहाँ कंस का जेलखाना था, जिसमें भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ था अब वह स्थान श्री कृष्ण जन्मभूमि कटरा केशव देव के नाम से प्रसिद्ध है। इसके निकट ही राजा कंस का महल था। भगवान श्री कृष्ण के वंशजों ने अपने महान पूर्वज भगवान श्री कृष्ण की स्मृति में यहाँ एक बहुत विशाल स्मारक बनवा दिया है। अभी भी निर्माण कार्य चल रहा है।

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय और श्री जे० के० बिडला के प्रयत्नों से श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट बना और यहाँ पर बहुत बड़ा श्रीकृष्ण मन्दिर बनाया गया तथा दो करोड़ रुपये की लागत से श्रीमद् भगवत भवन का निर्माण हुआ। जिसमें श्री राधा-कृष्ण, श्री लक्ष्मीनारायण तथा श्री जगन्नाथ जी की विशाल झांकियाँ हैं। पारे का शिवलिंग, माँ दुर्गा तथा हनुमान जी की मूर्तियाँ हैं। पंडित मदनमोहन मालवीय, श्री हनूमान प्रसाद पोद्दार तथा बिडला जी की आदम-कद

मूर्तियाँ है। विजली से चलने वाली मूर्तियाँ भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का दर्शन कराती हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ पर आयुर्वैदिक दवाखाना, पाठशाला, पुस्तकालय और यात्रियों के ठहरने के लिये अतिथि गृह भी हैं।

(२) श्री द्वारिका धीश मन्दिरः---यह मन्दिर विश्राम घाट के पास बाजार में है और १८० फुट लम्बी तथा १२० फुट चौड़ी कुर्सी पर बना हुआ है। इस मन्दिर में श्री द्वारिकानाथ जी की चतुर्भुजी मूर्ति है। बाईं ओर रुकमणि जी की मूर्ति है। मन्दिर का प्रसाद मन्दिर के रसोईघर में तैयार होता है। यह मन्दिर गुजराती वैश्य गोकुलदास पारिख ने बनवाया था। इस मन्दिर की सेवा पूजा कांकरौली के पुष्टि मार्गीय गुसांइयों द्वारा होती है।

(३) बिड़ला मन्दिरः---यह मन्दिर मथुरा नगर से बाहर मथुरा वृंदावन सड़क पर है। इस मन्दिर में भगवान श्री कृष्ण पंचजन्य शंख तथा सुदर्शन चक्र लिये हुए हैं तथा श्री सीताराम एवम् श्री लक्ष्मी नारायण जी की बहुत भव्य मूर्तियाँ हैं। दीवारों पर चित्र तथा ज्ञान उपदेश लिखे हैं। एक स्तम्भ पर सम्पूर्ण गीता लिखी हुई है। मन्दिर के साथ ही यात्रियों के ठहरने के लिये बिडला धर्मशाला है।

(४) श्री जी बाबा मन्दिरः---यह मन्दिर श्रीकृष्ण जन्मभूमि तथा भूतेश्वर रोड रेलवे स्टेशन के पास है। यहाँ पर भगवान मथुराधीश के दर्शन होते हैं। जगमोहन तथा सत्संग भवन है। यात्रियों के ठहरने के लिये १०० कमरे हैं।

(५) **दसभुजी गणेश मन्दिरः**---यह मन्दिर द्वारिकाधीश मन्दिर के पीछे गली में है। इस में गणेश जी की दसभुजी विरल मूर्ति है।

(६) **वाराह जी का मन्दिरः**---यह मन्दिर मानिक चौक में है। इस मन्दिर में श्री नाथ जी की सुन्दर मूर्ति है। इस मन्दिर का निर्माण कुल्लीमल वैश्य द्वारा कराया गया। मन्दिर में वाराह जी की बहुत सुन्दर मूर्ति है।

(७) **श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिरः**---यह मन्दिर छाता बाजार में है। इसे आगरा जिले के श्री जयराम दास पालीवाल ने बनवाया था। इस मन्दिर को मूंगा जी का मन्दिर भी कहा जाता है क्योंकि मूंगा जी इस मन्दिर के प्रबन्धक रहें हैं।

(८) **श्री कन्हैया लाल जी का मन्दिरः**---यह मन्दिर भी छाता बाजार में लक्ष्मी नारायण मन्दिर के सामने है इस का प्रवेश द्वार बहुत विशाल है। छाता बाजार में ही श्री गोवर्धन नाथ जी का मन्दिर है।

(९) **यमुना मन्दिर तथा विश्राम घाटः**---विश्राम घाट नगर के बीच में है। इस घाट के उत्तर में १२ घाट तथा दक्षिण में भी १२ घाट हैं। इस घाट पर यमुना जी का मन्दिर है सायंकाल यहाँ पर यमुना जी की आरती होती है। ओरछा के राजा वीर सिंह ने इस घाट पर ८१ मन सोने का दान किया था। जयपुर, रीवां तथा काशी के राजाओं ने भी यहाँ पर सोना दान किया था। भगवान श्री कृष्ण ने कंस को मार कर इसी घाट पर कुछ देर विश्राम किया था। इसीलिये इसे विश्राम घाट भी कहते हैं।

यह भी कहा जाता है कि भैया-दूज के दिन यमुना जी ने अपने भाई यम का इसी घाट पर तिलक करके यह वरदान मांगा था कि जो भाई बहन इस दिन यहाँ आकर स्नान करेंगे वे यम लोक नहीं जायेंगे और उनकी असमय मृत्यु नहीं होगी। वे स्वर्ग के वासी होंगे। इस लिये भैया-दूज के दिन हजारों यात्री दूर-दूर से आकर यहाँ स्नान करते हैं। चैत्र सुदी छठ को इस घाट पर यमुना जी का जन्म उत्सव मनाया जाता है।

(१०) **चौरासीः**---यहाँ प्राचीन जैन मन्दिर है। कहा जाता है कि जैन गुरु जम्बू स्वामी ने यहाँ तपस्या की थी।

(११) **पोतरा कुंडः**---भगवान श्रीकृष्ण जन्मभूमि के पीछे पोतरा कुंड है। कहा जाता है कि यहाँ पर श्रीकृष्ण के जन्म के समय उनके पोतरों (कपड़ों) को धोया गया था।

(१२) **शिवतालः**---बनारस के राजा पटनीमल ने मथुरा में कई मन्दिर बनवाये

और नगर की जल की पूर्ति करने के लिये एक सुन्दर तालाब बनवाया तथा तालाब के निकट शिव मन्दिर बनवाया। इसलिये इसे शिवताल कहा जाता है।

(१३) संग्रहालयः---मथुरा में एक राजकीय संग्रहालय भी है। इस संग्रहालय में कुषाण, बौद्ध तथा जैन काल की मूर्तियाँ रखी हुई हैं। इन में कई मूर्तियाँ ४०० ई० पूर्व से लेकर १२वीं शताब्दी तक की हैं।

(१४) तीन वनों की परिक्रमाः---मथुरा, गरुड़ गोबिन्द तथा वृन्दावन की परिक्रमा तीन वनों की परिक्रमा कहलाती है। यह परिक्रमा अक्षय नौमी तथा देवोत्थानी एकादशी को होती है। मथुरा की परिक्रमा सरस्वती कुंड से मथुरा दिल्ली रोड पर छटीकरा तक जाती है और वहाँ से गुरुड़ गोबिन्द की सड़क पर होकर सीधी मन्दिर पर पहुँचती है। गरुड़ गोबिन्द पर भगवान विष्णु का मन्दिर है तथा एक विशाल कुंड है। यहाँ से परिक्रमा कच्चे रास्ते से होकर गोपाल गढ़ तथा छटीकरा वृंदावन रोड पर होती हुई रमण रेती पहुँचती है। रमण रेती से यमुना के घाटों पर होती हुई श्री मदन मोहन जी के मन्दिर के पास से श्री बांके बिहारी जी के मन्दिर पर पहुँचती है और फिर शाह बिहारी लाल के मन्दिर के पास से होकर यमुना किनारे-किनारे मथुरा पहुँच जाती है। वृंदावन से एक रास्ता यमुना किनारे-किनारे मथुरा गया है।
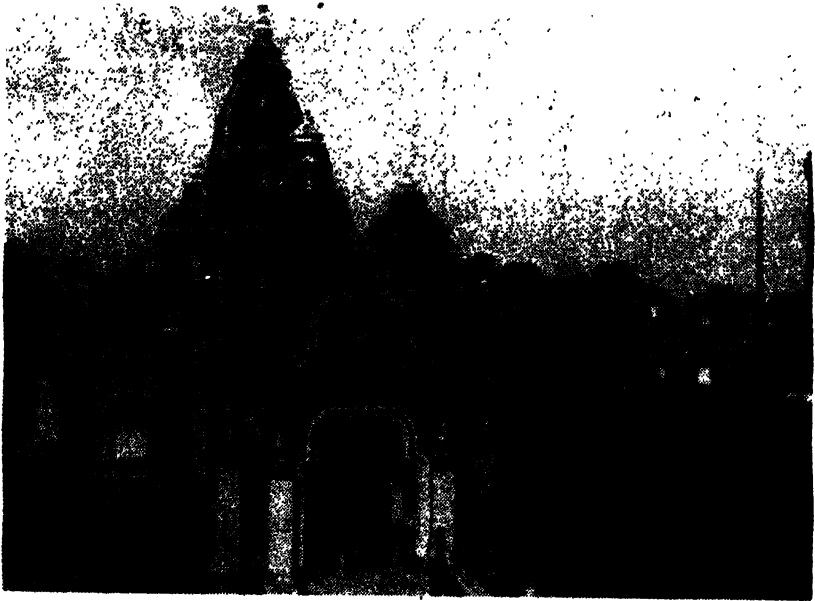
भगवान श्री कृष्ण तथा राधा के प्रेम रस में सराबोर-वृन्दावन

दिल्ली से दक्षिण की ओर मथुरा रोड पर १३४ कि० मी० पर छटीकरा नाम का गांव है। छटीकरा मोड़ से बाई तरफ (पूर्व में) वृन्दावन रोड है। इस रोड पर ६ कि० मी० के फासले पर राधाकृष्ण के प्रेम रस में सराबोर नगर वृन्दावन स्थित है। देहली से वृन्दावन तक सीधी बस जाती है। हम २३-१०-९२ को कार द्वारा वृन्दावन देखने गये थे। वृन्दावन से मथुरा १० कि० मी० पर है और गोवर्धन महाराज जिनकी परिक्रमा की जाती है, वह २७ कि० मी० पर है।

यहाँ पर वृन्दा देवी ने भगवान विष्णु की तपस्या की थी। उसका पति जलन्धर नाम का एक राक्षस था। वृन्दा ने भगवान विष्णु को अपनी तपस्या से प्रसन्न करके यह वरदान मांगा कि उसका पति किसी से भी न मारा जाये। भगवान विष्णु ने उसे वरदान दिया कि जब तक तुम्हारा पतिव्रता धर्म बना रहेगा तब तक तुम्हारे पति को कोई नहीं मार सकता। कोई देवता भी नहीं मार सकता। मैं भी नहीं मार सकता।

जब वृन्दादेवी के पति जलन्धर को इस बात का पता चला तब उसने अपने आप को अमर समझ कर देवताओं से युद्ध किया और सब देवताओं को हरा दिया। विष्णु भी हार गये। तब जलन्धर को मारना अनिवार्य समझ कर विष्णु भगवान ने छलकपट से जलन्धर का रूप धारण करके वृन्दा देवी का पतिव्रता धर्म भंग किया। उधर मौका पाकर शिवजी ने जलन्धर का वध कर दिया। जब वृन्दा देवी को विष्णु भगवान के छलकपट का पता चला तो उसने विष्णु भगवान को श्राप देकर उन्हें काले पत्थर का सालिगराम बना दिया। यह देखकर सब देवता घबरा गये। उन्होंने वृन्दा देवी से प्रार्थना की कि विष्णु भगवान को उनका असली रूप प्रदान करें।

तब वृन्दा देवी ने विष्णु भगवान को उनका असली रूप प्रदान कर दिया। विष्णु भगवान ने अपने असली रूप में आकर वृन्दा को वरदान दिया कि तुम्हारा अगला जन्म तुलसी का होगा और सब लोग तुम्हारी पूजा करेंगे।

तत्पश्चात् वृन्दा देवी ने अपने प्राण त्याग दिये और जिस जगह उसने अपने प्राण त्यागे वहां पर तुलसी का पौधा उग आया जो कि विष्णु भगवान के वरदान से माँ वृन्दादेवी ने तुलसी के पौधे के रूप में जन्म लिया था। तभी से सब लोग तुलसी की पूजा करते हैं।

वृन्दादेवी के नाम पर ही इस स्थान का नाम वृन्दावन पड़ा होगा। सम्भवत यह स्थान वर्तमान सेवाकुंज वाले स्थान पर रहा होगा क्योंकि यहां पर वृन्दादेवी का मन्दिर है और तुलसी के पौधे भी बहुत अधिक मात्रा में हैं।

इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि राधा के सोलह नामों में से उन का एक नाम वृन्दा भी था। राधा (वृन्दा) अपने प्रियतम भगवान श्री कृष्ण से मिलने की इच्छा से यहां पर विहार करने के लिये आती थी। इसलिये भी इस स्थान का नाम वृन्दावन पड़ा होगा।

वृन्दावन में भगवान श्री कृष्ण अपनी मधुर बंसी की तान सुना कर गोपियों को मोहित किया करते थे और अपनी दिव्य तथा अन्तरंग बाल-लीलायें करते थे। उन्होंने यहीं पर गोपियों का चीर हरण किया था तथा पूर्णमासी की अर्धरात्रि में गोपियों को रास-लीला का परम सुख दिया था। उस रास लीला को देखने के लिये शिव महादेव एक गोपी का रूप धारण करके यहां आये थे और अर्ध नारीश्वर कहलाये थे; क्योंकि किसी भी पुरुष को रासलीला में आने की इजाजत नहीं थी। चन्द्रमा भी रासलीला को देखने के लिये रुक गया था इसलिये वह रात्रि ६ महीने की हो गई थी। चन्द्रमा ने मुग्ध होकर रास मंडल पर अमृत की वर्षा की थी। उसी समय से नव विवाहित जोड़ों में हनीमून मनाने की प्रथा चली।

वृन्दावन के कण-कण में गली, कूचों में, खेतों और खलिहानों में बाग और बगीचों में, यमुना के तट पर कृष्ण के प्रेम की मधुर मुरली की तान व्याप्त है जो प्रेमी जनों को आज भी सुनाई देती है और उन्हें आत्म-विभोर कर देती है जो कोई यहां आकर उस मधुर तान को सुन लेता है तो उसका मन यहीं पर रम जाता है और वह वापिस जाने का नाम नहीं लेता। भारतवासियों की तो बात ही क्या हजारों विदेशी युवक और युवतियां राधा कृष्णा के प्रेम में रम.कर सन्यासी भेष में यहीं पर रहने लगे हैं। कई विदेशी युवतियां राधा तथा मीरा की तरह मतवाली होकर श्रीकृष्ण को वृन्दावन के गली, कूचों, लताओं, कुंजों तथा यमुना के तट पर खोजती

फिरती हैं। उन्होंने अपनी सुधबुध तथा घर परिवार को बिसरा दिया है और कृष्ण की दीवानी हो गई हैं।

वृन्दावन की परम् पावन भूमि को पृथ्वी का गुप्त भाग भी कहा जाता है। यहीं की कण कण में रंग उल्लास तथा जीवन रस भरा पड़ा है। अब भी चन्द्रमा पूर्णमासी की रात्रि को यहां पर अमृत की वर्षा करता है। रिटायर्ड व्यक्ति यहां पर आकर अपना निवास स्थान बना लेते हैं और राधा वल्लभ के प्रेम में मग्न होकर नाचते-गाते और झूमते रहते हैं। यहां पर सारा दिन ओर सारी रात राधा कृष्ण का कीर्तन चलता रहता हैं।

दर्शनीय मन्दिर

श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर (अंग्रेजों का मन्दिर):---वृन्दावन में रमन रेती छटीकरा रोड पर विदेशियों ने श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर बनाया है। इसे अंग्रेजों का मन्दिर भी कहा जाता है। यह मन्दिर दस एकड़ भूमि में है और दस एकड़ भूमि में आश्रम बन रहा है। मन्दिर में प्रवेश करते ही बहुत बड़ा सहन है तथा एक बहुत बड़ा हॉल जैसा बरामदा है इसमें बाईं तरफ गौरनिताई की मूर्ति है। बीच में श्रीकृष्ण बलराम की बहुत सुन्दर मूर्तियाँ हैं और दाईं तरफ राधा-कृष्ण की मूर्तियाँ हैं, उनके साथ ललिता और विसाखा की मूर्तियां हैं। पश्चिम की ओर भक्ति निदान्ता स्वामी की मूर्ति है। प्रातःकाल ६ बजे राधा कृष्ण की आरती होती है। कोई विदेशी हाथ में धूप दीप लेकर आरती उतारता है, तो कोई घंटी बजाता है, कोई ढोल मंजीरे बजाता हे और कितने ही विदेशी युवक युवतियाँ वृद्ध तथा बालक नाच-नाच कर तथा झूम-झूम कर आरती गाते हैं। हमने आरती का यह दृश्य अपनी आंखों से देखा। विदेशियों की ऐसी राधा कृष्ण की भक्ति देख कर हम आश्चर्य चकित हो गये थे।

मन्दिर के प्रांगण में एक बहुत बड़ा तमाल का वृक्ष है तथा दीवारों पर बहुत सुन्दर तस्वीरें बनाई गई हैं। मन्दिर के पीछे गैस्ट हाउस तथा म्यूजियम है और किताबों की दूकान है। यह मन्दिर तथा गैस्ट हाउस श्री कृष्ण भावना संघ द्वारा बनाया गया है। इस संघ ने भारत में तथा विदेशों में बहुत सारे राधा-कृष्ण मन्दिर बनवाये हैं।

बांके बिहारी जी का मन्दिर:---वृन्दावन में प्राचीन मन्दिरों की गणना में प्रमुख मन्दिर बांके बिहारी जी तथा राधा माधव जी के मन्दिर हैं। श्री ठाकुर बांके बिहारी जी महाराज मन्दिर में राधा कृष्ण की प्राचीन मूर्तियां हैं। यह मन्दिर स्वामी श्री हरिदासं जी द्वारा बनवाया गया। यह उनके वंशजों का निजी मन्दिर है। इस मन्दिर

में प्रातः ६ बजे से १२ बजे तक राजभोग और रात को ६ बजे से साढ़े ६ बजे तक झांकियां होती है। श्री बिहारी जी के चरण दर्शन अक्षय तीज को होते हैं और सावन के महीने मे सोने के हिन्डोले के दर्शन होते हैं। इस मन्दिर की मूर्ति बहुत चमत्कारी है।

श्री जानकी वल्लभ भगवान का मन्दिर

इस मन्दिर का निर्माण श्री वेदान्त देशिक आश्रम के द्वारा केसीघाट पर हुआ था और इसकी स्थापना परमहंस स्वामी भगवान दास जी आचार्य द्वारा हुई थी यह मन्दिर रामानुज की बड़कले शाखा से सम्बन्धित है। इस मन्दिर में श्रीराम, लक्ष्मण तथा सीता माता की मूर्तियां हैं। मन्दिर में संगमर्मर लगाया गया है और इसका शिखर बहुत विशाल है।

श्री गोबिन्द जी का मन्दिरः---यह विशाल मन्दिर लाल पत्थरों का बना हुआ है और अति प्राचीन मन्दिर है इसे जयपुर के महाराज मानसिंह ने बनवाया था। औरंगजेब के समय में यहां की मूर्ति जयपुर पहुंचा दी गई थी। वहां पर आज भी गोबिन्द जी के नाम से प्रमुख मन्दिर है। कहते हैं कि गोबिन्द जी का मन्दिर सात मंजिल का था। उपर की चार मन्जिल बादशाही सेना द्वारा गिरा दी गई थी। अब यह मन्दिर ३ मन्जिल का है और सरकार के पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है। इस मन्दिर के पीछे गोबिन्द जी का नया मन्दिर बनाया गया है। मन्दिर में गोबिन्द जी की बहुत सुन्दर मूर्ति है।

रंग जी का मंदिरः---यह मन्दिर सन् १८५२ में सेठ लक्ष्मी चन्द के भाई राधा कृष्ण और गोविन्ददास ने बनवाया था। इसके बनने में ७ साल लग गये थे। इस मन्दिर के प्रांगण में ६० फुट ऊँचा सोने का खम्बा है। मन्दिर के सात परकोटे है तथा शिखर बहुत भव्य है। मन्दिर में बहुत सुन्दर मूर्तियां हैं। इस मन्दिर में चैत्र में रथ का मेला, श्रावण में हिंडोले, रक्षा बंधन पर गज-ग्राह भादों में जन्माष्टमी तथा लट्ठे का मेला तथा पौष में बैकुण्ठ मेला लगता है।

लाला बाबू का मन्दिरः---यह मन्दिर मुर्शीदाबाद के ज़मीदार श्री कृष्ण चन्द्र ने सम्मत् १८६६ में बनवाया था। श्री कृष्ण चन्द्र को ही लाली बाबू कहा जाता है। मन्दिर में देवमूर्ति बहुत सुन्दर है।

काँच का मन्दिरः---रंग जी मन्दिर के पूर्वी दरवाजे पर बना हुआ विजावर महाराज का शीशे का बना मन्दिर देखने योग्य है।

गोदा मन्दिरः---यह मन्दिर नया बना है और अभी भी निर्माणाधीन है। इस

मन्दिर में देवी देवताओं, ऋषि मुनियों तथा संत महापुरुषों की सैंकड़ों मूर्तियां देखने योग्य हैं।

राधा गोविन्द जी का मन्दिरः---यह मन्दिर सन् १६६० में ग्वालियर के महाराज जियाजी राव सिंधिया ने बनवाया था। यह ब्रह्मचारी मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसमें ब्रह्मचारी जी रहते हैं।

राधा रमण जी का मन्दिरः---इस मन्दिर में गुसाइयों की पूजा होती है और बहुत सारे बंगाली शिष्य रहते हैं।

गोपेश्वर मन्दिरः---जब श्रीकृष्ण ने रास लीला की थी तो उस में महादेव जी गोपी का रूप बना कर उसका आनन्द लेने आये थे। श्रीकृष्ण ने उनको पहचान कर गोपेश्वर नाम से पुकारा था और अपने पास बुलाया था।

युगल किशोर जी का मन्दिरः---यह मन्दिर जहांगीर बादशाह की अमलदारी में ठाकुर नानकरण चौहान ने बनवाया था। इस मन्दिर का जगमोहन ३२ वर्ग फुट है। यह मन्दिर केसीघाट पर बना हुआ है।

शाहबिहारी लाल मन्दिरः---यह मन्दिर लखनऊ के शाह बिहारी लाल के पुत्र शाह कुन्दन लाल ने यमुना तट पर रेतिया बाजार में बनाया था। इस मन्दिर का नाम ललित कुंज है। इसे शाहजी का मन्दिर तथा टेढ़े खम्बों वाला मन्दिर भी कहा जाता है।

सवा मन सालिग राम जी का मन्दिरः---यह मन्दिर अधिक बड़ा नहीं है लेकिन इस में सवा मन के सालिग राम की मूर्ति देखने योग्य है। यह मन्दिर लोई बाजार में है।

मदन मोहन जी का मन्दिरः---यह मन्दिर कालीदेह के निकट द्वादश टीले पर है। इस मन्दिर को रूप सनातम गोस्वामी ने बनवाया। मथुरा के एक चौबे श्री मदन मोहन जी ने उनको एक मूर्ति सम्मत १२२६ में माघ शुक्ल तृतिया को दी थी। गोस्वामी ने उसी मूर्ति को यहां प्रतिष्ठापित किया था और स्वयम् एक मढ़ी बना कर रहने लगे थे।

इन मन्दिरों के अतिरिक्त वृन्दावन में अनेक दर्शनीय मन्दिर हैं जिन में पागल बाबा का मन्दिर, अक्रूर मन्दिर। श्री अनन्त बांके बिहारी मन्दिर, श्री जी मन्दिर, कानपुर वाला मन्दिर, मानस मन्दिर, गोपीनाथ जी का मन्दिर, मीरां बाई का मन्दिर, रसिक बिहारी मन्दिर, गोरे दाउ जी का मन्दिर, अष्ट सखी मन्दिर तथा नन्द भवन और आनन्द वृन्दावन देखने योग्य मन्दिर है।

वृन्दावन के प्रसिद्ध घाट

महन्त घाट, रामगोपाल घाट, कालीदेह घाट, गोपाल घाट, नाभा घाट, प्रस्कंदन घाट, सूर्य घाट, कड़िया घाट, मुगल घाट, धूसर घाट, नया घाट, श्री जी घाट, शृंगार घाट, गंगामोहन घाट, गोविन्द घाट, चीर घाट, केसी घाट, किशोरी घाट, पांडा घाट, हनुमान घाट, इमलीतला घाट आदि घाट हैं।

वृन्दावन के प्रसिद्ध वन

वृन्दावन के सघन वन, कुंज फूलों से लदी बेलें तथा ऊँचे-ऊँचे वृक्ष मनुष्य का मन मोह लेते हैं। बसन्त ऋतु में यहां की सुन्दरता देखने योग्य है तथा सावन भादों की हरियाली आंखों को ठंडक और ताजगी देती है। यहां के प्रसिद्ध वन निम्नलिखित है।

अटल वन, निहार वन, गौचारण वन, कालिया वन, गोपाल वन, निकुंज वन (जिसे सेवा कुंज भी कहते हैं) विधि वन, विहार वन, झूलन वन, गहर वन, पप्पड़ वन है।

वृन्दावन के धार्मिक स्थान

(१) कालीदेहः---यहां पर कालीनाग रहता था। भगवान श्रीकृष्ण उसका मर्दन करने के लिये कदम के पेड़ से काली देह में कूदे थे।

(२) द्वादश आदित्य टीलाः---काली नाग का मर्दन करके श्रीकृष्ण इस टीले पर आये थे ओर सर्दी के मारे कांपने लगे थे तब सूर्य ने द्वादश कला धारण करके उनकी सर्दी दूर की थी।

(३) शृंगार वनः---श्रीकृष्ण के सखाओं ने यहां पर श्रीकृष्ण का शृंगार किया था।

(४) सेवा कुंजः---यहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण रात्रि में राधा के साथ विहार करते थे। यहां पर रात को रहना मना है।

(५) चीर घाटः---यहाँ पर श्रीकृष्ण ने यमुना में नग्न स्नान करती हुई गोपियों के चीर हरण किये थे।

(६) रास मंडलः---यहाँ पर श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ हनीमून मनाया था तथा उन को महारास लीला का परम् सुख दिया था।

(७) वंशी वटः---श्रीकृष्ण इस वृक्ष पर चढ़ कर गोपियों को रास लीला के लिये बुलाने के लिये बंसी बजाते थे और गोपियाँ बंसी की तान पर अपनी सुध बुध खोकर चली आती थी।

(८) **वेणु कूपः**---भगवान श्रीकृष्ण ने राधा की प्यास बुझाने के लिये अपनी बांसुरी से यह कुआं खोदा था।

(९) **दावानल कुंडः**---श्रीकृष्ण ने यहाँ पर अग्नि का पान किया था।

(१०) **ज्ञान गुदड़ीः**---जब श्रीकृष्ण कंस को मार कर मथुरा में बस गये थे तब उन्होंने अपने मित्र ऊधव को गोपियों को ज्ञान सिखाने के लिये भेजा था। ऊधव की गोपियों के साथ इसी स्थान पर ज्ञान चर्चा हुई थी और वह गोपियों का श्री कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम देख कर अपना सब ज्ञान भूल गये थे। और उलटा गोपियों से ज्ञान सीखकर वापिस श्रीकृष्ण के पास मथुरा में गये थे।

(११) **राधा बागः**---यहाँ पर कात्यानी देवी का भव्य मन्दिर है।

(१२) **इमली तलाः**---जब चेतन महाप्रभु वृन्दावन पधारे थे तब इसी इमली के पेड़ के नीचे बैठे थे।

(१३) **टटिया स्थानः**---यह हरिदास जी की शिष्य परम्परा का स्थान है।

(१४) **निधि वनः**---यहाँ पर श्रीकृष्ण और राधा विहार किया करते थे। यहीं पर स्वामी हरिदास जी निवास करते थे। उनको यहीं पर बांके बिहारी जी की मूर्ति प्राप्त हुई थी जो इस मन्दिर में है। हरिदास जी की समाधि भी यहीं पर है।

(१६) **धीर समीरः**---भगवान श्रीकृष्ण यहां पर गोप-गोपियों को अपनी लीलाओं का अलौकिक सुख देते थे।

इनके अतिरिक्त राधा बावड़ी, बेल वन, मानसरोवर, महाप्रभुजी की बैठक, स्वामी हरिदास जी को बैठक, चौसठ महन्तों की समाधि, राम बाग, यमुना मन्दिर, वन चन्द्र जी का डोल तथा टोपी वाली कुंज देखने योग्य धार्मिक स्थान हैं।

यहां पर ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें तथा आश्रम हैं। हम सूर दास धर्मशाला में ठहरे थे तथा श्री छोटे लाल जी ने हमारी बहुत आवभगत की थी हमें तीन कमरें दे दिये थे। रजाइयों तथा गद्दों का प्रबन्ध भी कर दिया था। रात्रि भोजन तथा दूध, प्रातः नाश्ता और दोपहर को भोजन का प्रबन्ध भी किया था।

वृन्दावन के आसपास कुछ अन्य धार्मिक-स्थल
नन्दगांव, बरसाना, गोवर्धन तथा राधाकुन्ड

दिल्ली से लगभग १०२ कि० मी० पर मथुरा रोड पर कोसी है। कोसी से एक सड़क नन्दगाँव, बरसाना, गोवर्धन, राधा कुंड होती हुई मथुरा रोड पर छटीकरा मोड़ पर होती हुई वृन्दावन चली जाती है। यह सीधा और छोटा रास्ता है। कोसी से नन्दगांव १० कि० मी०, नन्दगांव से उसी रोड पर संकेत होते हुए बरसाना ८ कि० मी० और बरसाना से गोवर्धन २० कि० मी०, गोवर्धन से राधा कुंड लगभग ६ कि० मी० राधा कुंड से छटीकरा मोड़ १५ कि० मी० और छटीकरा मोड़ से वृन्दावन ६ कि० मी० है। इस तरह कोसी से एक ही रूट पर चल कर सब स्थान देखे जा सकते हैं।

नन्दगाँव

नन्दगांव नन्दीश्वर महादेव की पहाड़ी है। तांडल ऋषि ने कंस को श्राप दिया था कि तुम्हारा कोई भी दूत या राक्षस नन्दीश्वर पहाड़ी पर जायेगा तो वह पत्थर का बन जायेगा। इसलिये जब कंस गोकुल और वृन्दावन में श्रीकृष्ण को मारने के लिये अनेक राक्षस भेजने लगा तो नन्द बाबा अपने परिवार तथा गांववासियों को लेकर नन्दीश्वर पर्वत पर चले आये और सब अपने-अपने मकान बना कर रहने लगे। इस तरह से नन्दगांव आबाद हुआ। नन्द ने नन्दीश्वर पहाड़ी पर अपना महल बनवाया और बहुत बड़ा उत्सव मनाया। यहीं पर श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ होली खेली। यहीं पर ऊधव वन है। ऊधव श्रीकृष्ण का मित्र था और उस समय का सब से महान ब्रह्मयोगी था। जब श्रीकृष्ण मथुरा में चले गये थे तो गोपियाँ उनके विरह में दिन रात आँसू बहाती रहती थीं। श्री ऊधव वहाँ जाकर राधा व गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम देख कर अपने ब्रह्मज्ञान के अहंकार को भूल गया था।

कृष्ण बलराम मन्दिरः---जहाँ पर पहले नन्द बाबा का महल था अब इस महल में श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर है। मन्दिर में श्रीकृष्ण बलराम की मूर्तियाँ हैं। यहाँ दोनों भाइयों का एक ही स्वरूप माना गया है अर्थात् दोनों की एक ही भावना से पूजा होती है। यह मन्दिर कुछ चढ़ाई पर है। गलियों में से चढ़ाई चढ़ कर जाना पड़ता है। मन्दिर के निकट साठ, सत्तर सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं।

कृष्ण बलराम मन्दिर के अतिरिक्त नन्दगाँव में हाऊ-बिलाऊ, पदम तीर्थ, बेल कुंड, चरण पहाड़ी, रोहणी मोहनी कुंड, मानसरोवर, सनातन गोस्वामी की तपोभूमि, वल्लभ आचार्य जी की बैठक, मोती कुंड, फुलवारी कुंड, कदम कुंज, कृष्ण कुंड, आशेश्वरी महादेव, ईश्वर गोखरा, छाछ कुंड, सास कुंड, श्याम पीपर, टेर कदम, सनातन कुटि, बिहार कुंड, जोग कुंड, नरसिंह मन्दिर, नन्दभवन, पनिहारी कुंड, राधा-कृष्ण मन्दिर, गोवर्धन नाथ मन्दिर, सूर्य कुंड, श्री अक्रूर बैठक, ऊधव बैठक, नन्दीश्वर, नन्द बाग, गऊशाला तथा भोजन स्थल देखने योग्य हैं।

संकेत

नन्दगाँव से ६ कि० मी० पर संकेत है। यहाँ संकेत वट तथा संकेत-कुंड हैं। संकेत देवी का मन्दिर, संकेत बिहारी मन्दिर, राधा रमन मन्दिर, राम चबूतरा, झूला मंडप, बल्लभ आचार्य जी की बैठक, रंग महल तथा विमल कुंड आदि देखने योग्य स्थान हैं। यहाँ पर श्रीकृष्ण तथा राधा संकेत करके एक दूसरे को बुलाते थे।

बरसाना

संकेत से लगभग दो कि० मी० पर बरसाना है। यह राधा जी का जन्म स्थान है। राधा के पिता का नाम वृषभानु तथा माता का नाम कीर्ति था। राधा का श्री कृष्ण से अनन्य प्रेम था और वे दोनों, दो शरीर तथा एक प्राण थे। राधा के रोम-रोम में श्रीकृष्ण का प्यार भरा था। उसे किसी लोक लाज का डर नहीं रहा था। श्री कृष्ण भी राधा के विरह में व्याकुल रहते थे और कदम के पेड़ पर चढ़ कर राधा को बुलाने के लिये अपनी बांसुरी की मधुर टेर लगाते थे। बांसुरी की टेर सुनते ही राधा प्रेम मग्न होकर श्रीकृष्ण से मिलने आती थी। श्रीकृष्ण अपनी माया से घटा और बादल उत्पन्न कर देते थे और दोनों घनघोर घटा के अन्धेरे में बैठकर प्रेमपूर्वक बातें किया करते थे।

एक दिन राधा श्रीकृष्ण के प्रेम में इतनी मतवाली हो गई थी कि वह दहीं बेचने का बहाना करके श्रीकृष्ण के गाँव में चली गई और श्रीकृष्ण के घर के चारों तरफ घूम-घूम कर पुकारने लगी कोई दहीं ले लो, कोई दही ले लो। यह

पुकारते-पुकारते राधा दही का नाम भूल गई और कहने लगी "कोई श्रीकृष्ण ले लो, "कोई नन्दकिशोर ले लो," कोई श्यामसुन्दर ले लो।" श्रीकृष्ण उस समय खाना खा रहे थे। वह राधा की आवाज सुनकर अपने मुख का ग्रास थाली में छोड़ कर राधा से मिलने के लिये दौड़ पड़े थे। ऐसा था श्रीकृष्ण और राधा का अमर प्रेम।

फाल्गुन एकादशी को नन्द गाँव वाले बरसाना में होली खेलने आते हैं और दूसरे दिन बरसाना वाले नन्दगाँव में होली खेलने जाते हैं। यहाँ की लट्ठमार होली देखने योग्य है। हजारों लोग दूर-दूर से नन्द गाँव तथा बरसाना की होली देखने आते हैं।

बरसाना के चारों ओर चार सरोवर हैं जो कुंडों के नाम से प्रसिद्ध हैं। बरसाना में गोवर्धन पर्वत की श्रेणी डीगकामा होती हुई आकर दो भागों में बंट जाती है। पहली श्रेणी विष्णु पर्वत और दूसरी श्रेणी ब्रह्म पर्वत कहलाती हैं। ब्रह्मपर्वत के ऊपर राधा कृष्ण का मन्दिर है, नीचे वृषभानु मन्दिर, प्रिया जी का मन्दिर, दान मन्दिर, हिंडोला स्थल, मयूर कुटि, रास मंडल, ललित नृत्य मन्दिर, विलास मन्दिर, गहवर वन, ब्रजेश्वर महादेव तथा सांकरिखोर हैं। विष्णु पर्वत के ऊपर मानगढ़, चिकसौली मान मन्दिर, श्री जी का मन्दिर, महिमानु का दर्शन कीर्तिदा माता मन्दिर अष्टसखि मन्दिर तथा जयपुर महाराज का मन्दिर देखने योग्य स्थान हैं।

राधा कृष्ण मन्दिर राधा जी का महल था। यहाँ पर जाने के लिये बहुत सारी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं मन्दिर में से ही महाराज जयपुर के मन्दिर में जाने का रास्ता है। रास्ते में बहुत सुन्दर फुलवाड़ी तथा बाग बगीचे हैं। दूसरे रास्ते से कार द्वारा सीधे महाराजा जयपुर मन्दिर तक जा सकते हैं।

गोवर्धन

बरसाना से उसी रोड पर लगभग २० कि० मी० पर गोवर्धन पर्वत है इसे गिरिराज भी कहते हैं। इसकी ऊँचाई धीरे-धीरे कम होती जा रही है। प्रत्येक अमावस्या तथा पूर्णिमा को भक्तजन गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करने के लिये आते हैं। यह परिक्रमा लगभग ७ कोस की है। कुछ लोग लेट कर परिक्रमा करते हैं। जयगिरिराज, बोल श्री राधे के जयकारों से पृथ्वी-आकाश गूँज उठते हैं।

कहा जाता है कि ब्रजवासी कार्तिक बदी चतुर्थी को इन्द्र देवता की पूजा किया करते थे। भगवान श्रीकृष्ण ने इन्द्र देवता की पूजा छुड़ा कर गोवर्धन पर्वत की पूजा कराई। इससे इन्द्र देवता क्रोधित हो गये और उन्होंने सब मेघों और ४६ पवनों को बुला कर कहा कि तुम इतना पानी बरसाओ और इतनी सर्दी कर दो कि जिस

से सब ब्रजवासी मर जायें। इन्द्र की आज्ञा पाते ही मेघों ने प्रलयकाल जैसी वर्षा करनी आरम्भ कर दी और पवनों ने तेज हवा चला कर बहुत सर्दी उत्पन्न कर दी। ब्रजवासी व्याकुल होकर श्रीकृष्ण की शरण में आये। तब श्रीकृष्ण सब ब्रजवासियों को तथा उनके गाय बछड़ों को लेकर गोवर्धन पर्वत के पास आये और अपने बायें हाथ की कन्नी उंगली पर गोवर्धन पर्वत को उठा कर ब्रजवासियों व उनके गो बछड़ों और वस्तुओं को उसके नीचे खड़ा कर दिया और अपने सुदर्शन चक्र से वर्षा का सारा पानी सुखा दिया। यह देखकर ब्रजवासी आपस में कहने लगे कि श्रीकृष्ण भगवान विष्णु का अवतार मालूम देते हैं जो पहाड़ को एक उंगली पर उठा कर हमारी रक्षा कर रहे हैं।

सुदर्शन चक्र के प्रकाश से ठंड व पानी जाता रहा और ब्रजवासी गोवर्धन पर्वत के नीचे घर की तरह आनन्द से बैठे रहे। सात दिन तक लगातार वर्षा होती रहीं और श्रीकृष्ण ने सात दिनों तक गोवर्धन पर्वत को अपनी उंगली पर उठाये रखा। वर्षा बन्द होने पर श्री कृष्ण ने पर्वत अपनी उंगली से उतार कर उसी स्थान पर रख दिया और ब्रज वासी अपनी-अपनी गायों, बछड़ों और वस्तुओं को लेकर अपने-अपने घर चले आये। गोवर्धन पर्वत उठाने के कारण भगवान श्री कृष्ण को गिरधारी भी कहते है।

इन्द्र का अभिमान टूट गया और वह अपने एरावत हाथी, काम धेनु गाय और अनेक ऋषि मुनियों को लेकर श्रीकृष्ण के पास आया और उनके चरणों में गिर कर क्षमा मांगी और भगवान श्रीकृष्ण का अभिषेक किया। कामधेनु गाय ने अपने दूध से तथा एरावत हाथी ने आकाश गंगा के जल से श्री कृष्ण को स्नान कराया।

देखने योग्य स्थान

मुखारविन्दः---यह यहाँ का मुख्य मन्दिर है। यहाँ पर दूध चढ़ाया जाता है।

मानसी गंगाः---यह एक प्राचीन विशाल कुंड है। जयपुर के राजा मानसिंह ने इसका पुर्नोद्धार कराया था तथा चारों ओर पक्के घाट एवं मन्दिर बनवाये थे। इसके चारों तरफ पक्की दीवार है। दीपावली को यहाँ दीपदान किया जाता है।

दान घाटीः---यहाँ पर दान बिहारी लाल जी का मन्दिर है जो आधुनिक शैली पर निर्माणाधीन है।

चक्र तीर्थः---यह श्री राधा कृष्ण का विहार स्थल है। यहाँ पर चक्रलेश्वर महादेव का मन्दिर है। सनातन गोस्वामी की कुटी तथा वल्लभ आचार्य जी की बैठक है।

आन्योरः---यहाँ महाप्रभु जी की बैठक है। पर्वत शिला पर दही कटोरे का निशान है।

पूछरीः---यहाँ पर गोवर्धन पर्वत पृथ्वी के समान्तर हो गये हैं। पूछरी का लोटा तथा रामदास की गुफा है। ऊँचाई पर श्रीकृष्ण बलदेव का मन्दिर है।

जतीपुराः---यहाँ बूढ़े महादेव जी का मन्दिर है, गोविन्द बिहारी जी का मन्दिर है। गोस्वामी जी की सात गद्दी तथा सात मन्दिर हैं। मुखारबिन्द पर दूध पेड़े का प्रसाद चढ़ता है। यहाँ विशाल धर्मशाला है।

श्री हरदेव जी का मन्दिरः---मानसी गंगा के निकट लाल पत्थरों का बना श्री हरदेव जी का मन्दिर है। कहा जाता है कि केशव आचार्य जी को इस मन्दिर की मूर्ति बिलझू कुंड के किनारे एक खेत में खुदाई करने पर मिली थी। भगवान ने श्री केशव आचार्य को दर्शन देकर यह आज्ञा दी थी कि इस स्थान की खुदाई कर मेरी प्रतिमा को स्थापित करें। चैत्र कृष्ण द्वितीया को बिलझू कुंड पर श्री हरदेव जी की सवारी निकाली जाती है और मानसी गंगा की परिक्रमा करके फाग का उत्सव मनाया जाता है।

चन्द्र सरोवरः---यह गोवर्धन से २ कि०मी० पारसोली में है। इसका सम्बन्ध रासलीला स्थल से है। पास ही शृंगार मन्दिर तथा रास मंडल हैं।

मनसा देवी का मन्दिरः---मानसी गंगा के निकट ही मनसा देवी का मन्दिर है।

महाराज भरतपुर की छतरियाँः---गोवर्धन के निकट भरतपुर के राजा द्वारा यहाँ पर किशोरी जी का महल एवं छतरियाँ बनवाई गईं हैं। उनके द्वारा नवनिर्मित श्री गिरिराज मन्दिर देखने योग्य हैं।

राधा कुंड

गोवर्धन से सीधी सड़क डीगकामा वन होती हुई मथुरा चली जाती है। मथुरा, गोवर्धन से लगभग २४ कि०मी० है और राधा कुंड केवल ६ कि०मी० पर है। मथुरा से राधा कुंड २८ कि०मी० पड़ता है। गोवर्धन बस स्टैंड से पूर्व की ओर राधा कुंड को सड़क जाती है। राधा कुंड माधव गोडेश्वर सम्प्रदाय का प्रमुख तीर्थ है। यहाँ पर कृष्ण कुंड और राधा कुंड नाम के दो कुंड हैं। इन कुंडों के चारों तरफ अष्ट सखियों के नाम से आठ कुंड हैं तथा प्राचीन मन्दिर है। राधा कृष्ण मन्दिर तथा गोविन्द जी का मन्दिर देखने योग्य हैं। महाप्रभु जी, श्री गोसाईं जी तथा श्री गोकुल नाथ जी की बैठकें हैं। पंच पांडव घाट, गोबिन्द घाट तथा राजकदम हैं।

कहा जाता है कि कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए अनेक राक्षस भेजे थे जिनमें पूतना केशी, व्योमासुर, प्रलम्ब, धुंधक वत्सासुर, वकासुर, अघासुर, तथा वृषासुर आदि प्रमुख थे। प्रलम्ब नाम का राक्षस श्री कृष्ण को मारने के लिए ग्वाल रूप बनाकर आया परन्तु श्रीकृष्ण ने उसे पहचान कर मार डाला।

धुंधक राक्षस अग्नि रूप होकर आया था और उसने वृन्दावन में आग लगा दी थी। श्रीकृष्ण ने सारी अग्नि अपने मुख में रख ली थी और धुंधक राक्षस को मार डाला था।

वत्सासुर बछड़े का रूप बनाकर श्रीकृष्ण को मारने आया था। जब वह अपना असली राक्षस का रूप बना कर श्रीकृष्ण पर झपटा तब श्रीकृष्ण ने उसकी टांग पकड़ कर वृक्ष की जड़ पर ऐसा पटका कि उसके प्राण निकल गये थे।

बकासुर अपना बगुला रूप बनाकर यमुना किनारे बैठ गया और जैसे ही श्री कृष्ण उसके पास गये तो उसने श्रीकृष्ण को मछली की तरह निगल लिया और मुँह बन्द करके अपने मन में खुश होने लगा कि आज मैंने श्रीकृष्ण को मार डाला परन्तु श्रीकृष्ण ने उसके पेट में ऐसी अग्नि पैदा कर दी कि उसका पेट जलने लगा तब उसने श्रीकृष्ण को अपने पेट से बाहर उगल दिया। श्रीकृष्ण ने बाहर आते ही बकासुर को मार डाला।

अघासुर दैत्य एक बहुत बड़े अजगर का रूप बना कर श्री कृष्ण को मारने आया। उसने ऐसी लम्बी सांस खींची कि श्रीकृष्ण उसके पेट में चले गये। श्री कृष्ण ने उसके पेट में जाकर अपना शरीर इतना बड़ा कर लिया कि उस अजगर का सांस रुक गया और उसके प्राण निकल गये तब श्रीकृष्ण उसके पेट से बाहर आ गये।

केशी दैत्य एक लम्बे चौड़े घोड़े का रूप बनाकर श्रीकृष्ण को मारने आया और अपना मुँह फैला कर श्रीकृष्ण पर झपटा। श्रीकृष्ण ने अपना हाथ लोहे के समान कड़ा करके उसके मुँह में डाल दिया। जब वह श्रीकृष्ण के हाथ को काटने लगा तो उसके सब दाँत टूट गये फिर श्रीकृष्ण ने अपना हाथ इतना मोटा बना लिया कि केशी के सांस रुक कर प्राण निकल गये।

व्योमासुर ग्वाल रूप बनाकर श्रीकृष्ण को मारने आया। उस समय श्री कृष्ण ग्वाल बालों के साथ शेर बकरी का खेल, खेल रहे थे। व्योमासुर भी उन में मिलकर खेलने लगा। जब उसकी शेर बनने की बारी आई तब वह बारी-बारी सब ग्वालों

को उठाकर पहाड़ की कन्दरा में छुपा आया और जब श्रीकृष्ण अकेले रह गये तब वह अपना असली राक्षस रूप बनाकर श्रीकृष्ण पर झपटा। श्रीकृष्ण ने उसको पकड़ कर उसका गला दबा दिया और लात तथा मुक्के मार-मार कर उसके प्राण निकाल दिये थे।

वृषासुर दैत्य भयानक बैल का रूप बनाकर गरजता हुआ श्रीकृष्ण को मारने आया। वह अपनी पूंछ फटकार कर खुरों से पृथ्वी खोदने लगा। बड़े-बड़े सीगों पर पहाड़ उठा कर पलटने लगा। यह देखकर सब ग्वाल बाल घबरा गये। श्रीकृष्ण ग्वाल बालों को धैर्य देकर वृषासुर के सामने चले गये। श्रीकृष्ण को देखते ही वृषासुर ने अपने सींग जमीन में गाड़कर इतना जोर लगाया कि जैसे वह श्रीकृष्ण को पृथ्वी सहित अपने सींगों पर उठा लेगा। यह देखकर श्री कृष्ण ने उसके दोनों सींग पकड़कर ऐसा धक्का दिया कि वह १८ कदम पीछे हटता चला गया। वृषासुर भी अपने पैर जमाकर श्रीकृष्ण को पीछे हटाने लगा तब श्रीकृष्ण ने उसके सींग पकड़कर इतने जोर से झटका दिया कि वह अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ा। फिर उसके सिर और टांगे पकड़ कर इस तरह ऐंठ दिया कि उसके मुँह और नाक से से खून बह कर उसके प्राण निकल गये।

जब वृषासुर बैल मर गया तब राधा ने वहाँ आकर श्रीकृष्ण से कहा कि हे श्री कृष्ण तुम्हें तो बैल रूपी दैत्य को मारने से गोहत्या का पाप लगा है इसलिये अब तुम किसी को मत छूना। जब तक तुम सब तीर्थों पर जाकर स्नान नहीं करते तब तक तुम्हारा पाप नहीं छूटेगा। राधा के ये वचन सुन कर श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत के निकट दो कुंड खुदवा कर राधा से कहा कि मैं सब तीर्थों को इसी जगह बुला देता हूँ। इतना कहते ही श्रीकृष्ण ने सब तीर्थों को वहाँ आने की आज्ञा दी। आज्ञा पाते ही गंगा, यमुना, सरस्वती तथा सब तीर्थ श्रीकृष्ण के सामने आकर खड़े हो गये और अपना - अपना जल कुड़ों में डालने लगे। जब सब तीर्थ अपना जल दोनो कुंडों में डाल कर चले गये तब एक कुंड में श्रीकृष्ण ने और एक कुंड में राधा ने स्नान किया। जिस कुंड में राधा ने स्नान किया वह राधा कुंड तथा दूसरा कृष्ण कुंड के नाम से आज तक विद्यमान हैं। इन कुंडो में स्नान करने से सब तीर्थों का फल प्राप्त हो जाता है।

हम दिनांक २३-१०-९२ को दिल्ली से कार द्वारा प्रातः ६ बजे चल कर नन्द गाँव, बरसाना, गोवर्धन, राधा कुंड देखतेहुए रात्रि ६ बजे वृन्दावन पहुँच गये थेऔर

वहाँ पर सूरदास धर्मशाला में रात्रि विश्राम किया था। अगले दिन वृन्दावन तथा मथुरा के मन्दिर देखकर ताजमहल देखने आगरा गये थे।

नोटः- गोवर्धन से नौ मील दूर मथुरा के रास्ते में डीग है जो राजस्थान में है लेकिन ब्रजमंडल की चौरासी कोस की परिधि में आता है। इसे लहावन भी कहा गया है। यहाँ पर भी बहुत प्रचीन मन्दिर तथा कुंड हैं जो देखने योग्य हैं।

डीग से लगभग १४ मील दूर कामवन है इसे काम्यक वन भी कहते हैं। कुछ लोग इसे प्राचीन वृन्दावन कहते हैं।

प्राचीन ब्रज में १२ वन २४ उपवन तथा ५ पर्वत बताये गये हैं तथा ब्रज का विस्तार ८४ कोस है।
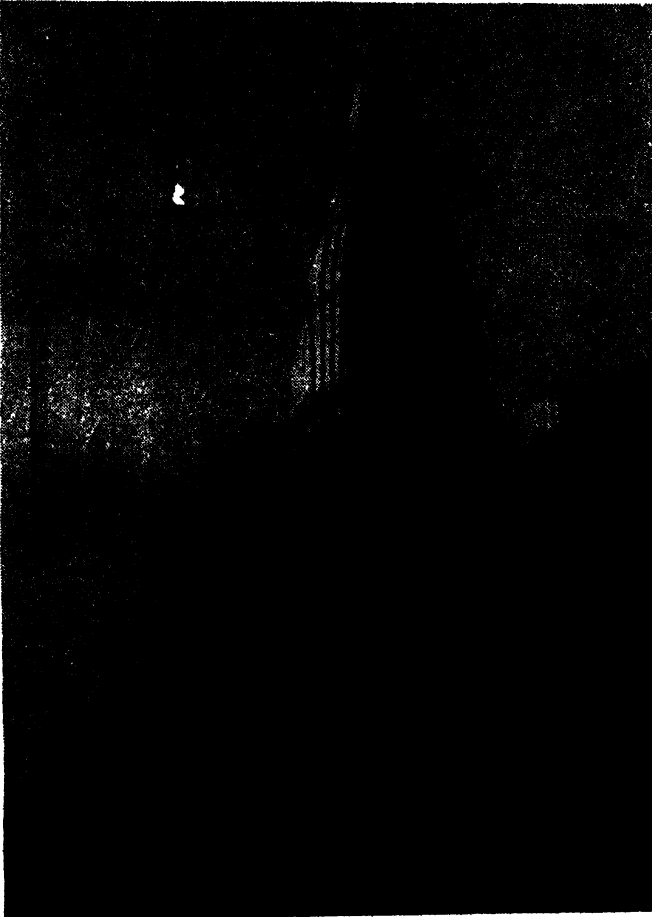
मथुरा के आस पास कुछ अन्य धार्मिक स्थान - गोकुल, महावन तथा दाऊजी

गोकुल

गोकुल मथुरा से पूर्व में यमुना पार करके ६ कि० मी० है। नाव से यह दूरी केवल चार कि०मी० पड़ती है। मथुरा से बस, तांगा आदि के अतिरिक्त नाव से भी गोकुल पहुँचा जा सकता है। पक्की सड़क से गाँव के लिये अन्दर जाना पड़ता है। क्योंकि बस बाहर पक्की सड़क पर ही उतार देती है।

भगवान श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में कंस के कारागार में हुआ था। जन्म लेने के पश्चात् उनको गोकुल में लाया गया था। गोकुल में ही नन्द यशोदा ने उनका पालन पोषण किया था। यहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी अद्भुत लीलाएँ दिखा कर नन्द यशोदा तथा गोप गोपियों को परम सुख दिया था। कहा जाता है कि वसुदेव और देवकी ने पिछले जन्म में भगवान विष्णु का तप करके यह वरदान मांगा था कि भगवान विष्णु उनके पुत्र के रूप में जन्म लें और इसी प्रकार नन्द यशोदा ने भी भगवान विष्णु का तप करके यह वरदान मांगा था कि वे उनको अपनी बाल लीलाओं का सुख दें। इसी लिये भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में वसुदेव देवकी के घर जन्म लेकर नन्द यशोदा कोअपनी बाल लीलाओं का सुख दिया था। भगवान श्री कृष्ण को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है।

गोकुल में बालक श्रीकृष्ण ने कंस के द्वारा भेजे गये अनेक असुरों तथा पूतना को मारा था। यहाँ पर गोपाल घाट, गोविन्द घाट, ठकुरानी घाट,, मथुरा घाट, यशोदा घाट, और गऊघाट आदि यमुना के दर्शनीय घाट है। यह हिन्दुओं के लिये बहुत धार्मिक स्थान है। यहाँ पर महाप्रभु बल्लभ आचार्य, विट्ठल नाथ, गोकुल नाथ जी गोसाइयों की बैठकें हैं। आज भी यहाँ गायों की संख्या बहुत अधिक है। भगवान

श्रीकृष्ण यहाँ गायें चराया करते थे और गऊ घाट पर गऊओं को यमुना जल पिलाते थे।

महावन

महावन मथुरा से पूर्व में दस कि० मी० दूर मथुरा सादाबाद पक्की सड़क पर है। यह ब्रज के १२ प्रमुख वनों में से एक है। गोकुल यहाँ से लगभग ३ कि० मी० दक्षिण में पड़ता है।

महावन को श्री बलराम जी की जन्मभूमि भी बताते हैं। यहाँ पर नन्द भवन है जिसके ८४ खम्बे हैं और सब अलग-अलग डिजाइन के हैं। गिनने पर इनकी संख्या कभी ८३ तो कभी ८५ होती है, ८४ नहीं होती। यहाँ पर वसुदेव जी की दूसरी पत्नी रोहिणी जी रहती थी जो बलराम जी की माता थी। अब यहाँ पर योगमाया, वसुदेव तथा रोहिणी जी की मूर्तियाँ हैं। इसके समीप ही ब्रज नन्द भवन है। ब्रज नन्द, नन्द बाबा के पिता थे। उन्होंने ही ब्रज को बसाया था। उन्हीं के नाम पर ब्रज भूमि है। मंदिर में ब्रज नन्दन जी गोरे दाउजी व रेवती जी की मूर्तियाँ हैं।

महावन में ही **यमलार्जुन मोक्ष स्थल** है। कहा जाता है कि एक दिन श्री कृष्ण अपने सब बाल सखाओं को अपने घर में बुला लाये और माखन की मटकी उठाकर एक ओखली पर बैठ कर माखन खाने लगे और अपने मित्रों को खिलाने लगे। दूध दही तथा माखन खाकर उन्होंने सब बर्तन तोड़ दिये। यशोदा ने आकर दूध दही के बर्तन टूटे देखे तो उसने क्रोध में आकर श्रीकृष्ण को मारने के लिये एक छड़ी उठाई। यह देखकर श्रीकृष्ण बाल सखाओं समेत भागने लगे। यशोदा भी छड़ी लिये हुए उनके पीछे भागने लगी। यशोदा ने श्रीकृष्ण को पकड़ लिया और रस्सी में बांध कर ओखल के साथ बांध दिया। श्रीकृष्ण के घर के बाहर दो आंवले (यमलार्जुन) के वृक्ष थे जो कुबेर देवता के दो पुत्र नल कुंवर तथा मणिग्रीव थे और नारद मुनि के श्राप से आंवले के वृक्ष बन कर खड़े थे। श्री कृष्ण अंतर्यामी ने उनका उद्धार करने के लिये ही अपनी भुजा बन्धवाई थीं। उन्होंने ओखल को घसीटते हुए लाकर उन दोनों वृक्षों के बीच अड़ाकर ऐसा झटका दिया कि वे दोनों वृक्ष गिर गये ओर उनकी जड़ में से दो सुन्दर युवक प्रकट हुए। उन युवकों ने भगवान श्री कृष्ण की परिक्रमा की और उनके चरणों में गिर कर कहा, हे भगवान हम दोनों पापी हैं। हमने नारद जी का अपमान किया था आपने हमारा उद्धार किया। आपके चरणों के दर्शन पाकर हमारे सब दुःख दूर हो गये। भगवान श्री कृष्ण ने

उनको अपने चतुर्भुजी रूप में दर्शन दिये और इच्छापूर्वक वरदान देकर उनको विदा किया। इसी लिये इस स्थान को **यमलाजुन मोक्ष स्थल** कहा जाता है।

महावन में **पूतना मोक्ष स्थल** भी है। पूतना एक असुरी थी जो कंस ने श्री कृष्ण को मारने के लिये भेजी थी। वह अपना मोहनी रूप बनाकर और अपने स्तनों में विष लगा कर नन्द जी के घर में आई और मौका पाकर श्रीकृष्ण के निकट आई और मीठी-मीठी बातें करते हुए श्रीकृष्ण को अपनी गोद में उठा लिया और उनको अपना दूध पिलाने लगी। भगवान श्रीकृष्ण अपने दोनों हाथों से उसके स्तन पकड़कर इस तरह दूध पीने लगे कि दूध के साथ साथ उसके प्राण भी खींचने लगे। पूतना व्याकुल होकर आकाश में उड़ने लगी। श्रीकृष्ण भी उसका स्तन पकड़े हुए उसके साथ ही उड़ते चले गये। जब वे गाँव से बाहर पहुँचे तब श्रीकृष्ण ने उसके प्राण खींच कर उसे मार डाला। पूतना जमीन पर गिर पड़ी और उसे मोक्ष प्राप्त हुआ। इसलिये इस स्थान को पूतना मोक्ष स्थल कहा जाता है।

महावन में नन्द भवन से पूर्व की ओर एक कि० मी० पर **ब्रह्माण्ड घाट** है। यहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण ने यशोदा को अपने मुख में ब्रह्माण्ड की झाँकी दिखाई थी। कहा जाता है कि एक दिन श्रीकृष्ण को डांट कर कहा कि तुमने मिट्टी क्यों खाई। सब गाँव वाले मेरी निन्दा करेंगे कि यह अपने पुत्र को कुछ खाने को नहीं देती होगी। इसी लिये इसने मिट्टी खाई। श्रीकृष्ण ने अपना मुँह पोंछ कर कहा कि हे मैया कहीं मनुष्य भी मिट्टी खाते हैं? यशोदा ने कहा कि यदि तू सच्चा है तो अपना मुँह खोलकर दिखा। यह सुनतें ही श्रीकृष्ण ने अपना मुख खोलकर दिखा दिया। यशोदा ने उनके मुख में तीनों लोंकों की वस्तुएँ पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, पहाड़, समुद्र अर्थात् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड देखा। इसी लिये इस स्थान को **ब्रह्माण्ड घाट** कहते हैं। इसके निकट ही **रमण रेती** है। यह बहुत सुंन्दर स्थान है। यहाँ पर रमण बिहारी जी का मन्दिर है। गऊ की छाछ तथा भोजन का प्रसाद दिया जाता है। यहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण बलराम जी के साथ गाय चराया करते थे और अपनी बाँसुरी की टेर सुना कर गोपियों को मुग्ध किया करते थे। यहीं पर उन्होंने चीर-हरण तथा रास लीला रचाई थी। अब भी यहाँ पर सैकड़ों गऊएँ और साधु रहते हैं।

रमण रेती के साथ ही **कवि रसखान की समाधि** है। कवि रसखान एक पठान मुसलमान थे लेकिन बाद में वैष्णव धर्म में आकर भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त बन गये थे। उनके द्वारा रचित सवैया, भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति से ओत-प्रोत हैं।

इसके अतिरिक्त महावन में दधि मन्थन की ठौर, संकट भंजन स्थान, गोप का किला, योगमाया का किला, तृणावर्त बिहारी का मन्दिर, नन्द की गऊशाला,

धर्मराज यमुना मन्दिर, साक्षी गोपाल मन्दिर, वसुदेव मन्दिर, बकासुर मोक्ष मन्दिर भी देखने योग्य स्थान हैं।

दाऊ जी

दाऊ जी मथुरा से लगभग २० कि० मी० दूर मथुरा सादाबाद पक्की सड़क पर है। पहले इसका नाम बीठा गाँव था। यहाँ पर श्री बलदेव जी की श्याम रंग की विशाल मूर्ति है। दाऊ जी के पास ही रेवती जी की मूर्ति है। ५ हजार वर्ष पहले भगवान श्रीकृष्ण के पड़पोते श्री वज्रनाभ ने यहाँ एक विशाल मन्दिर बनवाया। वर्तमान मन्दिर का निर्माण सेठ श्यामदास ने कराया। इस मंदिर में औरंगजेब का दिया हुआ नक्कारखाना भी है। कहा जाता है कि ब्रज के अन्य मंदिरों को ध्वस्त करके औरंगजेब ने वलदेव जी के मन्दिर को ध्वस्त करने के लिये सेना भेजी तो असंख्य भौरों ने उस पर आक्रमण कर दिया और इस कारण सेना मन्दिर तक नहीं पहुँच पाई।

यहाँ पर बलभद्र कुंड तथा रेवती कुंड भी हैं। माखन मिस्री तथा ठंडाई का भोग लगता है। चैत बदी द्वितीय को होली का प्रसिद्ध हुरंगा का मेला लगता है। भादों शुदी छट के दिन भी बहुत बड़ा मेला लगता है जो कई दिन तक चलता है। पूर्णमासी को दूर-दूर से लोग यहाँ आते हैं।

जयगुरुदेव आश्रम---बाई पास मथुरा

दिल्ली से लगभग १४५ कि०मी० आगरा-मथुरा रोड़ बाई-पास पर जय गुरुदेव आश्रम है। आगरा दिल्ली रोड (मोहली मथुरा) पर यह जय गुरुदेव योगस्थली है जो अध्यात्मिक शिक्षां के साथ भौतिक, सामाजिक, आर्थिक सभी पहलुओं पर देश की जनता को जागरुक करके एक अच्छे समाज का निर्माण कार्य कर रही है।

इस संस्था के संस्थापक परम पूज्य बाबा जय गुरुदेव अध्यात्मिक दौलत से परिपूर्ण एक युग पुरुष हैं। उन्होंने १० जुलाई १९५२ को इस संस्था की स्थापना की और अपनी अध्यात्मिक निधि को जनता में बांटने का कार्य आरम्भ किया। यह संस्था देश में नैतिक उत्थान तथा चरित्रिक निर्माण पर विशेष जोर देकर शराब के सेवन को रोकने का प्रचार करती है। बाबा जय गुरुदेव जी का मत है कि यदि लोग शराब पीना छोड़ दें तो भारत देश दोबारा सोने की चिड़िया बन सकता है। बाबा जी चाहते हैं कि लोग शराब का सेवन तत्काल बंद कर दें और विभिन्न प्रकार के बनने वाले मांसों का सेवन भी बंद कर दें क्योंकि शराब और मांस के सेवन से मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

बाबा जय गुरुदेव जी का कहना है कि भविष्य में चार तरह के उथल-पुथल होने वाले हैं सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक। देश में महंगाई बेतहाशा बढ़ेगी। लोगों को अनेक प्रकार के दुःख उठाने पड़ेंगे। इन सभी दुःखों, तकलीफों, मुसीबतों और परेशानियों से उभरने के लिए लोगों को भगवान का भजन करना चाहिए। बाबा जय गुरुदेव लोगों को भजन का रास्ता बताते हैं जो "सूरत शब्द योग" संत मार्ग या संत मत है। यही मत कबीर, रायदास, मीरां तथा श्री गुरु नानक जी का था। इसमें सभी देवी देवताओं की पूजा का सार है।

बाबा जय गुरुदेव जी को पंडित घूरे लाल जी ने ग्राम चिरौली तहसील इगलास जिला अलीगढ़, उत्तर प्रदेश में उपदेश दिया था और पूरी साधना के बाद बाबा

जय गुरुदेव को ऊपर से प्रेरणा प्राप्त हुई कि आप इस रूहानी दौलत को जनता में बांटो और लोगों को मानवता, प्रेम और भाईचारे का उपदेश करो और उनकी जीव-आत्माओं का कल्याण करो। इस समय करोड़ों लोग इस संस्था के सदस्य हैं जिसमें हर मजहब हर कौम तथा हर प्रदेश के नर-नारी बाबा जय गुरुदेव के अनुयायी हैं। जो आदमी इस योग स्थली में आकर बाबा जय गुरुदेव के बताये हुए मार्ग पर सच्चाई से चलते हैं, उनकी सब मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं। यह स्वामी जी के भक्तों का विश्वास ही नहीं अपितु आजमाया हुआ सत्य है।

साधना शिविर में सत्संग किया जाता है तथा बाबा जय गुरुदेव दिन में कई बार नाम योग की साधना कराते हैं।

१० जून, १६८३ को बाबा जय गुरुदेव ने दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशेष समारोह में लाखों लोगों के बीच में एक अपील की थी कि जो लोग सेवा तपस्या तथा त्याग करना चाहते हैं, वे टाट के बने हुए वस्त्र पहनें। बाबा जी की इस अपील पर लाखों व्यक्ति पूरे भारत में टाट के वस्त्र धारण किए हुए हैं वैसे नये सदस्यों को टाट के वस्त्र पहनना जरूरी नहीं है। यदि कोई नया सदस्य टाट के वस्त्र धारण करना चाहता है तो उसे बाबा जी से अनुमति लेनी जरूरी है।

२४-३-८० को बाबा जय गुरुदेव ने एक अधिवेशन में "दूरदर्शी" संस्था की स्थापना की। इसकी प्रेरणा भी बाबा जी को ऊपर से ही अहमदाबाद में हुई थी। इसका मुख्य कार्यालय अहमदाबाद में है तथा समस्त भारत में प्रांतीय स्तर पर और जिला स्तर पर इसकी शाखायें हैं।

बाबा जय गुरुदेव ने १६५२ में मथुरा में कृष्णा नगर में आश्रम बनाया था जो अब भी विद्यमान है। १६६४ में जब इस आश्रम में भंडारा हुआ तो उसमें इतनी उपस्थिति हुई कि गुरु महाराज जी ने देखा कि आश्रम की जगह छोटी पड़ गई। तब गुरु जी ने मथुरा आगरा रोड बाईपास पर आश्रम के लिए यह जगह ली और यहाँ पर संस्था का मुख्य आश्रम बनाया। आश्रम के अतिरिक्त कुछ जमीन स्कूल के लिए कुछ अस्पताल के लिए कुछ मन्दिर के लिए भी ली।

स्कूलः---यहाँ पर कक्षा एक से कक्षा आठ तक का स्कूल है। इस स्कूल में १६ अध्यापक हैं। लगभग ४०० लड़के लड़कियाँ विद्यालय में पढ़ते हैं। उन्हें निःशुल्क शिक्षा, किताबें कापियां, दोपहर का भोजन, वस्त्र तथा अन्य सुविधायें संस्था की तरफ से दी जाती हैं। यह स्कूल उत्तर प्रदेश मान्यता प्राप्त आदर्श विद्यालय घोषित किया गया है। यहाँ पर सहशिक्षा है तथा डबल एम०ए० ट्रेंड प्रिंसिपल है।

अस्पतालः---अस्पताल निर्माणाधीन है लेकिन निःशुल्क तीन प्रकार की ओ. पी.डी. एलोपैथिक, होमोपैथिक और आयुर्वेदिक चलती हैं।

नामयोग साधना मन्दिरः---यह मन्दिर भी निर्माणाधीन है जिसमें ६० हजार व्यक्ति एक साथ बैठकर भजन प्रार्थना कर सकेंगे।

६ सितम्बर, १६८७ को बाबा जय गरुदेव ने गाँव देव लखा जिला बहराइच उत्तर प्रदेश मे भूमि जोतक खेतिहर काश्तकार संगठन की भी स्थापना की जिसका उद्देश्य भारत के तमाम काश्तकारों को उनके अपने झंडे के नीचे एकत्र होकर विशेष कार्यक्रम काश्तकारों के संगठन का चलाना है और काश्तकारों की ओर ध्यान देकर उनका कल्याण करना है। इस कार्य को सक्रिय करने के लिए "दूरदर्शी" प्रेरणा देकर काश्त-कारों को संगठित करते हैं।

समारोहः---इस संस्था के एक साल में मुख्य चार समारोह होते हैं।

(१) वार्षिक भंडाराः---यह भंडारा बाबा जय गुरुदेव अपने गुरु जी की याद में अगहन शुदी दसवीं को (नवम्बर या दिसम्बर में) मनाते हैं।

(२) होली सत्संग समारोहः---यह समारोह होली के अवसर पर मनाया जाता है जो एक सप्ताह तक चलता है। इस वर्ष दिनांक १६ मार्च से २२ मार्च तक मनाया गया। श्री विजयपाल सिंह प्रांतीय अध्यक्ष तथा श्री लखीराम उपाध्यक्ष दूरदर्शी दिल्ली प्रदेश के निमंत्रण पर मैं चौ० राम किशन के साथ दिनांक २१ तथा २२ मार्च १६६२ को इस समारोह में गयी थी और वहाँ पर डॉ० के० के० मिश्रा राष्ट्रीय दूरदर्शी कोषाध्यक्ष, श्री आर०बी०लाल राष्ट्रीय दूरदर्शी मंत्री, श्री विजयपाल सिंह अध्यक्ष दूरदर्शी दिल्ली प्रदेश, चौधरी लखीराम जी उपाध्यक्ष दूरदर्शी दिल्ली प्रदेश तथा अन्य अधिकारियों तथा सदस्यों से मुलाकात की। उन्होंने ही यह सब जानकारी दी। मैंने सत्संग में भी भाग लिया तथा भजन ध्यान सुमरिन, राष्ट्रीयता, मानव चरित्र निर्माण तथा जनहितों के संदेश बाबा जय गुरुदेव के मुखारबिन्द से सुने।

(३) गुरु पूर्णिमा समारोहः---यह समारोह आज कल बस्ती जिले में असाढ़ की पूर्णिमा को मनाया जाता है। लगभग जुलाई या अगस्त में किसी तिथि को पड़ता है।

(४) साधना शिविरः---यह शिविर मथुरा रोड बाइपास आश्रम में ही मनाया जाता है जो लगभग एक सप्ताह चलता है। इस शिविर में नाम योग की साधना होती है।

सदस्यताः---एक रुपए की नामदानी सदस्यता होती है। यह सदस्यता एक साल

की होती है। कोई भी व्यक्ति दस रुपए सेवादान कर सकता है। स्कूल, अस्पताल तथा मन्दिर निर्माण के लिए जो व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार दान देना चाहे वह दे सकता है।

संगठनः---इस संस्था का केन्द्रीय कार्यालय मथुरा आगरा रोड बाईपास पर है। तथा हर जिले की सत्संग समितियाँ हैं। हरेक समिति का एक संचालक होता है। पूरे भारत में हर एक जिले में सत्संग समितियाँ हैं। इन समितियों में साप्ताहिक सत्संग होता है। सत्संग में चरित्र निर्माण की प्रेरणा दी जाती है और अध्यात्मवाद की नामयोग की साधना का अभ्यास कराया जाता है।

यह संस्था बिना दहेज की शादियाँ भी कराती है। अपनी ही जाति के लड़के लड़कियाँ अपनी मनपसंद बिना दहेज के इस संस्था में आकर शादियाँ करते हैं।

मन्दिरों और घाटों की नगरी---काशी

काशी का अर्थ काया+ईशी यानी काया का ईश्वर विश्वनाथ भगवान शिव शंकर है। कहा जाता है कि भगवान शिवशंकर ने स्वयं इस नगरी की स्थापना की थी। यहाँ पर एक बहुत प्राचीन काशी विश्वनाथ मन्दिर है। इसका पुनर्निर्माण इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने सन् १७५८ ई० में करवाया था। काशी विश्वनाथ मन्दिर के शिखर पर महाराज रणजीत सिंह ने साढे बाईस मन सोने का छतर चढ़ाया था। काशी विश्वनाथ द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

काशी दो नदियों वरुणा और असि के बीच स्थित है, इसलिए इसका दूसरा नाम वरुणा+असि अर्थात् वाराणसी है। वाराणसी से अपभ्रंश होकर इसका तीसरा नाम बनारस भी हो गया है।

मन्दिरः---काशी जी में ३६४ मन्दिर हैं। काशी विश्वनाथ मन्दिर से थोड़ा पहले अन्नपूर्णा देवी का मन्दिर है। यहाँ पर कोई आदमी भूखा नहीं सोता। जिन लोगों को कहीं पर भी ठिकाना नहीं मिलता उन्हें अन्नपूर्णा देवी में शरण मिल जाती है। यहाँ सबको भोजन मिलता है।

काशी विश्वनाथ मन्दिर के साथ ही विष्णु मन्दिर है और मन्दिर के साथ ही आल्मगीर नाम की मस्जिद है जिसे औरंगजेब ने बनवायी थी।

श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर से कुछ दूर दक्षिण में विशालाक्षी देवी का मन्दिर है। मन्दिर के बड़े दरवाजे के अन्दर जाकर महाविशालाक्षी जी की बहुत विशाल मूर्ति के दर्शन होते हैं। यहाँ पर अधिकतर दक्षिण भारत के लोग आते हैं। यह ५१ शक्तिपीठों में गिना जाता है।

अन्नपूर्णा मन्दिर के पास ढूँढीराज गणेश जी का मन्दिर है। यहाँ पर गणेश जी की प्राचीन मूर्ति है। गणेश जी की मूर्ति के दर्शन करने से सब पाप कट जाते

हैं। यहीं पर संकट मोचन श्री हनुमान जी का प्राचीन मन्दिर है। यहाँ पर पूजा करने से सब संकट दूर हो जाते हैं।

काशी विश्वनाथ मन्दिर से एक कि०मी० उत्तर पूर्व में श्री अकाल भैरों का मन्दिर है। यह मन्दिर १७१५ ई० में बाजीराव पेशवा ने बनवाया था। यह मन्दिर काशी में रहने वालों को, रोगों और हर प्रकार के डर और भय से बचाता है। इसलिए इस मन्दिर को काशी जी का कोतवाल भी कहा जाता है।

काशी विश्वनाथ मन्दिर के दक्षिण में दुर्गा कुंड है। यहाँ पर दुर्गा माँ का विशाल मन्दिर है। मन्दिर में दुर्गा भवानी की बहुत सुन्दर मूर्ति है। हजारों भक्त प्रतिदिन इसके दर्शन करने के लिए आते हैं।

दुर्गा मन्दिर के साथ ही तुलसी मानस मन्दिर है। यह मन्दिर १६१४ ई० में बनवाया गया था। इसकी दीवारों पर पूरी रामायण अंकित है। मन्दिर में भगवान राम की मूर्ति है। यह मन्दिर संगमर्मर का बना हुआ है। इसे बनवाने में २० लाख रुपये खर्च हुए थे जो उस जमाने में बहुत बड़ी रकम थी। सावन के महीने में यहाँ पर बहुत बड़ा मेला लगता है।

काशी जी में विद्यापीठ रोड पर भारतमाता का मन्दिर है। यहाँ पर देवी देवताओं की मूर्तियों की बजाय भारत देश का विशाल नक्शा (मान चित्र) है जो संगमर्मर का बनाया गया है। इस नक्शे में समुद्र की गहराई से ले कर पहाड़ों की ऊँचाई तक के ठीक-ठीक माप दिये गये हैं। भारत माता मन्दिर के साथ ही काशी विद्यापीठ है। विद्यापीठ की स्थापना १६६३ में हुई थी।

काशी जी में बहुत प्रसिद्ध हिन्दू विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय पाँच वर्ग कि० मी० में फैला हुआ है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने शिक्षा, कला, संस्कृति और संगीत के केन्द्र के रूप में की थी।

काशी जी में जयपुर के राजा मानसिंह द्वारा बनवाया गया जन्तर मन्तर भी है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अहाते में ही बिड़ला मन्दिर है। इस मन्दिर में बाबा विश्वनाथ भगवान शिव शंकर की मूर्ति स्थापित है। लक्ष्मीनारायण, दुर्गा, पार्वती तथा गणेश जी की भी मूर्तियाँ हैं।

काशी जी में जुलाहा मोहल्ला में कबीर चौरा मठ है। यहीं पर परम संत कबीर साहब का पालन-पोषण हुआ था।

कबीर साहब अपने युग के सब से महान समाज सुधारक थे। नाथपंथ के योग मार्ग और हिन्दुओं के वेदांत और भक्ति मार्ग का उनके जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। आज भी कबीर चौरा मठ में गुरु गोरख नाथ की त्रिशूल ओर गुरु रामानन्द जी की १००८ मनकों की माला रखी हुई है।

घाट

काशी जी में गंगा नदी के तट पर ६४ घाट हैं। सुबह व शाम इन घाटों की सुन्दरता देखने योग्य है। इन घाटों में कुछ घाट बहुत ही प्राचीन है।

पहला प्राचीन घाट महाराजा हरिश्चन्द्र घाट है यहाँ महाराजा हरिश्चन्द्र ने अपना राजपाट धन दौलत सब दान कर दिया था और अपने आप को भी चांडाल के हाथों बेच दिया था। महाराजा हरिश्चन्द्र इसी घाट पर बिके थे। इस घाट पर महाराजा हरिश्चन्द्र का बनवाया हुआ विशाल मन्दिर है।

दूसरा प्राचीन घाट पंचगंगा घाट है। इस घाट का निर्माण आमेर के राजा मानसिंह ने कराया था।

तीसरा प्राचीन घाट विश्वमेध घाट है। इस घाट के अंतर्गत पाँच पवित्र तीर्थ असि, विश्वमेध, मणिकर्णिका, पंचगंगा और वरुण संगम आते हैं। महाराजा देवदास ने इसी घाट पर अश्वमेध यज्ञ कराया था।

मणिकर्णिका घाट काशी में मुक्ति स्थल माना जाता है। कहा जाता है कि भगवान शिव शंकर महादेव ने इसी स्थान पर भगवान विष्णु से बचन लिया था कि जिस मुर्दे का अंतिम संस्कार मणिकर्णिका घाट पर किया जायेगा वह सीधा स्वर्ग में जायेगा।

चौथा प्राचीन घाट त्रिपुरा भैरवी है। यहाँ पर दक्षिण भारतीय लोगों के निवास स्थान है और आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक से प्रतिदिन हजारों लोग इस घाट पर स्नान करने आते हैं।

पाँचवा प्राचीन और प्रसिद्ध घाट रामचरित-मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी का है। तुलसी घाट पर स्नान करने में यात्री बहुत पुण्य समझते हैं।

काशी जी में गंगा के दायें किनारे पर रामनगर का किला है। यह किला काशी के राजा का महल है। भीष्म पितामह ने यहीं से काशी के राजा की तीन लड़कियों

अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका का स्वयम्बर में हरण किया था। अब इस किले में प्राचीन वस्तुओं का संग्रहालय है।

सारनाथ

काशी जी से दस कि० मी० उत्तर में सारनाथ है। यह भगवान बुद्ध के तीर्थ स्थल के रूप में माना जाता है। भगवान बुद्ध ने अपना सब से पहला उपदेश यहीं पर अपने पाँच चेलों को दिया था। यहाँ पर एक चौखंड स्तूप है। इस स्तूप के चारों तरफ एक बाड़ा बना हुआ है और बीच में मिट्टी का एक टीला है।

सारनाथ में एक मूल गुम्बद विहार है। इसे लंका के एक नागरिक धर्मपाल ने बनवाया था। इस के अन्दर भगवान बुद्ध की सुनहरी मूर्ति है और दीवारों पर भगवान बुद्ध के जीवन की तस्वीरें हैं। इन तस्वीरों को जापानी चित्रकार ने बनाया था।

सारनाथ में ही एक चाइनीज मंदिर है जिसे एक चीनी नागरिक ने बनवाया था। इस मन्दिर में भगवान बुद्ध की मूर्ति ज्ञान मुद्रा में बनाई गई है।

सारनाथ में भारत सरकार ने एक संग्रहालय बनवाया है जिसमें खुदाई से प्राप्त भगवान बुद्ध के समय की वस्तुएँ रखी हैं। भारत सरकार ने करंसी नोटों पर जो शेर का निशान छापा है वह मूर्ति भी इस संग्रहालय में रखी हुई है।

सारनाथ के साथ ही श्री जैन मन्दिर है जो अपनी महानता और पवित्रता के कारण धार्मिक महत्त्व का प्रतीक है।

इस तरह से काशी भारतीय धर्म, संस्कृति, आचार-विचार, ज्ञान और दर्शन का केन्द्र है। यहाँ का ज्ञान सारे भारतवर्ष के लिये महत्त्वपूर्ण माना जाता है। काशी जी की बनारसी साड़ियाँ तथा बनारसी पान भी बहुत प्रसिद्ध हैं।

भारत में सात पवित्र पुरियां हैं। काशी, हरिद्वार, अयोध्या, द्वारका, मथुरा, उज्जैन और कांचीपुरम। इन सातों में काशी मुख्य मानी गई है। भारत में १२ ज़्योतिर्लिंगों में से एक काशी का विश्वनाथ मन्दिर है। ५१ शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ विशालाक्षी भी काशी जी में है। काशी जैनियों का भी मुख्य तीर्थ है; क्योंकि तेइसवें तीर्थंकर, पार्श्वनाथ का जन्म यहीं हुआ था। काशी के निकट सारनाथ बौद्धों का भी प्रमुख तीर्थ है। क्योंकि ज्ञान प्राप्ति के बाद भगवान बुद्ध ने यहीं पर पहला उपदेश दिया था।

काशी को मुक्तिधाम भी कहा जाता है। काशी में बहुत लोग आकर मरने की इच्छा से निवास करते हैं क्योंकि ऐसा माना जाता है कि कैसा भी पापी से पापी व्यक्ति हो, वह काशी में मरने से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। पहले तो लोग "काशी करवट" स्थान पर जहां एक अन्धा कुआँ है जिसमें एक शिवलिंग है, के ऊपर लेटकर करवट लेते थे अर्थात् कुएँ में गिर कर मर जाते थे। अब यह प्रथा समाप्त हो गई है।

कबीर जी काशी में मरने से मुक्ति प्राप्त करने की बात को सच नहीं मानते थे। इसलिये वे अन्तिम समय काशी छोड़कर मगहर में चले गये थे।

काशी लखनऊ से ३०० कि० मी० इलाहाबाद से १२२ कि० मी० और देहली से ७६० कि० मी० है। यह नगर उत्तर प्रदेश के पूर्व में गंगा के किनारे पर है। बोध गया से १४३ कि० मी० और कलकत्ता से ६७८, अयोध्या से १४३ कि० मी० और खजुराहो से ४१२ कि० मी० है।

तीन पवित्र नदियों का संगम-प्रयागराज (इलाहाबाद)

प्रयाग सब तीर्थों में श्रेष्ट माना जाता है। सूर्य ग्रहण के समय तो कुरुक्षेत्र में स्नान करने का फल मिलता है, उससे १० गुणा फल उस स्थान पर स्नान करने से मिलता है जहाँ से गंगा जी किसी पर्वत के समीप से होकर बहती हैं, उस स्थान से भी अधिक १० गुणा फल काशी जी में स्नान करने से प्राप्त होता है और इन सब तीर्थों में स्नान करने से भी अधिक अनन्त गुणा फल प्रयागराज संगम में स्नान करने से मिलता है।

प्रयाग में गंगा, यमुना तथा सरस्वती तीन नदियों का संगम है। तीनों नदियों का जल अलग-अलग रास्ते से आकर एक जगह मिलता है। यमुना पश्चिम की ओर से आती हुई दिखाई देती है, इसका रंग नीला है। गंगा उत्तर की ओर से आती है इसका रंग सफेद है। सरस्वती का जल दिखाई नहीं देता वह गुप्त रूप से आकर संगम में मिलता है। प्राचीन सरस्वती कुरुक्षेत्र के पास पेहवा में बताई जाती है। ये तीनों नदियाँ संगम में एक होकर दक्षिण की ओर बहती हुई कलकत्ता चली जाती हैं और बंगाल की खाड़ी में जाकर समुद्र में मिल जाती हैं।

संगम में नाव में बैठकर जाते हैं वहाँ पर केवल कंधों तक पानी रहता है। छोटे-छोटे तख्तों का प्लेट-फार्म बना देते हैं। नाव को उस प्लेटफार्म से बान्ध देते हैं। यात्री प्लेटफार्म पर उतर कर संगम स्नान करते हैं। संगम में डुबकियाँ लगा कर यात्री प्लेटफार्म पर आ जाते हैं और पूजा पाठ करके नाव में आकर अपने कपड़े बदल लेते हैं।

संगम में आदि त्रिवेणी माधव जल रूप होकर रहते हैं। संगम से थोड़ी दूर पर पश्चिम में यमुना किनारे घृतकृत्या और मधुकृत्या तीर्थ हैं। इनको ब्रह्मा जी

ने अपने यज्ञ के लिये प्रकट किया था। इससे आगे निरंजन तीर्थ आदि हैं। प्र का अर्थ "बड़ा" और याग का अर्थ "यज्ञ" होता है। प्राचीन काल में ब्रह्मा जी ने यहां बड़ा यज्ञ किया था। इसलिये इसका नाम प्रयाग पड़ा।

प्रयागराज संगम में जहाँ बसें रुकती हैं तथा नावें खड़ी रहती हैं, वहीं पर एक बहुत प्राचीन किला है जो देखने योग्य है। कहा जाता है कि यह किला सम्राट अशोक ने बनवाया था। इस किले में पाताल पुरी मन्दिर है जिसमें अक्षय वट है। इस अक्षय वट के नीचे ही श्री रामचन्द्र जी, लक्ष्मण जी तथा सीता जी ने बैठकर यज्ञ किया था। इस अक्षय वट के नीचे से ही सरस्वती जी गुप्त रूप से बहती हुई संगम में जाकर मिल जाती हैं। यह सबसे प्राचीन अक्षय वट है। इसी अक्षय वट की शाखा काट कर जगन्नाथ पुरी में ले गये थे और वहां अक्षय वट लगाया गया था। अब यहाँ पर (प्रयाग में) अक्षय वट की केवल एक छोटी-सी जड़ ही दिखाई देती है। यहाँ पर कुछ देर बैठकर पूजा करने से मन वांछित फल प्राप्त होता है।

अक्षय वट के समीप ही अनेक देवी-देवता तथा ऋषि-मुनियों की मूर्तियाँ हैं। यात्री बड़ी श्रद्धा से इन मूर्तियों की पूजा करते हैं। कुछ सीढ़ियाँ उतर कर इस पातालपुरी मन्दिर में जाने के लिये ५० पैसे प्रति व्यक्ति लाइट खर्च देना पड़ता है। इसके अतिरिक्त यात्री अपनी श्रद्धा से मूर्तियों तथा अक्षय वट पर फल फूल तथा पैसे चढ़ाते हैं।

किले के बाहर नीचे तट पर ऋण मोचन तीर्थ है। इस तीर्थ पर स्नान करने से मनुष्य सब प्रकार के ऋणों से मुक्त हो जाता है। उसके समीप ही पाप मोचन तथा परशुराम तीर्थ हैं और गुप्त सरस्वती कुंड है। परशुराम जी की तपस्या से प्रसन्न होकर सरस्वती जी ने यहीं पर रहना स्वीकार किया था। इसके निकट ही काम तीर्थ है यहां पर कामदेव ने कामेश्वर शिव की उपासना की थी, इसे मनकामेश्वर तीर्थ भी कहा जाता है। यहां पर पूजा करने से मनुष्य की सभी कामनायें पूरी हो जाती है।

मनकामेश्वर से पूर्व यमुना जी में एक बहुत प्राचीन घाट है, वहीं पर गोघट्टन तीर्थ है। इस तीर्थ में स्नान करने से गोदान का फल प्राप्त होता है। इससे आगे पिशाच मोचन तथा कपिल तीर्थ हैं। इससे आगे इन्द्रेश्वर तीर्थ है वहीं पर तक्षकेश्वर शिव तथा तक्षक कुंड और कालीदेह है। इससे आगे बरगद घाट पर चक्र तीर्थ है।

चक्र तीर्थ से आगे सिंधु सागर है। सिंधु सागर के उत्तर में पांडव आश्रम तथा पांडव कूप हैं। इनके उत्तर में वरुण तीर्थ है। वरुण तीर्थ के उत्तर में कश्यप तीर्थ

है। इन तीर्थों से आगे अनुसूइया आश्रम है, उसके उत्तर में भारद्वाज आश्रम है तथा सीताराम आश्रम, विश्वामित्र आश्रम, गौतम आश्रम, जमदअग्नि आश्रम, वशिष्ट आश्रम और वायु आश्रम हैं।

भारद्वाज आश्रम के पूर्व की ओर उच्चश्रवा स्थान है। उसके पूर्व में वासुकी नाग का स्थान है। यहां नाग पंचमी का मेला लगता है। वासुकी स्थान के नीचे गंगा जी का पक्का घाट है। यहाँ पर भोग तीर्थ है। वासुकी के दक्षिण में गंगा के किनारे ब्रह्म कुंड है। इसी के पास गंगा जी के पश्चिम में लक्ष्मी तीर्थ तथा दक्षिण में उर्वशी कुंड है। यहीं पर सरस्वती तीर्थ है।

प्रयाग में कुम्भ स्नान का बहुत महत्त्व है। कहा जाता है कि एक समय देवताओं तथा दैत्यों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था। मंदराचल पर्वत की रई बनाई गई थी। वासुकी सर्प की रस्सी बनाई गई थी और स्वयम् विष्णु भगवान कच्छप अवतार धारण करके रई का आधार बने थे। समुद्र मंथन से १४ रत्न निकले थे। चौदहवां रत्न अमृत का घड़ा निकला था। उस अमृत को पीने के लिये देवताओं और दैत्यों में झगड़ा होने लगा। उस झगड़े में प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन में अमृत की बूंदें गिरी थीं। सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति तथा शनि ने अमृत के कुम्भ को टूटने से बचाया था। इस लिये इन चारों राशियों के योग होने पर अर्थात् १२ वर्ष में इन चारों स्थानों पर कुम्भ का मेला लगता है जिसमें स्नान करने से यमराज का भय नहीं रहता। यह मेला १२ वर्ष में लगता है। तथा ६ वर्ष में अर्ध कुम्भ का मेला लगता है।

प्रयाग में अनेक तीर्थों तथा ऋषि-मुनियों के आश्रमों के अतिरिक्त आनन्द भवन देखने योग्य स्थान है। यह एक ऐतिहासिक महत्त्व का स्थान है जिसका हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से सीधा सम्बन्ध है। यहाँ पर अनेक महान निर्णय लिये गये थे।

आनंद भवन में पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के परिवार की निजी वस्तुएँ रखी हैं। रहने-सहने, खाने-पीने तथा कार्य करने के कमरे हैं। उनके माता-पिता के कमरे हैं। इन्दिरा गान्धी जी का कमरा है। जहां पर इन्दिरा जी का फिरोज गाँधी के साथ विवाह हुआ था वह स्थान भी एक चबूतरे के रूप में विद्यमान है। महात्मा गाँधी जी के कार्य करने व सभा बुलाने के कमरे हैं।

आनन्द भवन देखने के लिये दो रुपये प्रति व्यक्ति शुल्क देना पड़ता है जो

कि उचित प्रतीत नहीं होता। क्योंकि बहुत लोग शुल्क होने के कारण बिना देखे ही आ जाते हैं। अतः राष्ट्रीय महत्त्व के इस स्थान को देखने के लिये कोई शुल्क नहीं होना चाहिये।

प्रयाग का दूसरा नाम "इलाहाबाद" है। सम्राट अकबर ने प्रयाग राज क्षेत्र को १५८० में जीत लिया था और इलाहाबाद नाम रख दिया था तब से प्रयाग को इलाहाबाद कहने लगे। यहां के रेलवे स्टेशन का नाम भी इलाहाबाद है। इलाहाबाद वाराणसी से १२३ कि० मी०, दिल्ली से ६२७, पटना से २३०, कलकत्ता से ८१४, आगरा से ८४० और लखनऊ से २२७ कि० मी० है। खजुराहो से सड़क मार्ग द्वारा २८८ कि० मी० है।

इलाहाबाद उत्तर प्रदेश में है। १८५८ में ब्रिटिश सरकार ने इलाहाबाद को उत्तर प्रदेश की राजधानी बनाया था जो बाद में लखनऊ में स्थातंरित की गई। १८८७ में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई थी जो अब भी मुख्य और प्राचीन यूनिवर्सिटियों में से एक है। यहां पर हाई कोर्ट भी है।

इलाहाबाद में ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें तथा होटल हैं। हम रात्रि में बागड़ धर्मशाला में ठहरे थे और अगले दिन संगम स्नान करके तथा दर्शनीय स्थानों को देखकर वापिस दिल्ली आ गये थे।

धार्मिक नगर-ऋषिकेश

ऋषिकेश हरिद्वार से २३ कि० मी० तथा देहरादून से २६ कि० मी० है। रेल तथा बसों द्वारा जा सकते हैं। ऋषिकेश से बदरीनाथ, केदारनाथ, गांगोत्री तथा यमुनोत्री के लिये भी प्रस्थान किया जा सकता है।

ऋषिकेश अत्यन्त पवित्र धार्मिक नगर है तथा यहाँ पर मांस, मछली, अंडा आदि खाना, पकाना तथा बेचना दण्डनीय अपराध है।

दर्शनीय स्थान

भरत मन्दिरः---यह मन्दिर नगर के बीच में बाजार के पश्चिमी किनारे पर है। भरत जी ने इस स्थान पर तपस्या की थी। इसलिये उनके नाम पर यह मन्दिर है। यह भी कहा जाता है कि प्राचीन काल में इस स्थान पर ऋषियों ने भगवान विष्णु की तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें दर्शन दिये और कहा कि इस स्थान पर मेरी मूर्ति भरत के नाम से विख्यात होगी। अतः यह विष्णु भगवान के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है।

मुख्य मन्दिर में प्रवेश करने से पहले सात दालान पार करने पड़ते हैं। पहले दालान के बाहर पानी बहता रहता है जिससे मन्दिर में प्रवेश करने से पहले यात्रियों के पाँव धुल जाते हैं। यहाँ पर संस्कृत विद्यालय भी है तथा होस्टल है।

त्रिवेणी घाटः---भरत मन्दिर से पूर्व की ओर बाजार के अंत में गंगा तट पर कुबजा भ्रक एक पक्का घाट है जिसमें तीन स्रोतों से जल आता है। इसलिये इसे त्रिवेणी घाट कहा जाता है। यहाँ पर स्नान करने वाले स्त्री पुरुषों की भीड़ लगी रहती है। स्त्रियों का अलग घाट नहीं है, केवल कपड़े बदलने के लिये अलग जगह बनी हुई है।

श्री रघुनाथ मन्दिरः---त्रिवेणी घाट के समीप ही दक्षिण की ओर भगवान श्री रघुनाथ जी का मन्दिर है। मन्दिर में प्रवेश करने से पूर्व ऋषि कुंड है जो एक तालाब

की शक्ल में है। ऋषि कुंड में पितरों का तर्पण करके फिर मन्दिर में प्रवेश करते हैं।

इसके अतिरिक्त बाजार में कई छोटे-छोटे मन्दिर हैं।

गुरुद्वारा

ऋषिकेश नगर से लक्ष्मण झूले की तरफ जाते समय गंगा के किनारे पर एक बहुत बड़ा गुरुद्वारा है जो कि कुछ समय पहले हेम कुंड मैनेजमैंट ट्रस्ट ने बनाया है। यहाँ पर यात्रियों के ठहरने योग्य आधुनिक सुख सुविधा युक्त कमरे हैं।

लक्ष्मण झूला:---ऋषिकेश नगर से उत्तर की ओर ४-५ कि० मी० पर लक्ष्मण झूला है। कहा जाता है कि लक्ष्मण जी ने गंगा को पार करने के लिये अपने बाणों से एक पुल तैयार किया था और उस पुल पर झूल-झूल कर गंगा जी को पार किया था। अब इस पुल पर बाणों के स्थान पर फौलादी रस्सों का पुल बना हुआ है यात्री इस पुल द्वारा गंगा जी को पार करते हैं। पुल पर चलते हुए यह पुल हिलता है और ऐसा लगता है कि जैसे किसी झूले में झूल रहे हों। लक्ष्मण झूला ४५० फुट लम्बा है और पानी की सतह से ७० फुट ऊँचा है।
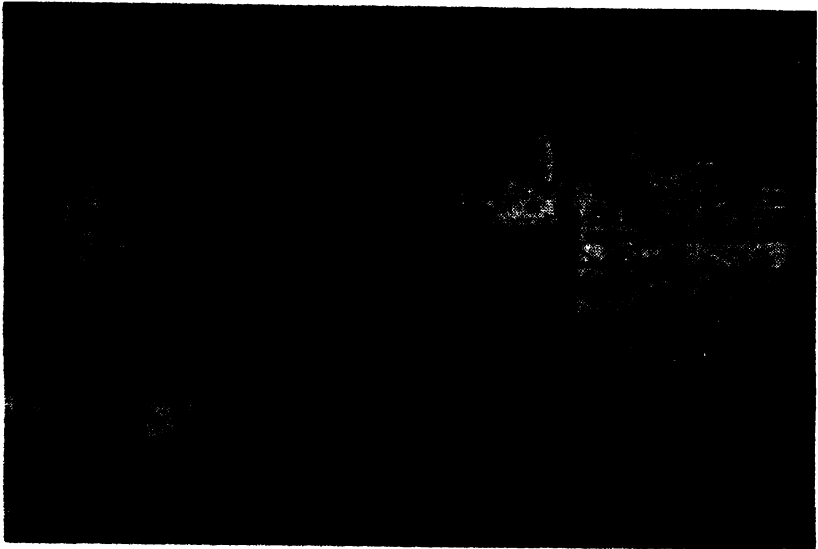
लक्ष्मण जी का मन्दिर:---लक्ष्मण झूले के पास ही लक्ष्मण जी का प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर में सब अवतारों तथा देवी देवताओं की मूर्तियाँ है। मन्दिर के थोड़े फासले पर लक्ष्मण घाट है। यहाँ स्नान करने से बड़ा फल प्राप्त होता है।

श्री सिद्धपीठ स्वर्ग निवास मन्दिर

लक्ष्मण झूले के मन्दिरों की श्रेणी में यह प्रमुख सिद्धपीठ स्वर्ग निवास मन्दिर है। यह मन्दिर लक्ष्मण झूला पार करके पूर्व की तरफ है। इस मन्दिर में १३ मंजिलें हैं। प्रत्येक मंजिल पर अनेक देवी देवताओं के मन्दिर है जो देखने योग्य हैं। पहली मंजिल पर देवी देवताओं के अतिरिक्त श्री १०००८ योगीराज स्वामी कैलाशानन्द जी की गद्दी है।

श्री गंगा मन्दिर सेवा सदनम्

यह मन्दिर १३ मंजिले मन्दिर के सामने है। इस मन्दिर में अनेक देवी देवताओं, २४ अवतारों, द्रोपदी सहित पांचों पांडवों, धृष्टघुमन, जय विजय, गरुड़, शिवरी के बेर, धर्मराज की बैकुंटपुरी के अतिरिक्त श्री १००८ फलाहारी बाबा महन्त मणिराम दास जी की गद्दी है। यहाँ पर उन्होंने तपस्या की थी। मन्दिर में अंडर ग्राउंड शिवपुरी भी है जिसमें ब्रह्मा, शिव पार्वती, ब्रह्मचारिणी तथा सीताराम लक्ष्मण जी की मूर्तियां हैं।

आदि बदरी नारायण तथा शत्रुघ्न मन्दिर

यह मन्दिर लक्ष्मण झूले से पहले लगभग दो कि० मी० दक्षिण की ओर है। इस क्षेत्र को मुनि की रेती कहा जाता है। यहाँ पर अनेक मन्दिरों के अतिरिक्त आदि वदरी नारायण तथा शत्रुघ्न का प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर भी देखने योग्य है।

श्री शिवानन्द झूला:---मुनि की रेती में १०-१५ साल पहले लक्ष्मण झूले की तरह फौलादी रस्सों का पुल बनाया गया था। इससे पहले गंगा को पार करने के लिये केवल मोटर बोट में जाना पड़ता था। अब यात्री अपनी सुविधा अनुसार इस पुल द्वारा या मोटर बोट द्वारा गंगा को पार कर सकते हैं। पहले इस पुल का कोई नाम नहीं था। इस लिये लोगों ने इसका नाम राम झूला रख दिया था; परन्तु २७-३-१९८६ से उत्तर प्रदेश सरकार के अध्यादेश अनुसार इस पुल का नाम शिवानन्द झूला हो गया है।

स्वर्ग आश्रम तथा गीता भवन:---शिवानन्द झूले के पूर्व की ओर पुल पार करके स्वर्ग आश्रम देखने योग्य मन्दिर है। इस मन्दिर में २४ अवतारों की मूर्तियां है तथा पौराणिक कथाओं के आधार पर बहुत सुन्दर झाँकियाँ है। यहीं पर गीता भवन है जिसका निर्माण गीता प्रेस गोरखपुर ट्रस्ट द्वारा कराया गया है। गीता भवन की दीवारों पर रामायण तथा महाभारत की कथाओं के चित्र हैं। यहाँ पर लक्ष्मी

नारायण का भव्य मन्दिर है। गीता भवन का उद्देश्य समाज सेवा तथा धार्मिक भावनाओं को जागृत करना है।

परमार्थ निकेतनः---गीता भवन से थोड़ा आगे चल कर परमार्थ निकेतन है। यहाँ पर पौराणिक कथाओं पर आधारित बहुत सुन्दर मूर्तियाँ हैं और चारों तरफ अनेक देवी देवत्राओं की मूर्तियां हैं जो शीशों के अन्दर हैं। एक ही मूर्ति हजारों की संख्या में दिखाई देती है। यहाँ पर सतयुग तथा कलयुग के दृष्टांतों का समन्वय करके मूर्तियां बनाई गई हैं और मानव को पतन से बचाने का प्रयास किया गया है। यहां पर एक बहुत बड़ा हॉल है जिसमें संत महात्मा प्रवचन देते हैं यहाँ यात्रियों के ठहरने की भी व्यवस्था है।

चोटीवाला भोजनालयः---यहाँ पर एक प्रसिद्ध चोटीवाला भोजनालय है जिसमें भोजन करने के लिये टोकन लेने वालों की बहुत लम्बी लाइन लगी रहती है। यहाँ दिलचस्प बात यह है कि भोजनालय के बाहर कुर्सी पर एक रूंड-मुंड सिर पर केवल एक चोटी वाला व्यक्ति बैठा रहता है। उसके शरीर आंखों और भौहों का श्रृंगार देखने योग्य होता है। और वह कुर्सी पर बैठा हुआ एक सुन्दर मूर्ति के समान प्रतीत होता है। यात्री लोग उस चोटी वाले के साथ फोटो खिचवा कर बड़े खुश होते हैं।

ऋषिकेश नगर में ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें हैं। हम काली कमली वाले की धर्मशाला में ठहरे थे। २१ रुपये चन्दे के रूप में तीन दिन ठहरने के लिये दिये थे। कमरे में बिजली पंखा न होने के कारण गर्मी में बुरा हाल हो गया था। सब बच्चे परेशान हो गये थे। यात्रियों को ऊपर छत पर जाकर सोना पड़ता था। बारिश आने पर नीचे भागना पड़ता था। दरी गद्दों का भी कोई प्रबन्ध नहीं था। नीचे फर्श पर ही लेटना पड़ा था।

धार्मिक नगर---हरिद्वार

हरिद्वार शिवालिक की रमणीक पर्वत श्रेणियों में घिरा भारत का प्रमुख पूजा स्थल है। लगभग ३०० मी० की ऊंचाई पर परम पवित्र माँ गंगा के किनारे पर बसा हुआ है। यह दिल्ली से २६७ कि० मी०, की दूरी पर उत्तर प्रदेश में है। गंगा नदी गंगोत्री से निकल कर पहाड़ों को अपने वेग से तोड़ती-फोड़ती, मैदान में सर्व प्रथम इसी स्थान पर आकर शांत रूप में प्रवाहित होती है। स्कंध पुराण में हरिद्वार को मायापुरी का नाम दिया गया है। यह सप्तपुरियों में से एक है।

बदरीनाथ अर्थात् भगवान विष्णु के स्थान पर जाने के लिये यह प्रथम् द्वार है। विष्णु भगवान को हरि भी कहते हैं। इस लिये इसका नाम हरिद्वार है। यह हर-हर महादेव के कैलाश पर जाने का भी प्रथम द्वार है। इसलिये हरद्वार भी कहते हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिये मानव की मृत्यु के पश्चात् उसकी अस्थियाँ हरिद्वार में लाकर गंगा जी में प्रवाहित करते हैं। इसलिये इसको मोक्ष द्वार भी कहते हैं। इस स्थान पर ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश निवास करते हैं इसलिये इसे ब्रह्मपुरी भी कहा जाता है।

यह एक अत्यन्त पवित्र तथा धर्मिक नगर है। यहाँ पर मांस मछली अंडा खाना तथा बेचना कानूनन अपराध है। गंगा जी में से मछली पकड़ना भी दण्डनीय अपराध है। अफीम, चरस, गांजा, शराब, सुलफा आदि पदार्थों का सेवन भी वर्जित है।

यात्री लोग हरिद्वार में पिंडदान तर्पण तथा अस्थियाँ प्रवाहित करने के लिये गंगा में स्नान करने के लिये तथा मन्दिरों के दर्शन करने के लिये आते हैं।

गंगा में स्नान करने के लिये कई घाट बने हुए हैं जो निम्नलिखित हैं।

(१) ब्रह्मकुंड या हर की पैड़ीः---यह सब से महत्त्वपूर्ण घाट है। यहाँ लाखों लोग प्रतिदिन स्नान करते हैं। यह रेलवे स्टेशन से लगभग दो कि० मी० उत्तर की

ओर है। कहा जाता है कि इसी स्थान पर राजा श्वेत ने ब्रह्मा जी का तप किया था। ब्रह्माजी ने यहीं पर राजा श्वेत को दर्शन देकर विष्णु तथा महेश सहित यहीं पर रहने का वरदान दिया था। इसलिये इसे ब्रह्मकुंड कहा जाता है।

राजा विक्रमादित्य के बड़े भाई भर्तृहरि ने भी इसी स्थान पर तपस्या की थी और परम् पद प्राप्त किया था। विक्रमादित्य ने अपने भाई भर्तृहरि की स्मृति में यहाँ पैड़ियाँ बनवाई थीं। इस लिये इस घाट का नाम हर की पैड़ी पड़ गया। सन् १९३८ में सेठ सूरजमल ने इस घाट को पक्का, लम्बा, चौड़ा तथा बहुत सुन्दर बनवा दिया है। यहाँ पर महिलाओं के स्नान करने के लिये एक अलग पक्का घाट बना हुआ है। परन्तु अधिकतर महिलायें पुरुषों के साथ ही स्नान करने में आनन्द लेती हैं।

इस घाट पर गंगा जी के जल के अन्दर प्राचीन श्री गंगा मन्दिर है। इसे आमेर के राजा मिर्जा जयसिंह ने १६वीं शताब्दी में बनवाया था। इस मन्दिर के साथ ही जल में परिक्रमा वाला आदि सनातन मन्दिर है। इसके अतिरिक्त पौराणिक श्री गंगा माँ एवम् राजा भगीरथ तथा हरिचरण मन्दिर हैं। लक्ष्मी नारायण मन्दिर तथा प्राचीन नारायण मन्दिर, श्री सत्यनारायण मन्दिर, संतोषी माता मन्दिर तथा प्राचीन मुख्य श्री गंगा मन्दिर भी हैं। इसी घाट के सामने गंगा जी के बीच में एक और घाट है। इस घाट पर बिड़ला सेठ ने घंटा घर बनवाया है। लोग इस घाट पर गंगा जी में स्नान करने के बाद मन्दिरों में पूजा पाट करते हैं तथा गरीबों को भोजन खिलाते हैं।

सुभाष घाटः---हर की पैड़ी से सटा हुआ दक्षिण की ओर सुभाष घाट है। यहाँ पर सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा है। घाट के सामने सेवा समिति का कार्यालय है तथा धर्मार्थ औपधालय है। माला, सिन्दूर आदि बेचने वाले भी बैठे रहते हैं। कुछ सस्ते भोजनालय भी हैं। बीच में भिखारियों की लाइन लगी रहती है। श्रद्धालु लोग उन्हें भोजन खिलाते हैं।

गऊ घाटः---सुभाष घाट से सटा दक्षिण की ओर गऊ घाट है। यहाँ पर स्नान करने से गऊ दान का पुण्य प्राप्त होता है।

कुशा घाटः---गऊ घाट से थोड़ा आगे दक्षिण की ओर चलकर कुशा घाट है। यहाँ पर भगवान दत्तात्रे ने एक टांग पर खड़े होकर एक हजार वर्ष तक तपस्या की थी। मकर सक्रान्ति पर यहाँ स्नान तथा पिंडदान करने का महत्त्व है।

श्रवण नाथ घाटः---यह घाट शान्तानन्द जी ने बनवाया था। महिलाओं के लिये अलग घाट है। यहाँ पंचमुखी महादेव जी का मन्दिर है। पास में श्रवण नाथ मन्दिर तथा पुस्तकालय है। श्रवण कुमार ने अपने माता पिता को बहंगी में बिठाकर सब तीर्थों की यात्राएं कराई थीं।

मन्दिर

मनसा देवी का मन्दिरः---हर की पैड़ी से पश्चिम की ओर बाजार में से मनसा देवी मन्दिर जाने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। यह मन्दिर शिवालिक पर्वत पर लगभग ६०० मी० की ऊँचाई पर है। ट्राली से भी मन्दिर तक जा सकते हैं। यह ५१ सिद्धपीटों में से एक है। परन्तु मनसा देवी शक्तिपीठ हिमाचल में माना जाता है।

मनसा देवी माँ दुर्गा का ही रूप है। वह अपने भक्तों की मनसा अर्थात् कामना पूरी करती है। मन्दिर में प्रमुख देवी की प्रतिमा के तीन सिर तथा पाँच भुजायें हैं। बाईं तरफ हवन कुंड तथा शीतला देवी का मन्दिर है दाईं तरफ चामुंडा देवी तथा श्री लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर है। सामने शंकर भगवान का मन्दिर है। पश्चिम में शिव जी का प्राचीन मन्दिर है। मन्दिर के दक्षिण में एक बहुत प्राचीन वट वृक्ष भी है जिसकी शाखाओं पर करोड़ों की संख्या में लाल धागे बंधे हुए हैं। यात्री अपनी मनोकामना पूरी करने के लिये धागे बांधते हैं। माँ भगवती मनसा देवी जब उनकी मनोकामना पूरी कर देती है तब वे यहाँ आकर उन धागों को खोलते हैं।

मन्दिर में यात्रियों के विश्राम करने के लिये एक बड़ा हाल तथा कुछ कमरे

बने हुए हैं। जलपान तथा भोजन करने के लिये दुकाने हैं। मन्दिर के पीछे से एक रास्ता सूर्यकुंड को जाता है। यहीं से नीचे उतरने का रास्ता है जो हर की पैड़ी पर चला जाता है।

चंडी देवी:---यह मन्दिर गंगा जी की बाएँ तरफ पर्वत पर है जो पांच कि० मी० के फासले पर है। बहुत ही कम यात्री इस मन्दिर को देखने जाते हैं। अधिकतर लोग हर की पेड़ी से ही माँ चंडी देवी के दर्शन कर लेते हैं।

माया देवी:---माया देवी का मन्दिर दक्षिण अखाड़े के पास है। यहाँ पर भैरों ज़ी का मन्दिर है। अष्टभुजी शिव तथा दुर्गाजी की मूर्तियाँ हैं। दुर्गाजी के एक हाथ में त्रिशूल तथा एक हाथ में नर मुंड है। यह मन्दिर ११वीं शताब्दी का बना हुआ है।

भोला गिरी मन्दिर:---यह लाल रंग का बहुत सुन्दर मन्दिर है। यहाँ बंगाली साधू रहते हैं। मन्दिर में भोला गिरी महाराज, शंकर भगवान, शंकराचार्य तथा महावीर जी की अलग-अलग मूर्तियां हैं। इस मंदिर के बाहर गंगाजी के किनारे बिड़ला घाट है। यहां लोग गंगाजी में स्नान करते हैं।

विलकेश्वर महादेव:---इस मन्दिर में विलकेश्वर महादेव की दो मूर्तियां हैं। एक मन्दिर के अंदर और दूसरी मंन्दिर के बाहर है। यहाँ पर विलूव (बेलगिरी) का वृक्ष था, उसी के नीचे महादेव जी की मूर्ति थी। कहा जाता है कि किसी समय देवता प्रातःकाल पूजा के लिये कैलाश पर्वत पर जाते थे। एक दिन शिवजी ने कुबेर देवता को अनुपस्थित पाया। अनुपस्थिति का कारण मालूम हुआ कि कुबेर अपनी विल्वस्तनी स्त्रियों की रतिक्रीड़ा में आसक्त हैं। शिवजी को सहन नहीं हुआ कि मेरी भक्ति की बजाय प्रातःकाल में विल्वस्तनी स्त्रियों में आसक्त है। इसलिये शाप दिया कि कुबेर अति शीघ्र विल्व वृक्ष हो जाये। तदनुसार कुबेर विल्ववृक्ष हो गया था। शिव भक्त होने के कारण शिव ने विल्व वृक्ष के मूल में वास किया। इस लिये विल्केश्वर महादेव कहलाये।

गुरुद्वारा श्री गुरुसिंह सभा:---बिल्केश्वर मन्दिर को जाते समय प्राचीन गुरुद्वारा है। यह सिक्खों का पवित्र स्थान है।

गीता भवन:---यह १९४६ में पंजाब की सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ने बनवाया था। इस में विष्णु भगवान की संगमर्मर की मूर्ति है। यहाँ पर यात्रियों के ठहरने की भी व्यवस्था है तथा रातदिन भजन कीर्तन और उपदेश होते रहते हैं।

श्री जयराम आश्रमः---हर की पैड़ी से लगभग आधा कि० मी० उत्तर में ऋषिकेश जाने वाली सड़क पर श्री जयराम आश्रम है। इसके संस्थापक श्री देवेन्द्र ब्रह्मचारी हैं और इस समय मुख्य प्रबन्धक उनके शिष्य श्री ब्रह्म स्वरूप ब्रह्मचारी जी हैं। यह आश्रम १६७६ में स्थापित हुआ था। इस आश्रम में यात्रियों के निःशुल्क ठहरने की व्यवस्था है तथा धर्मार्थ औषधालय भी है। यहाँ पर प्रतिदिन हजारों साधुओं को भोजन कराया जाता है।

श्री जयराम आश्रम में मुख्य मन्दिर राधा कृष्ण का है। श्री हनुमान जी तथा माता दुर्गा जी के मन्दिर हैं। इस मन्दिर में विशेष देखने योग्य बिजली से चलने वाली मूर्तियों की झाँकियाँ हैं।

भीम गोडा कुंडः---श्री जयराम आश्रम से उत्तर की ओर थोड़ी दूर आगे चल कर उसी सड़क पर भीम गोडा कुंड है तथा श्री भीमसेन का प्राचीन मन्दिर है। इसके अतिरिक्त गुप्त गंगा, हनुमान मन्दिर, माँ मनसा देवी का मन्दिर, माता कुन्ती का मन्दिर, दुर्गा भवानी का मन्दिर, पांडुवों का मन्दिर तथा बावड़ी है। यहाँ पर भीम ने पर्वत पर गोडा मार कर गंगा प्रकट की थी और अपनी माता कुन्ती को पानी पिलाया था। इसलिये इसको भीमगोडा कुंड कहते हैं।

भारत माता का मन्दिरः---भीमगोडा से ५ कि० मी० उत्तर की ओर सप्तऋषि मार्ग पर भारत माता का मन्दिर है। यह ८ मंजिला है। ऊपर जाने के लिये लिफ्ट लगी है जो छठी मंजिल पर उतार देती है। ऊपर की मंजिल पैदल जानी पड़ती है। वापसी में सब मन्दिरों के दर्शन करते हुए पैदल नीचे आना पड़ता है। इस मन्दिर के संस्थापक श्री स्वामी सत्यमित्रा नन्द गिरी जी महाराज हैं।

सप्तऋषि आश्रमः---यह मन्दिर हर की पैड़ी से लगभग सात कि० मी० उत्तर की ओर है। इस मन्दिर में कीर्ति स्तम्भ है। इससे आगे गणेश जी का मन्दिर है। गणेश मन्दिर के सामने यज्ञशला है। यज्ञशला से आगे चलकर चार अलग-अलग मन्दिर हैं। इनमें दुर्गा मन्दिर, संकट मोचन हनुमान श्री राधा कृष्ण तथा सप्तऋषि मन्दिर हैं।

सप्तऋषि मन्दिर में मुख गंगेश्वर महादेव का मन्दिर है। उनके चारों तरफ सप्तऋषियों की मूर्तियां हैं। कहा जाता है कि जब भागीरथ गंगा जी को यहाँ लाया तब सातों ऋषि यहाँ तप कर रहे थे। गंगा ने उनकी तपस्या में बाधा न डालने के कारण अपनी सात धारायें कर लीं और थोड़ा आगे चल कर अपनी सातों धाराएँ फिर एक कर ली।

सप्तऋषि मन्दिर के सामने श्रीराम पंचायती मन्दिर है। इस मन्दिर से आगे

चलकर भारतभूषण. मदनमोहन मालवीय कीर्ति मन्दिर है। इससे आगे चलकर त्रिपति बाला जी का मन्दिर है। इससे आगे पदमावती देवी जी का मन्दिर है। इन मन्दिरों के पीछे पूर्व से पश्चिम तक तीन लाइनों में ऋषियों की अलग-अलग कुटियाँ हैं।

इसके अतिरिक्त सप्तऋषि मार्ग पर परम् धाम आश्रम, पावनधाम, चित्रकूट अखंड आश्रम, श्री श्री १०८ स्वामी भूमानन्द तीर्थ, ब्रह्मऋषि दुधारी बर्फानी आश्रम, शान्ति कुंज तथा साधुवेला आश्रम भी देखने योग्य है।

कनखलः—कनखल भी हरिद्वार के अन्तर्गत आता है। 'का' का अर्थ कौन, 'न' का अर्थ नहीं, 'खल' का अर्थ पापी, अर्थात् कोई ऐसा पापी व्यक्ति नहीं जिसका गंगा जी में स्नान करने से उद्धार नहीं होता अर्थात् गंगाजी में स्नान करने से पापियों का भी उद्धार हो जाता है। यह हरिद्वार रेलवे स्टेशन से पूर्व की ओर ३ कि० मी० है। प्राचीन काल में यहीं पर राजा दक्ष की राजधानी थी। यहीं पर राजा दक्ष ने महायज्ञ किया था और अपने दामाद भगवान शिव तथा पुत्री सती को निमंत्रित नहीं किया था। सती बिना बुलाये ही अपने पिता के महायज्ञ में चली गई और वहाँ पर पिता द्वारा अपने पति शिव का तिरस्कार सहन न करके यज्ञ के अग्नि कुंड में कूद पड़ी थी। अब इस स्थान पर दक्षेश्वर मन्दिर है। मन्दिर के सामने सती कुंड है। इसी कुंड में सती जी ने अपने प्राणों की आहुति दी थी।

कनखल में दक्ष घाट है। यहाँ पर अस्थियाँ प्रवाहित करने, पिंडदान करने तथा स्नान करने का महत्त्व है। दक्ष मन्दिर के पीछे की तरफ बंगाल की सुविख्यात आनन्दमयी माता का मन्दिर है तथा सती घाट के पास गुरु अमर दास जी का प्राचीन गुरुद्वारा है।

इसके अतिरिक्त कनखल में पारे का मंदिर, श्री जगत गुरु आश्रम, मानव कल्याण आश्रम, ज्वालापुर अवधूत मंडल, श्री शंकर सदन ज्वालापुर आदि भी देखने योग्य हैं।

हरिद्वार में तीर्थ पुरोहितों (पंडों) का भी एक वर्ग है जो मृतकों के नाम, पते, गोत्र तथा परिवार सम्बन्धित सब विवरण अपने बहीखातों में लिखते हैं। इनकी बहियों में यजमानों का पुश्त दर पुश्त इतिहास लिखा जाता है। इसलिये जो व्यक्ति मृतकों की अस्थियाँ प्रवाहित करने जाते हैं वे अपने क्षेत्र के पंडे को मालूम करके उसके बहीखातों में उसका विवरण लिखवा कर आते हैं। हरिद्वार में ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें तथा होटल हैं।

उत्तराखंड चारधाम केदारनाथ, बदरीनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री तथा अन्य मुख्य नगर

उत्तराखंड में उत्तर प्रदेश के ८ पहाड़ी जिले हैं। चमोली, उत्तर काशी, पिथौरागढ़, नैनीताल, अलमोड़ा, पौड़ी, टिहरी और देहरादून। इन आठ पहाड़ी जिलों को मिला कर उत्तराखंड या कुमाऊँ कहा जाता है। पहले मानसरोवर---कैलाश भी उत्तराखंड में था; लेकिन अब वे चीन का भाग बन गया है। उत्तराखंड में चार महान पूजास्थल हैं। (१) यमुना का उद्‌गम यमुनोत्री, (२) गंगा का उद्‌गम गंगोत्री, (३) केदारनाथ (४) बदरीनाथ। इन चारों पूजा स्थलों को मिला कर केदारखंड कहा जाता है। पहले यात्रियों को पैदल जाना पड़ता था लेकिन अब चारों स्थानों तक सड़कें बन गई हैं और इन पूजा-स्थलों के निकट तक बसें जाती हैं। केवल थोड़ा-सा मार्ग पैदल चलना पड़ता है।

उत्तराखंड को देवताओं की भूमि कहा जाता है। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियाँ, पहाड़ों से गिरती जलधाराएँ, नदियाँ और झरने, चीड़ तथा देवदार के वृक्ष, यात्रियों का मन मोह लेते हैं। पर्यटन की दृष्टि से भी यह स्थान बहुत उत्तम है। उनको मसूरी, नैनीताल, रानीखेत, अलमोड़ा, भुवाली, कोसानी, हेमकुंड, फूलों की घाटी जैसे हिल स्टेशनों का आनन्द प्राप्त हो सकता है।

कुछ आवश्यक बातें:---श्री बदरीनाथ जी तथा केदारनाथ जी के पट मई के प्रथम सप्ताह में खुलते हैं। यमुनोत्री, गंगोत्री आदि स्थानों के पट भी वैशाख १५ के पूर्व खुल जाते हैं और अक्टूबर के अन्त तक सभी जगह के पट खुले रहते हैं।

शाम और सुबह के समय बहुत ठंड रहती है। दिन में सूरज निकलने पर ठंड कम हो जाती है। स्वैटर, मफलर, ऊनी दस्ताने, मौजे, कम्बल आदि लेकर जाना चाहिये। वर्षा होने का अंदेशा रहता है, इसलिये छाता या बरसाती भी रखनी चाहिये।

सहारे के लिये एक लाठी भी रखनी चाहिये। आयोडेक्स, बरनौल, बाम, वैसलीन, माचिस, मोमबती, टार्च, पानी की बोतल, सूखे फल और मेवे, इमली, नींबू आदि भी साथ रखने चाहियें। किसी वृक्ष, फल-फूल या पत्ते को छूना नहीं चाहिये क्योंकि कई विषैले वृक्ष होते हैं जिनको सूंघने से भी कष्ट हो सकता है। एक बिच्छू घास होती है जिसको छूने से जलन पैदा हो जाती है। कुछ जहरीली मक्खियाँ होती हैं जिनके काटने पर पहले खुजली और फिर फोड़े हो जाते हैं। पैदल यात्रियों को सुबह चार बजे यात्रा पर निकल जाना चाहिये। हर दो कि० मी० पर चट्टी मिल जाती है। चट्टी पड़ाव को कहते हैं जहाँ दो चार दुकानें, ढाबे तथा विश्राम करने की जगह मिल जाती है। गरम-गरम चाय तथा दूध तैयार मिलता है। सरकारी नलों का पानी पीना चाहिये। चढ़ाई के लिये घोड़े मिल जाते हैं जिनका किराया १०० रुपये प्रति दिन है। डांडी-पालकी आदि का किराया १७० से लेकर ३५० रुपये प्रति दिन है। यात्री श्रद्धा, भक्ति और विश्वास मन में उत्पन्न कर के जायें तभी यात्रा का फल प्राप्त होगा।

केदारनाथ यात्राः—ऋषिकेश से देवप्रयाग ७ कि० मी० है। बदरीनाथ जाने वाले ऋषिकेश से बस द्वारा सीधे देवप्रयाग पहुँचते हैं। देवप्रयाग अलकनन्दा और भागीरथी जी के संगम पर बसा हुआ है। यहाँ पर श्री रघुनाथ जी की श्याम वर्ण की विशाल मूर्ति है। संगम पर हरिकुंड में स्नान, दान आदि तथा पितृ श्राद्ध किया जाता है। यहाँ बाबा काली कमली वाले की विशाल धर्मशाला है।

देवप्रयाग से ३५ कि० मी० पर श्रीनगर है। बदरीनाथ जाने वाले यात्री श्री नगर हो कर ही जाते हैं। यहाँ पर एक अच्छा बाजार डाकखाना, तारघर, सिनेमा, हाईस्कूल, कॉलेज, अस्पताल आदि है।

श्रीनगर से ३४ कि० मी० पर रुद्रप्रयाग है यहाँ पर मंदाकिनी और अलकनंदा का संगम है। यहाँ से एक रास्ता सीधा बदरीनाथ जी को जाता है और दूसरा रास्ता केदारनाथ जी को जाता है। यात्री पहले केदारनाथ जाते हैं। रुद्रप्रयाग से केदारनाथ ८४ कि० मी० है।

रुद्रप्रयाग से केदारनाथ जाने के लिये एक सुरंग में से होकर जाना पड़ता है। सुरंग से आगे मंदाकिनी के किनारे-किनारे तिलवाड़ा नामक घाटी तक जाते है जो रुद्रप्रयाग से ६ कि० मी० है। टिहरी से केदारनाथ जाने वाली सड़क भी इसी स्थान पर आकर मिल जाती है। तिलवाड़ा से आगे १० कि० मी० पर मंदाकिनी के किनारे अगस्त मुनि का आश्रम है। यहाँ पर अगस्त मुनि ने तपस्या की थी। अगस्त मुनि से १५ कि० मी० कुंड है। यहाँ से पांच कि० मी० पर गुप्तकाशी है।

गुप्तकाशी में शिवजी के दर्शन होते हैं। गुप्तकाशी से दो रास्ते हो जाते हैं। एक रास्ता केदारनाथ और दूसरा रास्ता चमोली जाता है।

गुप्तकाशी से ११ कि० मी० पर नाला है। यहाँ पर दुर्गा की पूजा ललिता देवी क नाम से की जाती है। नाला से डेढ़ कि० मी० नारायणकोटि और नारायणकोटि से फाटा होकर रामपुर पहुंचते हैं

रामपुर से तीन कि० मी० पर सोमप्रयाग है यहाँ पर सोमगंगा और मंदाकिनी का संगम है। केदारनाथ के लिये बस यहीं तक जाती है। इससे आगे १४ कि० मी० (सीधे रास्ते से) केदारनाथ है। यहाँ से पैदल, घोड़ा या गाड़ी-पालकी आदि से केदारनाथ जाते हैं।

सोमप्रयाग से ४ कि० मी० पर त्रियुगी नारायण है। यहाँ पर भगवान का प्राचीन मन्दिर है। यहाँ ब्रह्मकुंड, रुद्रकुंड और सरस्वती कुंड हैं। त्रियुगी नारायण से ६ कि० मी० उतर कर सोमद्वारा पहुँचते हैं। सोमद्वारे से गौरी कुंड ५ कि० मी० और गौरीकुंड से ७ कि० मी० पर रामबाड़ा है। रामबाड़ा से ४ कि० मी० देवदखिनी है। देवदखिनी से केदारनाथ जी का मन्दिर दिखाई देता है जो लगभग डेढ़ कि० मी० है।

केदारनाथ मन्दिर के दर्शनः---केदारनाथ का मन्दिर ११७८५ फीट की ऊँचाई पर है। यह मन्दिर द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। तीर्थ यात्री सर्वप्रथम् केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने के पश्चात ही बदरीनाथ दर्शन करने के लिये जाते है। कहा जाता है कि यह मन्दिर पांडवों ने बनवाया था। पांडव गोत्रवध तथा गुरु हत्या के पाप से छुटने के लिये केदारेश्वर दर्शनार्थ यहाँ आये। तब श्री शिव भैंसे का रूप बना कर वहाँ से भाग गये। पांडवों की प्रार्थना पर शिव अपने पिछले धड़ से वहाँ आकर स्थित हुए। मन्दिर के ठीक बीच में श्री केदारनाथ जी की स्वयमभू मूर्ति है। उसी में भैंसे के पिछले धड़ की भी आकृति है। यात्रीगण श्री केदारनाथ जी का स्पर्श करते हैं। मन्दिर के आगे पत्थर का जगमोहन बना हुआ है। जगमोहन के चारों ओर द्रोपदी सहित पांचों पांडवो की मूर्तियाँ हैं। इसके मध्य में छोटा नन्दी और बाहर दक्षिण की ओर बड़ा नन्दी तथा छोटे बड़े कई प्रकार के घंटे लगे हुए हैं। द्वार के दोनों तरफ दो द्वारपाल हैं। दस पन्द्रह अन्य मूर्तियाँ हैं। श्री केदारनाथ जी की श्रृंगार मूर्तियाँ पंचमुखी हैं जो आभूषणों तथा वस्त्रों से हर समय सजी रहती हैं।

मंदिर के पीछे २-३ हाथ लम्बा अमृतकुंड है जिसमें दो शिवलिंग स्थित हैं। पूर्वोत्तर भाग में हंसकुंड तथा रेतसकुंड हैं। हंसकुंड में ब्रह्माजी ने हंसरूप में रेत पान

किया था। रेतसकुंड का जल पीने से मनुष्य शिव रूप हो जाता है। इसके उत्तर में स्फटिक लिंग है जिसके पूर्व ७ पद वह्नितीर्थ में बर्फ के बीच में तप्तजल है इसी स्थान पर भीमसेन ने श्री शंकर जी की पूजा की थी। रेतसकुंड में जंघा टेक कर तीन आचमन बायें हाथ से और तीन आचमन दायें हाथ से किये जाते हैं। यहीं पर ईशानेश्वर महादेव हैं। पश्चिम में एक सुबलक कुंड है। केदार मन्दिर के सामने एक छोटे अन्य मन्दिर में लम्ला उदक कुंड है। इसमें भी रेतसकुंड की तरह आचमन किया जाता है। इस मन्दिर के पीछे एक मीठे पानी का कुंड है। इस कुंड का पानी ही पिया जाता है, दक्षिणी भाग में छोटी-पहाड़ी पर मुकुंद भैरव है। पास में ही बर्फानी जल की झील है। वहीं मदांकिनी का उद्‌गम होता है।

केदार मंडल में अनेक तीर्थ, नदियाँ, सुन्दर वन तथा सैंकड़ों शिवलिंग विद्यमान है। हिमालय पर गढ़वाल जिले में ५ केदार हैं (१) केदारनाथ (२) मध्यमेश्वर (३) तुंगनाथ (४) रुद्रनाथ (५) कल्पेश्वर।

मधुगंगा और मंदाकिनी के संगम के पास क्रौंच तीर्थ है। क्षीर गंगा और मंदाकिनी के संगम पर ब्रह्मतीर्थ हैं। उसके दक्षिण में बुदबुदाकार जल दिखाई देता है। शिवजी के वाम भाग में इन्द्रपर्व है। यहीं पर इन्द्र ने तप किया था। यहाँ पर एक शिवलिंग है।

केदार नाम क्यों पड़ाः---सतयुग में केदार नामक राजा सप्तद्वीप पर राज्य करता था। वृद्ध होने पर वह अपने पुत्र को राज्य देकर यहाँ चला आया और तप करने लगा। जहाँ उसने तप किया वही स्थान केदार खंड के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

बदरीनाथ (उत्तर का धाम) यात्राः---केदारनाथ के दर्शन करके बदरीनाथ जाने के लिये वापिस रुद्रप्रयाग आयें। रुद्रप्रयाग से कर्णप्रयाग ३१ कि० मी०, कर्ण प्रयाग से चमोली ३२ कि० मी०, चमोली से जोशीमठ ४८ कि० मी०, जोशीमठ से गोविन्घाट २० कि० मी०, गोविन्दघाट से हनुमान चट्टी १३ कि० मी० और देवदर्शनी से बदरीनाथ पुरी २ कि० मी० है तथा बदरीनाथपुरी की ऊँचाई ३११० मीटर है। बस बदरीनाथपुरी तक जाती है।

चढ़ाई उतर कर समतल में भगवती अलकनन्दा के दाहिने किनारे पर श्री बदरीनाथ पुरी बसी हुई है, यहाँ पर लम्बा बाजार तथा बहुत सारे निवास योग्य मकान हैं। बहुत सारी धर्मशालायें, तारघर, अस्पताल, डाकघर तथा इन्सपैक्टर बंगला हैं। पहले यहाँ बेर का जंगल था और इस स्थान को बदरीवन कहते थे।

बदरीनाथ मन्दिर दर्शनः---बदरीनाथ हिन्दुओं के चार धामों में से एक है यह उत्तर का धाम है। यहां बदरीनाथ जी का बहुत विशाल मन्दिर है। मन्दिर में श्री

बदरीनाथ (विष्णु भगवान) जी बहुमूल्य वस्त्र भूषण तथा मुकुट धारण किये हुए सुशोभित हैं। इनके ललाट में हीरा लगा हुआ है। दाहिनी ओर कुबेर तथा गणेश जी, बाईं ओर लक्ष्मी जी नरनारायण है। साथ ही गरुड़ उद्धव आदि की मूर्तियाँ भी हैं। मन्दिर के नीचे अलकनन्दा के तट पर तप्तकुंड है जिसका जल गरम है। तप्तंकुड के विषय में एक कहावत है कि एक समय अग्नि ने ऋषियों की सभा में विनयपूर्वक पूछा कि मैं सर्वभक्षय पातक से कैसे छूटूंगा। ऋषियों की आज्ञा से श्री व्यास जी बोले कि आप बदरीनाथ की यात्रा करें। वहाँ सब पाप दूर करने वाले बदरी नारायण जी निवास करते हैं। यह सुनकर अग्निदेव बदरीका आश्रम में उत्तर की तरफ मुँह करके भगवान बदरीनाथ की स्तूति करने लगा। भगवान बदरीनाथ ने प्रसन्न होकर उसे निष्पाप कर दिया। तब से अग्निदेव पवित्र आत्मा होकर यहाँ पर तप्तजल के रूप में स्थित हैं। इस कुंड में स्नान करने से करोड़ों व्रतों का फल प्राप्त होता है।

व्यास गुफाः---बदरीनाथ के पास व्यास गुफा है। वेदव्यास जी ने यहीं पर बैठकर वेदों की रचना की और उन्हें चार भागों में बांटने का कार्य सम्पन्न किया।

पास में प्रहलाद धारा नाम की गुनगुने जल की धारा है, पास में शीतल जल की कूर्म धारा है, जिन्हें पंच तीर्थ कहते हैं।

तप्तकुंड के नीचे अलकनन्दा में बड़ी-बड़ी शिलाओं के बीच नारद कुंड के नीचे ब्रह्मकुंड, गौरीकुंड तथा सूर्यकुंड हैं। कहा जाता है कि बदरीनाथ जी की मूर्ति बौद्धों ने अलकनन्दा में नारदकुंड में डाल दी थी। आठवीं शताब्दी में दक्षिण भारत से आदि श्री शंकराचार्य यहाँ आये थे। उन्होंने उस मूर्ति को नारदकुंड से निकाल कर तप्तकुंड के पास गरुड़कोटि नाम की गुफा में स्थापित किया। वर्तमान मन्दिर गढ़वाल नरेश ने १५वीं शताब्दी में निर्माण कराया। श्री बदरीनाथ पर जो सोने का कलश है वह इन्दौर की रानी अहिल्याबाई का चढ़ाया हुआ है।

ब्रह्मकपालः---मन्दिर से थोड़ी दूर तीर्थ शिला के रूप में ब्रह्मकपाल है। यहाँ पर भगवान के महाप्रसाद (पकाये हुए चावल भात) से पितरों की मुक्ति के लिये पिंडदान तथा तर्पण किया जाता है। ब्रह्मकपाल के विषय में कहा जाता है कि जब ब्रह्माजी अपनी पुत्री सरस्वती पर आसक्त हुए तब शिव जी ने क्रोध में भरकर ब्रह्माजी का सिर काट दिया। वह सिर शिवजी के हाथ में चिपक गया। शिवजी उस सिर को छुड़ाने के लिये सब तीर्थों पर गये और अन्त में बदरीका आश्रम में पहुँचने पर वह सिर शिवजी के हाथों से छूटकर अलकनन्दा के समीप जा पड़ा। इस लिये वह स्थान ब्रह्मकपाल के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वसुधाराः---यह धारा बदरीनाथ से ८ कि० मी० पर है। यहाँ जल प्रपात से जल की धारा हवा में उड़ती हैं। ऐसा विश्वास है कि इस धारा की बूंदें पापी लोगों के ऊपर नहीं गिरती। यहाँ अष्टवसु ने ३४००० वर्ष कठिन तपस्या की थी। इस लिये इसका नाम-वसुधारा है।

शेषनेत्रः---यहाँ पर एक शिला नर पर्वत पर है। इस शिला में शेषनाग जी की आंखें स्पष्ट दिखाई देती हैं (यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि बदरीनाथ, अलकनंदा और ऋषि गंगा नदियों के संगम पर स्थित है। बदरीनाथ घाटी के दोनों ओर नर और नारायण पर्वत प्रहरी की तरह खड़े हैं। दूर हिमालय की नील कंठ नामक बरफ से ढकी चोटी दिखाई देती है। बदरीनाथ मन्दिर नारायण पर्वत की गोद में स्थित है।)

चरण पादुकाः---पश्चिम की ओर एक ऊँचे टीले पर चरण पादुका का चिह्न है।

सतीपथः---यह बरफ के जल का स्वच्छ सरोवर है।

पंचशिलाः---बदरीनाथपुरी में पांच शिला भी हैं जिनके नाम नारद शिला, नरसिंह शिला, वाराह शिला, गरुड़ शिला और मारकांडे शिला हैं।

अलकापुरीः---श्री बदरीनाथ से सतीपथ के मार्ग में लक्ष्मी भवन के पास अलकापुरी है। अलकनन्दा को ही गंगा बताया गया है। सतीपथ सरोवर के पश्चिम में गोमुख नाम का हिमालय है। उसके पश्चिम में ३३ कि० मी० लम्बा गंगोत्री ग्लैशियर समाप्त होता है। वही गोमुखा है और वही भागीरथी का उद्गम स्थान है।

सोम तीर्थः---चन्द्रमा ने तप के प्रताप से सुन्दर रूप पाया था। यह तीर्थ सम्पूर्ण तीर्थों के फल को देने वाला है। यह चन्द्रमा के साथ बढ़ता और घटता है। बदरीनाथपुरी से साढ़े सात कोस दूर है।

यमुनोत्री

ऋषिकेश से २ कि० मी० पर मुनि की रेती नामक स्थान है। यहाँ से एक मार्ग गंगोत्री यमुनोत्री के लिये गया है और दूसरा मार्ग केदारनाथ बदरीनाथ के लिये गया है। यमुनोत्री गंगोत्री जाने के लिये १६ कि० मी० पर नरेन्द्र नगर है। यह नगर सन् १६२० में नरेन्द्रशाह बहादुर ने बसाया था। नरेन्द्र नगर से ४६ कि०

मी० पर चम्बा है। चम्बा से २१ कि० मी० पर टीहरी है। यह भागीरथी और भिलंगना के संगम पर है (ऊँचाई २४०० फीट है)। इसे महाराज सुदर्शन शाह ने अपनी राजधानी के लिये बसाया था।

टीहरी से ३ मुख्य मार्ग जाते हैं (१) देवप्रयाग को (२) उत्तरकाशी को (३) श्रीनगर को। टीहरी से ३७ कि० मी० पर धरासु है। धरासु से एक मार्ग उत्तर काशी होता हुआ गंगोत्री की ओर जाता है और दूसरा मोटर मार्ग हनुमान चट्टी तक गया है। यहाँ से होकर यमुनोत्री पहुँचते हैं। धरासु से ८४ कि० मी० पर स्यानाचट्टी है। यह घने जंगल में एक छोटा-सा गाँव है। यहाँ से ५ कि० मी० आगे तक बस जाती है, नहीं तो यहीं से यमुनोत्री की पैदल यात्रा शुरू हो जाती है। स्याना से हनुमान चट्टी ५ कि० मी० है। यहाँ से ७ कि० मी० की दूरी पर जमनाबाई कुंड है। इस कुंड में साधारण गरम जल है और स्नान करने का महात्म्य है। जमनाबाई कुंड से ६ कि० मी० पर यमुनोत्री है। पैदल का रास्ता है। लगभग १३ कि० मी० पैदल चलना पड़ता है।

यमुनोत्री यमुना के जन्मस्थान को कहते हैं। यहाँ पर यमुनाजी बर्फ से जल में परिवर्तित होती है। यमुनाजी का उद्‌गम या जन्मस्थान होने के कारण यह हिन्दुओं का मुख्य तीर्थ है। मई-जून के महीनों में यहाँ यात्रियों की भीड़ लग जाती है। एक ओर शिशु रूप में यमुनाजी की शीतल धारा बहती है और दूसरी ओर गर्म जल के स्रोत हैं।

यमुनोत्री एक जमी हुई हिम नदी (ग्लैशियर) है। यहाँ से लगभग पौने कि० मी० दूर कलिंद पर्वत है जिसकी उँचाई ४४२१ मीटर है। कलिंद पर्वत से ही यमुना निकलती है। कलिंद पर्वत से निकलने के कारण यमुना को कालिंदी भी कहा गया है। परशुराम, काली और एकादश रुद्र आदि के मन्दिर हैं।

यमुनोत्री से गंगोत्री की यात्रा

यमुनोत्री से लौटकर पुनः हनूमानचट्टी तक पैदल आते हैं आगे से बस मिल जाती है। बस उस मार्ग पर चलकर धरासु आती है जो यमुनोत्री से १०२ कि० मी० है लेकिन गंगोत्री जाने वाली बस धरासु से २ कि० मी० पहले ही एक दूसरे मार्ग पर मुड़ जाती है जो उत्तरकाशी जाता है। धरासु से उत्तरकाशी २६ कि० मी० है। यह एक आधुनिक ढंग से बना हुआ सुन्दर नगर है। यहाँ इस जिले के प्रमुख कार्यालय है। यह गंगा के तट पर बसा हुआ है। यहाँ अनेक धर्मशालायें तथा होटल हैं। उत्तरकाशी में नाथजी का मन्दिर है।

उत्तरकाशी से **गंगोत्री**, मेनरी, भटबाड़ी, गंगनानी, सुक्खी झाला और हरसिल आदि स्थानों से होते हुए लंका चट्टी नामक स्थान पर पहुँचते हैं। उत्तरकाशी से लंकाचट्टी ८७ कि० मी० है। यहाँ से गंगोत्री केवल १३ कि० मी० रह जाती है यमुनोत्री से यहाँ तक की कुल दूरी २१५ कि० मी० है और ऋषिकेश से लंकाचट्टी १३५ कि० मी० है। लंका चट्टी से भैरों घाटी ३ कि० मी० और यह पैदल मार्ग है। पहले डेढ कि० मी० उतराई उतर कर जाह्नवं पार करके डेढ़ कि० मी० ऊपर चढ़ाई चढ़ कर भैरों घाटी पहुँचते हैं। यहाँ जाह्नवी और भागीरथी का संगम बहुत डरावना है। भैरों घाटी में, भैरों अपने मन्दिर में द्वारपाल की तरह विराजमान हैं। यहाँ से १० कि० मी० तक पैदल या मोटर द्वारा गंगोत्री पहुँचते हैं। यमुनोत्री से गंगोत्री २२८ कि० मी० है। गंगोत्री की ऊँचाई ३१४० मीटर है। यह हिमालय की गोद में स्थित प्राचीनकाल से तीर्थ माना जाता रहा है।

गंगा भारत की पवित्रतम नदी है और गंगोत्री गंगा का जन्म स्थान है इस लिये यह हिन्दुओं का मुख्य पूजा स्थल है। पर्यटकों के लिये भी यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता एक विशेष आकर्षण है। यहाँ एक छोटा-सा गांव है तथा अनेक मन्दिर और धर्मशालायें हैं। यहां का मुख्य मन्दिर गंगाजी का मन्दिर है। यहाँ गंगा को भागीरथी कहते हैं। इसलिये इसे भागीरथी मन्दिर कहते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार राजा भागीरथ ने गंगा जी को पृथ्वी पर लाने के लिये यहीं पर बैठकर तपस्या की थी। मन्दिर में स्थित मूर्तियाँ और छत्र आदि सब सोने के हैं। इस विशाल मन्दिर में गंगा, यमुना, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती तथा अन्नपूर्णा जी की मूर्तियाँ हैं। महाराज भागीरथ जी उनके सामने हाथ जोड़े हुए हैं। पूजा का सब सामान भी सोने का है। यहाँ से कुछ नीचे केदार गंगा का संगम है और वहाँ से एक फरलांग नीचे गौरी कुंड नामक स्थान पर शिवलिंग है। यहाँ पर गंगा बहुत उँचाई से शिवलिंग पर गिरती है।

गौमुखः—गंगा का वास्तविक उद्‌गम (जन्मस्थान) गंगोत्री हिमनदी (गलैशियर) है जो गोमुख नामक स्थान पर है। गंगोत्री से गोमुख १८ कि० मी० है तथा ४२५५ मीटर की उँचाई पर है। राजा भागीरथ ने यहीं पर कठिन तपस्या करके भगवान शंकर से गंगा को प्राप्त किया था। इसीलिये गंगा नदी भागीरथी के नाम से प्रसिद्ध है। गोमुख पहुँचने के लिये बहुत कठिन पैदल मार्ग है और भोजवासा में पड़ाव है। कठिन मार्ग होने के कारण बहुत कम यात्री गोमुख तक जाते हैं।

अन्य दर्शनीय स्थान

गोपेश्वरः—चमोली जिले में कई मुख्य सरकारी कार्यालय हैं लेकिन यहाँ का

मुख्याकर्षण शिवमन्दिर है जिसमें अष्टधातु का फरसा है यहाँ एक पैट्रोल पंप भी है।

चमोली:---यह गोपेश्वर से १० कि० मी० है। यहाँ डाकघर, तारघर, अस्पताल आदि की सब सुविधायें हैं। यहाँ से बदरीनाथ ६६ कि० मी० रह जाता है। चमोली से रानीखेत या अलमोड़ा होते हुए काठगोदाम भी जा सकते हैं।

जोशीमठ:---यह भगवान शंकर जी के चार मठों में से एक है। श्री बदरीनाथ जी की चलमूर्ति की इसी स्थान पर लाकर छः महीने तक पूजा होती है। समीप नृसिंह जी का मन्दिर है। यहाँ अस्पताल, डाकघर, तारघर, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला तथा विशाल गुरुद्वारा है।

विष्णु प्रयाग:---जोशीमठ से ६ कि० मी० उतराई उतर कर धौली गंगा को एक पुल पार कर विष्णु प्रयाग पहुँचते हैं। यहाँ अलकनन्दा और धौली गंगा का संगम है। यहाँ पांचवां अंतिम प्रयाग है। यहाँ के दाईं ओर के पर्वत को नर और बाईं ओर के पर्वत को नारायण कहते हैं। यहाँ पर धौली गंगा का तेज बहाव है इसलिये लोटे से स्नान करना चाहिये। यहाँ से छः कि० मी० पर घाट चट्टी है यहाँ से २ कि० मी० पर गोविन्दघाट है। यहाँ सुन्दर गुरुद्वारा हैं जहाँ ठहरने की व्यवस्था है।

कर्ण प्रयाग:---यहाँ पिंडार और अलकनन्दा नदियों का संगम है। यम कुंड के लिये यहाँ से पैदल मार्ग है।

नन्दप्रयाग:---यहाँ अलकनन्दा और मंदाकिनी नदियों का संगम है।

देवप्रयाग:---यह ऋषिकेश से ७० कि० मी० है। यहाँ पर गोमुख से आने वाली भागीरथी नदी और सतोपथ से आने वाली अलकनन्दा का संगम हो जाता है।

श्री नगर:---देवप्रयाग से ३५ कि० मी० दूर श्रीनगर है। यह प्राचीन टीहरी गढ़वाल की राजधानी थी। यहाँ पर कमलेश्वर महादेव का मन्दिर देखने योग्य है।

रूद्र प्रयाग:---यह श्रीनगर से ३४ कि० मी० दूर है। यहाँ मन्दाकिनी और अलकनन्दा नदियों का संगम है। केदारनाथ के मार्ग में यह अन्तिम बड़ा बाजार है। यहीं पर खरीदारी कर लेनी चाहिये। रुद्रनाथजी तथा कोटेश्वर महादेवजी के मन्दिर देखने योग्य है।

गुप्तकाशी:---यहाँ केदारनाथ के पंडे रहते हैं। यहाँ से हिमालय का चौखम्बा शिखर दिखाई देता है। यहाँ अर्धनारीश्वर तथा चन्द्रशेखर महादेव मंदिर देखने योग्य हैं। ठहरने के लिये धर्मशालायें हैं।

सोनप्रयाग (सोमप्रयाग):---यहाँ सोम और मंदाकिनी नदियों का संगम है।

वासुकि तालः---केदारनाथ से ५ कि० मी० दूर सुन्दर स्थान है।

महापंथः---केदारनाथ से ६ कि० मी० दूर एक चट्टान है जिसे भृगुपतन, भैरव झाँप या स्वर्गरोहिनी भी कहते हैं। प्राचीन काल में कुछ यात्री स्वर्ग में जाने की इच्छा से यहाँ से कूदकर अपने प्राण दे देते थे।

तपोवन और भविष्य बदरीः---तपोवन जोशीमठ से १४ कि० मी० दूर है। यहाँ गरम पानी का कुंड है। तपोवन से तीन कि० मी० पैदल मार्ग पर भविष्य बदरी है। यहाँ विष्णु मन्दिर देखने योग्य है।

हेम कुंडः---जोशीमठ से ११ कि० मी० पर गोबिन्दघाट है। यहाँ अलकनन्दा के किनारे पर रमणीक स्थान है। यहाँ गुरुद्वारा है जिसमें कई कमरे हैं। लंगर और बिस्तर आदि का भी प्रबन्ध है। गोबिन्द घाट से पुल पार करके १५ कि० मी० पर घांगरिया नामक स्थान है। यहाँ कलगीधर नाम का गुरुद्वारा है।

घांगरिया से ५ कि० मी० की चढ़ाई चढ़ने पर प्रसिद्ध स्थान हेमकुंड साहिब है। यहाँ श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी ने पूर्व जन्म में तपस्या की थी। यहाँ चारों तरफ बरफ जमी रहती है। यहाँ स्नान और दर्शन करने पर स्वर्ग जैसा आनन्द प्राप्त होता है।

यमुनोत्री में यमुना जी का बहुत सुन्दर मन्दिर है। मन्दिर के पास गर्म पानी के कई कुंड हैं। इन कुंडों का पानी खौलता रहता है। यात्री लोग कपड़े में चावल, आलू आदि बांध कर इन कुंडों में लटका देते है और कुछ मिनटों में ही वे पक जाते हैं। इसे वे प्रसाद के रूप में घर ले जाते हैं। इन कुंडों में सूर्य कुंड मुख्य है। सूर्य कुंड के निकट ही एक दिव्य शिला है। मन्दिर में जाने से पहले यात्री इसकी पूजा करते हैं। यमुनोत्री १८०० फीट की ऊँचाई पर है तथा ऋषिकेश से २२२ कि० मी० है।

फूलों की घाटी

घांगरिया से एक मार्ग उत्तर की ओर फूलों की घाटी जाता है। घाटी की लम्बाई ५ कि० मी० और चौड़ाई २ कि० मी० है। हरिद्वार से घाटी की दूरी २८८ कि० मी० है। घाटी में चारों ओर फूल ही फूल खिले रहते हैं। यह विश्व में अद्वितीय स्थान है। इस घाटी की खोज सर्वप्रथम् फ्रैंक स्मिथ ने १६३१ में की थी।

संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि उत्तराखंड देवताओं की भूमि है। यहाँ पर प्राकृतिक सुषमा का भंडार भरा पड़ा है। स्मस्त उत्तराखंड का वर्णन यहाँ करना कठिन है। इसलिये पाठकों से निवेदन है कि वे स्वयम् जाकर यहाँ की प्राकृतिक सुन्दर छटा का नयनाभिराम करें।

नैमिषारण्य (मिश्रिक तीर्थ) गढ़मुक्तेश्वर, सौरो, बैजनाथ, जागेश्वर, अल्मोड़ा

नैमिषारण्यः---कहा जाता है कि एक बार ८४००० ऋषियों ने ब्रह्मा जी के पास जाकर पूछा कि भारत में तपस्या के योग्य सबसे अच्छा स्थान कौन-सा है। ब्रह्मा जी ने अपना चक्र छोड़कर कहा, इसके पीछे-पीछे चले जाओ। जहाँ यह रुक जाये, उसी स्थान को तप के लिए सर्वश्रेष्ठ समझ लेना। ब्रह्मा जी का चक्र चला और उसके पीछे सब ऋषि चले। नैमिषारण्य में आकर चक्र रुक गया, इसलिए ऋषियों ने इस स्थान को सर्वोत्तम मानकर यहाँ यज्ञ-जप-तप आदि किये। तभी से इस स्थान का नाम नैमिष अर्थात् चक्र स्थित होने के कारण नैमिष वन (नैमिषारण्य) पड़ गया। वन को आरण्य कहते हैं।

नैमिषारण्य अत्यन्त तप और ज्ञान की भूमि है। यहाँ जाने के लिए दो मार्ग हैं, एक संडीला कस्बे से तथा दूसरा बालामऊ होकर। संडीला से नैमिषारण्य लगभग १५ मील कच्चे रास्ते से जाना पड़ता है। एक रास्ता सीतापुर होते हुए भी जाता है।

नैमिषारण्य एक छोटा-सा स्टेशन है। यहाँ से बस्ती लगभग एक मील है। यहाँ का प्रसिद्ध तीर्थ "चक्रतीर्थ" नाम का एक पक्का कुंड है। कुंड में पानी गहरा होने के कारण लोहे की जाली लगा कर डूबने का बचाव कर दिया गया है। यहाँ पितरों को पिंडदान करने का बड़ा महात्म्य है। कुंड के पास ही कई धर्मशालायें हैं।

यहाँ के मुख्य मन्दिर (१) ललिता देवी (२) भूतनाथ महादेव (३) सप्तऋषियों का टीला (४) गोवर्धन महादेव (५) योगमाया देवी (६) विश्वनाथ अन्नपूर्णा जी (७) वेदव्यास का आश्रम (८) पांडव किला (६) महावीर टीला आदि हैं।

मिश्रिक तीर्थः---नैमिषारण्य से पाँच मील पर मिश्रिक तीर्थ है। यहाँ पर बांके

बिहारी मन्दिर, सीता रसोई, महावीर गुफा, सीता कूप, तथा दधिची कुंड आदि दर्शनीय स्थान हैं। दधिची कुंड यहाँ का मुख्य तीर्थ है। कहा जाता है कि परशुराम अपना वज्रबाण दधिची ऋषि को देकर उत्तराखंड में तपस्या करने गये और कह गये कि यदि मेरा बाण खो दिया तो तुम्हारा परम अनिष्ट होगा। दधिची ऋषि ने वज्रबाण सम्भाल कर रखा परन्तु परशुराम बहुत वर्षों तक वापिस नहीं आये। ऋषि ने कोई उपाय न देखकर वज्रबाण को घिस कर पी लिया। वज्रबाण के कारण ही इस स्थान का नाम मिश्रिक प्रसिद्ध हुआ और दधिची ऋषि को इन्द्र देवता को अपनी हड्डियों का दान देना पड़ा जिनसे इन्द्र देवता ने वज्र शस्त्र बनाकर वृत्तासुर को मारा था।

गढ़मुक्तेश्वरः---यहाँ गंगा का प्रसिद्ध तीर्थ है। दिल्ली से सीधी बस तथा रेल जाती है। यहाँ गंगा दशहरा, वैशाखी, पूर्णिमा, सोमती अमावस, सक्रान्ति आदि पर्वों पर यात्री गंगा स्नान करने आते हैं। यहाँ मुक्तेश्वर शिव के दर्शन होते हैं। गढ़गंगा से ५ मील आगे गंगा जी बूढ़ी गंगा नामक नदी से मिली है।

सोरोंः---यह मथुरा से बरेली जाने वाली लाइन पर पड़ता है। वाराह भगवान का जन्म पुष्कर में हुआ था और उन्होंने पृथ्वी का उद्धार करके तथा हिरण्याकश्यपु के वध के पश्चात् इस स्थान (सोरों) में प्राण त्याग किये थे। यहाँ वाराह भगवान् का मन्दिर है। सोरों को सुकर क्षेत्र भी कहा जाता है।

बैजनाथ

अलमोड़ा से ७० तथा कोसानी से ६५ कि० मी० दूर बस द्वारा बैजनाथ जाते हैं। यहाँ पर शिव मंदिर धार्मिक पूजा स्थल है। बैजनाथ से ३ कि० मी० दूर बागेश्वर है। यहाँ पर बागेश्वर नाथ का प्राचीन मंदिर है। बैजनाथ से १४ कि० मी० गवालदम है, यहाँ सेब के बाग हैं।

जागेश्वरः--अलमोड़ा से २७ कि० मी० बस द्वारा जागेश्वर जाते हैं। यहाँ पर ८वीं, ९वीं शताब्दी में बने कई शिव मंदिर हैं जिनमें जागेश्वर नाथ मंदिर प्रमुख है। यहाँ से एक कि० मी० पर दंडेश्वर मंदिर है।

अलमोड़ाः---काठगोदाम से ९१, नैनीताल से ६८ तथा बागेश्वर से ५१ कि० मी० है। यहां से ६ कि० मी० पर केसर देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। ५ कि० मी० पर कालीमठ है। कालीमठ के मार्ग में सिमतोला है जो ४ कि० मी० है, यहाँ फलों के बाग हैं। ६ कि० मी० पर चीतल है, यहाँ गोला का मंदिर है।

उत्तर प्रदेश के कुछ अन्य धार्मिक स्थल---शाकुम्भरी देवी, देहरादून, मसूरी, गोरखपुर, मगहर, कुशीनगर, लुम्बनी, श्रावस्ती, नैनीताल, लखनऊ, आगरा, फतेहपुर सीकरी

(१) शाकुम्भरी देवीः---दिल्ली से सहारनपुर लगभग १७० कि०मी० है और सहारनपुर से बस या रेल से उतर कर साईकल रिक्शा में बैठकर बेहट के बस अड्डे पर जाते हैं। वहाँ से शाकुम्भरी देवी जाने वाली बसें मिल जाती हैं। सहारनपुर से शाकुम्भरी देवी लगभग ६० कि०मी० है।

शाकुम्भरी देवीं में माता शाकुम्भरी देवी का मन्दिर है। उन्हीं के नाम पर इस स्थान का नाम भी शाकुम्भरी देवी है। यहाँ पर तख्तों पर मिठाई, प्रसाद, हलवा पूरी की दुकानें हैं तथा मालाओं, पुस्तकों तथा तस्वीरों खेल खिलानों आदि की भी दुकानें हैं। स्थायी रूप से दो-चार दुकानें हैं तथा बहुत सारी धर्मशालायें हैं। यहाँ कोई बस्ती नहीं हैं। यात्री लोग आते हैं और माँ शाकुम्भरी देवी के दर्शन करके चले जाते हैं। पानी पीने के लिए मन्दिर के साथ ही एक कुआँ है। धर्मशालाओं में भी कुएँ अथवा हैंड पम्प हैं। इसके अतिरिक्त पहाड़ों में से कुदरती पानी के चश्में बहते रहते हैं। यह स्थान शिवालिक की पवित्र पहाड़ियों के बीच बहुत रमणीक धाटी में है। पहाड़ों पर अनेक देवी देवताओं के मन्दिर हैं और कहीं छोटे-छोटे गाँव भी हैं। यहाँ पर किसी प्रकार का खतरा नहीं है। बहुत ही शान्ति की जगह है। केवल बिजली की कमी है। यदि यहाँ पर बिजली आ जाये तो यह स्थान स्वर्ग के समान है।

आम दिनों में यहाँ पर मन्दिर के पुजारी धर्मशालाओं के प्रबन्धक, दुकानदार तथा कुछ यात्री ही रहते हैं लेकिन मेले के दिनों में हर महीने की अष्टमी एवं चौदस को यहाँ यात्रियों की इतनी भीड़ हो जाती है कि यहाँ पर ढाई कि०मी० क्षेत्र में तिल-भर जगह खाली नहीं रहती, धर्मशालायें यात्रियों से भर जाती हैं। लोग तम्बू तान कर रहते हैं। दानी लोग हलवा पूरी बनवा कर हजारों लोगों को भोजन कराते हैं। माता के मन्दिर से लगभग एक कि०मी० पहले भूरे देव का मन्दिर है। बस यहाँ रुक जाती है। यात्री पहले भूरे देव के दर्शन करते हैं और प्रसाद चढ़ाते हैं। उसके बाद बस में बैठकर या पैदल माँ शाकुम्भरी देवी के पास जाते हैं और नहा-ध ोकर अपनी श्रद्धा अनुसार शाकपात, फल-फूल, हलवा-पूरी, मिठाई, धूपबत्ती, सोने-चान्दी के छत्र चुन्नी तथा नारियल और नकद रुपए चढ़ाते हैं। माता शाकुम्भरी के दर्शन करने से मनुष्य की सब कामनायें पूरी हो जाती हैं। कोई रोग या संकट हो वे भी शाकुम्भरी माँ सब ठीक कर देती हैं। यह हमारी स्वयं की आजमाई हुई बात है। मन्दिर में माँ शाकुम्भरी देवी की मूर्ति की दाईं तरफ भीमा तथा भराभरी देवी की मूर्तियाँ हैं और बाईं तरफ शीताक्षी देवी की मूर्ति है। मन्दिर के प्रांगण में महाकाली, शिव-पार्वती, हनुमान जी तथा अनेक देवताओं की मूर्तियाँ हैं। हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश में शाकुंम्भरी देवी की बहुत मान्यता है। कहा जाता है कि एक बार शुंभ निशुंभ, चुंड मुंड तथा रक्तबीज इत्यादि राक्षसों ने देवताओं के राज्य को छीन लिया था और वे शिवालिक की पहाड़ियों में देवी भगवती की शरण में आये। मातेश्वरी ने प्रकट होकर उनको जंगल के शाकपात और फल-फूल खाने के लिए दिए और कुदरती चश्मों का मीठा अमृत जैसा जल पीने के लिए दिया। देवताओं को शाकपात से तृप्त करने के कारण माता का नाम शाकुम्भरी देवी पड़ा। तत्पश्चात् माँ ने सुन्दर रूप धारण करके शुम्भ-निशुम्भ, चुंड-मुंड, रक्तबीज तथा अनेक राक्षसों का संहार किया और देवताओं को इन्द्रलोक का राज्य वापिस दिलाया। जिस स्थान पर अब बीर खेत है वहाँ पर माता ने सुन्दर रूप धारण किया था और जहाँ पर महाकाली का रूप प्रकट किया था वहाँ पर मातेश्वरी शाकुम्भरी देवी का मन्दिर है। माता ने दुर्गम राक्षस को भी मारा था। इसलिए माता का नाम दुर्गा भी पड़ा। जिस स्थान पर भूरे देव अपने साथियों के साथ राक्षसों से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ था, उस स्थान पर भूरे देव का मन्दिर है। माता ने जल का छींटा देकर उसे अमर कर दिया था। माता ने वरदान दिया था कि जो कोई पहले भूरे देव के दर्शन करेगा, बाद में मेरे दर्शन करेगा उसी की मनोकामना पूरी होगी। भूरे देव मन्दिर में उसके साथ उसके पांच साथियों चंगल, मंगल, रोड़ा.

झोड़ा, और मानसिंह की भी मूर्तियाँ हैं। वे भी वीरगति को प्राप्त हो गये थे। शाकुम्भरी देवी ५१ शक्तिपीटों में से एक है।

देहरादून

देहरादून दिल्ली से २५५ कि०मी० उत्तर प्रदेश में है। गुरु द्रोणाचार्य ने इस स्थान पर अपना डेरा अर्थात् आश्रम बनाया था। इसलिए इस स्थान का नाम 'डेरा द्रोण' पड़ गया जो बाद में 'देहरादून' हो गया। दूसरी कथा के अनुसार सन् १६६६ में श्री रामराय जी ने खुरबुरा नाम के इलाके में एक गुरुद्वारा बनाया था। गुरु जी के इस स्थान को गुरु जी का डेरा कहने लगे। यह गुरुद्वारा बस अड्डे के निकट है। पैदल भी जाया जा सकता है। इस जगह को झंडा चौक के नाम से पुकारते हैं। होली से पांचवें दिन यहाँ पर गुरु जी के झंडे का मेला लगता है जिसे झंडा मेला कहा जाता है। इसी दिन इस गुरुद्वारे की स्थापना हुई थी। जो व्यक्ति गुरु जी की मिन्नत मांगता है और झंडा चढ़ाता है उसकी सभी मनोकामना पूरी हो जाती है। परन्तु झंडा चढ़ाने वाले को अपना नाम रजिस्टर कराना पड़ता है और कई साल के बाद झंडा चढ़ाने का नम्बर आता है।

टपकेश्वर महादेवः---यह देहरादून से ६ कि०मी० गढ़ी केंट के पास है। डाकरा बाजार भी इसके पास है। काफी सीढ़ियाँ उतरने के बाद यहाँ पर एक पहाड़ की गुफा है जिसमें शिवलिंग मन्दिर है। कहा जाता है कि पहाड़ में से दूध की बूंदें शिवलिंग पर टपकती थीं इसलिए इसका नाम टपकेश्वर महादेव है। यहाँ शिवरात्रि को बहुत बड़ा मेला लगता है।

तपोबनः---देहरादून में मसूरी रोड़ पर राजपुर से ३ कि०मी० ऊपर तपोवन आश्रम है। यहाँ पर बहुत सारे ऋषि मुनियों के आश्रम हैं।

इसके अतिरिक्त देहरादून में **सहस्त्रधारा** देखने योग्य है। यहाँ पर भी पहाड़ की गुफा में शिव मन्दिर है और एक कुदरती चश्मा बहता है। पहाड़ में से जल की हजारों धारायें झरती हैं जो लगातार झरती रहती हैं और वर्षा की तरह गिरती रहती हैं इसलिए इसका नाम सहस्त्र धारा है। लोग **सहस्त्रधारा** में स्नान करके शिव मंन्दिर में दर्शन करने जाते हैं।

मसूरीः---मसूरी देहरादून से ३५ कि०मी० की चढ़ाई पर है। यह एक पहाड़ी पर्यटन स्थल ही नहीं बल्कि सब धर्म आवलम्बियों का धार्मिक स्थल भी है। यहाँ पर राधा कृष्ण मन्दिर, श्री नारायण मन्दिर, आर्य समाज मन्दिर, श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, श्री सनातन धर्म (वैष्णव) मन्दिर, यूनियन चर्च, जामा मस्जिद तथा श्री गुरु सिंह सभा गुरुद्वारा धार्मिक स्थल हैं।

मसूरी में धार्मिक स्थानों के अतिरिक्त देखने योग्य पर्यटन स्थल लाल टिब्बा, चिल्डरणज लॉज, गनहिल, कम्पनी बाग, कैमल बैक रोड, कैम्पटी फॉल तथा ६ ।नोल्टी, फौरेस्ट हैं। बच्चों के मनोरंजन के लिए यहाँ पर दिल्ली के अप्पू घर की तरह 'वर्ड वंडर' बनाया गया है जो पैलेस सिनेमा के सामने है।

गोरखपुरः---गोरखपुर लखनऊ से २७५ कि०मी०, अयोध्या से १२० कि०मी० है। यहाँ पर गोरखनाथ मन्दिर तथा गीता प्रैस और मन्दिर देखने योग्य स्थान हैं। गोरखपुर से मगहर, कुशीनगर, लुम्बनी तथा श्रावस्ती जाया जा सकता है।

मगहरः---गोरखपुर से २७ कि०मी० पर मगहर का स्टेशन है। सड़क द्वारा भी २७ कि०मी० है। महान संत कबीर ने काशी को छोड़कर मगहर को अपना शरीर त्याग करने का स्थान चुना था। लोगों का विश्वास था कि काशी में शरीर छोड़ने से स्वर्ग तथा मगहर में शरीर छोड़ने से नरक प्राप्त होता है। कबीर साहिब इसका अपवाद थे, इसलिए उन्होंने अपने अन्तिम दिनों में मगहर में आकर अपना शरीर त्याग किया। यहीं पर कबीर साहब की समाधि है। कबीर पंथियों के लिए तथा कबीर साहब के प्रशंसकों के लिए यह महान् तीर्थ स्थान है।

कुशीनगरः---गोरखपुर से २५५ कि०मी० पूर्व की ओर कसिया नामक स्थान है। उसी के निकट कुशीनगर है। यहाँ पर भगवान् बुद्ध का महापरि-निर्वाण (निधन) हुआ था। इसलिए यह बौद्धों का पवित्रतम तीर्थ स्थान है।

लुम्बनीः---गोरखपुर से ८२ कि०मी० दूर उत्तर में नोतनवा रेलवे स्टेशन है। उससे आगे नैपाल की सीमा है। सीमा के अन्दर नोतनवा से १६ कि०मी० लुम्बनी है। यहाँ पर भगवान् बुद्ध का जन्म हुआ था। इसलिए यह स्थान भी बौद्धों के लिए पवित्रतम तीर्थ है। गोरखपुर से बसें जाती हैं।

श्रावस्तीः---गोरखपुर से ११२ कि०मी० पर बलरामपुर स्टेशन है। वहाँ से २१ कि०मी० पर सहेरू महेरू नामक स्थान हैं। यहीं पर खुदाई से श्रावस्ती के अवशेष मिले हैं। यहाँ पर बुद्ध ने २५ साल गुजारे थे।

नैनीतालः---दिल्ली से नैनीताल जाने के लिए अन्तिम रेलवे स्टेशन काठ गोदाम है। काठ गोदाम से नैनीताल ३५ कि०मी० है। काठ गोदाम, हलद्वानी, रानी खेत, अलमोड़ा, मुरादाबाद, बरेली तथा आसपास से बसें भी जाती हैं। यह पर्यटन स्थल के साथ धार्मिक स्थान भी है। यहाँ पर प्रसिद्ध नैना देवी का मन्दिर तथा ताल है। जिसके कारण इसका नाम नैनीताल पड़ा। इस क्षेत्र को पहले छकता कहा जाता था जिसका अर्थ साठ झीलों का क्षेत्र है। यह भी कहा जाता है कि अत्री, पुलन्द, पुलस्त्य तीन ऋषि रानी बाग से गर्गविल जाते हुए अपनी प्यास बुझाने के

लिए यहाँ आये थे। इसलिए इसका प्राचीन नाम त्रिऋषि सरोवर भी था। यह शहर ६३६० फुट की ऊँचाई पर है। यहाँ पर दर्शनीय स्थान नैनापीक, हनुमान गढ़ी, भुवाली, रामगढ़, भीमताल, नैकुचिया ताल, राज भवन, वैद्यशाला किलवरी, खरपताल, सातताल, मुक्तेश्वर जोलीकोट देखने योग्य हैं।

लखनऊ

लखनऊ उत्तर प्रदेश की राजधानी है। यह गोमती नदी के किनारे पर लक्ष्मण जी द्वारा बसाया गया नगर है। इसका नाम लक्ष्मण पुर था जो अब लखनऊ हो गया है। यहाँ पर एक लक्ष्मण टीला है।

लखनऊ अवध के नवाबों की राजधानी भी रहा। पहला नवाब साअदत खां हुआ। दूसरा नवाब सफदरजंग हुआ, जिसका मकबरा दिल्ली में है। तीसरा नवाब शुजाउद्दौला हुआ। चौथा नवाब आसफुद्दौला था तथा अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह था। लखनऊ के नवाबों की शानो-शौकत, ठाट-बाट, रंगीन तबीयत, अहलेदिल, मोहब्बत से आशना की कहावतें आज भी सुनी जाती हैं। उनके काल में लखनऊ ने बहुत उन्नति की और यह संसार का सुन्दरतम नगर बन गया था। आज भी लखनऊ की विशिष्ट मुस्लिम शैली में बने भवन, चौड़ी सड़कें खुले मकान बाग-बगीचे शिष्टाचार तथा उर्दु भाषा की मिठास यात्रियों को आकर्षित करती है। यह केवल प्राकृतिक सुन्दरता के लिये ही नहीं बल्कि इंसानी सुन्दरता के लिये भी अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ की नाज-ओ-अदा, हुस्न-ओ-नजाकत, अहब्लेदिल अमीर, और जान निशार गरीब तथा वफादार दोस्त इस सर जमीन की शान बढ़ाते हैं।

दर्शनीय स्थान

बड़ा इमाम बाड़ाः-यह एक मुस्लिम धार्मिक स्थान है। इसे अवध के चौथे नवाब आसफुद्दौला ने सन् १७८४ में हजरत इमाम हुसैन की यादगार में बनवाया था। मोहर्रम पर सिया मुसलमान हजरत इमाम हुसैन रजा, उनके पुत्र तथा साथी जो करबला में शहीद हुए थे, उनकी याद में शोक सभायें (मजलिश) करते हैं।

बड़े इमाम बाड़े का हॉल १६२ फुट लम्बा, ५३ फुट चौड़ा और ५० फुट ऊँचा है। आश्चर्य की बात यह है कि इतने बड़े हॉल में कोई खम्बा, गाडर या स्पोर्ट नहीं है, बिल्कुल निराधार खड़ा है। सारी इमारत कैकता ईंट और सुरखी चूने से तैयार की गई है। लकड़ी, लोहा या किसी किस्म की धातु का प्रयोग नहीं किया गया है। यंह तीन मंजिला इमारत है। हर मंजिल डाटों पर रुकी हुई है और मजे

की बात यह है कि सारी दीवारें खोखली है। अगर आप इस इमारत के एक सिरे पर खड़े होकर और दूसरे सिरे पर आप के दोस्त खड़े हो जायें और दीवार में मुँह लगाकर बात करें तो दूसरा आदमी आसानी से सुन सकता है और दोनों टेलीफोन की तरह आपस में बातचीत कर सकते हैं।

इमारत के बाहर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं जो छत तक पहुँचती हैं। ऊपर चढ़कर भूल-भुलैया बन जाती है। किसी गाइड को लेकर ऊपर जाना चाहिये। इमाम बाड़े के प्रवेश द्वार को रूमी दरवाजा कहते है। इमाम बाड़े के अहाते में आसफुद्दौला द्वारा बनाई गई एक बावड़ी, एक दौलतखाना तथा एक आसफी मस्जिद है।

छोटा इमामबाड़ा:---इसे हुसैनाबाद इमामबाड़ा कहते हैं। यह बड़े इमामबाड़े की तरह बना हुआ एक छोटा इमाम बाड़ा है और आधे कि० मी० के फासले पर है यहाँ पर मुहम्मद अलीशाह और उनकी बेगम के मजार हैं। इस इमाम बाड़े में हजारों झाड़-फानूस हैं। यहाँ पर भी सिया मुसलमानों की धार्मिक सभायें होती हैं।

इमाम बाड़ों के अतिरिक्त लखनऊ में १७९८ में बना सादत अली खां का मकबरा, केसर बाग बारादरी (यहाँ नवाब वाजिद अली शाह का दरबार था जो १८५० में बना था), इसके बगल के भवनों में उसकी ३६५ बेगमें रहती थीं, शाहनजफ (यहाँ हैदर और उसके परिवार की कब्रें हैं) दिलखुश बाग (इसे नवाब साअदत अली खां ने अपना दिल खुश करने के लिये एक पार्क बनवाया था), रैजिडेंसी (यहाँ अंग्रेजी सरकार का एक अंग्रेज प्रतिनिधि रहता था, यहीं पर १८५७ की पहली आजादी की लड़ाई लड़ी गई थी), छत्र मंजिल (यहाँ नवाब नसरूद्दीन की बेगमें रहती थीं, अब यहाँ सेन्ट्रल ड्रग इंस्टीच्यूट है। इस भवन के गुम्बद पर एक ताम्बे का छत्र है, इसलिये इसे छत्र मजिल कहते है), नूरबक्स कोठी (यह महल साअदत अली खां ने अपने पोते के लिये बनवाया था। १८५७ में अंग्रेज जनरल हैवालौक ने इसे अपने अधिकार में ले लिया था), चिड़ियाघर, मोती महल, पिक्चर गैलरी (जिसमें नवाबों के आदमकद फोटो लगे हैं), सिकन्दर बाग और विधान सभा देखने योग्य हैं।

लखनऊ दिल्ली से ५०७, अयोध्या से १३५, वाराणसी से २७८, इलाहाबाद से २२५, आगरा से ३२६ और कानपुर से ७२ कि० मी० है। यहाँ ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें तथा होटल हैं।

आगरा

आगरा, दिल्ली से १९९ कि० मी० है। यह ताज महल के कारण सारे संसार

में प्रसिद्ध है। यहाँ धार्मिक स्थान निम्नलिखित हैं।

(१) दयाल बाग आगराः---यह राधास्वामी मन्दिर है। आगरा मे ६ कि० मी० दूर दयालबाग नाम की कालोनी है। यहाँ पर राधास्वामी मत के सर्वप्रथम गुरु सेट शिवदयाल सिंह जी की भव्य समाधि है। वे आगरा की पन्नी गली में रहते थे। जिस स्थान पर दयाल बाग है, वहाँ पर बहुत बड़ा जंगल था। स्वामी शिवदयाल जी पन्नी गली से यहाँ पर भजन करने के लिये आते थे। स्वामी जी ने यहाँ पर एक कुआँ बनवाया था। इस कुएँ को पवित्र कुआँ कहा जाता है। विदेशों में भी इस कुएँ का पानी पार्सल द्वारा भेजा जाता है।

स्वामी शिवदयाल सिंह जी का जन्म १८१८ ई० में हुआ था। उन्होंने १८६२ ई० में राधा स्वामी पंथ की स्थापना की। १८७८ में स्वामी जी ने चोला छोड़ दिया। उनको इसी स्थान पर समाधि दी गई। स्वामी जी के बाद दूसरे गुरु कुमुज जी महाराज हुए। तीसरे गुरु ब्रह्म शंकर जी महाराज हुए। चौथे गुरु बड़ जी महाराज हुए। उसके पश्चात् कोई गुरु नहीं हुआ अब गद्दी खाली है। चौथे गुरु को दयाल बाग वालों ने स्वीकार नहीं किया। यहाँ पर १९०४ ई० से एक भव्य भवन बन रहा है। बीच में झगड़ा होने के कारण ११ वर्ष काम बन्द रहा। अभी यह भवन बन रहा है। इस पर संगमर्मर को तराश-तराश कर फलों तथा पत्ते पत्तियों से दीवारें ताक आदि बनाई गईं हैं। सारा भवन संगमर्मर का बन रहा है जिसे बनते-बनते कई दशाब्दियाँ बीत गई हैं। पूरा होने पर यह ताज को भी मात कर देगा।

इसके अलावा आगरा में लाल किला, जामा मस्जिद, इतमादुद्दौला का मकबरा, चीनी-का-रोजा, रामबाग, सिकन्दरा आदि दर्शनीय स्थान हैं।

फतेहपुर सीकरी

फतेहपुर सीकरी आगरा से ३७ कि० मी० दक्षिण पश्चिम में स्थित है। यहाँ सूफी संत शेख सलीम चिश्ती की कुटिया थी। मुगल सम्राट अकबर की राजधानी आगरा थी। अकबर की कोई संतान नहीं थी। यही चिन्ता अकबर को लगी रहती थी। संत शेख सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से अकबर का एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम संत के नाम पर सलीम रखा गया जो बाद में जहांगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सम्राट अकबर ने १५५६ में इस स्थान पर एक नगर बसाया तथा किला और महल बनवाये और अपनी राजधानी भी आगरे की बजाय फतेहपुर सीकरी बनाई। वह अपने मंत्रियों, बेगमों तथा सामन्तों के साथ यहीं रहने लगा। सम्राट अकबर

ने यहाँ पर एक विशाल तथा भव्य जामा मस्जिद बनवाई जो सारे संसार में अद्वितीय है। जामा मस्जिद में ही शेख सलीम चिश्ती का मकबरा है जो सफेद संगमर्मर का बना हुआ है। इस मकबरे में पत्थर की जाली का काम, जड़ाई, चित्रकारी, पच्चीकारी तथा फुलकारी का काम अद्वितीय है। कब्र के ऊपर शीशम की लकड़ी का सुन्दर छत्र है। यह मुसलमानों का पवित्र तीर्थ है और हर साल उर्स का मेला लगता है। फतेहपुर सीकरी १६ वर्ष तक सम्राट अकबर की राजधानी रही। पानी का प्रबंध न होने के कारण सम्राट अकबर को १६८५ में यह स्थान छोड़ना पड़ा था और पुनः आगरा को राजधानी बनाया था। तत्पश्चात् नगर उजड़ गया; परन्तु अकबर के बनवाये हुए भव्य भवन अभी भी अपनी छवि बनाये हुए हैं। इन भवनों मे निम्नलिखित दर्शनीय भवन हैं (१) नौबतखाना, (२) टकसाल और खजाना, (३) दीवाने-आम, (४) दीवाने-खास, (५) पचीसी कोर्ट, (६) पंचमहल, (७) जोधाबाई का महल (८) हवा महल, (९) बीरबल का महल (१०) हिरण मीनार (अकबर के प्रिय हाथी का स्मारक) (११) जामा मस्जिद (१२) शेख सलीम चिश्ती का मकबरा (१३) बुलन्द दरवाजा आदि हैं।

यह नगर ७ मील के घेरे में एक पहाड़ी पठार पर है। इसके तीन तरफ ५० फुट ऊँची किले बंद दीवार है। चौथी तरफ झील है।

माता के दरबार---नैना देवी, चिन्तपुर्णी, ज्वालाजी, वज्रेश्वरी, चामुंडा देवी, चंडीदेवी, चंडीगढ़, कालिका देवी, कालका-पिंजोर मनसा देवी, तारा देवी, श्यामला देवी (शिमला) नाहन, बैजनाथ-पपरोला

(१) **नैना देवीः**---नैना देवी हिमाचल में स्थित है। यह स्थान पंजाब की सीमा के निकट है। पंजाब राज्य के भाखड़ा-नंगल लाइन पर आनन्दपुर साहिब प्रसिद्ध स्टेशन है। नंगल से नैना देवी के लिए बस मिल जाती है। तीन घंटे में बस नैनादेवी पहुँच जाती है। बस स्टैंड से नैनादेवी का मन्दिर लगभग ६ कि०मी० पहाड़ी पर है। पैदल का रास्ता है। लगभग आधे घंटे में पहुँच जाते हैं। यह स्थान उत्तर दिशा में शिवालिक पर्वत पर है। यहाँ नैनादेवी का भव्य मन्दिर है। मन्दिर में पिंडी रूप में भगवती नैनादेवी के दर्शन होते हैं। यहाँ पर सती के दोनों नेत्र गिरे थे। इसलिए नैनादेवी ५१ शक्तिपीठों में से एक है। श्रावण मास की अष्टमी तथा नवरात्रों में यहाँ बहुत यात्री आते हैं।

(२) **चिन्तपुर्णीः**---यह स्थान हिमाचल राज्य के जिला ऊना में है। होशियारपुर (पंजाब) से कुछ दूरी पर भरवाई नामक स्थान है। भरवाई बस अड्डे से केवल २-३ मील की दूरी पर चिन्तपुर्णी देवी का मन्दिर है। नैनादेवी से भी चिन्तपुर्णी तक सीधी बस सेवा है। लगभग ६-७ घंटे का मार्ग है। यहाँ पर सती के चरणों के कुछ अंश गिरे थे। इसलिए यह स्थान ५१ शक्तिपीठों में से एक है। यह देवी चिन्ता का निवारण करने वाली मानी जाती है।

(३) ज्वाला जीः---ज्वाला जी हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़े में स्थित है। पंजाब राज्य के जिला होशियारपुर के गोपीपुरा डेरा नामक स्थान से लगभग २० कि०मी० की दूरी पर ज्वाला जी का मन्दिर है। पठानकोट से कांगड़ा होते हुए भी यात्री ज्वाला मुखी पहुँच सकते हैं। कांगड़े से ज्वालामुखी दो घंटे का बस मार्ग है। हर आधे घंटे बाद बस मिलती है।

ज्वाला जी घूमा देवी का स्थान है। यहाँ देवी के दर्शन ज्योति के रूप में किये जाते हैं। पर्वत की चट्टान व विभिन्न स्थानों पर यह ज्योति अपने आप प्रज्वलित रहती है, इसलिए इस देवी को ज्वाला जी कहते हैं। यहाँ पर सती की जिह्वा गिरी थी। इस लिए इसकी मान्यता ५१ शक्तिपीठों में है। यहाँ भगवान् शिव उन्मत्त भैरव रूप में स्थित हैं। कहा जाता है कि सम्राट अकबर सवा मन सोने का छत्र ज्वाला जी देवी पर चढ़ाने के लिए नंगे पाँव आया था और उसने दिव्य ज्योति के दर्शन किए थे। उसका मस्तक श्रद्धा से झुक गया था।

(४) वज्रेश्वरी देवी (नगर कोट कांगड़े वाली):---यह स्थान भी हिमाचल प्रदेश के प्रमुख नगर कांगड़ा में है। ज्वालामुखी से लगभग ३० कि०मी० की दूरी पर है। केवल २ घंटे का बस मार्ग है। पठानकोट से जाने वाले यात्री ३ घंटे में कांगड़ा पहुँच जाते हैं। वज्रेश्वरी देवी को नगर कोट कांगड़े वाली देवी भी कहा जाता है। यहाँ सती के वक्षस्थल (स्तन) गिरे थे इसलिये यह ५१ शक्तिपीठों में गिनी जाती है।

(५) चामुंडा देवीः---कांगड़ा से ज्वालामुखी २ घंटे का बस मार्ग है। कांगड़े से मलां केवल डेढ़ घंटे का बस मार्ग है। वहाँ से चमुण्डा देवी मन्दिर लगभग ४ कि०मी० की दूरी पर है। दूसरा रास्ता पठानकोट की तरफ से है। पठानकोट से रेल की छोटी लाइन जो पपरोला जाती है, उसमें रेल में बैठकर यात्री चामुंडा रेलवे स्टेशन पर उतर सकते हैं। चामुंडा रेलवे स्टेशन मलां में बना है। पठानकोट से धर्मशला होकर सीधी बसें भी चामुंडा देवी जाती हैं।

चामुंडा देवी शिव और शक्ति का स्थान है। इसे चामुंडा नन्दीकेश्वर धाम से जाना जाता है। बाण गंगा के तट पर यह उग्र सिद्धपीठ है जहाँ भूतभावन भगवान आशुतोष शिवशंकर-मृत्यु विनाश और शवहारी विसर्जन का रूप लिए---साक्षात् माँ चामुंडा के साथ बैठे हैं। २२ ग्रामों की शमशान भूमि महाकाली चामुंडा के रूप में मंत्र विद्या और सिद्धि का वरदाई क्षेत्र माना जाता है। यह योगियों, साधकों

व तांत्रिकों के लिए एकान्त एवम् शान्ति तथा प्राकृतिक शोभा से युक्त स्थान है। यहाँ कुमारी पूजन होता है।

चंडीदेवीः---यह हरिद्वार में है। शिवालिक पर्वत के पूर्वी शिखर पर गंगा के उस पार चंडी देवी का प्राचीन मन्दिर है। लगभग ३ मील की चढ़ाई है। मार्ग पथरीला है तथा खाने पीने की कोई व्यवस्था नहीं है विजयदसवीं के बाद चतुर्दशी को यहां चंडी चौदस का मेला लगता है।

चंडीगढ़ः---श्री चंडीदेवी का एक अन्य प्रसिद्ध मन्दिर चंडीगढ़ से लगभग १० कि०मी० की दूरी पर है। इस मन्दिर के नाम से ही इस नगर का नाम चंडीगढ़ प्रसिद्ध हुआ।

चंडीगढ़ हरियाणा और पंजाब दोनों की राजधानी है परन्तु इसका प्रशासन केन्द्र सरकार चलाती है। यह संघीय राज्य है। यहाँ पर विधान सभा, सचिवालय, हाईकोर्ट, इंजीनियरिंग कॉलेज, विश्वविद्यालय, गांधी भवन, म्यूजियम, रोज-गार्डन, सुखना लेक तथा रॉक गार्डन देखने योग्य स्थान हैं। चंडीगढ़ दिल्ली से २६६ अम्बाले से ३५८ और कालका से ३७ कि०मी० है।

(७) **कालिका देवीः**---श्री काली देवी का सर्व प्रसिद्ध शक्तिपीठ कलकत्ते में है। यहाँ पर सती के केश गिरे थे। यहाँ पर काली देवी के तीन मन्दिर रक्ताम्बरा, मुंडमालिनी तथा मुक्कैशिनी नामों से है।

कालकाः---चंडीगढ़ से ३७ कि०मी० दूर शिमला जाने वाले मार्ग में कालका जी नाम का एक बहुत प्रसिद्ध नगर है। यहाँ पर भी भगवती श्री कालिका देवी का एक छोटा परन्तु अत्यन्त तेजस्वी एवम् प्रभावशाली प्राचीन मन्दिर है। इसी मन्दिर के नाम से इस नगर का नाम कालका पड़ा। कहा जाता है कि सती के केशों के कुछ अंश इस स्थान पर भी गिरे थे। यद्यपि इस की गणना शक्तिपीठों में नहीं है तथापि स्थान के प्रभाव एवम् माता के चमत्कारों के कारण इसकी मान्यता बहुत अधिक है। मन्दिर में माता के दर्शन पिंडी के रूप में होते हैं। सरकार ने कालका मेल रेलगाड़ी से कालका और कलकत्ता दोनों को आपस में जोड़ दिया है।

पिंजोरः---चंडीगढ़ कालका रोड़ पर दिल्ली से २८२ कि०मी० और चंडीगढ़ से २२ कि०मी० और कालका से १५ कि०मी० पहले, पिंजोर (मुगलगार्डन देखने योग्य प्राचीन बाग है। इसे पंजाब के सूबेदार फिदाईखान ने बनवाया था और पटियाला के नरेशों ने इसमें अनेक सुधार किये थे। यह सीढ़ीदार कई मंजिला हैंगिंग

गार्डन है। इसमे प्रत्येक मजिल पर नहर और फुव्वारे है। इसमे फलदार वृक्ष लगे है तथा बच्चो के मनोरजन के लिए चिडियाघर के समान पशु पक्षी भी रखे हुए है।

(८) **मनसा देवीः**---मनसा देवी चडीगढ के समीप मनीमाजग नामक स्थान पर है। चंडीगढ से मनीमाजरा जाने के लिए बसे मिल जाती है। यहॉ पर सती का मस्तक गिरा था इस लिए मनसा देवी का यह स्थान प्रमुख शक्तिपीठ माना गया है। चैत्र के नवरात्रो मे यहॉ बहुत बडा मेला लगता है।

नोटः---हरिद्वार मे भी मनसा देवी का मन्दिर है।

तारादेवीः---शिमला से दस कि०मी० एक पहाडी पर तारादेवी का भव्य एवम् विशाल मन्दिर है। नारादेवी शिमला कालका रेलमार्ग पर एक स्टेशन है। तारादेवी मन्दिर से दूसरी पहाडी पर शिवमन्दिर है। यहॉ स्काउट का मुख्यालय भी हे।

श्यामला देवी (शिमला)ः---दिल्ली से कालका २६८ कि०मी० हे और कालका से शिमला ९६ कि०मी० हे। यह ७००० फुट की ऊँचाई पर है। यहॉ काली देवी का मन्दिर है। जिसे श्यामला देवी कहते है। श्यामला देवी के नाम पर ही इसका नाम शिमला पडा। यहॉ पर जाकु की पहाडी है जहॉ पर हनुमान जी का पवित्र मन्दिर है। यहॉ पर अन्य दर्शनीय स्थान, कुफरी, चैल, तत्ता पानी, ग्लेन, सग्रहालय आदि है।

नाहनः---नाहन जाने के दो तीन रास्ते हैं पहला रास्ता यमुना नगर पाऊँटा साहब से होकर, दूसरा शिमला से सोलन, तीसरा अम्बाला सढौरा तथा कालेआम्ब होकर। नाहन को रेणुका तीर्थ कहा जाता है, यहॉ रेणुका झील है तथा पास मे रेणुका देवी का मन्दिर है और यहाँ पर रेणुका देवी का बहुत बडा मेला लगता है। यहॉ पर जगन्नाथ मन्दिर भी देखने योग्य है।

बैजनाथ पपरोला

यह कांगडा से ४७ और पठानकोटसे १४१ कि० मी० है। यहॉ पर प्रसिद्ध बैजनाथ मदिर है। कुछ लोग इस मंदिर के शिवलिंग को द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक मानते हैं, परन्तु वैद्यनाथ शिव का ज्योतिर्लिंगों देवघर वैद्यनाथ धाम बिहार में स्थित है जिसका वर्णन पहले आ चुका है।

भक्तों की मुरादें पूरी करने वाली----माँ वैष्णो देवी

जून का महीना था, चिलचिलाती धूप थी और हम दादी पोते लाठियाँ टेकते-टेकते माँ वैष्णों देवी की चौदह कि. मी..की चढ़ाई पर चल पड़े। हमे यात्रा में जितनी थकान होती थी वह आने जाने वाले यात्रियों से 'जय माता दी' कहने पर दूर हो जाती थी। 'बोल साचे दरबार की जय' माता के श्रद्धालुओं का जयकारा गूंज कर रमणीक पहाड़ियों को ध्वनित कर रहा था। "चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है," भेंट गाती हुई भक्तों की टोलियाँ रास्ते में मिल रही थीं। ढोलक तथा हारमोनियम की धुनें यात्रा का आनन्द बढ़ा रही थीं।

पूर्ण मार्ग पर पंजाबी, हरयानवी, मराठी, बंगाली, मद्रासी, गुजराती उत्तर तथा दक्षिण भारतीय रमणियाँ अपने मस्तक पर लाल चुन्नी बांधे, कोई पैदल तो कोई घोड़ों पर सवार आती हुई साक्षात् माँ वैष्णों देवी ही प्रतीत होती थीं। जब हम उन्हें 'जय माता दी' कहते थे तो वे भी अपनी मधुर मुस्कान बखेरती हुई हमें दो बार "जय माता दी, जय माता दी," कहती थीं। उनकी मधुर मुस्कान में मानों चारों ओर गुलबकावली के फूल बिखर जाते थे।

उनके चेहरों पर सूर्य देव की विभूषित किरणें पड़ कर एक अनूठी आभा उत्पन्न कर रही थीं। उनमें से जब कोई रमणी हमारी 'जय माता' का उत्तर नहीं देती थी, तब हम कहते थे 'तुसी क्यों नई बोलिया जय माता दी' 'तुसी जोर से बोलो जय माता दी,' 'पहाड़ भी बोलें जय माता दी,' 'सब कोई बोले जय माता दी।' यह सुनकर वे हंसकर कहतीं 'जय माता दी, जय माता दी'। कितनी अद्‌भुत श्रद्धा और कितनी अनोखी एकता, सबके दिलों में भरी थी। सब चिरपरिचित से लगते थे। सबका एक ही लक्ष्य, एक ही राह और एक ही मंजिल थी।

हम दादी पोते हंसते-हंसाते 'जय माता दी, जय माता दी' आधी चढ़ाई चढ़कर आदिकुमारी जा पहुँचे। उस समय संध्या सुन्दरी अपना काला आँचल फैलाकर सूर्य देव की सुनहरी किरणों को अपने आँचल में समेट रही थी। आदिकुमारी पहुँचने पर हमें श्रद्धालुओं की लम्बी लाइन दिखाई दी। हम भी उस लाइन में जा लगे और लाइन में बढ़ते-बढ़ते आदिकुमारी माता की गर्भजून नाम की गुफा के द्वार पर आये और पेट के बल रेंगकर गुफा में प्रवेश किया। हम "जयमाता दी, जय माता दी" कहते हुए आदि कुमारी माता के दर्शन करके गुफा से बाहर आये। इतनी तंग गुफा में से निकलना केवल माता का ही चमत्कार था। "आदिकुमारी" माता का जन्म स्थान माना जाता है।

आदि कुमारी से हाथीमत्था नाम की खड़ी चढ़ाई है। हम दोनों दादी पोते इस चढ़ाई को चढ़ते हुए माँ वैष्णो देवी की ओर आगे बढ़े। जितनी बार हम "जय माता दी" कहते थे उतनी ही आगे बढ़ने की शक्ति हमारे अन्दर आ जाती थी और अंत में हम रात्रि ११ बजे माता के नगर में जा पहुँचे और एक धर्मशाला में रात्रि विश्राम किया। माता के दर्शन के लिए हमारा नम्बर प्रातः चार बजे था। परन्तु गहरी नींद में सोने के कारण हमारा नम्बर निकल गया था। हमारे ऊपर माता की अपार कृपा थी। हमें उनके दर्शन करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। हम मिलट्री गेट से सीधे माता की गुफा के प्रवेश द्वार पर जा पहुँचे।

माता वैष्णो देवी का मन्दिर ५३०० फुट ऊँचाई पर एक गुफा मन्दिर है। गुफा में झुककर प्रवेश करना पड़ता है। माता के चरणों से लगातार जल बहता रहता है जिसे चरण गंगा या बाण गंगा कहते हैं। माता के दर्शन करने से पूर्व बाण गंगा में स्नान करना आवश्यक है।

हमने माता के गुफा मन्दिर में प्रवेश करके माता वैष्णों देवी के दर्शन किए। गुफा में इतना ठंडा जल बहता था कि हमारे पांव बिल्कुल ठिठुर गए थे।

माता के दर्शन करके हम एक ३६.६१ मी. लम्बी १.८२ मी. चौड़ी और ३०. १२ मीटर ऊँची सुरंग के रास्ते बाहर निकले। वहाँ पर हमें पता चला कि इस सुरंग को बनाने का कार्य २-१०-७६ को आरम्भ हुआ था और २०-३-७७ को यह सुरंग बनकर तैयार हो गई थी। इससे पहले माता वैष्णो देवी की गुफा में आने-जाने का एक ही द्वार था '

पहले कटरा से माता वैष्णो देवी के भवन तक १४ कि. मी. के रास्ते पर तीर्थ यात्रियों को कई प्रकार की असुविधायें होती थीं। जगह-जगह गंदगी के ढेर, बिजली पानी की कमी, दुकानदारों की लूट खसोट, बदबूदार शौचालय तथा भिखारियों की

भरमार होती थी। जम्मू कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल श्री जगमोहन ने स्वयं कटरा से माता के भवन तक पैदल यात्रा करके इन असुविधाओं का अनुभव किया। उन्होंने भक्तों की श्रद्धा और विश्वास से प्रभावित होकर उनकी असुविधाओं का निवारण करने के लिए १९८६ में श्री वैष्णो देवी स्थापना बोर्ड बनाया। स्थापना बोर्ड ने कटरा से माँ वैष्णो देवी के भवन तक १४ कि. मी. चढ़ाई का रास्ता चौड़ा तथा पक्का करा दिया है। इस पर दस लाख टाइलें, ५ हजार फुट दीवारें और २ हजार मीटर रेलिंग लगाई गई हैं। सड़क पर जगह-जगह सफाई कर्मचारी लगाये गये हैं जो जरा सी भी गन्दगी या घोड़ों की लीद होते ही तुरन्त साफ कर देते हैं। शौचालयों की सफाई कराने के लिए कर्मचारी नियुक्त किए गए हैं जो शिफ्टवाइज राउंड दी क्लाक काम करते हैं। २६ विश्राम गृह तथा ७८ जलपान गृह बनाये गए हैं। लगभग ५०० शौचालय बनाये गए हैं। जगह-जगह पीने के पानी की सुविधा की गई है। वाटर कूलर, सिटैंक्स टंकियाँ तथा पानी के स्टैंड पोस्ट' लगाये गये हैं जिनमें हर समय लगभग एक लाख गैलन से भी अधिक स्वच्छ तथा शीतल जल भरा रहता है। खच्चरों तथा टट्टूओं को भी पानी पिलाने की व्यवस्था की गई है। खच्चरों तथा टट्टूओं के किराये निर्धारित किए गए हैं ताकि वे यात्रियों से अधिक पैसे न ले सकें।

जगह-जगह रंग-बिरंगे सुगन्धित फूलों की २६ वाटिकायें तथा पार्क बनाये गये हैं जो यात्रियों का मन मोह लेते हैं। हरे भरे घास के लान तथा खूबसूरत पेड़ पौधे देखकर यात्री विह्वल हो उठते हैं। और वहाँ बैठकर प्रकृति के खुले दामन का दिल खोलकर आनन्द लेते हैं।

एल.पी.जी गैस, न लाभ न हानि के आधार पर जलपान गृहों, दवाखानों कम्बलों की सफाई रखने की सुविधायें तथा स्नान गृहों का प्रबन्ध किया गया है। भिखारियों तथा निर्धनों को रोजगार के लिए स्कूल, रोजगार तथा प्रशिक्षण केन्द्र खोले गए हैं। महिला मंडल की स्थापना की गई है। वर्क सैन्टर खोले गए हैं। जिनमें औरतें चुन्नियाँ, चोली, टोपियाँ, कर्मचारियों की वर्दियाँ तथा बैजिज बनाने का काम करती हैं। मन्दिर के पास संस्कृत विद्यालय खोला गया है जहाँ रिसर्च के दस विद्यार्थियों को एक-एक हजार रुपया प्रति मास वजीफा दिया जाता है।

यही नहीं घोड़ों की चिकित्सा के लिए चार पशु डिस्पैंसरियाँ बनाई गई हैं। चरण पादुका आदिकुमारी तथा वैष्णो देवी जहाँ-जहाँ पर ठहरने के स्थान हैं वहाँ पर घोड़ों के लिए विश्रामालय बनाये गए हैं। घोड़ों के मालिकों को लाइसैंस दिए गए हैं तंथा उन्हें मुफ्त वर्दी भी दी गई है। घोड़े पर उचित भार रखने तथा किराये की रक्म निश्चित है ५४ रुपए प्रति सवारी एक तरफ का किराया है। पंडों की लूट

खसोट खत्म करके सब प्रबन्ध स्थापना बोर्ड ने अपने हाथ में ले लिया है और दान पेटियाँ लगवा दी हैं। दान की पर्ची भी कटती है।

स्थापना बोर्ड द्वारा किए गए इन सुधारों को देखकर हमारा मन बहुत प्रसन्न हुआ। हमने माँ वैष्णो देवी के दर्शन करके अन्य मन्दिर देखे। भवन से बाहर आकर कुछ सीढ़ियाँ उतरकर बहुत आलीशान राम मन्दिर बना हुआ है जिस में राम लक्ष्मण तथा सीता जी की मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों के सामने कुछ दूरी पर हनुमान जी हाथ जोड़े खड़े हैं।

माँ वैष्णो देवी के मन्दिर से दो, तीन कि. मी. की चढाई पर भैरों मन्दिर है। कहा जाता है कि माँ वैष्णो देवी ने भवन के पास चंड़ी रूप धारण करके भैरों का वध किया था। भैरों का धड गुफा के पास और सिर भैरों घाटी मे गिरा था। भैरों घाटी में उसी स्थान पर भैरों मन्दिर है। मॉ के दर्शन करके भैरों के दर्शन करने भी जरूरी हैं, नहीं तो यात्रा पूरी नहीं होती। घोडे वाले एक तरफ का किराया २२ रुपये लेते हैं कुछ लोग नीचे से ही भैरों मन्दिर के दर्शन कर लेते हैं।

वैष्णो देवी ५१ शक्तिपीठों में गिनी जाती है। इसकी महिमा निराली है। यह अपने भक्तों की सब मुरादें पूरी करती है और खुशियों की झोली भरती है।

वैष्णो देवी जाने के लिए रेल द्वारा जम्मू जाते हैं। जम्मू दिल्ली से ५८६ कि.

मी. पठानकोट से १०१ कि.मी. और जालन्धर से २१७ कि.मी. है। सड़क द्वारा दिल्ली से अम्बाला १६३ अम्बाला से जालन्धर १६८ जालन्धर से पठानकोट ११६ और पठान कोट से जम्मू १०८ कि.मी. है। जम्मू से बस द्वारा कटरा जाते हैं जो लगभग ४८ कि.मी. है। उससे आगे बस नहीं जाती। शेष १४ कि.मी. मार्ग पैदल या घोड़ों पालकियों द्वारा तय करना पड़ता है। बच्चों को ले जाने के लिए पिट्टू मिल जाते हैं।

कटरा से बाण गंगा लगभग ३ कि.मी. है। वहाँ से वैष्णो देवी की चढ़ाई शुरू होती है। अब कटरा से बाण गंगा तक ऑटो रिक्शा भी चलने लगे हैं। बाण गंगा एक बहुत सुन्दर चश्मा है जिसमें यात्री स्नान करके बहुत आनन्द उठाते हैं। यहाँ पर सारा दिन भंडारा चलता है जिसमें कोई भी यात्री निःशुल्क पेटभर कर गर्मागर्म तथा स्वादिष्ट भोजन खा सकता है।

कटरा से पांच कि.मी. पर चरण पादुका स्थान पड़ता है जो माता के चरण चिह्न माने जाते हैं।

आवश्यक

यात्रियों को कटरा से यात्रा प्रारम्भ करने से पहले बस स्टेंड के पास बने टूरिस्ट सेंटर से माता वैष्णो देवी के दर्शन करने के लिए पर्ची ले लेनी चाहिए जो कि निःशुल्क दी जाती है तथा माँ वैष्णो देवी के स्थान पर पहुँचकर वह पर्ची दिखा कर वहाँ से दूसरी पर्ची प्राप्त कर लेनी चाहिए।

श्री रघुनाथ मन्दिर---जम्मू

वैष्णो देवी जाते या आते ममय प्रायः जम्मू में ठहरते हैं। यहाँ पर श्री रघुनाथ मन्दिर देखने योग्य है। इस मन्दिर की स्थापना १८५६ ई० में महाराजा गुलाब सिंह ने की थी। लेकिन महाराजा रणबीर सिंह ने इसे पूरा कराया था। इस मन्दिर में भगवान् श्री राम, लक्ष्मण और सीता जी की मूर्तियाँ हैं। इसके अतिरिक्त अन्य देवी देवताओं तथा ऋषि मुनियों की मूर्तियाँ हैं। मन्दिर में एक धर्मशाला है। मन्दिर के बाहर अखरोट तथा बादाम की अनेक दुकानें हैं। यह मन्दिर नगर के बीच में बस अड्डे के निकट है।

शिव मन्दिरः---इस मन्दिर का रणेश्वर मन्दिर भी कहा जाता है। इस मन्दिर में ६२ शिवलिंग हैं।

इसके अतिरिक्त बहुफोर्ट, गुमितगेटवे, डोगरा आर्ट गैलरी, रणबीर नहर, अखनूर, बटोर, कुदमानसर झील तथा सूरन सूद झील देखने योग्य हैं।

जम्मू कश्मीर राज्य की शीतकालीन राजधानी है। यहाँ से श्रीनगर २६६ कि. मी. है तथा जम्मू से कटरा ४६ कि.मी. है।

जम्मू 'तवी नदी' के किनारे पर है। इसलिए यहाँ के रेलवे स्टेशन का नाम जम्मू तवी है। रेल द्वारा जम्मू-तवी, दिल्ली से ५८६, पठानकोट से १०१, जालन्धर से २१७ तथा अमृतसर से वाया पठानकोट २०८ कि.मी है। सड़क द्वारा दिल्ली से अम्बाला १९३ कि.मी. अम्बाला से जालन्धर १९६ जालन्धर से पठानकोट ११६ और पठानकोट से जम्मू १०८ कि.मी. दूर है। जम्मू में ठहरने के लिए रघुनाथ मन्दिर धर्मशाला, सुन्दर सिंह गुरुद्वारा, विनायक मिश्र धर्मशाला, ब्राह्मण सभा, गीता भवन, टूरिस्ट सराय तथा कई होटल हैं।

प्राकृतिक हिमलिंग (शिवलिंग)---अमरनाथ (जम्मू व कश्मीर)

जम्मू से श्रीनगर २९३ कि.मी. है। रेलमार्ग केवल जम्मू तक ही है। इसलिए जम्मू से आगे केवल बस द्वारा ही जा सकते हैं। श्रीनगर से १४० कि.मी. पहल गाँव है। पहल गाँव से अमरनाथ की पदयात्रा आरम्भ हो जाती है जो कि लगभग ४४ कि.मी. है। पैदल न चल सकें तो टट्टू-खच्चर आदि मिल जाते हैं। लद्दीर नदी के किनारे रास्ता जाता है। १४ कि.मी. पैदल चलने के बाद चन्दनवाड़ी नाम का स्थान आता है। यहाँ तक मार्ग कठिन नहीं है। चन्दनवाड़ी से आगे ८ कि.मी. कठिन चढ़ाई चढ़कर शेषनाग नाम का स्थान आता है। यहाँ शेषनाग की झील है। शेषनाग से आगे बर्फ का रास्ता है। १५ कि.मी. बर्फ पर चलकर पंचतरणी नामक स्थान आता है। पंचतरणी में धर्मशाला और होटल हैं। यहाँ पर ठहर कर यात्री आगे की यात्रा करते हैं। पंचतरणी से ६ कि.मी. आगे अमरनाथ है। यात्री प्रातः अमरनाथ जाकर सायंकाल वापिस पंचतरणी आ जाते हैं।

अमरनाथ १३००० फुट की ऊँचाई पर है। यहाँ पर अमरनाथ नाम की गुफा है। गुफा में प्राकृतिक हिमलिंग (बर्फ का बना हुआ शिवलिंग) तथा बर्फ का बना हुआ चबूतरा (हिमपीठ) है, जो ठोस बर्फ का है। गुफा के बाहर चारों ओर मीलों तक कच्ची बर्फ मिलती है। गुफा से नीचे अमर गंगा है। टट्टू-खच्चर यहीं रुक जाते हैं। अमर गंगा से अमरनाथ गुफा आधा मील ऊपर है। प्राचीन काल से हिन्दु अमरनाथ शिवलिंग की दिव्य शिवलिंग के रूप में पूजा करते हैं। यात्री चन्दनवाड़ी, शेषनाग, पंचतरणी में एक-एक, या दो-दो दिन सुविधानुसार विश्राम करके ६-७ दिनों में अपनी यात्रा पूरी करते हैं। अमरनाथ यात्रा हर वर्ष रक्षा-बंधन पर होती है।

पंजाब के कुछ धार्मिक नगर---
आनन्दपुर साहिब, कीरतपुर, जालन्धर, अमृतसर, रामतीर्थ, बाबा डेरा नानक, सरहिन्द, दमदमा साहिब

आनन्दपुर साहिबः---नांगल से २१ और रोपड़ से ३७ कि.मी. दूर उत्तर में आनन्दपुर नगर है। यह नगर सन् १६६६ में गुरु तेग बहादुर जी ने बसाया था। यह नगर सिक्खों का पवित्र तीर्थ है। यहाँ निम्नलिखित दर्शनीय स्थान हैं।

गुरुद्वारा केशगढ़ साहिबः---यह विशाल एवम् भव्य गुरुद्वारा खालसा का एक तख्त (सिंहासन) या मुख्यालय है। यहाँ सन् १६६६ में सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी ने, "पंज पियारों" (प्रथम पांच सिक्खों अर्थात् शिष्यों को भक्तों से खालसा बनाया था। यहीं पर उनकी परीक्षा ली थी तथा अमृत चखाकर दीक्षित किया था। उन्होंने सिक्खों को केश, कृपाण, कड़ा, कच्छा और कंघा धारण करने की आज्ञा दी थी।

(२) गुरुद्वारा शीशगंज साहिबः---यहाँ पर गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने पिता गुरु तेग बहादुर के शीश का अन्तिम संस्कार किया था। औरंगजेब की आज्ञा से १६७५ में गुरुद्वारा शीशगंज चांदनी चौक दिल्ली के स्थान पर गुरु तेग बहादुर का सिर काट दिया गया था। गुरू तेग बहादुर के धड़ का संस्कार गुरूद्वारा रकाब गंज दिल्ली में किया गया था। गुरु तेग बहादुर जी ने धर्म की रक्षा के बलिदान दिया था। इसके अतिरिक्त यहाँ पर गुरु का महल, दमदमा साहिब और मंजी साहिब है।

नगर की रक्षा के लिए गुरु गोबिन्द सिंह ने आनन्दगढ़, लोहगढ़, फतेहगढ़ केशगढ़ और होलगढ़ नाम के किले बनवाये थे।

कीरतपुर साहिबः---आनन्दपुर जाते हुए रोपड़ से २० कि.मी. दूर कीरतपुर साहिब नगर है। यह भी सिक्खों का पवित्र तीर्थ है। यहाँ पर निम्नलिखित स्थान दर्शनीय हैं।

गुरुद्वारा हरमन्दिर साहिबः---यह गुरु हरगोबिन्द सिंह जी का निवास स्थान था।

(२) शीशमहलः---यहाँ गुरु हरराय और गुरु हरकिशन का जन्म हुआ था। गुरु हर गोबिन्द यहाँ ठहरे थे।

(३) तख्त साहिबः---यहाँ गुरु हरराय और गुरु हरकिशन का राज्याभिषेक हुआ था।

जालन्धरः---जालन्धर दिल्ली से ३६८ दूर अमृतसर से ७६, पठानकोट से ११६७ तथा अम्बाले से १७१ कि.मी. है।

कहा जाता है कि यहाँ जालन्धर नाम का राजा था। शिव ने उसका वध किया था। कुछ लोग इसे गोरखनाथ की परम्परा के जलन्धर नाथ से सम्बन्धित मानते हैं। यहाँ पर बाबा जलन्धर का मेला भरता है। इसे रावी, ब्यास और सतलुज तीन नदियों के नाम पर त्रिगर्त भी कहा जाता है। यह ५१ शक्तिपीठों में से एक है। यहाँ सती का बायां स्तन गिरा था। इस जगह विश्वमुखी देवी का मन्दिर है और यही शक्तिपीठ का स्थान है।

अमृतसरः---अमृतसर दिल्ली से ४४८, अम्बाला से २५०, जालन्धर से ७६ और पठानकोट से १०७ कि.मी. है। सिक्खों के चौथे गुरु रामदास ने १५७६ में इस नगर की स्थापना की थी। यह भूखंड सम्राट अकबर ने गुरु को दान किया था। गुरु रामदास ने यहाँ पर एक सरोवर बनाया था जिसका नाम अमृतसर रखा था। गुरु अर्जुन देव ने इस तालाब के बीच में एक गुरुद्वारा बनवाया जिसे स्वर्ण मन्दिर कहते हैं। १७६१ में अहमदशाह अब्दाली ने मन्दिर को ध्वस्त किया था परन्तु महाराजा रणजीत ने मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। उन्होंने गुम्बदों पर ताम्बे की चादर मढ़वाई और उसके ऊपर लगभग ४०० किलो सोने की पतरी मढ़वाई इसी लिए इसे स्वर्ण मन्दिर कहा जाता है। इस मन्दिर का नाम दरबार साहब और हरिमन्दिर भी है। मन्दिर तक जाने के लिए पानी के ऊपर संगमर्मर का एक रास्ता बना हुआ है जिसमें मन्दिर का झिलमिलाता प्रतिबिम्ब अत्यन्त लुभावना लगता

है। मन्दिर के द्वार चान्दी के हैं। यह सफेद संगमर्मर से बना तिमंजला भवन है और उत्तर भारत का सबसे सुन्दर भवन है। इसकी सुनहरी गुम्बद आँखों को चुन्ध्या देती हैं। दीवाली पर इसकी छवि देखने योग्य है। यह गुरुद्वारा खालसा का एक तख्त है।

गुरु अर्जुन देव ने इस मन्दिर में सिक्खों के पवित्र ग्रन्थ 'गुरु ग्रन्थ साहब' को स्थान दिया था। स्वर्ण मन्दिर के निकट गुरु का बाग भी देखने योग्य है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर रामबाग गार्डन (इसे महाराजा रणजीत सिंह ने बनवाया था) जलियाँ वाला बाग (जहाँ १३ अप्रैल १६१६ को एक ब्रिटिश जनरल डायर ने स्वतंत्रता सैनानियों की शान्तिपूर्ण सभा पर गोलियाँ चलाकर दो हजार भारतीयों को भून दिया था)।---आदि देखने योग्य स्थान हैं।

गोबिन्दगढ़ फोर्टः---इस किले को १८०६ में महाराजा रणजीत सिंह ने बनवाया था।

दुर्गियाना मन्दिरः---स्वर्ण मन्दिर की तरह ही यह दुर्गा देवी का भव्य मन्दिर है जो चारों तरफ से एक सुन्दर सरोवर से घिरा है।

रामतीर्थः---अमृतसर से १३ कि.मी. पर रामतीर्थ है। कहा जाता है कि यहाँ पर बाल्मीकि ऋषि का आश्रम था और सीता जी ने यहीं पर लव और कुश को जन्म दिया था। लव ने लवपुर (लाहौर) और कुश ने कुशपुर (कसूर) बसाया था। ये दोनों नगर अब पाकिस्तान में हैं। रामतीर्थ में भगवान श्रीराम मन्दिर है।

तरनतारनः---अमृतसर से २४ कि.मी. आगे तरनतारन है। यहाँ पर सरोवर के किनारे एक बहुत भव्य गुरुद्वारा है। यह गुरुद्वारा १७६८ में गुरु रामदास की स्मृति में बना था।

डेरा बाबा नानकः---अमृतसर से ५५ और गुरदासपुर से ६५ कि.मी. दूर डेरा बाबा नानक स्थान है। यहीं पर गुरु नानक जी का जन्म हुआ था। यह सिक्खों का पवित्र तीर्थ स्थान है।

अमृतसर से सोलह मील पर पाकिस्तान की सीमा है। पाकिस्तान से आये यात्रियों के लिए यह प्रवेश द्वार है।

सरहिन्दः---दिल्ली अमृतसर रेल मार्ग पर राजपुरा और लुधियाना के बीच सरहिन्द जंकशन है। अम्बाला से ५४ और लुधियाने से ६० कि.मी. है। १०११ में मुहम्मद गजनवी ने यहाँ आक्रमण किया था। अल्तूनिया ने रजिया सुलताना को यहाँ पर कैद रखा था बाद में दोनों का विवाह हो गया था। १७०४ में औरंगजेब

के आदेश पर गुरु गोबिन्द सिंह क सात और नौ वर्षीय पुत्रों जोरावर सिंह और फतेह सिंह को यहीं पर दीवार में जिन्दा चिनवा दिया था। १७१० में बन्दा वैरागी ने यहाँ कत्लेआम किया था। तथा साहिबजादों का बदला लिया था।

यहाँ पर दर्शनीय स्थान किला, रोजाशरीफ, आम-खास-बाग, गुरुद्वारा फतेहगढ़ साहिब, गुरुद्वारा ज्योतिस्वरूप, सदना कसाई का मकबरा, हाजी मुहम्मद का मकबरा, उस्ताद शागिर्द का गुम्बद तथा जहाज हवेली आदि हैं। यह मुसलमानों का पवित्र जयारत का स्थान है। यहाँ पर हजरत शेख अहमद इमाम ख्बानी मुजद्दीन अल्फानी रह० तथा हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह से फैजे बातनी की मजार शरीफ है।

दमदमा साहिबः---पहले यहाँ का नाम तलवंडी साबो था (पटियाला रियासत में)। गुरु गोबिन्द सिंह जी. महाराज यहाँ पर आये थे। उनको दो वर्ष (१७०६-१७०८) यहाँ दम लेने का अवकाश मिला, इसलिए तलवंडी को दमदमा साहिब कहने लगे। दमदमा साहिब में ही गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने आदि ग्रन्थ का फिर से संकलन किया तथा दशम् ग्रन्थ की रचना की। उनके दरबार में ५२ कवि भी रहते थे। यहाँ पर बहुत भव्य एवम् विशाल गुरुद्वारा है। यह गुरुद्वारा पांच महान अकाल तख्तों में से एक है।

पुण्य कर्मभूमि---कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

भारत में ७ पवित्र क्षेत्र हैं (१) हरिहर क्षेत्र (सोनपुर बिहार) (२) प्रभास क्षेत्र (विरावल गुजरात) (३) रेणुका क्षेत्र (रुनकता उत्तर प्रदेश) (४) भृगु क्षेत्र (भड़ौच गुंजरात) (५) पुरुषोतम क्षेत्र (पुरी उड़ीसा) (६) सूकर क्षेत्र (सौरों उत्तर प्रदेश) (७) कुरुक्षेत्र (हरियाणा)।

कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र तथा समन्त पंचक के नाम से भी पुकारा जाता है। यह हरियाना राज्य में सरस्वती नदी के किनारे पर है। यहीं पर आर्य संस्कृति की उत्पत्ति और विकास हुआ। यहाँ पर अग्नि, इन्द्र, ब्रह्मा, दधिची ऋषि, अरुधती तथा मारकंडे आदि ऋषियों ने तप किया था। इन्द्र देवता ने यहीं पर दधिची ऋषि से हड्डियों का दान मांगा था। राजा कुरु ने भी यहाँ पर घोर तपस्या की थी। उन्हीं के नाम पर इस क्षेत्र का नाम कुरुक्षेत्र पड़ा। इस पुण्य भूमि में मरने वालों को मोक्ष प्राप्त होता है। इसलिए इसे धर्मक्षेत्र या पुण्य क्षेत्र भी कहा जाता है।

कुरुक्षेत्र दिल्ली से अम्बाला रेलमार्ग पर १६१ कि.मी. उत्तर की ओर है। सड़क द्वारा जी.टी. रोड़ पर १५२ कि.मी. दूर पीपली नामक स्थान है। पीपली से पश्चिम की ओर ६ कि.मी. पर कुरूक्षेत्र है तथा पीपली से १५ कि.मी. पूर्व की ओर लाडवा है। दिल्ली, अम्बाला, चंडीगढ़, करनाल, हरिद्वार, कैथल, पेहोवा आदि से सीधी बसें कुरुक्षेत्र जाती हैं। कुरुक्षेत्र में ठहरने के लिए अनेक धर्मशालायें हैं।

कुरुक्षेत्र में कौरवों पांडवों का १८ दिन महायुद्ध हुआ था। जिसे महाभारत युद्ध कहते हैं। इस युद्ध में कौरवों की हार तथा पांडवों की जीत हुई थी। यहीं पर भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था। कुरुक्षेत्र का नाम लेने मात्र से ही मनुष्य के सब पाप कट जाते हैं।

इस पवित्र भूमि में निम्नलिखित तीर्थ स्थान है।:---

(१) स्नेहत:---यह तीर्थ कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से ढ़ाई कि.मी. की दूरी पर

पश्चिम दक्षिण में है। ५०० गज लम्बा तथा १५० गज चौड़ा निर्मल जल से भरा सरोवर है। इसके चारों ओर अनेक प्राचीन मन्दिर बने हुए हैं। यहाँ पर पिंड दान भी किया जाता है। इस तीर्थ को समन्त पंचक तीर्थ भी कहा जाता है। परशुराम जी ने २१ बार क्षत्रियों को मार कर इसी तीर्थ पर अपने पिता का तर्पण किया था। इसी तीर्थ पर स्वर्ग लोक की अप्सरा उर्वशी का राजा पुरूर्वा से पुनर्मिलन हुआ था। कौरव पांडव संध्या समय युद्ध बन्द करके इस तीर्थ में स्नान करते थे और इकट्ठे बैठकर प्रेम-पूर्वक बातें करते थे। उनमें युद्ध की कोई शत्रुता नहीं रहती थी। स्नेह युक्त बातें होने के कारण इस तीर्थ को स्नेहत कहा जाता है। यहाँ पर सूर्य ग्रहण का मेला लगता है।

(२) ब्रह्म सरोवर :--- स्नेहत से लगभत १/२ कि० मी० आगे ब्रह्म सरोवर या ब्रह्मसर है। यह सरोवर एशिया में सब से बड़ा माना जाता है। इस की लम्बाई ४००० फुट और चौड़ाई २००० फुट है इस तीर्थ में ब्रह्मा जी की नाभि से कमल की उत्पत्ति हुई थी जिसमें से वेदों की रचना हुई। इस तीर्थ के बीच में सर्वेश्वर महादेव जी का प्राचीन मन्दिर है। ब्रह्म सरोवर के चारों ओर की भूमि को धर्मक्षेत्र कहा जाता है। यहाँ पर चन्द्रग्रहण, सोमती अमावस्या, बावन द्वादशी, फलगु तथा वैसाखी का मेला लगता है और लाखों यात्री स्नान करते हैं। ब्रह्म सरोवर के मध्य में चन्द्र कूप है। ब्रह्म सरोवर में स्नान करके तीर्थ यात्री इस कूप के दर्शन करते हैं।

(३) **बाबा श्रवण नाथ की हवेली :---** ब्रह्मसर के.उत्तर में बाबा श्रवण नाथ की हवेली है। इस में पाँच पांडवों, कौरवों, भगवान श्री कृष्ण, बाण शय्या पर लेटे भीष्म पितामह, भगवान लक्ष्मी नारायण, भगवती दुर्गा तथा बाबा श्रवण नाथ की मूर्तियाँ है। बाबा श्रवण नाथ १७वीं शताब्दी के अंत में एक बहुत प्रसिद्ध महात्मा हुए। उन्होंने ही इस हवेली को बनवाया था।

(४) **गीता भवन :---** ब्रह्मसरोवर के निकट ही गीता भवन है। इसका निर्माण १६२१, २२ में किया गया था। यहाँ पर एक पुस्तकालय है जिसमे धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त हर भाषा में गीता उपलब्ध है।

(५) **गीता मन्दिर :---** (बिड़ला मन्दिर) बाबा श्रावण नाथ की हवेली के निकट गीता मन्दिर है। इसे श्री घनश्याम बिड़ला ने बनवाया था। इस मन्दिर के प्रांगण में संगमर्मर का बना एक रथ है जिसमें भगवान श्री कृष्ण विषादयुक्त अर्जुन को उपदेश दे रहे हैं। बिड़ला मन्दिर में एक धर्मशाला भी है जिसमें यात्री ठहरते हैं।

(६) **कर्ण का टीला:---**ब्रह्मसरोवर से एक कि० मी० दक्षिण पश्चिम की ओर कर्ण का टीला या कर्ण का खेड़ा है। यहाँ पर दानवीर कर्ण ने युद्ध के समय ब्राह्मणों को दान दिया था। यह स्थान कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन के चार कि० मी० दूर है।

(७) **बाण गंगा :---**कुरुक्षेत्र में तीन बाण गंगा हैं।

(१) **नरकातारी भीष्म कुंड** कुरूक्षेत्र से ६ कि० मी० नरकातारी गाँव है। इसके समीप भीष्म कुंड या बाण गंगा है। भीष्म पितामह अर्जुन के बाणों से घायल होकर अर्जुन द्वारा बनाई गई बाण शय्या पर पड़े थे। अर्जुन ने पृथ्वी में बाण मार कर जल निकाला था। उस जल को पीकर भीष्म पितामह तृप्त हुए थे। भीष्म पितामह ने यहीं पर पाँडवों, द्रोपदी तथा भगवान श्री कृष्ण को शान्ति पर्व तथा विष्णु सहस्त्र नाम सुनाया था। बाण गंगा के तट पर २६ फुट ऊँची हनुमान जी की मूर्ति है तथा भीष्म पितामह, पांडव, तारकेश्वर महादेव, पंचमुखी हनुमान, श्री गंगा जी तथा श्री सीता रामचन्द्रजी का मन्दिर है। यह बाण गंगा पेहवा रोड पर है। इस बाण गंगा में स्नान करने से मनुष्य के पाप नष्ट हो जाते हैं। **(२) दूसरी बाण गंगा दयालपुर गांव के पास है।** यह बाण गंगा ब्रह्मसरोवर से दक्षिण की ओर ६ १/२ कि० मी० है। यहाँ पर जयद्रथ वध के दिन अर्जुन ने अपने घोड़ों को प्यासे देख कर पृथ्वीं में बाण चला कर बाण गंगा प्रकट की थी और घोड़ों को पानी पिलाया था।

(३) तीसरी बाण गंगा अमीन गाँव के पास है। यह कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से ६ कि० मी० है। महाभारत युद्ध में कर्ण के रथ का पहिया यहीं पर जमीन में धंस गया था और अर्जुन ने उसे अपने बाणों से घायल कर दिया था। भगवान

श्रीकृष्ण और अर्जुन भेष बदल कर कर्ण की दानवीरता की परीक्षा लेने गये थे। कर्ण ने अपना एक सोने का दाँत उखाड़ कर उसे धोने के लिये पृथ्वी में बाण चला कर जल की धारा प्रकट की थी और उस दिव्य जल से दाँत को धोकर दान किया था। **अभिमन्यु का वध** ६ महारथियों ने मिलकर इसी स्थान पर किया था। अभिमन्यु के नाम पर इस गाँव का नाम अपभ्रंश होकर अमीन प्रसिद्ध हुआ। अमीन गाँव से आधा कि० मी० की दूरी पर **जयधर नाम का गाँव है।** यहाँ पर अर्जुन ने **जयद्रथ को मार कर अपने पुत्र अभिमन्यु के वध का बदला लिया था।** इस स्थान का नाम जयद्रथ का अपभ्रंश होकर जयधर है।

(८) **ज्योतिसर :---** नरकातारी भीष्म कुंड या बाण गंगा से दो कि० मी० आगे पेहवा रोड पर ज्योतिसर है। यह स्थान कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से ८ कि० मी० है। यहीं पर सरस्वती नदी बहती है। यहीं पर बरगद के पेड़ के नीचे भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया था। अब उस पेड़ की दाड़ियाँ हैं। यहाँ पर हजार फुट लम्बा तथा ५०० फुट चौड़ा सरोवर है।

ज्योतिसर में प्रत्येक वर्ष शीतकाल में शुक्ल पक्ष की एकादशी को माघ के महीने में १८ दिन तक गीता जयन्ती मनाई जाती है।

(९) **स्थानेश्वरः---** अर्थात् ईश्वर का स्थान। यह कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से लगभग तीन कि० मी० की दूरी पर हे। यह ईश्वर का स्थान है। यहां भगवान विष्णु की नाभि से कमल उत्पन्न होकर उसके ऊपर ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई थी। महाभारत युद्ध से पूर्व पांडवों ने विजय प्राप्ति के लिये यहीं पर भगवान शंकर का पूजन किया था। यहाँ पर कमलनाभ मन्दिर है तथा सरोवर है।

(१०) **भद्रकालि मन्दिर :---** यह मन्दिर ५१ शक्ति पीठों में से एक है। यहाँ पर सती जी के दाहिने पांव की घुट्टी गिरी थी। पांडवों ने विजय प्राप्ति के लिये यहाँ पर भद्रकालि का पूजन किया था।

(११) **शेखचिल्ली का मकबरा :---** स्थानेश्वर के निकट ही शेखचिल्ली का मकबरा है। तजकारते औलिया के अनुसार हजरत शेखचिल्ली एक सूफी सम्प्रदाय के ईरानी संत थे। कुरुक्षेत्र में कुतुबजलालुदीन रहते थे। कहा जाता है कि एक बार सम्राट शाहजहाँ लाहौर से दिल्ली आ रहे थे। तब वह अपनी सेना सहित कुरुक्षेत्र में ठहरे थे। कुतुब जलालुद्दीन ने एक प्याला जल और आधी रोटी से मुगल सेना को तृप्त कर दिया था। शाहजहाँ ने कुतुबजलालुद्दीन से प्रसन्न होकर यह मकबरा बनवा दिया था। शेखचिल्ली कुतुबजलालुद्दीन से मिलने के लिये यहाँ पर आये थे। वह कुतुबजलालुद्दीन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने वापिस जाना मुनासिव नहीं

समझा और प्राणायाम द्वारा स्वर्ग सिधार गये। कुतुबजलालुदीन साहिब के आदेशानुसार शेखचिल्ली को इसी मकबरे में समाधि दी गई। अब यह मकबरा शेखचिल्ली के मकबरे के नाम से प्रसिद्ध है और कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से २ १/२ कि० मी०, के फासले पर है।

मकबरे के साथ ही लाल पत्थर की बनी एक मस्जिद है जिसे लाल मस्जिद कहते हैं।

(१२) गुरुद्वारा :--- कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से दो कि० मी० पर छटे गुरु के नाम पर एक बहुत बड़ा गुरुद्वारा है।

कुरुक्षेत्र एक पुण्य कर्म भूमि है। वैदिक युग से समस्त भारतवासियों पर इस पुण्य कर्म भूमि का प्रभाव पड़ा है। चाहे कोई हिन्दू हो या किसी अन्य सम्प्रदाय का, सब ने इस पवित्र भूमि को आदर और श्रद्धा से देखा है। भगवान बुद्ध भी यहाँ की धार्मिकता तथा अध्यात्मिकता से प्रभावित हुए और यहाँ आकर अपने धर्म का प्रचार किया था। सिख धर्म के दस गुरुओं को भी कुरुक्षेत्र ने प्रभावित किया था। उनमें से नौ गुरु यहाँ पधारे थे। यहाँ पर विभिन्न गुरुओं के नाम पर गुरुद्वारे बने हैं।

हरियाना के कुछ अन्य धार्मिक नगर---
पेहोवा, कैथल, लाडवा, पानीपत, गुड़गावां सोहना, भिवानी करनाल आदि।

पेहोवाः---यह कुरुक्षेत्र से लगभग १५-२० कि० मी० पश्चिम की ओर हैं। यह हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थान है भारत की सात पवित्र नदियों में से एक सरस्वती नदी यहाँ बहती है। नदी के किनारे अनेक दर्शनीय मन्दिर और घाट हैं। यह नगर सरस्वती नदी के किनारे पर बसा हुआ है। इस नगर का प्राचीन नाम "पृथूदक" था। इसे राजा वेन के पुत्र राजा पृथु ने बसाया था जिसके नाम पर इस नगर का नाम पृथुदक पड़ा जिसे बाद में पेहोवा कहने लगे।

कैथलः---कैथल, पेहोवा से लगभग ३०-३५ कि० मी० है। इसका प्राचीन नाम "कपिस्थल" है। कहा जाता है कि यहाँ पर हनुमान जी का जन्म हुआ था। रामायण में कपि का वर्णन हुआ है जिसका तात्पर्य हनुमानजी से है। कपि से ही इस स्थान का नामक कपिस्थल पड़ा। यहाँ पर प्राचीन मन्दिर हैं। युधिष्ठिर ने दुर्योधन से जो पांच गाँव मांगे थे उनमें से यह भी एक था। बस स्टैंड के पास बहुत सुन्दर पार्क है। बीच में एक नदी-सी बहती है। दूसरी तरफ एक प्राचीन किला है जिसके अब खंडहर हो चुके हैं।

लाडवाः---कुरुक्षेत्र से लगभग २० कि० मी० पूर्व की ओर यमुना नगर जगाधरी रोड पर लाडवा नाम का एक प्राचीन नगर है। यहाँ पर पाँच सौ वर्ष प्राचीन लाडली देवी सुन्दरी बाला का मन्दिर है। लाडली देवी के नाम से ही इस नगर का नाम 'लाडली वाला' पड़ा जो बाद में लाडवा हो गया

कहा जाता है कि ५०० वर्ष पूर्व यहाँ राजा जीतसिंह राज्य करते थे। उनको

स्वप्न में त्रिलोकपुर वाली देवी ने दर्शन देकर कहा कि तुम अपने नगर में मेरा मन्दिर बनवाओ। राजा ने त्रिलोकपुर से देवी की पिंडी मंगवाई और उसे चैत्र मास के चौदस के दिन इस स्थान पर प्रतिष्ठित करके लाडली बाला सुन्दरी का भव्य मन्दिर बनवाया। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि त्रिलोकपुर वाली देवी की पिंडी यहाँ स्वयम् प्रकट हुई थी और राजा जीतसिंह ने उस स्थान पर मन्दिर बनवा दिया था। जो आज भी अपनी भव्यता तथा विशालता बनाये हुए ४२ कैनाल जमीन के बीच में स्थित है। यहाँ पर चैत्र की चौदस को बहुत बड़ा मेला लगता है जो एक सप्ताह तक चलता है।
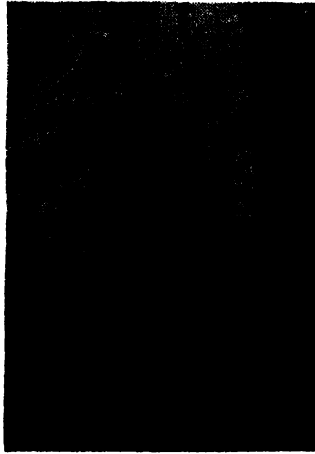
लाडवा में बाला सुन्दरी देवी मन्दिर के अतिरिक्त एकादशी रूद्रतीर्थ/सोहन तालाब, रामकुंडी, आर्यसमाज मन्दिर, अठवारिया मन्दिर, चरणदासियों का मन्दिर, लालों का मन्दिर व बड़ी धर्मशाला, रामेश्वर तीर्थ तथा हनुमान मन्दिर, नगर खेड़ा, पीड़मड़ी मन्दिर आदि पूजा के स्थान हैं। यहाँ पर छड़ियों का मेला, बावन द्वादशी का मेला, जन्माष्टमी का मेला तथा दशहरा मेला मनाया जाता है। इन मेलों में बड़ी सुन्दर झाँकियाँ निकाली जाती हैं जिनको देखने के लिये बहुत दूर दूर से लोग आते हैं। यहाँ का पुराना बाजार चौपड़ की शक्ल का बना हुआ है। कुछ वर्ष पहले बाला सुन्दर देवी मन्दिर के पास एक नई अनाज मंडी बनाई गई है जो एशिया में सबसे बड़ी अनाज मंडी है। यहाँ पर बहुत सुन्दर बाग बगीचे हैं तथा फलों और सब्जियों की बहुतायत है।

पानीपतः---दिल्ली से १२८ कि० मी० एक ऐतेहासिक नगर है। यहाँ पर तीन निर्णायक युद्ध हुए। पहला १५२६ में, बाबर और इब्राहीम लोदी के बीच, दूसरा १५५६ में अकबर और हेमू के बीच और तीसरा अहमदशाह अब्दाली और मराठों के बीच। यहाँ पर धार्मिक स्थान, अबूअली क्लंदर एक महान संत की दरगाह शरीफ है तथा उर्दू के प्रसिद्ध शायर का स्मारक है जिसे हाली पानीपत का स्मारक कहते हैं। उन्होंने मुसद्दसे हाली की रचना की थी।

गुड़गाँवाः---दिल्ली से गुड़गाँवा ३२ कि० मी० है। यहाँ पर प्राचीन देवी का मन्दिर है जिसकी हरियाणा तथा दिल्ली के आस-पास के गाँवों में बहुत मान्यता है।

सोहनाः---गुड़गाँवा से ३१ कि० मी० दूर सोहना है। कहा जाता है कि पहले यहाँ की पहाड़ियों से सोना निकलता था। इसी लिये इसका नाम सोना (सोहना) पड़ा। अब भी रेत में सोने के कण पाये जाते हैं। यहाँ पर गर्म पानी के चश्मे हैं जिनमें यात्री लोग स्नान करते हैं। गर्म चश्मों के पास एक गुम्बद है तथा शिव मन्दिर है। यात्री स्नान करने के पश्चात् शिव मन्दिर तथा पास में बने अन्य मन्दिरों में पूजा पाठ करते हैं। यहाँ पर प्रतिदिन तीर्थ यात्रियों की भीड़ लगी रहती है। यह एक पर्यटन स्थल भी है।

भिवानीः---दिल्ली से लगभग १६० कि० मी० भिवानी है। यहाँ पर गौरीशंकर मन्दिर है जो बहुत सुन्दर तथा विशाल है। दीवारों पर गीता अंकित है। प्रवेश द्वार पर घंटाघर है।

इसके अतिरिक्त दिल्ली के निकट हरियाणा के दो पर्यटन स्थल हैं ---सूरज कुंड तथा बड़खल झील। करनाल में चक्रवर्ती झील (उचाना लेक) है।

करनालः---महाभारत कालीन कर्ण का बसाया हुआ है। शिवालिक की पहाड़ियों पर **कलेसर** गाँव है इसके निकट हथिनीकुंड से १० कि० मी० आगे **ताजेवाला** है। यहाँ ताजेवाला कैनाल हैडवर्क्स है।

नोटः---करनाल से लगभग ५ कि० मी० पहले यमुना के पुल पर मुड़ते हुए नीचे की तरफ किसी पीर की मज़ार है, तथा साथ में मन्दिर भी है। यहां पर सब की मुरादें पूरी हो जाती है। यह हमारी बचपन की आजमाई हुई बात है।

विश्व का पूजा स्थल---दिल्ली

यमुना नदी के किनारे पर बसा महानगर दिल्ली भारतवर्ष का दिल है। यह भारत गणराज्य की राजधानी है। यहाँ पर भारत सरकार के प्रमुख कार्यालय, सचिवालय, संसद भवन, राष्ट्रपति भवन, मंत्रालय, सब देशों की एम्बेसीज तथा हाई कमिशनरों के कार्यालय हैं। यह केन्द्र सरकार द्वारा शासित संघीय राज्य है।

राजघाटः---यहाँ पर विश्व का पूजा स्थल राजघाट है। राजघाट राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की समाधि है। महात्मा गाँधी महान दार्शनिक, सत्य तथा अहिंसा के पुजारी और भारत को अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्रता दिलाने वाले थे। उनका आदर्श संसार के लिये एक प्रज्वलित ज्योति बन गया। विश्व के कोने-कोने से किसी भी देश का राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री या अन्य गणमान्य व्यक्ति भारत में आता है तो वह सब से पहले महात्मा गाँधी की समाधि पर पूजा के फूल चढ़ाने जाता है। भारतवासियों की तो प्रतिदिन राजघाट पर भीड़ लगी रहती है और हजारों आदमी अपने श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।

जामा मस्जिदः---जामा मस्जिद फतेहपुर सीकरी की मस्जिद को छोड़ कर संसार की सब मस्जिदों में अद्वितीय है। यह मुसलमानों का पवित्र धार्मिक स्थल है। शुक्रवार को कई हजार मुसलमान यहाँ नमाज पढ़ने आते हैं। यह मस्जिद लाल किले के सामने है। चांदनी चौक में मोती सिनेमा के सामने कोई चार फरलांग पर है। पहले यहाँ जोजल पहाड़ था। बादशाह शाहजहाँ ने इसे बनवाना शुरू किया था परन्तु इसे औरंगजेब ने पूरा किया था। यह मस्जिद १२०० फुट लम्बी और १२० फुट चौड़ी है और बीच का गुम्बद २०१ फुट ऊँचा है। इस में १३० फुट ऊँची दो मीनारें हैं मस्जिद में प्रवेश करने के लिये तीन द्वार हैं। पूर्वी द्वार सबसे बड़ा है। इसमें ३५ सीढ़ियाँ है। उत्तरी प्रवेश द्वार में ३० तथा दक्षिणी प्रवेश द्वार में ३३ सीढ़ियाँ हैं।

सब धर्मो के पूजा स्थलों का संगम---चाँदनी चौक

लाल किले के बिल्कुल सामने पश्चिम की ओर चाँदनी चौंक है। यह लगभग एक कि० मी० लम्बा बाजार है और मुख्य व्यापारिक सैंटर है। यहाँ पर जैनियों का प्राचीन जैन मन्दिर, हिन्दुओं का गौरी शंकर मन्दिर, आर्य समाज मन्दिंर, सिक्खों का पवित्र गुरुद्वारा शीशगंज, मुसलमानों की सुनहरी मस्जिद तथा फतेहपुरी मंस्जिद और इसाइयों का सेंट सटीफन्ज चर्च है।

मोती मस्जिदः---यह मस्जिद लाल किले में दीवाने खास के पास है। यह मस्जिद औरंगजेब ने बनवाई थी। इसकी लम्बाई ४० फुट चौढ़ाई ८० फुट तथा उँचाई २० फुट है। यह मस्जिद शाही परिवार के नमाज पढ़ने के लिये बनवाई गई थी। यह शाही हमाम के उत्तर पश्चिम की तरफ है।

निजामुद्दीन का मकबराः---यह मुसलमानों का बहुत पवित्र तीर्थ स्थान है। उर्स के दिनों में सारे भारत वर्ष से मुसलमान यहाँ पर ज्यारत करने आते हैं। यह हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन रह० औलिया महबूबे इलाही की दरगाह शरीफ है। इसे मुहम्मद तुगलक ने (१३२४-५१) में बनवाया था। यहीं पर शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा बेगम की कब्र है तथा मुहम्मद शाह और उर्दू कवि खुसरों के मजार है यहाँ पर उर्स के दिनों में कव्वालियाँ होती हैं।

उदासीन हरिहर आश्रमः---अजमेरी गेट कमला मार्किट के निकट उदासीन सम्प्रदाय का विशाल तथा भव्य आश्रम है, इसकी स्थापना सन् १८८० में हुई थी। यह देश भर के सभी सम्प्रदायों के महत्माओं का आश्रम स्थल तथा तपोभूमि है और १००-१५० साधु संतों को प्रतिदिन भोजन कराया जाता है। इस आश्रम में विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य तथा शक्ति की मूर्तियाँ हैं।

बिड़ला मन्दिरः---यह मन्दिर गोल मार्किट से थोड़ा आगे है। इसे राजा घनश्यामदास बिड़ला ने सन् १६३८ में बनवाया था। मन्दिर में भगवान लक्ष्मी नारायण की मूर्तियाँ हैं। दायें ओर भगवान शिव तथा बायीं ओर दुर्गा माता की मूर्तियाँ हैं। दीवारों पर गीता के श्लोक अंकित हैं उत्तर की ओर गीता भवन तथा राधा कृष्ण का कांच मन्दिर है। मन्दिर में लायब्रेरी, धर्मशाला, पार्क, पानी के झरने, जानवरों की मूर्तियाँ, गुफायें, बच्चों के झूले, यज्ञशाला, अखाड़ा, अर्जुन का रथ, बिड़ला की मूति तथा पहाड़ी दृश्य हैं।

बिड़ला मन्दिर के साथ बौद्ध मन्दिर तथा कालीबाड़ी पूजा के स्थान है।

काली मन्दिरः---कालीबाड़ी के पास प्राचीन काली देवी का मन्दिर है, इसे कालका मन्दिर भी कहते हैं। यह हिन्दुओं का पवित्र पूजा स्थान है। वर्तमान मन्दिर सन् १७६४ में बनाया गया है। मन्दिर में काली माई की मूर्ति है।

लोटस मन्दिरः---कालका मन्दिर के पास ही पश्चिम की ओर लोटस मन्दिर है यह मन्दिर कमल के फूल की तरह है। इसमें कोई मूर्ति नहीं है। एक बहुत बड़ा हौल है और कुर्सियाँ बिछी हुई हैं जिनपर सब धर्मों के लोग बैठकर अपने-अपने मतानुसार मनन कर सकते हैं। मन्दिर के चारों ओर निर्मल जल के सरोवर बने हुए हैं। इस मन्दिर को 'बहाई मन्दिर' कहते हैं।

कुवत-ए-इसलाम मस्जिदः---यह मस्जिद कुतुबमीनार के पास है। इसे कुतुबुद्दीन ने बनवाया था। भारत में यह सब से पहली मस्जिद है।

योगमाया मन्दिरः---महरोली तहसील के पास योगमाया मन्दिर है। यह बहुत पवित्र एवम् प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर युधिष्ठर ने बनवाया था। वर्तमान मन्दिर सन् १८२७ में लाला सिद्धमल ने बनवाया था। इस मन्दिर का क्षेत्रफल ४०० फुट है और ऊँचाई ४२ फुट है। निज मन्दिर में दो बड़े-बड़े पंखे हैं। इन पंखों के बीच में योगमाया की मूर्ति है।

दरगाह शरीफ कुतुब साहबः---महरोली में कुतुबुद्दीन बख्त्यार काकी की दरगाह शरीफ है। इनका जन्म गुजरात में हुआ था और १२३४ में देहली में इंतकाल हुआ था। यह बहुत प्रसिद्ध शेख थे। सम्राट अल्तमस ने यहाँ पर उनकी दरगाह बनाई थी। यह मुसलमानों का पवित्र तीर्थ स्थान है। सारे भारत से मुसलमान यहाँ जयारत करने आते हैं।

नोटः---हर वर्ष हिन्दू मुसलमानों का मिला जुला उत्सव 'फूल वालो की सैर" मनाया जाता है। हिन्दू मुसलमान पहले दिन दरगाह शरीफ पर फूलों की चादर चढ़ाते हैं। दूसरे दिन हिन्दु मुसलमान मिलकर योग माया मन्दिर तथा दरगाह शरीफ में जाते हैं। तीसरे दिन हिन्दू मुसलमा, दिल्ली तथा अन्य राज्यों के पंखे योग माया मन्दिर तथा दरगाह शरीफ में चढ़ाने जाते हैं। उस उत्सव का आयोजन 'अजुमन सैर-ए-गुलफरोसा' नाम की संस्था करती है। यह हिन्दू मुस्लिम एकता का त्योहार

है। इस दिन दिल्ली प्रशासन के कार्यालयों में आधे दिन का अवकाश होता है।

बावड़ीः---दरगाह शरीफ के निकट पूर्व की ओर बावड़ी है। यह १३३ फुट लम्बी तथा ३५ फुट चौड़ी है। इस में १४० सीढ़ियाँ उतर कर पानी की सतह तक पहुँचते हैं।

कात्यानी मन्दिरः---महरौली से लगभग २-३ कि० मी० पर छतरपुर गांव है। कुछ साल पहले यहाँ पर एक भव्य कात्यानी मन्दिर का निर्माण हुआ है। यह सफेद संगमर्मर से बना है। यहाँ की भव्य मूर्तियाँ देखने योग्य हैं।

राधा स्वामी सत्संग भवनः---कात्यानी मन्दिर से आगे छतरपुर गांव से लगभग २ कि० मी० पर सतबड़ी गांव है। वहाँ पर बहुत बड़ा राधास्वामी संतसंग भवन बना हुआ है। जब यहाँ व्यास वाले गुरुमहाराज प्रवचन करने आते हैं तब भारत के कोने-कोने से अनगिनत लोग उनके प्रवचन सुनने आते हैं।

हनुमान मन्दिरः---वैसे तो दिल्ली में कई हनुमान मन्दिर है परन्तु दो मुख्य हनुमान मन्दिर हैं (१) कनॉट प्लेस रिवोली सिनेमा के पास।

(२) यमुना बाजार के पास अन्तर्राज्य बस अड्डे से थोड़ा पहले। ये दोनों बहुत प्राचीन मन्दिर हैं और हर मंगलवार को श्रद्धालुओं की दर्शन करने के लिये लम्बी-लम्बी लाइने लगी रहती हैं।

गुरुद्वारा रकाबगंजः---यह गुरुद्वारा हनुमान मन्दिर कनाट प्लेस से थोड़ा आगे है। यहाँ पर गुरु तेगबहादुर के पार्थिव धड़ का अंतिम संस्कार हुआ था। शीश का संस्कार आनन्दपुर साहिब में हुआ था।

गुरुद्वारा शीश गंजः---यहाँ पर गुरु तेगबहादुर ने अपने शीश का बलिदान दिया था। यह गुरुद्वारा चाँदनी चौंक में हैं।

गुरुद्वारा बालाजी साहबः---यह गुरुद्वारा यमुना नदी के किनारे है यहाँ पर आठवें गुरु हरिकिशन जी के पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार हुआ था।

सांई बाबा मन्दिरः---यह लोद्गी रोड के पास है। हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन दर्शन करने आते हैं।

इसके अतिरिक्त दिल्ली में भव्य एवम् विशाल मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे तथा गिरजाघर हैं। जैन तथा बौद्ध मन्दिर हैं। उन सबका यहाँ वर्णन करना कठिन है।

दिल्ली में अन्य दर्शनीय स्थान लाल किला, अप्पूघर, चिड़ियाघर, फिरोजशाह कोटला, इंडियागेट, नेशनल स्टेडियम, राष्ट्रीय संग्रहालय, विज्ञान भवन, केन्द्रीय सचिवालय, संसद भवन, राष्ट्रपति भवन, रेडियो स्टेशन, दूरदर्शन केन्द्र, जन्तर-मन्तर, हुमायुं का मकबरा, तीन मूर्ति, (नेहरू मैमोरिल) इन्दिरा, गाँधी मैमोरियल, सफदरजंग का मकबरा, हौजख़ास, कुतुबमीनार और आसपास के स्थान, तुगलकाबाद का किला, सूरज कुंड (हरियाणा) आदिं देखने योग्य स्थान हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमरीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय---मांउट आबू (राजस्थान)

दिल्ली से आबू रोड ७५० कि० मी० अजमेर से ३०५, जयपुर से ४४१, अहमदाबाद से १८५ और महमाणा से ११७ कि० मी० है। आबू रोड से मांउट आबू (आबू पर्वत) २६ कि० मी० है। बसें आती जाती रहती हैं। यहाँ पर ठहरने के लिये रघुनाथ जी धर्मशाला तथा जैन धर्मशाला हैं तथा अशोका होटल, अरविन्द निवास लॉज, भारतीय न्यू गेस्ट हाउस, गिरिराज होटल, श्री शान्ति सदन, जीवन लॉज, नक्की लॉज, सरस्वती लॉज तथा राजिन्द्र होटल आदि हैं।

मांउट आबू राजस्थान का हिल स्टेशन ही नहीं; बल्कि हिन्दुओं और जैनियों का बहुत बड़ा पूजा स्थल है। यहाँ पर प्रजा पिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्व विद्यालय का हैड क्वाटर भी है। यह जैन धर्म के पांच पवित्रतम पर्वतों में से एक है। प्राचीन काल में आबू पर्वत को अबुर्दाचल या अबुर्दगिरि क़हते थे जो अब आबू के नाम से पुकारा जाता है। यहाँ भगवान श्रीकृष्ण द्वारिका जाते हुए ठहरे थे। यहीं पर वशिष्ठ ऋषि का आश्रम था। उनकी तपस्या के स्थान के निकट एक गड्ढ़ा था। एक दिन वशिष्ठ ऋषि की कामधेनु गाय उस गड़ढे में गिर गई। ऋषि ने सरस्वती जी की आराधना की। सरस्वती ने प्रसन्न होकर उस गड्ढे को पवित्र जल से भर दिया और कामधेनु गाय तैर कर उस गड्डे से बाहर निकल आई। तत्पश्चात् वशिष्ट ऋषि ने गड्डे को भरवाने के लिये भगवान शिव की आराधना की। भगवान शिव ने प्रसन्न होकर नन्दी को वहाँ भेजा और कैलाश पर्वत की एक श्रेणी वहाँ उत्पन्न करवा दीं जो अरावली पर्वत से अलग है और एक १५ मील लम्बी घाटी इस पर्वत को अरावली पर्वत से अलग करती है; परन्तु इसे अरावली पर्वत का ही नाम दिया

जाता है। अबुर्दा नाम का साँप नन्दी को अपनी पीठ पर बिठा कर वशिष्ठ ऋषि के पास लाया था। अबुर्दा साँप के नाम पर ही इस पर्वत का नाम अबुर्दा रखा गया था। वशिष्ठ ऋषि ने अबुर्दा साँप को वरदान दिया था कि तुम यहीं पर निवास करोगे और तुम्हारे ऊपर ३३ करोड़ देवता रहेंगे। उस वरदान से मांउट आबू पर ३३ करोड़ देवता सदा निवास करते हैं।

यह भी कहा जाता है कि यहाँ पर दुर्गा देवी अबुर्दा देवी के रूप में प्रकट हुई थी। इसलिये इस स्थान को अबुर्दा कहने लगे।

अबुर्दा देवी का मन्दिर:---यहाँ पर अबुर्दा देवी का प्राचीन मन्दिर है। लगभग ३४२ सीढ़ियाँ चढ़कर मन्दिर में जाते हैं। मन्दिर में नीलकंठ महादेव तथा हनुमान जी के मन्दिर भी हैं। अर्बुदा देवी का मन्दिर एक गुफा में है। अबुर्दा देवी मन्दिर के पास नीचे संत सरोवर है जो अब सूखा पड़ा है।

दिलवाड़ा जैन मन्दिर:---एक ही स्थान पर ५ जैन मन्दिर बने हुए हैं। इनमें विमल शाह तथा तेजपाल के मन्दिर भारत में ही नहीं, सारे संसार में वास्तुकला तथा मूर्ति कला में अद्वितीय हैं। ये मन्दिर संगमर्मर के हैं। इन की छतों, स्तम्भों और दीवारों पर इतनी बारीक खुदाई की गई है कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मूर्तियों, बेल-बूटों, डिजाइनों को इतनी सुन्दरता से बनाया गया है कि इन्हें कला के इतिहास में संसार का आश्चर्य ही कहा जायेगा। विमल शाह गुजरात के सेनापति थे। उन्होंने सन् १०३१ में यह मन्दिर बनवाया था। १५०० कारीगरों और १२०० मजदूरों ने १४ साल में तैयार किया था। १८ करोड़ ५३ लाख रुपये खर्च आये थे। मन्दिर के अन्दर चारों तरफ संगमर्मर का बरामदा है। बरामदे में चारों तरफ जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की लगभग ५५ मूर्तियाँ हैं। जिधर देखों उधर ही भगवान आदिनाथ आँखें खोले योग अवस्था में बैठे हुए दिखाई देते हैं। दक्षिणी पश्चिमी बरामदे के कोने में भूगर्भ से निकली हुई प्राचीन आदिनाथ की मूर्ति है। विमलशाह मन्दिर में दाखिल होने से पहले दाईं तरफ मन्दिर के ठीक सामने विमलशाह की घोड़े पर सवार मूर्ति है और उसके पीछे दस हाथियों के अग्रभाग की संगमर्मर की मूर्तियाँ हैं।

दिलवाड़ा जैन मन्दिर में दूसरा जैन मन्दिर लूणावसी मन्दिर है। इसे गुजरात के दो मंत्रियों वास्तुपाल तथा तेजपाल जो सगे भाई थे, उन्होंने १३३१ में बनवाया। इस मन्दिर में जैन धर्म के २२वें तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ की मूर्ति है। दोनो भाइयों

ने इस मन्दिर का नामकरण अपने तीसरे स्वर्गीय भाई लूणावसी के नाम पर किया।

तीसरा मन्दिर भीमाशाह का पीतलहार मन्दिर है। इस मन्दिर में भगवान ऋषभदेव की पंचधातु की बनी १०८ मन की मूर्ति है।

चौथा मन्दिर खरतवसी का मन्दिर है यह तीन मंजिला मन्दिर है। इस मन्दिर में भगवान चिन्तामणि पार्श्वनाथ की मूर्ति है।

पांचवां मन्दिर कुँवारी कन्या तथा रसिया बालम का है। यह मन्दिर दिलवाड़ा जैन मन्दिर में उत्तर की तरफ कुछ दूरी पर है। इस मन्दिर की कहानी लैला मजनु, हीर रांजा, शिरि फरहाद, रोमियो जूलियट की तरह रोमांचकारी अमर प्रेम की कहानी है। दोनों प्रेमियों का बलिदान बहुत मर्मस्पर्शी है।

दिलबाड़ा जैन मन्दिरों को देख लेना ही आबू में आना सफल हो जाता है।

गुरू शिखरः---यह मांउट आबू की सब से ऊँची चोटी है। यहाँ पर दत्तात्रय का मन्दिर है जो एक गुफा में हैं। यह गुफा दत्तात्रय जी का अखंड धूना स्थान है। यहीं पर बैठकर उन्होंने तपस्या की थी। यहाँ पर प्राचीन काल का एक पीतल का घंटा है और यहीं पर दत्तात्रय जी की चरण पादुका का मन्दिर है। उसके पास में ही दत्तात्रय की माता का मन्दिर, सती अनुसुइया तथा अत्री ऋषि की तपस्या करने की गुफाएँ हैं। दत्तात्रय मन्दिर से बाहर आकर लगभग २५० सीढ़िया चढ़कर भगवान शंकर का गुफा मन्दिर है।

अचलेश्वर महादेव का मन्दिर

वशिष्ठ ऋषि ने गड्ढे को भरवाने के लिये भगवान शिव की आराधना की थी। तब भगवान शिव ने अचलेश्वर महादेव के स्वरूप में दर्शन दिये थे और पृथ्वी को अस्थिर देखकर अपने पांव के अंगूठे से दबा कर स्थिर कर दिया था। अब यहाँ पर अचलेश्वर महादेव जी का प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिर में शिवलिंग की बजाय भगवान शिव के अंगूठे की पूजा की जाती है। यह मन्दिर १० कि० मी० की दूरी पर है।

अचलगढ़:---अचलेश्वर महादेव मन्दिर के निकट लगभग ४००० फुट की ऊँचाई पर अचल गढ़ का किला है। यह किला राजा परमार ने १६०० में बनवाया था। यहाँ पर आदिश्वर भगवान का प्राचीन जैन मन्दिर है। इस मन्दिर में भगवान आदिश्वर की पंचधातु की १४४४ मन की मूर्ति है। इसके अतिरिक्त भगवान

ऋषभदेव, राजा कुम्भाजी तथा उनके बेटे उदय की मूर्तियाँ हैं।

अचलेश्वर:---महादेव मन्दिर के आस-पास ही मंदाकिनी कुंड, भृगु आश्रम, भर्तृहरि की गुफा, मानसिंह की समाधि तथा श्वेती कुंड हैं। मानसिंह की हत्या कर दी गई थी। उनकी समाधि के पास उनकी पांचों रानियों की भी मूर्तियाँ हैं।

नक्की झील:---मांउट आबू के बीच में बहुत सुन्दर नक्की झील है। कहा जाता है कि यह झील ३३ करोड़ देवताओं ने अपने नाखूनों से खोदकर बनाई थी। इसीलिये इस का नाम नक्की झील है। इस झील में बोटिंग करने में बड़ा मजा आता है।

नक्की झील के निकट रघुनाथ मन्दिर, राम गुफा कुंड, दुलेश्वर महादेव मन्दिर, हनुमान मन्दिर, महावीर स्तम्भ, गान्धी वाटिका, चम्पा गुफा, टॉड रॉक, (मेंढक की शक्ल की चट्टान), नन रॉक, बुलडौग रॉक, कैमल रॉक, एलीफेंटा रॉक, नेक्ड रॉक इत्यादि हैं।

हनीमून प्वायंट:---नक्की झील से एक कि० मी० पर हनीमून प्वायंट नाम की चट्टान है जिसपर कुदरत ने स्त्री पुरुष की एक मूर्ति आलिंगन बद्ध प्रेम मुद्रा में बनाई है। इसीलिये इसे हनीमून प्वाइंट कहा जाता है। नई शादी शुदा जोड़ों के लिये यह एक बहुत अच्छी जगह है।

सनसैट प्वायंट:---हनीमून प्वायंट से थोड़ा आगे चलकर सनसैट प्वाइंट है। यहाँ पर सूर्य छिपने का दृश्य देखने के लिये हजारों पर्यटक आते हैं। यहाँ पर एक गणेश मन्दिर भी है।

इसके अतिरिक्त मांउट आबू में व्यास तीर्थ, नाग तीर्थ, गौतम आश्रम, वशिष्ट आश्रम, यमद अग्नि आश्रम, अग्नि कुंड, शान्ति शिखर, लख चौरासी, अवतार चिह्न तथा श्री अम्बिका जी का मन्दिर आदि देखने योग्य पवित्र स्थान हैं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय

मांउट आबू में आधुनिक युग का संसार को अध्यात्मिक ज्ञान देने के लिये प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय का हैडक्वाटर है। इसके संस्थापक प्रजापिता दादा लेखराज हैं। दादा लेखराज हीरों के बहुत बड़े व्यापारी थे। उनको परम पिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव (प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा) साक्षात्कार हुआ और अध्यात्मिक ज्ञान तथा सहज राजयोग के द्वारा विश्व शान्ति स्थापित करने का आदेश मिला। यह आदेश प्राप्त होने पर प्रजापिता दादा लेखराज

ने अपना जीवन विश्वशान्ति एवम् एकता स्थापित करने के लिये समर्पित कर दिया।

उन्होंने सन् १६३७ में हैदराबाद सिंध में (जो अब पाकिस्तान में है) प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इस विश्वविद्यालय का संचालन समर्पित लड़कियों को सौंपा गया जिनको ब्रह्माकुमारीज कहा जाता है। इस विश्वविद्यालय की सबसे पहली मुख्य संचालिका मातेश्वरी 'सरस्वती' थीं।

१६५१ में यह विश्वविद्यालय हैदराबाद सिन्ध से हटा कर मांउट आबू में स्थापित किया गया। इस समय दादी प्रकाश मणि इस विश्वविद्यालय की प्रमुख संचालिका हैं। दादी मनोहर इन्द्रा भी मुख्य संचालिका हैं। शीलू बहन तथा शशी बहन भी गत ३२ वर्षों से इस विश्वविद्यालय में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं।

इस समय भारत तथा विदेशों में इस विश्वविद्यालय के अंतर्गत १८३५ अध्यात्मिक ज्ञान एवम् सहज राज योग शिक्षा केन्द्र कार्य कर रहे हैं इन केन्द्रों का उद्देश्य मनुष्य में अध्यात्मिकता के महत्त्व की जागृति लाना, सामाजिक जिम्मेदारी तथा अधिकारों को भली भाँति समझ कर सामूहिक प्रयास द्वारा अपने सद्व्यवहार से एक दूसरे के प्रति सद्भावना, मानवता एवम् प्रेमभाव को बनाये रखने की शिक्षा देना है तथा विश्व में शान्ति एवम् एकता स्थापित करने हेतु स्थान-स्थान पर तथा समय-समय पर ऐसे रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत करना जिससे विश्वबन्धुत्व की भावना अथवा भाई-भाई की दृष्टि एवम् वृत्ति (एक ही परमपिता परमात्मा की संतान होने के नाते) व्यापक रूप से विश्व में फैले।

यह अध्यात्मिक शिक्षा तथा सहज राजयोग के अभ्यास की शैक्षणिक संस्था है और इसकी शिक्षा के विषय निम्नलिखित हैं

(१) मन की शान्ति एवम् विश्वशान्ति (२) मानव जाति का भविष्य (३) पवित्रता (४) अध्यात्मिक सत्य, चरित्रिक उत्थान तथा नैतिक मूल्यों का शिक्षण (५) स्व के स्वरूप की पहचान (आत्मानुभूति) (६) परमात्मा की पहचान (परमात्मानुभूति) (७) राज्योग के नियम और क्रियाविधि (८) राजयोग के द्वारा शक्तियों की प्राप्ति (६) निराकारी आत्माओं की दुनिया का ज्ञान (१०) सूक्ष्म दुनिया का ज्ञान।

उपरोक्त ज्ञान पुस्तकों, चित्रों, प्रवचनों संग्रहालयों तथा प्रदर्शनियों द्वारा दिया जाता है . इस विश्वविद्यालय की धारणायें पवित्रता, अहिंसा नियमित ईश्वरीय ज्ञान का पठन-पाठन तथा पवित्र शाकाहारी भोजन है। धूम्रपान, शराब, गांजा, तम्बाकु

आदि नशीली वस्तुओं पर पूरी तरह प्रतिबन्ध है। दिव्य गुण-ग्रहण करने तथा ब्रह्मचर्य का पालन करने पर बल दिया जाता है।

भवन

मांउट आबू में प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय के अन्तर्गत अध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा देने के लिये कई भवन हैं जिनके नाम योगभवन, ज्ञान-विज्ञान भवन, कुंज भवन या सुखधाम, पांडव भवन या मधुवन तथा ओम शान्ति भवन हैं। इसके अतिरिक्त विश्व-निर्माण अध्यात्मिक संग्रहालय तथा पीस पार्क हैं।

बाबा लेखराज ने १८ जनवरी १९६९ को शरीर त्याग किया था। उनकी अन्त्येष्टि पांडव भवन में ही २१ जनवरी १९६९ को की गई थी। पांडव भवन में उनकी अंत्येष्टि के स्थान पर शान्ति, पवित्रता, शक्ति और ज्ञान का स्तम्भ है।

तीर्थराज पुष्कर

पुष्कर का सन्धि-विच्छेद पुष्प+कर है पुष्प का अर्थ फूल और कर का अर्थ हाथ अर्थात् हाथ का फूल। ब्रह्मा जी के हाथ से इस स्थान पर तीन जगह फूल गिरने से बड़ी पुष्कर, बीच वाली पुष्कर तथा छोटी पुष्कर का नाम पड़ा। उन तीनों स्थानों पर पानी फूट पड़ा था और निर्मल जल के सरोवर बन गये थे जो अब भी विद्यमान हैं। ब्रह्माजी ने सृष्टि रचने के बाद महायज्ञ के लिये बड़ी पुष्कर को चुना। सब देवता यज्ञ में पधारे। यज्ञ का सब प्रबन्ध होने पर ब्रह्मा जी ने अपने पुत्र नारद जी से कहा कि अब तुम अपनी माता सावित्री को यज्ञ के लिये बुला लाओ। नारद जी अपनी माता सावित्री को बुलाने चले गये। नारद जी को लड़ाई कराने में बड़ा मजा आता है। इसलिये उन्होंने अपनी माता सावित्री से कहा कि पिता जी के साथ यज्ञ में ३३ करोड़ देवता आये हैं पिता जी ने आपको बुलाया है। आप वहाँ पर अकेली जाती हुई अच्छी नहीं लगेंगी इस लिये अपनी सहेलियों को लेकर यज्ञ में आओ। सावित्री अपनी सहेलियों को बुलाने चली गई और नारद जी ने अपने पिता ब्रह्मा जी के पास आकर कहा कि माता जी अपनी सहेलियों को साथ लेकर आयेंगी।

सावित्री को यज्ञ में आने में देर हो गई और यज्ञ का मुहूर्त निकलने लगा तब ब्रह्मा जी ने इन्द्र से कहा कि तुम मेरे लिये एक कुंवारी कन्या लाओ। मैं उसे अपनी दूसरी पत्नी बना कर अपने साथ यज्ञ में बिठाऊँगा। इन्द्र कन्या की खोज में चला गया और मन्त्रोच्चारण द्वारा कुश (घास) तीन बार गाय को खिला कर पीठ से निकाल दिया। पीठ से निकली हुई घास को मंत्रोच्चारण द्वारा कन्या बना दिया और उस कन्या का नाम गायत्री रख कर ब्रह्माजी के पास ले आया। ब्रह्मा जी ने गायत्री से अपना विवाह किया और उसे अपनी दूसरी पत्नी बना कर तथा अपने बायें अंग बिठाकर यज्ञ आरम्भ किया। गाय को घास खिलाने से गायत्री

का जन्म हुआ था। इसलिये यात्री पुष्कर स्नान करने से पहले (गाय को घास खिलाते हैं)।

यज्ञ आरम्भ होने पर सावित्री जी अपनी सहेलियों सहित वहाँ पर आईं। उन्होंने ब्रह्मा जी के बाईं तरफ उनकी दूसरी पत्नी गायत्री को बैठे देखा। उन्होंने क्रोध में भर कर ब्रह्मा जी को शाप दिया कि ससार में तुम्हारा केवल एक ही मन्दिर होगा जो पुष्कर में ही होगा और जो भी यात्री यहाँ आयेंगे वे पुष्कर तीर्थ की पूजा करेंगे। तुम्हारे मन्दिर में कोई भेंट नहीं चढ़ायेगा। यह श्राप देकर सावित्री जी पश्चिम की ओर पर्वत शिखर पर चली गईं और घोर तपस्या करने लगी। (पुष्कर तीर्थ के जल की पूजा की जाती है और सब मन्दिरों में पुष्कर का जल चढ़ाया जाता है। इसी जल का आचमन किया जाता है और पुष्कर जल का ही तिलक लगाया जाता है। पुष्कर तीर्थ के दक्षिण पश्चिम कोण में सामने शिखर पर सावित्री जी का मन्दिर दिखाई देता है)।

ब्रह्मा जी ने कार्तिक शुक्ला की एकादशी से पूर्णमासी तक वहाँ यज्ञ किया था। इन पांच दिनों में पुष्कर तीर्थ स्नान का बहुत महात्म्य है।

पुष्कर राज तीर्थ के चारों तरफ ५२ घाट हैं। इनमें मुख्य घाट गऊ घाट है। दूसरा बड़ा घाट वाराह घाट है।

पुष्कर तीर्थ में लगभग ३५० मन्दिर हैं जिनमें ६ मुख्य मन्दिर हैं

(१) ब्रह्मा जी का मन्दिर (२) वाराह विष्णु भगवान का मन्दिर (३) अटमटेश्वर का मन्दिर (ब्रह्मा जी के यज्ञ में शिवजी एक भिखारी का अटमटा भेष बना कर आये, जिससे सब देवता क्रोधित हो गये। ब्रह्मा जी ने शिवजी को पहचान लिया और यज्ञ में अटमटा भेष बनाकर आने के कारण उनका नाम अटमटेश्वर रख दिया था।) (४) पुराना रंगनाथ का मन्दिर (५) नया रंगनाथ का मन्दिर (इसे बागड़ मन्दिर भी कहते हैं।) (६) नरनारायण का कांच मन्दिर (ये सभी मन्दिर बारह बजे बन्द हो जाते हैं। ब्रह्मा जी का मन्दिर २ बजे, शेष मन्दिर ४ बजे खुलते हैं)

सावित्री जी का मन्दिर पुष्कर तीर्थ के दक्षिण पश्चिम में एक पहाड़ी के शिखर पर है जो पुष्कर तीर्थ से दिखाई देता है।

नोटः---सावित्री मन्दिर को छोड़ कर शेष सभी मन्दिर पास में ही है और पैदल ही देखे जा सकते हैं।

पुष्कर तीर्थ महात्म्य

पदम पुराण के अनुसार गंगा को माता, प्रयाग को गुरू और पुष्कर को तीर्थों का गुरु कहा गया है।

इसी स्थान पर मेनका अप्सरा विश्वामित्र की तपस्या भंग करने आई थी और ऋषि की तपस्या भंग करके शकुन्तला को जन्म दिया था। शकुन्तला का पालन कण्व ऋषि ने किया था। शकुन्तला महाराजा दुष्यन्त की धर्मपत्नी बनी थी और भरत को जन्म दिया था, जिनके नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष प्रसिद्ध हुआ।

इसी स्थान पर राजा दलीप नन्दनी की सेवा कर रहे थे। उनकी परीक्षा लेने के लिये धर्मराज शेर का रूप धारण करके आये थे।

वशिष्ठ ऋषि तथा विश्वामित्र का संघर्ष भी इसी स्थान पर हुआ था। वशिष्ट विश्वामित्र को ब्रह्मऋषि नहीं मानते थे। विश्वामित्र वशिष्ठ जी को मारने के लिये उनके आश्रम पर गये। उस समय वशिष्ठ जी अपनी धर्मपत्नी से विश्वामित्र के तप की प्रशंसा कर रहे थे। यह सुन कर विश्वामित्र जी प्रसन्न हो गये और वशिष्ठ जी से क्षमा मांगी। वाशिष्ट जी ने उन्हें ब्रह्मऋषि कहकर पुकारा। ब्रह्मा जी के यज्ञ

के प्रभाव से अगत्स्य महर्षि इस क्षेत्र के मुख्य देवता बने। वे इस क्षेत्र की रक्षा करते हैं।

इसी क्षेत्र में नाग पर्वत पर पांचों पांडवों ने तपस्या की थी। उन्हीं की याद में यहाँ पांच कुंड हैं। यहीं पर गायत्री देवी का जन्म हुआ। गायत्री मंत्र जो वैदिक साहित्य में सर्वोच्च स्थान रखता है उसका सृजन भी यहीं हुआ। श्री रामचन्द्रजी ने अपने पिता दशरथ का श्राद्ध भी यहीं पर किया था। महात्मा गान्धी, पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा लालबहादुर शास्त्री की अस्थियाँ भी गऊ घाट पर पुष्कर तीर्थ में विसर्जित की गई थीं। पुष्कर अजमेर से ११ कि० मी० उत्तर पश्चिम में है। अजमेर से पुष्कर तक सर्पाकार सड़क बनी हुई है। हर दस मिनट के बाद बस जाती है। हम दो बार पुष्करराज की यात्रा कर चुके हैं।

हिन्दु मुसलमानों का धार्मिक स्थल---अजमेर (राजस्थान)

अजमेर दिल्ली से ४३७ कि० मी०, जयपुर से १३५, आबू से ३०४, अहमदाबाद से ४६०, उदयपुर से २७०, और जोधपुर से २०७ कि० मी० है। यह अरावली पर्वत से घिरी हुई घाटी में एक बहुत सुन्दर नगर है। इस नगर को सातवीं शताब्दी में महाराजा अजयपाल चौहान ने बनवाया था। पर्वत को हिन्दी में मेरू कहते हैं या कभी न जीता जाने वाला दुर्ग। इसलिये इस नगर का नाम अजमेरू था जो अजमेर प्रसिद्ध हो गया। मुसलमान इसे अजमेर शरीफ कहते हैं। यहाँ पर सब से बड़ा पहाड़ तारागढ़ है जिस पर तारागढ़ किला बना हुआ है।

ख्वाजा साहब गरीब नवाज मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह मोअल्ला

मुस्लिम समाज का भारत में सब से बड़ा धार्मिक स्थल अजमेर में ख्वाजा साहब मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह शरीफ हैं। पवित्रता में मक्का मदीना के बाद दूसरे नम्बर पर यही स्थान है। यहाँ ख्वाजा साहब की समाधि है। ख्वाजा साहब ११६५ ई० में भारत आये थे।

कहा जाता है कि जिस समय ख्वाजा गरीब नवाज हिन्दुस्तान में दाखिल हुए उस वक्त सुलतान शाहबुद्दीन मोहम्मद गौरी और उसकी फौजें पृथ्वीराज चौहान से हार मान कर गजनी की तरफ वापिस भाग रही थीं। उन लोगों ने ख्वाजा साहब और उनके मुरीदों से कहा कि आप इस वक्त आगे न बढ़े और वापिस लौट चलें क्योंकि मुसलमानों के बादशाह की शिकस्त हो चुकी है। आगे बढ़ना आप के लिये मुनासिब नहीं है। मोअल्ला वालों ने उन को जवाब दिया कि तुम तलवार के भरोसे गये थे और हम अल्लाह के भरोसे जा रहे हैं।

हजूर गरीब नवाज सबसे पहले देहली पहुँचे और वहाँ कुछ दिन ठहर कर

अजमेर के लिये रवाना हो गये और वही पर बस गये। ६७ साल की उम्र मे बातारीख ६ रजबुल मरजब ६३३ हिजरी जुम्मा बाद नवाज इना अपन हुजरे का दरवाजा बन्द करके और तमाम लोगो का अन्दर आने क लिये मना फरमाया। फजर की नमाज के बाद खादिमो ने दरवाज पर दस्तक दी मगर कोई जवाब न मिला। आखिर मजबूर होकर दरवाजा खोला तो देखा कि गरीब नवाज का इन्तकाल हो गया था। ख्वाजा गरीब नवाज को उसी जगह दफना दिया गया। इसे ख्वाजा साहब की दरगाह शरीफ कहते है। यह ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का मकबरा है। वे ११९५ म यहॉ आये थे और १२५५ मे उनकी मृत्यु हो गई थी।

ख्वाजा साहब की दरगाह मे प्रति दिन हजारा तीर्थ यात्री मिन्नत मागने आते है। मुसलमाना मे भी अधिक हिन्दू लोग दरगाह म मिन्नत मागने आत है। यहॉ पर आने वालो की सब मुराद पूरी हो जाती है। सम्राट अक्बर आगर स पैदल चलकर ख्वाजा साहब की दरगाह मे आया करता था। यहॉ पर साल मे एक बार --उर्स" का मेला लगता है। इस अवसर पर भारत के सर्वश्रेष्ट कव्वाल यहा आकर कव्वालियॉ गात है। सारे भारत तथा विदेशो स लाखा मुसलमान ओर हिन्दू 'उर्स' म आत ह।

नोटः---हमारे एक मित्र ने कहा था कि मेरी ओर स चादर चढाना ओर मन्नत मागना कि मेर घर पुत्र का जन्म हो, हमने वेसा ही किया। वापिस आने पर पता चला कि उसके घर पुत्र का जन्म हुआ है।

माडू क सुलतान ग्यासुदीन खिलजी ने १४६४ ई० म दरगाह तथा गुम्बद बनवाये। दरगाह शरीफ की प्रसिद्धि अकबर के राज्य म हुई। इस दरगाह म अकबर ने मस्जिद, बुलन्द दरवाजा तथा महफिल खाने बनवाये। शाहजहा न सफद सगमर्मर से जामा मस्जिद व रोजे के ऊपर गुम्बद बनवाये।

दरगाह शरीफ म २१ दरवाज है। बुलन्द दरवाजे की तरफ एक बहुत बडी डेग रखी है। यह डग ६७६ हिजरी मे अकबर बादशाह ने चितौडगढ के किले को जीतने के बाद दरगाह मे पेश की थी। इस डेग मे १२० मन चावल पकते हे। बुलन्द दरवाजे के पूर्व मे एक छोटी डेग भी है। इसे १०२२ हिजरी मे जहॉगीर ने आगरे से तैयार करा कर दरगाह शरीफ मे पेश किया था। इस मे ८० मन चावल पकते है। दरगाह शरीफ मे एक लगर खाना भी है जिसमे गरीबो के लिये रोजाना लगर बनता है। इसके अतिरिक्त एक महफिलखाना है। 'उर्स' के वक्त वहॉ महफिल कव्वाली हुआ करती है।

पूर्वी भाग मे नसीरूद्दीन का मजार है।

ढाई दिन का झोपड़ाः---इस इमारत का निर्माण सन् ११५३ में चौहान राजा बीसल देव (पृथ्वीराज चौहान के नाना) ने किया था। यह इमारत संस्कृत महाविद्यालय का भवन था। मोहम्मद गौरी ने संस्कृत विद्यालय को तुड़वा कर ढाई दिन में मस्जिद बनवा दी और नमाज पढ़ी। इसलिये इसे ढाई दिन का झोंपड़ा कहते हैं। यहाँ हर वर्ष पंजाशाह का उर्स मनाने के लिये फकीर आते थे। यह उर्स ढाई दिन चलता था। यह भी कहा जाता है कि अठाहरवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पंजाब के शाह जिनके साथ फकीर भी थे, ढाई दिन चलकर यहाँ पहुँचे थे।

यह इमारत ख्वाजा साहब की दरगाह शरीफ के निकट पीछे की तरफ है। इसके दस गुम्बद १२४ स्तम्भों पर आधरित हैं। यहाँ पर नमाज पढ़ते हैं। ख्वाजा गरीब नवाज ने भी यहाँ पर ३७ वर्ष तक नमाज पढ़ी थी। इस मस्जिद के गुम्बद झोपड़े के डिजाइन के हैं। ढाई दिन के झोपड़े से पूर्व की तरफ पहाड़ की चोटी पर तारा गढ़ का किला दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त अजमेर में जामा मस्जिद, शाहजहानी मस्जिद, अकबरी मस्जिद, मियाँबाई की मस्जिद, मस्जिद सरा, मस्जिद गैसुखान, मस्जिद कातन और बावड़ी वगैरा हैं।

सोनी जी की नसियाः---यह जैन मन्दिर है। इस में प्रथम भगवान ऋषभदेव जी की मूर्ति विराजमान है। दीवारों पर काँच और सोने की कारीगरी देखने योग्य है। मन्दिर के दूसरे भाग में अयोध्यापूरी है जो सोने और काच की बनी हुई है।

यह मन्दिर सेठ मूलचन्द खंडेलवाल गोत्र सोनी तथा उनके पुत्र नेमीचन्द सोनी ने ज्येष्ठ शुक्ल दूज शुक्रवार विक्रमी संवत १६२२ में बनवाया था।

आनासागरः---यह दो पहाड़ियों के बीच घिरी ६०० गज लम्बी और १०० गज चौड़ी एक झील है। इसे सन् ११४० में राजा आनादेव ने बनवाया था। बारिश के मौसम में इसका फैलाव ६ मील से भी अधिक हो जाता है। मुगल सम्राट जहाँगीर ने इस झील के किनारे एक सुन्दर बगीचा बनवाया था जिसे दौलत बाग का नाम दिया। अब इसे सुभाष पार्क कहते हैं। सम्राट शाहजहाँ ने भी यहाँ १०४० फुट लम्बी संगमर्मर की मुंडेर और पांच १२ दरियाँ बनवाईं थी।

बजरंगगढ़ः---आनासागर के निकट एक पहाड़ी पर हनुमान मन्दिर है। यहाँ जाने के लिये पक्की सीढ़ियाँ हैं। हर शाम को यहाँ भक्तों की भीड़ लगी रहती है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ऋषि उद्यान अजमेर:---यह आना सागर के पास ही है। यहाँ पर ओम यज्ञशाला, व्यायाम शाला तथा एक बहुत बड़े हॉल में स्वामी दयानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित बड़े-बड़े चित्र लगे हुए हैं। हाल के बरामदे में एक कमरा है जिसमें स्वामी दयानन्द जी की चरण खड़ाऊँ, कमंडल, आचमन पात्र, कांटा निकालने की चिमटी, महाराजा उदयपुर द्वारा भेंट किया हुआ दोशाला, हवन में सामग्री डालने की चीजें तथा हस्तलिखित ग्रन्थ रखें हैं।

संक्षिप्त में कहा जाय तो अजमेर हिन्दु मुसलमानों का पवित्र संगम धार्मिक स्थल है। ख्वाजा साहब की दरगाह शरीफ के कारण यह भारत में मुसलमानों का सबसे बड़ा जयारत स्थल है। अजमेर के निकट ही पुष्कर है जो हिन्दुओं के लिये उतना ही पवित्र है जितना कि प्रयाग। अजमेर हमें हिन्दू मुस्लिम एकता, एक दूसरे का आदर सम्मान, प्रेम-मुहब्बत, और आपस में मिलजुल कर रहने का सबक सिखाता है।

जयपुरः---जयपुर दिल्ली से ३०५ कि० मी० हैं आगरे से २४१, अजमेर से १३५, आबू रोड से ४४० और उदयपुर से ४४७ कि० मी० है। यह राजस्थान की राजधानी है। इसे महाराजा सवाई जयसिंह ने सन् १७२८ में बसाया था। इस नगर को गुलाबी शहर कहते हैं। यहाँ पर धार्मिक पूजा स्थल, श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर (बिड़ला मन्दिर), गलता जी, गोविन्द देव मन्दिर तथा गोकुल नाथ मन्दिर पूजनीय स्थल हैं। पर्यटन की दृष्टि से सिटी पैलेस, जंतर मंतर, हवा महल, सैंटरल म्यूजियम गैतौड़ तथा जयपुर का किला देखने योग्य हैं।

बैराटः---जयपुर के उत्तर पूर्व में ५५ कि० मी० जयपुर दिल्ली सड़क मार्ग

पर बैराट नामक स्थान है। कहा जाता है कि महाभारत काल में यह विराट नगरी य़ा विराटपुरी थी। यहाँ बौद्ध गुफायें हैं जिन्हें लोग पांडवों की गुफायें भी कहते हैं।

उदयपुरः---दिल्ली से ७५०, अजमेर से ३०६, जयपुर से ४४१, चितौड़गढ़ से ११७ और अहमदाबाद से २६७ कि० मी० है। यहाँ पर जगदीश मन्दिर पूजा स्थल है। इसे महाराजा जगत सिंह ने १६५१ में बनवाया था और १५ लाख रुपया खर्च आया था। यह जमीन से ८० फुट की ऊँचाई पर है और ३२ सीढ़ियाँ चढ़कर मन्दिर में पहुँचते हैं। मन्दिर में काले पत्थर से बनाई गई विष्णु जी की मूर्ति है। उनके एक तरफ लक्ष्मी जी तथा एक तरफ गिरधर जी की मूर्ति है। मन्दिर के सामने गरुड़ जी की मूर्ति है। इस मन्दिर में 'गाइड' फिल्म की शूटिंग भी हुई थी।

उदयपुर पूजा स्थल से अधिक पर्यटन स्थल है। इसे 'पूर्व का वैनिस' 'झीलों की नगरी' 'सूर्योदय का नगर' तथा 'सपनो की नगरी' आदि कहा जाता है। यह नगर महाराजा उदय सिंह ने बसाया था। यहाँ पर देखने योग्य स्थान पिछोला झील, महाराणा मैलेस, जगनिवास (पैलेस जग मन्दिर, फतेह सागर, सहेलियों की बाड़ी, म्यूजियम, महाराणा प्रताप स्मारक सज्जनगढ़ तथा अहार) देखने योग्य स्थान हैं। उदयपुर से ४५ कि० मी० पर हल्दीघाटी है यहाँ राणा प्रताप तथा मुग़ल सेना का भयंकर युद्ध हुआ था।

भूत प्रेत, पागलपन का निवारण करने वाले---बालाजी महाराज (राजस्थान)

राजस्थान राज्य के दो जिलों सवाई माधोपुर तथा जयपुर में विभक्त घाटा मेहन्दीपुर बालाजी है जो बांदीकुई स्टेशन मे २४ मील की दूरी पर है। स्टेशन से बाला जी के लिये बसें तैयार मिलती हैं जो एक घंटे में बालाजी पहुँचा देती हैं। यह स्थान दो पहाड़ियों के बीच में बसा हुआ है। यहाँ से जयपुर लगभग १०० कि० मी० है।

बाला जी में तीन मुख्य देवता हैं (१) बालाजी महाराज (२) श्री प्रेतराज सरकार (३) श्री कोतवाल भैरव। कहा जाता है कि ये तीनों देवता आज से लगभग १००० वर्ष पूर्व प्रकट हुए थे। यहाँ पर बालाजी महाराज (हनुमान जी) का प्रधान मन्दिर है तथा बहुत सारी धर्मशालाएँ हैं।

यहाँ पर भारत के कोने-कोने से यात्रीगण आते हैं। उनके रहने के लिये समुचित व्यवस्था है। पानी के कूएँ हैं तथा बिजली का प्रबन्ध है और एक लम्बा बाजार है जिसमें दैनिक जीवन की सभी वस्तुएँ उपलब्ध हैं। फूल मालाएँ, प्रसाद, मूर्तियों तथा खेल-खिलौनों की भी बहुत दुकानें हैं।

यहाँ पर अन्य तीर्थ स्थानों की तरह पंडे या पुजारी नहीं हैं और न ही किसी प्रकार के चढ़ावे के लिये किसी व्यक्ति को बाध्य किया जाता है। हाँ, अपनी इच्छा से लोग कितने का भी प्रसाद चढ़ा दें। बहुत सारे लोग सवा मनी (सवा मन) या जितनी उनकी श्रद्धा हो, का प्रसाद भी चढ़ाते है। सवामनी चढ़ाने वालों को मन्दिर के बराबर में एक कार्यालय में पहले दिन पैसे जमा करवाने पड़ते हैं और यह बताना पड़ता है कि लड्डू पूरी का प्रसाद चढ़ायेंगे या हलवा पूरी का। उनका नाम पता आदि लिख लिया जाता है। अगले दिन दोपहर को सूची में नाम पढ़-पढ़ कर बालाजी

मन्दिर में हनुमानजी के सामने उनके प्रसाद का भोग लगाया जाता है तथा भूत प्रेत सरकार और कोतवाल भैरव का भी भोग लगाया जाता है। सवामनी चढ़ाने वाले व्यक्ति के साथ जितने भी आदमी होते हैं उन सब के लिये बाल्टी में सब्जी तथा हलवा पूरी या लड्डू पूरी टोकरी में दे देते हैं। यहाँ का प्रसाद बांटा नहीं जाता। अपने व्यक्तियों के अलावा न तो किसी दूसरे को देते हैं और न ही कोई दूसरा किसी अपरिचित व्यक्ति से प्रसाद लेता है। यहाँ का प्रसाद घर भी नहीं लेकर आते। मैं लाला सूरज प्रकाश के साथ बालाजी महाराज के दर्शन करने गयी थी, उन्होंने सवा मन प्रसाद चढ़ाया था।

प्रायः व्यक्ति सवा रुपया, पांच रुपये, ग्यारह रुपये या जैसी जिसकी श्रद्धा हो, का प्रसाद चढ़ाता है जिसमें तीनों देवताओं को प्रसाद चढ़ाते हैं। श्री बालाजी महाराज (हनुमानजी) को लड्डू श्री प्रेतराज सरकार को चावल तथा श्री कोतवाल (भैरव) को उड़द का प्रसाद लगाया जाता है। यदि कोई बीमार व्यक्ति बालाजी के दर्शन करने जाता है तो उसको प्रसाद में से दो लड्डू खिला देते हैं बाकि प्रसाद जानवरों को डाल दिया जाता है। मरीज जैसे ही उन दो लड्डुओं को खाता है त्यों ही वह झूमने लगता है और भूत-प्रेत, पागलपन, मिरगी, टी० बी०, लकवा, बांझपन या किसी भी प्रकार की बीमारी हो ठीक होनी शुरू हो जाती है। भूत-प्रेत स्वयम् उसके शरीर में आकर बोलने लगता है। उसके ऊपर अपने आप ही भयंकर मार पड़ने लगती है। वह भागने की कोशिश करता है किन्तु अपने आप ही उसके हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी पड़ जाती है। वह अपने हाथों से अपने सिर में सैकड़ों जूते मारता है। हाहाकार मचाता है। कभी आग जलाकर उसमें कूद जाता है और तंग आकर महाराज के चरणों में बैठ जाता है अन्यथा समाप्त कर दिया जाता है। जो भूत श्री महाराज जी के चरणों में बैठ जाता है उन्हें ये अपना दूत बना लेते हैं। हमने इस तरह बहुत सारे स्त्री पुरुषों को झूमते, सिर पटकते, पीटते तथा हाहाकार मचाते देखा है। इसमें सच्चाई क्या है ? यह भगवान जाने। इतना अवश्य है कि इन झूमते हुए व्यक्तियों को देखने के लिये भीड़ इकट्ठी हो जाती है। ढोल नगारे बजते हैं और भीड़ में से भी कितने ही व्यक्ति एक दम झूमने लगते हैं। इस बीच भीड़ में खड़े हुए कुछ लोगों की जेबें भी साफ हो जाती हैं। लाला सूरज प्रकाश के मामा जी की भी जेब साफ हो गई थी और किसी का भूत उतरे न उतरे, उनको लगभग १२००/ रुपये से हाथ धोना पड़ा था।

यहाँ कोई अस्पताल या दवाखाना नहीं है और न ही यहाँ कोई डाक्टर, वैद्य या हकीम है। यहाँ पर श्री बालाजी महाराज की कृपा से ही सब रोगी ठीक हो

जाते हैं।

बालाजी (हनुमान जी) का मन्दिर बाजार के बीच में ही है। यह मुख्य मन्दिर है। इस के अतिरिक्त लगभग एक डेढ़ कि० मी० पहाड़ की चढ़ाई पर भी बालाजी का मन्दिर है। वहाँ पर भी यात्री दर्शन करने जाते हैं।

यह बात हमने बहुत सारे तीर्थ-यात्रियों के मुख से सुनी है कि बालाजी में जाने से भूत-प्रेत से सताए हुए तथा पागलपन, मिरगी लकवा टी० वी० तथा अन्य किसी भी रोग से पीड़ित व्यक्ति ठीक हो जाते हैं तथा सब की मनोकामना पूरी हो जाती है।

नोटः---मेरे विचार से भूत-प्रेत कुछ नहीं होते। यह अन्ध विश्वास तथा मन का वहम है। पहले जमाने में बहुत अन्ध विश्वास था। बीच में बहुत कम हो गया था। मेरा बच्चों से अनुरोध है कि वे भूत-प्रेत का भय छोड़ दें, निडर रहें, कोई भूत-प्रेत नहीं होता।

वल्लभ मत का प्रधानपीठ---नाथद्वारा (राजस्थान)

श्री नाथ द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग न० ८ पर है। दिल्ली से ७८५ कि०मी० पुष्कर से ३६२ कि०मी० एकलिंग जी से २७ कि०मी० पर है।

दिल्ली से जयपुर ३०५ कि०मी०, जयपुर से अजमेर १३१ कि०मी०, अजमेर से उदयपुर ३०१ कि०मी० और उदयपुर से नाथद्वारा ४८ कि०मी० है। यह बनास नदी पर स्थित है। यहाँ का मुख्य मन्दिर 'श्री नाथ जी' का है। यह मूर्ति पहले मथुरा के पास गोवर्धन में थी परन्तु मुस्लिम आक्रमणों के डर से १६६६ में नाथद्वारा में लाई गई थी। यह हिन्दुओं का बहुत बड़ा पूजा स्थल है तथा वल्लभ (वैष्णव) सम्प्रदाय का प्रधानपीठ है।

श्री नाथ जी का मन्दिर नन्द बाबा के घर की तरह बनाया गया है। श्री कृष्ण ने नन्द बाबा के घर में रहकर बाल लीलाएँ की थीं। इसलिए इस मन्दिर की बनावट मन्दिर की तरह न होकर घर की तरह है। वैसे सारा मन्दिर पक्का बना हुआ है परन्तु निज मन्दिर की छत पपरैल की बनी हुई है। निज मन्दिर के शिखर पर कलश सुदर्शन चक्र तथा सप्त ध्वजा है। यह एक भव्य तथा विशाल मन्दिर है परन्तु कलात्मक ढंग से नहीं बनाया गया है। मन्दिर के चारों तरफ पक्की दीवार बनी हुई है।

मन्दिर में श्री नाथ जी का स्वरूप भगवान् श्री कृष्ण के गोवर्धन पर्वत उठाने का स्वरूप है क्योंकि पुष्टि मार्गीय भक्तों के ईष्ट देव भगवान् श्री गोवर्धन नाथ जी हैं। बाईं भुजा गोवर्धन पर्वत धारण करने की भावना का सूचक है तथा दांई भुजा भक्तों की रक्षक नृत्य भाव की सूचक है। बायां हाथ भक्तों को निमंत्रण देने के लिए ऊपर उठाये हुए हैं और दायां हाथ मुट्ठी बंद करके कमर पर रखे हुए

हैं जो कामवासना पर नियत्रण करने का सूचक है। श्री नाथजी का श्याम वर्ण शृंगार रस का सूचक है। श्री नाथ जी के दांई ओर दो मुनि तथा बाईं ओर एक मुनि बैठा है। एक मुनि के नीचे मेष, सूर्य और दो गाय हैं, और दो मुनियों के नीचे मत्सय, नृसिंह तथा दो मोर हैं। गले में वर्णमाला के स्थान पर काला सर्प है। बाकी स्थान पर कन्दरा और पर्वत हैं।

मन्दिर के परकोटे में भक्त लोग अनार चौक से होकर आरती गली के पास बनी सीढ़ियों से छत पर जाते हैं और सुदर्शन चक्र तथा ध्वजा जी के दर्शन करते हैं। मन्दिर में अन्य दर्शनीय स्थान धौली पटिया, कमल चौक, रतन चौक, डोल विहारी अनार चौक, षष्टी कोटा, मणि कोटा, श्री नवनीत प्रिया जी का मन्दिर व उद्यान, श्रीमद्वल्लभ आचार्य जी की बैठक-परिक्रमा भीतरी व परिक्रमा बाहरी, सोने की चक्की तथा चान्दी की चक्की है। कहा जाता है कि चैत्र कृष्ण एकादशी सम्मत १५३५ को गोवर्धन पर्वत पर भगवान् श्री नाथ जी का मुखारबिन्द प्रकट हुआ था और उसी दिन रायपुर के चम्पार में महाप्रभु वल्लभ आचार्य जी का जन्म हुआ था। स्वामी के रूप में श्री नाथजी और सेवक के रूप में महाप्रभु जी का होना एक अलोकिक घटना थी।

श्रावण शुक्ल सम्मत १५५६ को महाप्रभु वल्लभाचार्य जी सम्पूर्ण भारत की दूसरी बार यात्रा करते हुए झारखंड क्षेत्र में पहुँचे। वहाँ पर स्वप्न में उनको श्री नाथजी के दर्शन हुए थे और श्री नाथजी ने उनको ब्रज में आने की आज्ञा दी थी। तब महाप्रभु जी ब्रज में आये थे और भगवान श्री नाथजी ने अपने परम भक्त महाप्रभु वल्लभाचार्य जी को गोवर्धन पर्वत से नीचे उतर कर दर्शन दिये थे और उनको पुष्टि मार्ग की सेवा आरम्भ करने की आज्ञा दी थी तब महाप्रभु जी ने ब्रजवासियों के सहयोग से गोवर्धन पर्वत पर श्री नाथजी के मन्दिर का निर्माण कराया था और श्री नाथजी की मूर्ति स्थापित की थी।

महाप्रभु वल्लभाचार्य जी का तत्कालीन शंकराचार्य तथा अन्य विद्वानों से शास्त्रार्थ हुआ था। इस शास्त्रार्थ में वल्लभाचार्य जी को विजय प्राप्त हुई और सम्मानार्थ कनक अभिषेक का आयोजन हुआ तथा सभी सम्प्रदाओं के आचार्यों ने इन्हें आचार्य तिलक करके महाप्रभु के नाम से सम्बोधित किया था।

महाप्रभु वल्लभाचार्य जी ने अपने जीवन के ५२ वर्ष दो महीने सात दिन भारत वासियों की सेवा में बिताकर आषाढ़ शुक्ल सम्वत १५८७ को गंगा जी में जल समाधि ले ली।

महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथ जी गद्दी

पर बैठे। परन्तु १५६६ में श्री गोपी नाथ जी स्वर्ग सिधार गये; उस समय उनके पुत्र पुरुषोतम की आयु १२ वर्ष की थी इसलिए मन्दिर की व्यवस्थ्था गोसाईं विहल दास जी ने की। सम्मत् १६०५ में पुरुषोत्तम जी गद्दी पर बैठे परन्तु अगले ही वर्ष उनका स्वर्गवास हो गया। सम्मत् १६०७ में गोसाईं विट्ठल नाथ जी ने आचार्यत्व ग्रहण किया और उनकी प्रेरणा से ८ भक्त कवियों सूरदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास, कृष्णदास, छित्रस्वामी, नन्ददास चतुर्भज दास, तथा गोबिन्द दास ने श्री कृष्ण की बाल लीलाओं पर साहित्य की रचना की। साहित्य की दृष्टि से इन आठों कवियों में सूरदास जी सर्वोपरि थे।

सम्मत् १७२६ में औरंगजेब ने मथुरा पर आक्रमण किया। इसलिए स्वामी गोविन्द जी ने श्री नाथजी की मूर्ति को रथ पर सजाकर अश्वनी पूर्णिमा को गोवर्धन पर्वत से प्रस्थान किया और अर्ध रात्रि को आगरा पहुँचे। तत्पश्चात् चम्बल नदी के तट पर पहुँचे और चम्बल पार करके दंडौती घाट पहुँचे। वहाँ से कृष्ण पुर, कृष्णपुर से कोटा, कोटा से पुष्कर, पुष्कर से जोधपुर मार्ग पर बढ़े और कुछ दिन किशनगढ़ तथा बीसलपुर में रहे, बीसलपुर से जोधपुर के पास तीन कोस दूर चौपासनी में रहे तथा मेवाड़ के राजा राजसिंह के आश्वासन पर सिहाड़ नामक स्थान पर आये और इसी स्थान पर फाल्गुन कृष्ण सप्तमी के दिन शनिवार को शास्त्र रीति के अनुसार श्री नाथजी को सिंहाड़ के निकट मन्दिर में प्रतिष्ठापित किया गया और इस स्थान का नाम नाथद्वारा पड़ा। श्री नाथजी को गोवर्धन पर्वत से सिहाड़ पहुँचने में २ वर्ष ५ महीने ७ दिन लगे थे और महाराजा राजसिंह ने श्री नाथ जी की मूर्ति की रक्षा का संकल्प किया था और कहा था कि मेवाड़ का बच्चा दिलो जान से श्री नाथजी की सेवा करता रहेगा।

अन्य पूजा स्थल

एकालिंग जीः---नाथ द्वारा के मार्ग में उदयपुर से २१ कि०मी० पर एकलिंगजी (महादेव जी) का विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर में चार मुखों वाला शिवलिंग है। एक लिंगजी को बप्पा रावल जी ने स्थापित किया था।

कांकरोलीः---नाथद्वारा से १६ कि०मी० आगे उत्तर में कांकरोली है। यहाँ पर राज सम्बन्ध सरोवर के किनारे श्री द्वारिकाधीश जी का मुख्य मन्दिर है। यह मन्दिर नाथ द्वारा के मन्दिर से मिलता जुलता है।

कुम्भलगढ़ः---उदयपुर से ६४ कि०मी० एक ऊँचे पर्वत के शिखर पर राणा कुम्भ जी का प्राचीन दुर्ग है। दुर्गम में नीलकंठ महादेव मन्दिर, कुम्भस्वामी मन्दिर और राणा रायमल के पुत्र की छतरी (स्मारक) दर्शनीय भवन हैं।

मध्य प्रदेश के कुछ धार्मिक नगर---भोपाल, सांची, उज्जैन, इन्दौर, ओंकारेश्वर (अमलेश्वर), पंचमढ़ी, अमरकंटक, बाघ, नलेश्वर, ग्वालियर, शिवपुरी, झांसी, ओरछा, दतिया, चित्रकूट

भोपालः---बम्बई दिल्ली मुख्य रेल मार्ग पर दिल्ली से ७०५ कि०मी० और बम्बई से ८३७ कि०मी० है। यह नगर मध्यप्रदेश की राजधानी है। कहा जाता है कि इसे परमार राजा भोज ने बसाया था। यहाँ भोपाल ताल नाम की दो झीलें हैं। इन झीलों में नौका विहार करने में बहुत आनन्द आता है। झील के किनारे नवाब का महल (अहमदाबद पैलेस) है।

भोपाल में **ताज-उल-मस्जिद** है जो भारत में सबसे बड़ी मस्जिद मानी जाती है। इसके अतिरिक्त जामा मस्जिद, मोती मस्जिद, सरदार मंजिल पैलेस, कमला पार्क, ऐशबाग, फरहत फजा बाग तथा नूर बाग आदि हैं।

भोपाल से २६ कि०मी० तथा सांची से ११ कि०मी० पर **भोजपुर है**। यहाँ पर प्राचीन शिव मन्दिर है जिसमें साढे सात फुट ऊँचा शिवलिंग है। इसे ११वीं शताब्दी में राजा भोज ने बनवाया था।

साँचीः---भोपाल से ४४ कि०मी० दूर सांची है। भोपाल से सांची तक बसें मिल जाती हैं। दिल्ली से सांची ६६१ कि०मी० है। बम्बई दिल्ली मुख्यमार्ग पर बीना और भोपाल के बीच में सांची का रेलवे स्टेशन है।

सांची में विश्व विख्यात महास्तूप है। इस महान् स्तूप को लगभग दो हजार वर्ष पहले सम्राट अशोक ने बनवाया था। इस स्तूप का विशाल गुम्बद ३७ मीटर व्यास और ऊँचाई १७ मीटर की है। यह पत्थर का बना ठोस गुम्बद है। इसके शिखर पर छत्रावलि तथा सीढ़ीदार प्रदक्षिणा पथ के किनारे जंगलेदार रेलिंग है तथा चार प्रवेश द्वार हैं।

चारों प्रवेशद्वार बहुत सुन्दर हैं इन पर बारीक नक्काशी की गई है। भगवान बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं के प्रसंग भी खुदे हुए हैं। राजाओं, रानियों और नर्तकियों की सुन्दर आकृतियाँ भी अंकित हैं। कला की दृष्टि से यह सर्वोपरि स्थान है। यहीं से सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए श्री लंका की ओर प्रस्थान किया था। यहाँ पर दक्षिण प्रवेश द्वार के पास अशोक का खंडित सिंह स्तम्भ है।

सांची के चारों ओर १६ कि०मी० में अनेक बौद्ध-स्तूप और हिन्दू मन्दिर हैं।

उज्जैनः---यह भोपाल से १८६ कि०मी० और इन्दौर से ८० कि०मी० है। यहाँ ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाएँ तथा होटल हैं।

यह नगर मध्य प्रदेश में क्षिप्रा नदी के तट पर बसा हुआ है। यह बहुत प्राचीन तथा पवित्र नगर है। इसका प्राचीन नाम उज्जयिनती या अवन्तिका था। यह नगर हिन्दू धर्म की ७ पवित्र पुरियों में से एक है तथा द्वादश (१२) ज्योतिर्लिंगों में से भी एक है और ५१ शक्तिपीठों में से एक है। यहाँ पर १२ साल बाद पूर्ण कुम्भ और हर ६ साल बाद अर्धकुम्भ का मेला लगता है।

उज्जैन प्रसिद्ध महाराजा विक्रमादित्य की राजधानी, प्रख्यात कवि कालिदास की साधना स्थली और भगवान श्रीकृष्ण तथा सुदामा की शिक्षा स्थली रहा है। यहीं पर संदीपन गुरु का आश्रम है। यह स्थान विश्व में पवित्र स्थान माना जाता है। यह इतिहास प्रसिद्ध राजाओं, योगी महात्माओं, साधुओं तथा पहुँचे हुए तांत्रिकों की साधना का स्थान रहा है। भगवान महाकालेश्वर का विश्व **प्रसिद्ध पवित्र मन्दिर** भी यहीं पर है। इसे उज्जैन के क्षेत्राधिपति के रूप में माना जाता है। महाकाल की दक्षिणमुखी प्रतिमा है। प्रातः उनके (महाकाल) शरीर पर जले हुए मुर्दे की राख का लेपन किया जाता है जिसे भस्म आरती कहते हैं।

उज्जैन से ३ मील दूर नदी के तट पर भैरवगढ़ नामक एक उपनगर है। सम्राट अशोक ने इसी जगह उज्जैन का कारागार बनवाया था। इस स्थान के प्रमुख देव भैरव है जिन्हें काल भैरव के नाम से जाना जाता है। काल भैरव का यह प्रसिद्ध विशाल प्राचीनतम् एवं चमत्कारी मन्दिर क्षिप्रा नदी के उत्तर तट पर स्थित है। इस

मन्दिर का निर्माण राजा भद्रसैन ने करवाया था। मन्दिर में स्थापित प्रतिमा भैरव के ६४ स्वरूपों में से एक स्वरूप काल भैरव की है। यहाँ आने वाले यात्रियों की हर इच्छा पूरी होती है। काल भैरव की पूजा अर्चना में. शराब नैवेद्य के रूप में पिलाई जाती है।

नौवीं और दसवीं शताब्दी में परमार राजाओं के शासन काल में उज्जैन ने बहुत उन्नति की लेकिन बाद में परमार राजाओं ने अपनी राजधानी 'घाट' बना ली थी। १२३५ में दिल्ली के सुलतान इल्तुतमिश ने उज्जैन पर आक्रमण किया था और यहाँ के मुख्य मन्दिर महाकालेश्वर को ध्वस्त कर दिया था। यह नगर ५०० वर्ष तक मुसलमानों के अधीन रहा। १७५० में यह मराठों के हाथ में आ गया। महाकालेश्वर (शिवमन्दिर) ध्वस्त होने के बाद दोबारा उसी स्थान पर बनाया गया है। महाकाल ज्योतिर्लिंग निचले खंड में (भूतल मे नीचे) स्थित है।

यहाँ विक्रान्त **भैरव का मन्दिर** तंत्रसाधना एवं मंत्र सिद्धि का चमत्कारपूर्ण मन्दिर है। यह मन्दिर ५००० वर्ष पुराना है। कामेढिया आश्रम के प्रसिद्ध तांत्रिक ने यहाँ आकर सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। गुरु नानक भी यहाँ आये थे। यह मन्दिर राजा विक्रमादित्य के समय का है। प्राचीन काल में यह अक्लेश्वर महादेव के नाम से प्रसिद्ध था। जैन साहित्य में इसे अन्यमुक्तक तीर्थ की संज्ञा दी है। भगवान महावीर स्वामी ने यहाँ विक्रांत भैरव की साधना की थी।

उज्जयिनी प्राचीन काल से कापालिक सम्प्रदाय के लोगों का प्रमुख केन्द्र रहा है। आद्य गुरु शंकराचार्य का कापालिकों के साथ यहीं पर शास्त्रार्थ हुआ था।

उज्जैन में भर्तृहरि की गुफा, योगीराज मत्स्येन्द्रनाथ की समाधि, वीर दुर्गादास की छतरी, सिद्ध वट, संतोषी माता, गोपाल मन्दिर, बड़े गणेश का मन्दिर, रौद्ररूप काली का मन्दिर, संदीपनी आश्रम, मंगलनाथ मन्दिर तथा **महाराजा विक्रमादित्य की आराध्या हरिसिद्धि देवी मन्दिर (यही उज्जैन का शक्तिपीठ है)** तथा महाराजा जय सिंह द्वारा बनाई गई वैद्यशाला (जंतर मंतर) भी देखने योग्य है।

इन्दौरः—इन्दौर उज्जैन से बस द्वारा ५३, और भोपाल से १९० अहमदाबाद से ४०८ कि०मी० है। ठहरने के लिए हुक्मचन्द की धर्मशाला। टीकमजी मूलचन्द की धर्मशाला, दयाल जी की धर्मशाला तथा अनेक धर्मशालायें और होटल हैं। हम टीकम जी मूलचन्द की धर्मशाला में ठहरे थे।

इन्दौर, महारानी अहिल्याबाई (१७६५-९५) ने बसाया था। यहाँ पर सुप्रसिद्ध कांच मन्दिर है जिसे शीशमहल भी कहते हैं। यह दिगम्बर जैन मन्दिर है। इसकी

दीवारें, छतें और फर्श सब कांच के बने हुए हैं तथा मोती, हीरे, मनके लगे हुए हैं। ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ, ऊपर की मंजिल और मूर्तियाँ सब शीशे की बनी हुई हैं। किवाड़, चौखटें तथा ड्योड़ी तक शीशे की बनी हुई हैं। मन्दिर में तीर्थंकारों की मूर्तियाँ हैं वे भी सब शीशे की बनी हुई हैं।

शीश महल के अतिरिक्त इन्दौर में अन्नपूर्णा मन्दिर देखने योग्य हैं। इसमें श्री कृष्ण लीला, महाभारत तथा रामायण से सम्बन्धित कथाएँ, आदम कद मूर्तियों की झाँकियों द्वारा दर्शाइ गई हैं तथा पौराणिक कथाओं पर आधारित देवी-देवताओं की मूर्तियों को देखकर यात्री दंग रह जाते हैं मूर्तियों में केवल जान डालनी बाकी है।

इन्दौर में होल्कर राजाओं (अहिल्याबाई और अन्य) की छतरियाँ हैं। माधव राव होल्कर की छतरी पर बहुत सुन्दर नक्काशी है।

लालवाग, मानिकबाग पैलेस, ओल्ड पैलेस तथा न्यू पैलेस भी देखने योग्य हैं।

ओंकारेश्वरः---इन्दौर से ७६ उज्जैन से १४२ और खंडवा से ६० कि०मी० दूर ओंकारेश्वर रोड रेलवे स्टेशन है। यहाँ से बस द्वारा ओंकारेश्वर ११ कि०मी० है। इन्दौर, भुसावल, उज्जैन, भोपाल, इटारसी, जलगाँव तथा इन्दौर से ओंकारेश्वर देखने के लिए जाकर वापिस शाम को इन्दौर आ सकते हैं या ओंकारेश्वर में अहिल्याबाई अथवा सुन्दरलाल बाहेती की धर्मशाला में ठहर सकते हैं। ओंकारेश्वर रोड स्टेशन पर भी धर्मशाला है।

ओंकारेश्वर नर्मदा नदी में स्थित मानधाता द्वीप पर सुन्दर स्थान है। इस द्वीप का आकार ओंकार यानि ओम् अक्षर की तरह है इसलिए इस का नाम ओंकारेश्वर पड़ा। यहाँ दो ज्योतिर्लिंग हैं ओंकारेश्वर और अमरेश्वर (अमलेश्वर) लेकिन दोनों को मिलाकर एक ही ज्योतिर्लिंग माना जाता है। इसके विषय में एक कथा प्रचलित है कि एक बार विन्ध्यपर्वत ने पार्थिवार्चन सहित ओंकारनाथ की छः महीने तक विकट आराधना की। भगवान शंकर ने प्रसन्न होकर दर्शन दिये। यह देखकर देवता और ऋषिगण भी आ गए जिनकी प्रार्थना पर ओंकार नामक लिंग के दो भाग किए गए। इनमें से एक शंकर भगवान्प्रणव (ओम्) रूप से विराजे जिससे उनका नाम ओंकारेश्वर पड़ा और दूसरा पार्थिव लिंग से प्रकट हुआ उसका नाम अमलेश्वर या अमरेश्वर पड़ा। ओंकारेश्वर (अमलेश्वर) द्वादश (१२) ज्योतिर्लिंगों में से एक है तथा हिन्दुओं का पवित्र पूजा स्थल है। यहाँ पर शंकर भगवान को चने की दाल का प्रसाद चढ़ाते हैं।

ओंकारेश्वर मन्दिरः---नर्मदा नदी के किनारे जहाँ बस रुकती है, उस बस्ती को विष्णुपुरी कहते हैं। वहाँ से नाव द्वारा नदी के बीच में स्थित मानधाता द्वीप पर जाते हैं। पहाड़ी के नीचे बने घाट पर स्नान करके पहाड़ी के ऊपर बने ओंकारेश्वर मन्दिर के दर्शन करने जाते हैं। मार्ग में मुक्तेश्वर, ज्वालेश्वर, केदारेश्वर, बड़े गणपति कालिका आदि देवी देवताओं की मूर्तियाँ मिलती हैं। मन्दिर का द्वार छोटा है जैसे गुफा में जा रहे हों। ओंकार जी शिवलिंग गर्भगृह के एक तरफ है यह लिंग स्वयम्भू है जिसके चारों ओर सदैव जल भरा रहता है। शिवलिंग के एक तरफ पार्वती और दूसरी तरफ गणेश जी की मूर्तियाँ हैं। प्रतिदिन पूजा होती है और श्रृंगार किया जाता है। मन्दिर के प्रांगण में शुकदेव की प्रतिमा, लिंग स्वरूप मानधाता और नन्दी की बड़ी मूर्ति है। दूसरी मंजिल पर शिखर के नीचे महाकालेश्वर की मूर्ति स्थापित है। यहाँ से सम्पूर्ण तीर्थ स्थल और नर्मदा तट का दूर तक का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है।

अमरेश्वर/अमलेश्वर मन्दिरः---मानधाता द्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित इस पूजा स्थल का दूसरा ज्योतिर्लिंग अमरेश्वर (अमलेश्वर) मन्दिर है। यह मन्दिर होल्कर राज्य की अहिल्याबाई ने बनवाया था। कुछ लोगों का कहना है कि इसे पूना के पेशवा बाजीराव द्वितीय ने बनवाया था।

जबलपुरः---इलाहाबाद से जबलपुर ३७० और नागपुर से ५४३ कि०मी० है। ठहरने के लिए अनेक धर्मशालायें हैं।

जबलपुर में एक पीसनहारी शीश महल जैन मन्दिर है जो कि बहुत सीढ़ियाँ चढ़कर है। यह मन्दिर देखने योग्य है। कहा जाता है एक श्रद्धालु महिला ने चक्की पीसकर जो धन कमाया वह सब इस मन्दिर बनवाने में लगा दिया। जबलपुर में लगभग २० कि०मी० की दूरी पर भेड़ा घाट है। भेड़ा घाट पर जहाँ सड़क समाप्त होती है वहाँ चौसठ योगिनी मन्दिर है। इस मन्दिर में चौंसठ योगिनियों की नग्न मूर्तियाँ हैं।

भेडाघाट से नर्मदा नदी, एक-डेढ़ कि०मी० लम्बी तंग घाटी में से गुजरती है। नदी के दोनों ओर १५० फुट ऊँची चट्टाने हैं। घाटी के मध्य में अहिल्याबाई का स्थापित किया हुआ शिवलिंग है तथा घाटी के अन्त में कुछ विचित्र शक्ल की चट्टानें मिलती हैं। जिन्हें ऐलिफैंटस फीट तथा हौर्सिज फीट कहा जाता है। यहीं पर मैगनेशियम लाइम स्टोन की देखने योग्य मारबल रॉक्स हैं। यहाँ से नर्मदा नदी बड़ी ऊँचाई से नीचे गिरती है जिसका नाम धुंआधार प्रपात रखा गया है। प्रपात जहाँ गिरता है वहाँ एक अच्छा नौका विहार और पिकनिक स्थल बन गया है। मारबल

रॉक्स को देखने के लिए नर्मदा नदी में नौका द्वारा जाना पड़ता है।

पंचमढ़ीः----जबलपुर से १७८ कि०मी० पीपरिया स्टेशन है। वहाँ से बस द्वारा ५२ कि०मी० पंचमढ़ी जाते हैं। पंचमढ़ी का अर्थ है पांच गुफायें। ये पांच गुफाएँ जिन्हें पांडव गुफायें कहते हैं, वास्तव में ये बौद्ध विहार हैं। एक गुफा में भगवान शिव की मूर्ति है। पंचमढ़ी मध्य प्रदेश का हिल स्टेशन है और सतपुड़ा पर्वत माला की महादेव पहाड़ियों पर ३५८० फुट की ऊँचाई पर बसा हुआ है।

अमरकंटकः---भारत की ७ पवित्र नदियाँ हैं जिनमें एक नर्मदा नदी है। जिस प्रकार गंगोत्री, यमुनोत्री, गंगा-जमुना के उद्गम स्थल हैं उसी प्रकार अमरकंटक नर्मदा नदी का उद्गम है। यह हिन्दुओं का मुख्य तीर्थ है। यहाँ पर नर्मदा कुंड और नर्मदा मन्दिर है। यहाँ पर कपिलधारा और दुग्धधारा नाम के दो प्रपात भी देखने योग्य हैं तथा कबीर चौतरा है। यहाँ कबीर साहिब कुछ समय रहे थे।

अमरकंटक मेकल पर्वत पर स्थित है। यहाँ इटारसी से ६६ कि०मी० और जबलपुर से २२४ कि०मी० बस द्वारा जाते हैं।

बाघः---घाट से ६०, महू से १५६, इन्दौर से १५५, मांडू से १२५ और उज्जैन से २३० कि०मी० है। केवल बसें आती जाती हैं।

बाघमती नदी के किनारे एक पहाड़ी की खड़ी चट्टान में बाघ गुफाएँ हैं। पहले यहाँ ६ गुफाएँ थीं अब केवल ४-५ बची हैं। ये गुफाएँ बौद्ध विहार हैं जिन्हें स्थानीय लोग पांडव गुफा कहते हैं। गुफा न० ४ सर्वश्रेष्ठ है। गुफाओं के बाहर यक्षराज की विशाल मूर्ति है। इन गुफाओं में अजन्ता की गुफाओं जैसी सुन्दर कला है।

नलेश्वरः---चम्बल घाटी में योगिनियों की वंश स्थली है। यहाँ नलेश्वर की पहाड़ी शृंखला के उत्तर दक्षिण पर एक संकरी घाटी की तीन धरातलों पर २२ मन्दिर हैं। इन मन्दिरों के समूह को चम्बल घाटी का भुवनेश्वर कहा जाता है।

मुरैना जिले की दक्षिणी सीमा के भीतर स्थित यह मन्दिर समूह केन्द्रीय पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है। यहाँ पहुँचने का सबसे आसान मार्ग ग्वालियर भिंड सड़क है। थोड़े चक्करदार मार्ग से पहाड़ी की कुछ ऊँचाई तक जीप चली जाती है।

ग्वालियरः---ग्वालियर, दिल्ली से ३१७ और आगरे से ११८ कि० मी० है। हम यात्रा संगम की बस द्वारा दिल्ली से मथुरा, आगरा होते हुए ग्वालियर गये थे। ग्वालियर में दर्शनीय स्थानों को दो भागों में बांटा जा सकता है (१) ग्वालियर का किला (२) नगर।

ग्वालियर में एक पहाड़ी पर बहुत प्राचीन किला है। यहाँ पर प्रतिहार (राजपूत) राजाओं का शासन था। १२३२ में इल्तुतमिश ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया था। १७८४ में मराठा सरदार माधवराव सिन्धिया ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया था और भारत स्वतंत्र होने तक यहाँ के शासक रहे। १८५७ के संग्राम में ग्वालियर की सेना ने तांत्या टोपे और झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना के छक्के छुड़ा दिये थे लेकिन अन्त में पराजय हुई। किले में गूजरी महल, म्यूजियम, चतुर्भुज मन्दिर, मान मन्दिर, सास बहू का मन्दिर, तेली का मन्दिर, जैन मूर्तियाँ तथा गुरुद्वारा देखने योग्य स्थान हैं।

नगर में दुर्गा देवी का मन्दिर, जयविलास महल, तानसेन का मकबरा, मुहम्मद गौस का मकबरा आदि देखने योग्य स्थान हैं।

शिवपुरीः—ग्वालियर देखकर हम शिवपुरी गये थे यहां पर सिंधिया वंश के राजाओं ने शहर के प्राचीन सौन्दर्य को संवारा है। यहाँ पर महाराज माधवराव सिंधिया द्वारा बनाया गया एक बहुत सुन्दर सरोवर है जो चोपड़ की शक्ल में है। चारों तरफ आरपार रास्ता है और चार मन्दिर बने हैं। पूर्व में राधाकृष्ण का मन्दिर है, पश्चिम में सीता-राम तथा लक्ष्मण का मन्दिर है, उत्तर में महाराज की माता जी का मन्दिर है। दक्षिण में स्वयम् महाराजा का मन्दिर है। मन्दिरों की दीवारों तथा किवाड़ों पर चान्दी के पतरे चढ़े हुए हैं और उनपर अनेक प्रकार के बेल-बूटों तथा मोर मोरनियों के चित्र अंकित हैं।

शिवपुरी सरोवर के समीप ही झरने बने हुए हैं। एक झरने के नीचे शिवलिंग है और एक जीवित सांप शिवलिंग की पूजा करता है। झरने के नीचे बने तालाब में बड़ी सुन्दर-सुन्दर मछलियाँ है जो यात्रियों को आकर्षित करती हैं।

इसके अतिरिक्त यहाँ पर नेशनल पार्क है जो १३० कि० मी० क्षेत्र में फैला हुआ है। इस में घना जंगल है और इसमें जानवर खुले घूमते हैं।

झाँसीः—दिल्ली से ४१४, ग्वालियर से ९७, आगरे से २१५ और कानपुर से २३० कि० मी० है। झांसी को ओरछा के राजा वीर सिंह देव (१६०५-२७) ने बसाया था। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद १८५३ तक मराहठों झांसी के राज्य ने किया। राजा गंगाधर रावं के निःसन्तान मरने पर उनकी विधवा रानी लक्ष्मी बाई को ईस्ट इडिया कम्पनी ने पैंशन तो दे दी परन्तु उत्तराधिकारी के रूप में दत्तक पुत्र ग्रहण करने की अनुमति नहीं दी। रानी अंग्रेजो से बदला लेने के लिये १८५७ के स्वतंत्रता

संग्राम में कूद पड़ी और भयंकर युद्ध में लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई।

यहाँ देखने योग्य किला है। किले में एक चबूतरा है, कालपी जाते हुए रानी यहीं से कूद कर भागी थी। झाँसी से २५ कि० मी० ओरछा रेलवे स्टेशन है।

ओरछा स्टेशन से **ओरछा** ३ कि० मी० है। यहाँ के दो मन्दिर श्रीराम और चतुर्भुज मन्दिर देखने योग्य हैं।

दतिया:---झाँसी से १२ कि० मी० पर दतिया है। यहाँ पर दंतबकरेश्वर (मड़ियामहादेव) तथा वनखंडेश्वर मन्दिर देखने योग्य है।

चित्रकूट

चित्रकूट के घाट पर भई सन्तन की भीड़
तुलसी चन्दन घिसत हैं, तिलक करें रघुबीर

चित्रकूट हिन्दुओं का एक प्राचीन तीर्थस्थल है। यहाँ पर बनवास काल में श्री राम चन्द्रजी, सीताजी, लक्षमणजी के साथ कई वर्षों तक रहे थे। मंदाकिनी नदी के किनारे ऊँची-ऊँची पहाड़ियों से सुशोभित यह स्थान आज भी किसी नगर या कस्बे में परिवर्तित नहीं हुआ है, जहाँ श्री राम चन्दरजी वन जीवन व्यतीत कर रहे थे उस स्थान पर प्रतिदिन हजारों सरधालू आते हैं, और इस पर्वत की परिक्रमा करते हैं। प्रायः सीता जी मंदाकिनी नदी पर स्नान करने जाती थीं, जो जानकी कुंड के नाम से जाना जाता है, नदी के समीप ही पर्वत है जिसे हनूमान पर्वत के नाम से जाना जाता है। यहाँ से पांच मील की दूरी पर सती अनसूईया का आश्रम है। सीता जी का रसोईघर एक गुफा के अन्दर है, जिसमें गर्मियों के दिनों में भी वातानुकोलित-सी स्थिति रहती है। यह स्थान मध्य प्रदेश के सतना जिले में पड़ता है, परन्तु बहुत लोग समझते हैं कि उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में है, वास्तव में यह दोनों प्रदेशों का संगम स्थल है। दिल्ली से हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से दक्षिण को जाने वाली लगभग सभी रेलगाड़ियाँ चित्रकूट के समीप से गुजरती हैं।

काम की ज्ञानवर्धक अभिव्यक्ति---खजुराहो के मन्दिर (मध्य प्रदेश)

खजुराहो महोबा से ८५, हरपालपुर से १००, मतना से १२१, झाँसी से १७०, छतरपुर से ४५ और पन्ना से ५२ कि० मी० है। इन सब जगह से खजुराहो बसें जाती हैं, रेल नहीं जाती। निकटतम रेलवे स्टेशन झाँसी, हरपालपुर, महोबा, सतना और सागर हैं। ठहरने के लिये जैन धर्मशाला, जैन लॉज, भारत लॉज, मद्रास कॉफी हाउस तथा राजकुमार होटल आदि है।

खजुराहो मध्यप्रदेश के जिस भाग में है उसे बुन्देलखंड कहा जाता है। ८५० के आस-पास कन्नौज में प्रतिहार (राजपूत) मालवा में परमार (राजपूत) और बुन्देलखंड में चंदेल (राजपूत) राजाओं का शासन था। बुन्देलखंड की राजधानी महोबा थी। महोबा खजुराहो से ६४ कि० मी० उत्तर पूर्व में है। चन्देल नरेशों का दुर्ग महोबा के निकट कालिंजर में था। कालिंजर का किला बहुत प्राचीन और विख्यात है। महोबा के आल्हा-ऊदल की वीरता की कहानियाँ आज भी उत्तर भारत में लोकप्रिय हैं।

६३० से १०१० तक के काल में चन्देल राज्य अपनी उन्नति के शिखर पर था। इसी काल में चन्देल राजाओं ने खजुराहो के मन्दिर बनवाये। इन मन्दिरों की कहानियाँ महम्मूद गजनवी तक पहुँची। उसने दो बार १११६ तथा ११२२ में कालिंजर पर आक्रमण किया। ये मन्दिर आज भी चन्देल नरेशों की अमर याद दिलाते हैं।

खजुराहो के मन्दिर

ये मन्दिर वास्तुकला की दृष्टि से अद्वितीय और विशिष्ट हैं और सारे विश्व में प्रसिद्ध हैं। यहाँ हजारों भारतीयों के अलावा बहत बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक आते रहते हैं।

इन मन्दिरों की दीवारों पर राजाओं, रानियों, साधुओं, सैनिकों, नर्तक, नर्तकियों

की एक से एक सुन्दर मूर्तियाँ हैं और इन सब से बढ़कर मैथुन-वद्ध प्रेमी युगलों की अनेक मुद्राओं में मूर्तियाँ हैं। एक प्रकार से इन मूर्तियों द्वारा कामशास्त्र का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इन में मैथुन के विभिन्न आसन, मैथुन क्रियाभेद, आलिंगन क्रियाभेद, चुम्बन क्रियाभेद, नखक्षत तथा दन्तक्षत भेद, मैथुन के विभिन्न-आसनों की अन्य विधियाँ, उत्तेजक कामबिन्दुओं की खोज, परहणन व सीत्कार कामवेग बढ़ाने के तरीके आदि का सर्वोत्कृष्ट चित्रण है तथा तृप्त काम की ज्ञानवर्धक अभिव्यक्ति है जो दर्शकों में काम क्रीड़ा के प्रति एक स्वाभाविक उत्सुकता, भावना, प्रेम, आनन्द और उल्लास उत्पन्न करती है। कुछ पर्यटक इन मन्दिरों की कामोत्तेजक मैथुन क्रिया के विभिन्न आसनों की मुद्रा में बनी मूर्तियों को देखकर इन्हें अश्लील मूर्तियाँ मानते हैं और कहते हैं कि ऐसी मूर्तियों का मन्दिरों में होना ठीक नहीं। परन्तु हिन्दू धर्म उदार, यथार्थवादी और जीवन के अधिक निकट है। हिन्दू धर्म के दार्शनिकों ने मैथुन आनन्द को सर्वोपरि ब्रह्म आनन्द माना है।
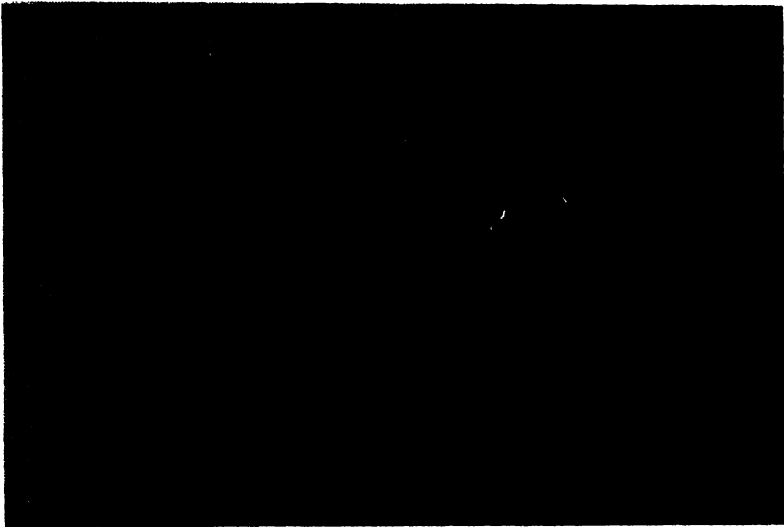
खजुराहो में कुल ३० मन्दिर हैं, २२ हिन्दू और ८ जैन। ये मन्दिर समूहों में बिखरे हुए हैं। इसलिये इन मन्दिरों को स्थिति के अनुसार ३ वर्गों में बांटा जा सकता है।

(१) पश्चिमी समूहः—पश्चिम दिशा में होने के कारण इन्हें पश्चिमी समूह

के मन्दिर कहते हैं। इस समूह में सर्वश्रेष्ट मन्दिर हैं तथा बस स्टैंड के निकट है। इस समूह के मन्दिर देखकर रिक्शा या टांगे द्वारा अन्य समूहों के मन्दिरों को देखना चाहिये। यदि समय कम हो तो केवल पश्चिमी समूह के मन्दिर देख लेना ही पर्याप्त है।

पश्चिमी समूह के मन्दिरों के निकट संग्रहालय है। इस में खजुराहो के खंडरों से प्राप्त मूर्तियाँ हैं। समूह के मन्दिर देखकर इस संग्रहालय को भी अवश्य देखना चाहिये।

पश्चिमी समूह में निम्नलिखित मन्दिर हैं

(१) कंडारिया महादेव मन्दिरः---यह मन्दिर महाराजा विद्याधर वर्मण ने महमूद गजनवी को दूसरी बार हराकर विजय की खुशी में बनवाया था। इस मन्दिर का प्रवेश द्वार कन्दरा अर्थात् गुफा की तरह है। गर्भगृह में संगमर्मर का बना शिवलिंग अमरनाथ के शिवलिंग जैसा प्रतीत होता है। यहाँ पर मैथुन के विभिन्न आसन दिखाये गये हैं जिन में एक पुरुष शीर्षासन की स्थिति में तीन स्त्रियों के साथ मैथुन मुद्रा में है।

(२) विश्वनाथ मन्दिरः---इस मन्दिर की दीवारों पर अन्य मूर्तियों के अतिरिक्त सामूहिक मैथुन क्रिया सम्पन्न करते हुए मूर्तियाँ हैं।

(३) लक्ष्मण मन्दिरः---यह विश्वविख्यात मन्दिर है इस में देव गन्धर्वों के बाईं तरफ एक ऐसी सुन्दरी की मूर्ति है जो लगभग पूर्ण नग्न है। नीचे लाइन में एक सुन्दरी अपनी बाँह को ऊपर करके अपनी पीठ पर एक नाखून के खरोच के चिह्न को देख रही है जो नायक द्वारा काम उत्तेजित करने के लिये खरोंचा गया है। आगे प्रेमालाप मुद्रा में युवक-युवती की मूर्ति है। दोनो नग्न हैं। एक अन्य युवक तथा युवती मैथुन अनुष्ठान की आगे की क्रियाओं का चित्रण करते हैं। एक अन्य मूर्ति में एक युवक युवती को काम उत्तेजित करने के लिये उसकी पीठ पर काम उत्तेजक बिन्दु खोज रहा है आदि-आदि मूर्तियाँ हैं।

(४) चौसंठ योगिनी मन्दिरः---इस में देखने योग्य कोई चीज नहीं है। यह मन्दिर कंडारिया महादेव मन्दिर के चबूतरे से भी देखा जा सकता है। यही मन्दिर ग्रेनाइट का बना हुआ है। शेष सभी मन्दिर सैंड स्टोन के हैं। कहा जाता है कि वाम मार्गीय तांत्रिक हर पूर्णमासी की रात को इस मन्दिर में सामूहिक मैथुन क्रिया करते थे।

(५) देवी पार्वती मन्दिरः---यह नवनिर्मित (१९८०) मन्दिर है। मन्दिर में पार्वती की मूर्ति है।

(६) मतंगेश्वर मन्दिरः---यह सब से पवित्र मन्दिर है। इस में अब भी पूजा पाट होता है। इस मन्दिर में भारत में सब से बड़ा शिवलिंग है जो ढाई मीटर ऊँचा १.१ मीटर व्यास का है। इतना ही जमीन के नीचे है। जंघा का व्यास ७.२ मीटर है। इस मन्दिर का निर्माण महाराजा हर्षवर्मन ने लगभग ६२० ई० में कराया था।

(७) देवी जगदम्बे मन्दिरः---यह मन्दिर मूलतः भगवान विष्णु का था अब यह जगदम्बा मन्दिर है। बाहर की दीवारों पर विभिन्न मुद्राओं में मैथुन, आलिंगन, चुम्बन की मूर्तियाँ हैं।

(८) चित्रगुप्त मन्दिरः---इस मन्दिर में भी विभिन्न आलिंगनों में मूर्तियाँ तथा चित्रगुप्त नामक देवता की मूर्ति है।

(९) वराह मन्दिरः---इस मन्दिर में भगवान विष्णु का वराह रूप दिखाया गया है।

पूर्वी समूह के मन्दिरः---इस समूह में छः मन्दिर हैं, तीन हिन्दू तथा तीन जैन। हिन्दू मन्दिरों में (१) वामन मन्दिर (२) जवारी मन्दिर (३) ब्रह्मा मन्दिर हैं। जैन मन्दिरों में (१) घंटाई मन्दिर (२) पार्श्वनाथ मन्दिर (३) आदिनाथ मन्दिर हैं।

दक्षिणी समूह के मन्दिरः---इस में दो मुख्य मन्दिर हैं (१) दुल्हादेव मन्दिर (२) चतुर्भुज मन्दिर। इसके अलावा पार्वती मन्दिर, लक्ष्मी मन्दिर आदि है जो बहुत दूर हैं तथा अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं हैं।

भारत का पश्चिमी छोर---रणछोड़ द्वारिका

गुजरात के पश्चिमी तट पर द्वारिका है। इसे द्वारावती, द्वारकापुरी, द्वारकाधाम तथा रणछोड़ द्वारिका भी कहते हैं। यह हिन्दुओं की सात पवित्रतम् पुरियों काशी, हरिद्वार, अयोध्यां, मथुरा, उज्जैन, द्वारिका तथा कांजीपुरम् में से एक है।

हिन्दुओं के चार पवित्रतम् धामों बदरीनाथ, पुरी, रामेश्वरम् तथा द्वारिका में से भी एक है।

भगवान श्रीकृष्ण व बलराम मगध के राजा जरासंध के सामने से रणछोड़ कर मथुरा से यहाँ समुद्र के टापू में यादवों सहित आकर बसे थे और यहाँ पर उन्होंने अपनी नई राजधानी की स्थापना की थी। रणछोड़ कर भागने के कारण इस नगर का नाम रणछोड़ द्वारिका पड़ा।

द्वारिका अरब सागर के तट पर बसा भारत का अन्तिम पश्चिमी छोर है। यह गोमती के किनारे पर है। गोमती कोई दरिया नहीं है बल्कि अरब सागर का ही एक भाग है। अरब सागर का खारा जल एकत्रित हो कर एक नदी-सी बन गयी है। इसे ही गोमती कहते हैं।

द्वारिका रेल द्वारा अहमदाबाद और मेहसाणा से सुरेन्द्र नगर १२८ कि० मी० है। सुरेन्द्र नगर से एक रेलवे लाइन राजकोट और जामनगर होती हुई ओखा जाती है। ओखा से दो स्टेशन पहले द्वारिका है। सुरेन्द्र नगर से द्वारिका ३३६, राजकोट से २१८, जामनगर से १४० और पोरबन्दर से २२६ कि० मी० है। सड़क द्वारा द्वारिका जाम नगर से १८०, पोरबन्दर से १२४ और ओखा से ३२ कि० मी० दूर है। निकटम हवाई अड्डा जामनगर तथा पोरबंन्दर में हैं।

पुरातत्त्व की खुदाइयों से पता चलता है कि वर्तमान द्वारिका छठी द्वारिका है। इससे पहली पाँच द्वारिका समुद्र में डूब चुकी हैं। वर्तमान खोजों से यह सिद्ध

हो गया है कि यहाँ पर साढ़े तीन हजार वर्ष पहले महाभारत की पौराणिक नगरी द्वारिका थी। पुरातत्वविदों को प्राचीन किले की ढाई सौ मीटर लम्बी दीवार मिली है।

द्वारिकाधीश मन्दिरः---भगवान श्रीकृष्ण के पोते ब्रजनाभ ने विश्वकर्मा द्वारा द्वारिकाधीश मन्दिर का निर्माण कराया था। मन्दिर का गर्भगृह ढ़ाई हजार वर्ष पुराना है। यह मन्दिर गोमती नदी के किनारे पर है। मन्दिर का शिखर ७ मंजिल का है। द्वारिकाधीश मन्दिर को जगत मन्दिर भी कहते हैं। मन्दिर ३ भागों में बंटा है निज मन्दिर, सभागृह और कोण बनाता हुआ शिखर। सभागृह ६० स्तम्भों पर टिका है। मुख्य मन्दिर ५ मंजिल है और ३३ मी० ऊँचा है। शिखर वाला भाग ५० मी० ऊँचा है और पूरे ओखा में कहीं से भी दिखाई पड़ता है। शिखर पर पूरे थान की ध्वजा लहराती है। मन्दिर के चारों तरफ परिक्रमा करने के लिये गलियारा बना हुआ हे।

मन्दिर में भगवान रणछोड़ राय जी (श्रीकृष्ण) की मूर्ति चान्दी के सिंहासन पर विराजमान है जो काले रंग की है। यह मूर्ति चतुर्भुजी है और एक मीटर ऊँची है। मन्दिर के निकट ही एक तरफ विक्रम् जी और दूसरी तरफ प्रद्युमन जी के मन्दिर हैं। दक्षिण में मन्दिर का भंडारा है। इसके अतिरिक्त मन्दिर में श्री सरस्वती जी, श्री सत्यभामा जी, श्री लक्ष्मी जी, श्री गोपाल कृष्ण जी, श्री लक्ष्मी नारायण जी, श्री जामवती जी, श्री द्वारिका शारदा पीठ, गायत्री देवी, कोलवा भगत, श्री माधव राम जी तथा श्री कुशेश्वर महादेव जी के मन्दिर हैं। कुशेश्वर महादेव मन्दिर के विषय में कहा जाता है कि परमेश्वर ने कुश नाम के दैत्य को मार कर यह वरदान दिया था कि यहाँ पर घी का दीपक तथा लड्डू की दक्षिणा देने से यात्रा सम्पूर्ण होती है। प्राचीनकाल में द्वारिका को कुश स्थली भी कहा जाता था। शारदा मठ के बारे में कहा जाता है कि जगदगुरु शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशों में चार मठ स्थापित किये थे। यह उनमें से एक है।

द्वारिकाधीश मन्दिर से लगभग २ कि० मी० दूर रुकमणी तथा ३२ कि० मी० पर ओखा और ओखा से नाव द्वारा समुद्र में ६ कि० मी० पर भेंट द्वारिका है।

निष्पाप सरोवर तथा गोमती

गोमती नदी का जल खारा है। यहाँ पर एक छोटा-सा सरोवर भी है। इस सरोवर में भी गोमती का जल है। तीर्थ यात्री पहले निष्पाप सरोवर में स्नान करते हैं फिर गोमती में स्नान करते हैं। उसके बाद द्वारिकाधीश मन्दिर के दर्शन करते हैं।

प्राचीन काल में दूसरे देशों का अरब सागर से भारत आने का द्वार यहीं पर था। इसलिये भी इसे द्वारका कहा जाता है। यहाँ पर विदेशी व्यापार से इतनी स्वर्ण सम्पदा एकत्रित हो गई थी कि इसे स्वर्ण द्वारका भी कहते हैं।

द्वारिका में ठहरने के लिये कई धर्मशालायें हैं। सागर भवन, भद्रकालि, रामेराम, देवी भवन, श्रीराम, दूध वालों की धर्मशाला, प्रेमजी की धर्मशाला है। मुरलीधर लाज, महालक्ष्मी लॉज, बंसीधर लॉज, बजरंग लॉज आदि सस्ते होटल हैं। रेलवे रिटायरिंग रूम भी है।

भगवान श्री कृष्ण का निवास स्थान (बेट द्वारिका)

बेट द्वारिका को बेट शंखोधर तथा रमणद्वीप भी कहा जाता है। श्रीकृष्ण की राजधानी द्वारिका थी परन्तु उनका निवास स्थान बेट द्वारिका में था। वे सपरिवार यहीं पर निवास करते थे।

श्रीकृष्ण का मित्र सुदामा पोरबन्दर में रहता था। वह श्रीकृष्ण के साथ उज्जैन नगरी में संदीपन गुरु के पास पढ़ा था। उस समय दोनों में प्रगाढ़ मित्रता हो गई थी। विद्या समाप्त करने के बाद श्रीकृष्ण द्वारिकाधीश बने और सुदामा पोरबन्दर में रहकर अपना गुजारा चलाने लगे परन्तु सुदामा को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती थी। सुदामा की पत्नी ने सुदामा को श्री कृष्ण के पास भेजा। सुदामा बड़ा संकोच करते हुए श्रीकृष्ण के पास पहुँचा वह अपने मित्र के लिये चावल की पोटली अपनी बगल में दबा कर पूछते पूछते द्वारिका पहुँचे। आगे समुद्र था। सुदामा सोचने लगे कि इतने बड़े समुद्र को कैसे पार करूँ, इतने में एक टूटी-फूटी नाव वहाँ आ गई। अन्तर्यामी भगवान् श्रीकृष्ण बालक रूप होकर उस नाव को चला रहे थे। उन्होंने सुदामा को अपनी नाव में बिठा लिया और सुदामा को पार उतार कर अन्तर्ध्यान हो गये। सुदामा श्रीकृष्ण के महल में पहुँचे और श्रीकृष्ण से भेंट की। श्रीकृष्ण ने प्रेमवश सुदामा को अपनी भुजाओं में भरकर छाती से लगा लिया और अपने सिंहासन पर बिठाकर उनके पाँव के काँटे निकालने लगे। अपने प्रिय मित्र की ऐसी दुर्दशा देखकर भगवान श्रीकृष्ण की आँखों से आंसू बहने लगे। उन्होंने अपने आँसुओं से ही सुदामा के चरणों को धो डाला। और अपनी सभी रानियों को बुलाकर कहा कि जितनी सेवा तुम हमारे मित्र सुदामा की करोगी हम उतना ही तुम्हारे से खुश होंगे। यह सुनकर श्रीकृष्ण की सभी रानियाँ सुदामा की सेवा करने लगी। कोई उनको स्नान कराने लगी कोई उनको चन्दन लगाने लगी, कोई

उनको चंवर हिलाने लगी और कोई उनके चरण दबाने लगी। श्रीकृष्ण ने सुदामा के दो मुट्ठी चावल खाकर कहा कि हे सुदामा ऐसा स्वाद तो कभी यशोदा व देवकी के छत्तीस प्रकार के भोजनों में भी नहीं मिला। जब वे तीसरी मुट्ठी चावल खाने लगे तो रुकमणी ने उनका हाथ पकड़ कर कहा कि हे नाथ अब, बस भी करो, हम भी तुम्हारे चरणों के अधीन है। हमारे लिये भी कुछ छोड़ दो। श्रीकृष्ण ने वह मुट्ठी चावल रुकमणी को देकर बाकी सब चावल अपनी सभी रानियों को खाने के लिये दे दिये।

सुदामा को चन्दन लगाने से उसकी दारिद्रता दूर हो गई और उसके भाग्य का उदय हुआ जिसके कारण पोरबन्दर में उसकी झोपड़ी महल बन गई और कुबेर के भंडार की तरह उनका भंडार भर गया।

सुदामा कुछ दिन श्रीकृष्ण के मेहमान रहे लेकिन उन्होंने अपनी दुर्दशा के बारे में श्रीकृष्ण को कुछ नहीं बताया और न ही उनसे कुछ मांगा। परन्तु जब वह वापिस पोरबन्दर आये तो उन्होंने अपनी झोपड़ी की जगह महल बना पाया। सुदामा सुखपूर्वक अपने महल में रहने लगे। पोरबन्दर को सुदामापुरी भी कहने लगे।

बेट द्वारिका में श्रीकृष्ण की सुदामा से भेंट हुई थी। इसलिये इस जगह का नाम भेंट द्वारिका पड़ा। जो अब बेट द्वारिका कहा जाता है।

बेट द्वारिका, द्वारिका से ३८ कि० मी० है। ३२ कि० मी० पर ओखा है जो एक बन्दरगाह है और बड़े-बड़े जहाज ठहरते हैं। यहाँ पर रेलवे स्टेशन भी है। ओखा से आगे समुद्र में ६ कि० मी० पर बेट द्वारिका है। यह अरब सागर में एक टापू है और ओखा से स्टीमर या नाव में बेठ कर जाते हैं।

बेट द्वारिका में दो मन्दिर मुख्य हैं एक शंखोधर है तथा दूसरा महाप्रभुजी की बैठक है। मन्दिर में श्री राजेश्वरी भगवान की बड़ी पटरानी श्री राधिका जी, श्री लक्ष्मी जी, श्री शेष अवतार दाउजी, श्री राधिका जी, श्री सत्य नारायण जी, श्री गोवर्धन नाथ भगवान, श्री सत्यमामा जी, श्री जामवती जी, श्री लक्ष्मी नारायण (युगल जोड़ा) श्री राम नाम का तैरता पत्थर, श्री कृष्ण राधा झूला झूलते हुए, जय श्री राधे, मीरा, रविदास श्री लक्ष्मी नारायण गुप्तगुई की मूर्तियाँ हैं। मन्दिर में श्री द्वारिकाधीश जी का राजभोग भंडार भी है तथा राजभोग भेंट (सुदामा गद्दी) है। यात्री ५ रुपये ११ रुपये २१ रुपये या अपनी श्रद्धा अनुसार दान करके रसीद ले सकते हैं।

बेट द्वारिका हिन्दुओं का एक तीर्थ स्थान है।

प्रभास क्षेत्र---सोमनाथ

सोमनाथ को प्रभास, प्रभास पाटण तथा पाटण भी कहा जाता है। सोम, चन्द्रमा को कहते हैं। नाथ, स्वामी को कहते हैं। चन्द्रमा का स्वामी भगवान शिव है। यहाँ भगवान सोमनाथ का विश्वविख्यात मन्दिर है। सोमनाथ द्वादश (१२) ज्योतिर्लिंगों में प्रमुख है और प्राचीन काल से हिन्दुओं का मुख्य तीर्थ रहा है।

प्राचीन काल में यह मन्दिर इतना समृद्ध था कि इसको लूटने के लिये १०२४ में महमूद गजनवी ने आक्रमण किया और इसे ध्वस्त किया। इस मन्दिर में नीलम के ५६ स्तम्भ थे जिनमें अमूल्य रत्न जड़े थे। ८० मन सोने का घंटा तथा ८० मन सोनें की जंजीर थी। हीरे, जवाहरात तथा सोने चाँदी के अनगिनत तहखाने भरे पड़े थे। महमूद गजनवी इस अपार धन सम्पदा को लूट कर गजनी ले गया था। गुजरात के राजा भीमदेव और मालवा के राजा भोज ने इस मन्दिर का पुनर्निमाण कराया। राजा जयसिंह ने मन्दिर को विस्तृत कराया। ११६८ में विजयी कुमार पाल ने मन्दिर का और भी सुधार किया। गुजरात के राजा खंगार ने भी मन्दिर को विस्तृत करने में सहायता दी। परन्तु १२०७ में अलाऊदीन खिलजी के सेनापति नसरत ख़ान ने, १३६५ में गुजरात के सुलतान मुज्जफर शाह ने, १४१३ में मुज्जफर शाह के पोते सुलतान अहमद शाह ने और १७०१ में औरंगजेब ने मन्दिर को लूटा।

सन् १९४७ में सरदार वल्लभ भाई पटेल की आज्ञा से सोमनाथ मन्दिर का पुनर्निमाण हुआ और ११ मई १९५१ को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने अपने कर कमलों से इसमें ज्योतिर्लिंग की स्थापना की। सोमनाथ के इस मन्दिर निर्माण में २४ लाख ६२ हजार रुपये खर्च हुए थे।

यह मन्दिर १५५ फुट ऊँचा है और इसकी नींव ३३ फुट गहरी है। मन्दिर के चारों ओर विशाल प्रांगण है। भगवान सोमनाथ महादेव के शिवलिंग रूप में दर्शन

करके मनुष्य की सब मनोकामना पूरी हो जाती है। मन्दिर समुद्र के किनारे पर है।
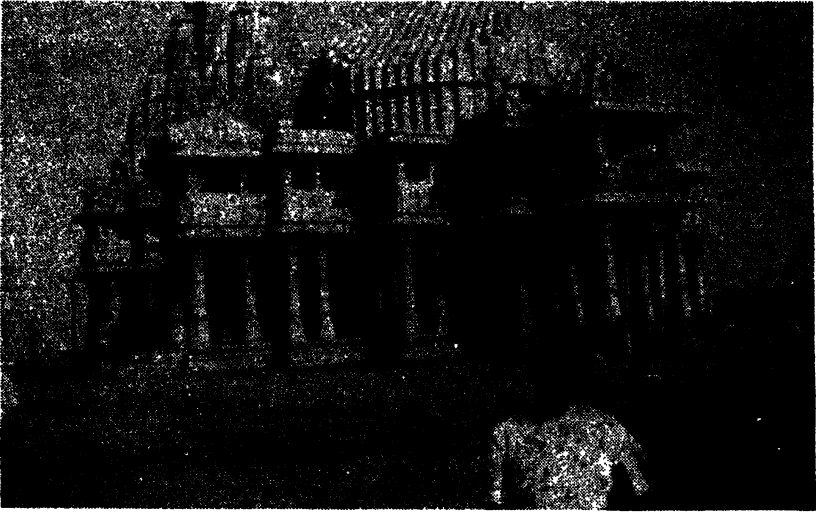
सोमनाथ के विषय में एक पौराणिक कथा है। कथा के अनुसार दक्ष प्रजापति की २७ कन्याएँ थीं जिनका विवाह चन्द्रमा से हुआ था। उनमें से रोहणी सब से सुन्दर थी। इसलिये चन्द्रमा, रोहणी से सबसे अधिक प्रेम करता था। बाकी २६ कन्याओं ने अपने पिता दक्ष से चन्द्रमा की शिकायत की। दक्ष ने चन्द्रमा को श्राप दिया कि तुम्हें क्षय रोग हो जाय। श्राप के प्रभाव से चन्द्रमा दिन प्रति दिन घटने लगा। इस पर सब देवता दुःखी हुए। उन्होंने ब्रह्मा जी को साथ लेकर दक्ष प्रजापति से प्रार्थना की कि वह चन्द्रमा को दिया गया श्राप वापिस ले लें। दक्ष प्रजापति ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करके कहा कि चन्द्रमा प्रभास तीर्थ में जहाँ हिरणिया, सरस्वती और कपिला नदियाँ मिलकर समुद्र में मिलती है, वहाँ पर जाकर भगवान शिव की आराधना करें। चन्द्रमा ने प्रभास तीर्थ में जाकर त्रिवेणी (हिरणिया, सरस्वती, और कपिला का संगम) में स्नान करके भगवान शिव की तपस्या शुरू की। चार हजार वर्ष तक तपस्या करने के पश्चात् भगवान शिव चन्द्रमा से प्रसन्न हुए और उन्होंने चन्द्रमा को वरदान दिया कि तुम कृष्ण पक्ष में १५ दिन तक प्रति दिन घटते जाओगे परन्तु शुक्ल पक्ष में प्रति दिन बढ़ते जाओगे और हरेक पूर्णिमा को पूर्ण होकर क्षयरोग से मुक्त हो जाया करोगे। इस प्रकार चन्द्रमा ने वरदान पाकर शिव लिंग की स्थापना की और अपनी २७ पत्नियों के साथ एक समान प्रेम करके यहीं पर रहने लगे। उनकी २७ पत्नियाँ नक्षत्र कहलाती हैं।

चन्द्रमा ने अमावस के दिन हिरणिया सरस्वती और कपिला के संगम में स्नान करके शिव जी का तप आरम्भ किया था और शिव जी ने अमावस के दिन ही चन्द्रमा को वरदान देकर उसका क्षय रोग दूर किया इसलिये उसी दिन से अमावस को तीर्थ स्नान करने की प्रथा चली आ रही है। यदि अमावस सोमवार को पड़ जाय तो तीर्थ स्नान करने का पुण्य और भी अधिक बढ़ जाता है। उसे सोमती अमावस कहते हैं।

सोमनाथ में अन्य दर्शनीय स्थान

अहिल्या बाई मन्दिरः---मुख्य सोमनाथ मन्दिर से बाहर आकर दक्षिण दिशा में कुछ फासले पर एक और सोमनाथ मन्दिर है जिसमें शिवलिंग जमीन के अन्दर कुछ सीढ़ियाँ उतर कर है। यह मन्दिर १७८३ में इन्दौर की रानी अहिल्याबाई ने बनवाया था। इसलिये इसे अहिल्याबाई मन्दिर कहते हैं।

प्राची त्रिवेणीः---वैसे तो प्रयाग (इलाहाबाद) में त्रिवेणी संगम है जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती नदियाँ आपस में मिलती हैं परन्तु सोमनाथ में भी तीन नदियों का संगम है। इन तीन नदियों के नाम हिरणियाँ सरस्वती तथा कपिला है। ये तीनों नदियाँ त्रिवेणी घाट पर मिलकर समुद्र में मिल जाती हैं। प्रयाग की त्रिवेणी से अन्तर रखने के लिये इसे प्राची त्रिवेणी कहा जाता है। तीर्थ यात्री प्राची त्रिवेणी में स्नान करके भगवान सोमनाथ मन्दिर के दर्शन करने जाते हैं। इस त्रिवेणी का जल खारा है।

भालक तीर्थः---सोमनाथ से लगभग तीन कि० मी० दूर भालू पुर गाँव है। कहा जाता है कि जरा नाम के एक भील शिकारी ने पीपल के पेड़ के नीचे बैठे हुए भगवान श्रीकृष्ण को तीर मारा था। श्रीकृष्ण के पैर में पदम था। जरा ने उसे हिरण की आँख समझकर उस पर तीर चला दिया था और भगवान श्रीकृष्ण अपने स्वरूप में विलीन हो गये थे। वास्तव में भगवान श्रीकृष्ण ने पृथ्वी का बोझ उतारने के लिये अवतार धारण किया था।

प्रभास क्षेत्रः---सब कार्य पूरे होने पर उन्होंने अपना शरीर त्याग करने के लिये **प्रभास पाटण** चुना था। वेरावल और पाटण के बीच में **प्रभास क्षेत्र** है। "प्रा" का अर्थ पुनः और "भास" का अर्थ प्रकाश अर्थात पुनः प्रकाश। भगवान शिव ने चन्द्रमा की तपस्या से खुश होकर यहीं पर उन्हें शुक्ल पक्ष में पुनः प्रकाशित होने का वरदान दिया था।

अग्नि कुंडः---अग्नि कुंड प्राची त्रिवेणी के निकट समुद्र का तट है। भगवान श्रीकृष्ण के पार्थिव शरीर को भालक तीर्थ से यहाँ लाकर उनका दाह संस्कार हुआ

था। समुद्र के इस तट को अग्नि कुंड कहते हैं।

इसके अतिरिक्त सोमनाथ के आसपास कई पवित्र तीर्थ स्थान हैं जिनमें जूनागढ़, गिरनार, दामोदर कुंड तथा वीर पुर आदि बहुत पवित्र यात्रा धाम हैं। **जूनागढ़** में नरसिंह भक्त का चौरा है। नरसिंह भक्त यहीं पर बैठकर भजन कीर्तन किया करते थे। **गिरनार** पर्वत पर अम्बा भवानी का मन्दिर है। यहाँ पर ३३ करोड़ देवता वास करते हैं। पार्वती के भाई का नाम गिरी था। पार्वती शिव के विवाह में उसने अतिथियों का बहुत आदर सत्कार किया। इस पर भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर गिरी को पर्वतों में नारायण स्वरूप होने का आशीर्वाद दिया और उसका नाम **गिरी नारायण** रखा जिसे अब **गिरनार** कहा जाता है। गिरनार के निकट ही **दामोदर कुंड** है इसमें सभी नदियाँ तीर्थ रूप तथा देवता दामोदर रूप होकर निवास करते हैं। दामोदर कुंड में स्नान करने से मनुष्य के सब पाप कट जाते हैं। जूनागढ़ और राजकोट के बीच में **वीरपुर** है। जलाराम बापा की पत्नी का नाम वीरबाई था। वह बहुत बड़े चमत्कारी संत थे। उनकी पत्नी के नाम पर वीरपुर नाम पड़ा। कहा जाता है कि भगवान एक साधु का भेष बनाकर जलाराम बापा की परीक्षा लेने आये और उन्होंने जलाराम से उनकी पत्नी वीरबाई को अपनी सेवा के लिये मांगा। जलाराम ने बड़ी प्रसन्नता से अपनी पत्नी वीरबाई उनको दे दी। भगवान् उसे लेकर चले गये और जंगल में लघुशंका के बहाने बैठकर अदृश्य हो गये और अपनी निशानी के रूप में अपना डंडा और झोली छोड़ गये जो आज भी वीरपुर के मन्दिर में रखा हुआ है।

सोमनाथ मन्दिर रेल द्वारा जाने के लिये मेहसाणा या अहमदाबाद से सुरेन्द्र नगर जाते हैं जो १२८ कि० मी० है। वहाँ से राजकोट जेतलसर और जूनागढ़ होती हुई रेलवे लाइन वेरावल तक गई है। विरावल से सोमनाथ ८ कि० मी० है और बस द्वारा जाते हैं। विरावल सुरेन्द्र नगर से ३०८, राजकोट से १८६ और जूनागढ़ से ८३ कि०मी० है और द्वारिका से रेल या बस द्वारा जाया जा सकता है। विरावल एक अच्छी बन्द्रगाह है। बम्बई और ओखा से समुंद्री जहाज द्वारा भी विरावल आ सकते हैं। बस द्वारा विरावल, केसोड़ से ५३, जूनागढ़ से ७६ और अहमदाबद से ४३४ कि० मी० है। विरावल से सोमनाथ ८ कि० मी० है। **वेरावल ७ पवित्र धर्म क्षेत्रों में से एक है।**

सोमनाथ द्वारिका की भांति समुद्र तट पर है। दोनों गुजरात (सौराष्ट्र) में हैं। द्वारिका उत्तर पश्चिम में है और सोमनाथ दक्षिण पश्चिम में है।

सोमनाथ में ठहरने के लिये अनेक धर्मशालायें तथा होटल हैं।

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के बारे में दो मत हैं (१) हैदराबाद राज्य में (२) गुजरात में। हैदराबाद राज्य में नागेश्वर मन्दिर सौडा नामक स्थान पर है। द्रोणाचलम् से मनमाड तक जो रेलगाड़ी जाती है उसपर पूर्णा नाम का एक जंकशन है। वहाँ से हिंगोली शाखा सौड़ा स्टेशन जाती है। नागनाथ का मन्दिर सौडा गाँव में है जो स्टेशन से १२ मील पड़ता है। स्टेशन से बस या बैलगाड़ी मिल जाती है। सौडा गाँव के चारों तरफ पहाड़ और घने जंगल हैं। नागेश्वर जी का मन्दिर बहुत बड़ा है। थोड़ी दूर पर कनकेश्वरी (पार्वती जी) का मन्दिर है, कहा जाता है कि एक वैश्य शिव भक्त था उसने विश्वव्यापिनी ज्योति का अनुभव किया और तभी से यहाँ पर नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

दूसरे मत के अनुसार नागेश्वर द्वारिका तीर्थ जाते हुए २५ कि० मी० उत्तर पूर्व में पड़ता है। राजकोट (गुजरात) रेलवे स्टेशन से द्वारिका जाया जाता है। द्वारिका से नागेश्वर जाने के लिये बस तथा घोड़े तांगे मिल जाते हैं। यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में गिना जाता है।

साबरमती आश्रम

अहमदाबाद (गुजरात) में साबरमती नदी किनारे साबरमती आश्रम है। इसे १९१५ में गान्धी जी ने स्थापित किया था। गांधी जी २८ वर्ष यहां रहे थे। अहमदाबाद इसे गुजरात के शासक अहमद शाह (१४११-५३) ने बसाया था। यहां पर साबरमती आश्रम के अतिरिक्त रानी सिपरी का राजा और मस्जिद, जामा मस्जिद सिद्धि सैयद मस्जिद, तीन दरवाजा, हठीसिंह मन्दिर रानी रूपमती मस्जिद, झूलता मीनार, दादा हरी की बाबडी, कांकरिया लेक, गीता मन्दिर, स्वामी नारायण मन्दिर, मुस्लिम की मस्जिद तथा अहमदाबाद मस्जिद धार्मिक स्थल हैं।

भगवान कपिल देव की तपोभूमि --- नासिक पंचवटी

दिल्ली से पूणे जाने वाली ट्रेन में मनमाड़ स्टेशन पर उतर कर नासिक जाने के लिए रेल तथा बसें मिल जाती हैं। मनमाड़ से नासिक रोड़ लगभग ७४ कि० मी० है। नासिक रोड़ से नासिक शहर जाने के लिए सिटी बस, टैक्सी तथा आटो रिक्शा २४ घन्टे मिलती रहती हैं। नासिक में रहने के लिए पंचवटी में गोदावरी के किनारे अनेक धर्मशालायें हैं तथा शहर में कई होटल हैं। यहाँ भोजन तथा निवास की अच्छी सुविधा है।

नासिक को हर युग में भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा गया है। सतयुग में ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना के लिए पदमासन होकर यहाँ पर तप किया था इसलिए इसका नाम पद्म नगर पड़ा। त्रेता युग में खरदूषन त्रिशिर जैसे राक्षस यहाँ रहते थे। इसलिए इसका नाम त्रिकंटक हुआ। द्वापर युग में राजा जनक ने यहाँ पर अनेक यज्ञ किये इसलिए इसका नाम जनक स्थान हुआ। श्री रामचन्द्रजी के भाई लक्ष्मण ने यहाँ पर रावण की बहन सरूपनखा की नाक काटी थी। इसलिए इसका नाम नासिक प्रसिद्ध हुआ।

एक बार जालन्धर की पत्नी वृन्दा के श्राप से भगवान विष्णु काले रंग के हो गये थे जिन्हें हम शालिगराम कहते हैं। तब भगवान विष्णु ने यहाँ आकर गोदावरी तीर्थ में स्नान किया और अपना पहले जैसा सुन्दर रूप प्राप्त किया। इसलिए नासिक को हरिहर क्षेत्र भी कहा जाता है।

इसी तरह भगवान शिव शंकर से ब्रह्म हत्या हुई थी। कहा जाता है कि संसार की सृष्टि करने वाले ब्रह्मा जी के पाँच मुख थे। ब्रह्मा जी अपने चारों मुखों से तो वेद पढ़ते थे और पांचवें मुख से भगवान विष्णु की निन्दा करते थे। भगवान शिव

शंकर ने यह देखकर अपने त्रिशूल से ब्रह्मा जी का निन्दा करने वाला पांचवा मुख काट डाला और ब्रह्मा जी के चार मुख रह गये। शिव शंकर जी को ब्रह्म हत्या का पाप लगा। ब्रह्म हत्या का कपाल उनके पीछे लग गया और शिव शंकर जी उससे मुक्ति पाने के लिए भागने लगे। भागते-भागते वे एक स्थान पर बैठ कर विश्राम करने लगे। वहाँ पर उन्होंने एक बछड़े को अपनी माता गाय से बात करते सुना। बछड़ा कह रहा था कि कल मेरा मालिक मेरे नाक में रस्सी डालेगा तब मैं उसे मार डालूंगा। गाय ने कहा तुम ऐसा मत करना क्योंकि तुम्हें ब्रह्म हत्या का पाप लगेगा। बछड़े ने कहा कि मुझे ब्रह्म हत्या से मुक्त होने का तीर्थ मालूम है। गाय बछड़े का यह वार्तालाप सुनकर भगवान शंकर प्रसन्न हुए। दूसरे दिन वैसा ही हुआ। बछड़ा अपने मालिक को मार कर भागने लगा। भगवान शंकर भी उसके पीछे-पीछे गये। वह बछड़ा नासिक पंचवटी में आया और रामतीर्थ अरुणा संगम पर आकर पानी में कूद पड़ा। पानी में स्नान करते ही उसका ब्रह्म हत्या का दोष दूर हो गया। यह देखकर भगवान शंकर ने भी वहाँ स्नान किया और उन्हें भी ब्रह्म हत्या से छुटकारा मिल गया। तब भगवान शंकर ने कपालेश्वर नाम से नासिक में निवास किया। इसलिए इस स्थान को कपालेश्वर भी कहा जाता है। भगवान शंकर ने बछड़े (नन्दी) को अपना गुरु माना इसलिए उन्होंने यहाँ पर नन्दी को अपने सामने नहीं बैठाया जबकि सारे भारत में भगवान शंकर के सामने नन्दी की मूर्ति होती है।

यहाँ पर श्री रामचन्द्रजी ने अपने पिता महाराजा दशरथ का श्राद्ध किया था। इसलिए इस घाट को रामतीर्थ या रामकुंड कहते हैं। पहले नासिक पंचवटी में यह गोदा तट कहलाता था इसलिए यहाँ पर गंगा नदी का नाम गोदावरी हो गया। गंगा को गौतमी नदी भी कहते हैं; क्योंकि गौतम ऋषि गऊ हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए गंगा को पाताल लोक से भूलोक में लाये थे। इस विषय में कहा जाता है कि जब गंगा अवतरण हुई थी तब वह अपने प्रचंड वेग से बहने लगी थी तब गौतम मुनि ने उसके प्रचंड वेग को कुश डालकर रोका इस कारण गंगा रुष्ट होकर पाताल लोक में चली गई थी। बाद में गौतम ऋषि ने गंगा को धरती पर लाने के लिए तप किया। उनके तप से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने पृथ्वी पर अपने सुदर्शन चक्र का प्रहार किया और गंगा को पाताल लोक से भूलोक पर लाये। जिस स्थान पर चक्र मारकर गंगा को पृथ्वी पर लाये वहाँ पर आज पानी चक्र की तरह बहता दिखाई देता है। उस स्थान को चक्र तीर्थ कहते हैं। चक्र तीर्थ से आगे गंगा का नाम गोदावरी हुआ और वहाँ से प्रवाहित होकर यह गोदावरी सावर गाँव गोवर्धनपुर (गंगापुर) से आगे गोदावरी नदी पुणताँबे, पैठण, गंगारवोडं, मंजरथ,

नादेड़, शंखतीर्थ होती हुई दक्षिण में राजमेहन्द्री पहुँचती है। इस स्थान पर गोदावरी सात मुखों से बहकर बंगाल में एक मुख होकर सागर में मिल जाती है और सागर का नाम गंगा सागर हो जाता है।

समुन्द्र मंथन के समय समुन्द्र में अमृत कलश प्राप्त हुआ। उस कलश को प्राप्त करने के लिए देवताओं तथा दानवों में झगड़ा हुआ। इन्द्र देवता का पुत्र जंयत अमृत कलश को लेकर भागने लगा। दानवों ने उसे चार जगह रोका और उसके साथ युद्ध किया। इन चारों जगह पर अमृत की कुछ बूंदे गिरी और वे चारों स्थान नासिक, प्रयाग, उज्जैन और हरिद्वार अमृतमय बन गये। यह युद्ध १२ दिन अर्थात् इस युग के १२ साल चला। इसलिए इन चारों स्थानों पर १२ साल में कुम्भ का मेला लगता है।

नासिक पंचवटी में देखने योग्य स्थान

(१) मुक्तिधाम मन्दिरः---यह मन्दिर नासिक रोड रेलवे स्टेशन के निकट है। इस मन्दिर में सभी देवी देवताओं की भव्य मूर्तियाँ हैं जिनके दर्शन करने से चारों धामों का फल प्राप्त हो जाता है। यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशाला भी है।

(२) श्री गंगा गोदावरी मन्दिरः---यह मन्दिर नासिक शहर में जाकर गोदावरी नदी के तट पर अरुणा संगम के पास है। इस मन्दिर में मगरमच्छ पर बैठी गोदावरी और भागीरथी की मूर्तियाँ हैं। यात्रा की पूजा इसी मन्दिर में होती है।

(३) श्री सिद्धस्थ गोदावरी मन्दिरः---यह मन्दिर बारह साल में एक बार यानि कुम्भ मेले के समय ही खुलता है और एक साल तक खुला रहता है। दशहरा और दीवाली के दिन भी मन्दिर खुलता है।

(४) श्री कपालेश्वर मंदिरः---यह मन्दिर राम कुंड के पूर्व में है। इस मंदिर में कपालेश्वर भगवान की मूर्ति है। हर शनिवार के दिन यहाँ रात नौ बजे से ११ बजे तक कपालेश्वर भगवान की पूजा होती है।

(५) गायत्री मंदिरः---यह मन्दिर कपालेश्वर मंदिर की सीढ़ियों के पास है। यहाँ पर प्रतिदिन पूजा पाठ किया जाता है। नवरात्रों में उत्सव मनाया जाता है। अन्नकूट भी किया जाता है। वेद स्वास्थ्य केन्द्र भी चलाया जाता है जहाँ अनेक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं।

(६) गोरेराम मंदिरः---यह मंदिर कपालेश्वर मंदिर के पीछे है। यह एक बहुत विशाल मंदिर है।

(७) **कालेराम मंदिरः**---यह मन्दिर प्रमुख माना जाता है जिस समय रामचन्द्र जी बनवास में पंचवटी आये तब उन्होंने यहीं पर निवास किया था। यह मंदिर काले पत्थरों से बनाया गया और १२ साल में बनकर तैयार हुआ था और २३ लाख रुपये खर्च हुए थे। जिस समय रामचन्द्र जी यहाँ आये थे उस समय पहले ही एक मंदिर बना हुआ था। प्राचीन मंदिर का जीर्णोंद्वार पेशवाई सरदार श्री ओढ़ेकर जी ने कराया। निर्माण का काल १७७८ से १७६० तक है। इस मंदिर के चारों तरफ चार द्वार हैं। मंदिर का कलश स्वर्ण का है। यहाँ रामनौमी बहुत धूमधाम से मनाई जाती है। मंदिर कलात्मक है।

(८) **सीता गुफाः**---श्री क़ालाराम मंदिर के उत्तर में सीता गुफा है। गुफा में जाने के लिए बहुत छोटी सीढ़ियाँ हैं जिसमें केवल एक ही आदमी घुटनों के बल सरक-सरक कर उतरता है। गुफा में राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तियाँ हैं। वहीं पर ताक में से निकल कर बाहर आने के लिए दूसरी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। मंदिर के बाहर पांच वट वृक्ष हैं इसीलिए इस जगह का नाम पंचवटी है।

(६) **कांटे मारुतिः**---इस मंदिर में हनुमान जी की ११ फुट ऊँची मूर्ति झाड़ कांटों में से प्राप्त हुई थी इसलिए इसे कांटें मारुति कहते हैं।

(१०) **श्री नारी शंकर मंदिरः**---इस मंदिर में शिव का आधा रूप स्त्री का और आधा रूप पुरुष का दिखाया गया है। इस मंदिर के साथ ही शृंगी देवी का मंदिर है।

(११) **पंचमुखी हनुमानः**---यह मंदिर भी नारी शंकर मंदिर के पास है। यहाँ पर पांच मुख वाले हनुमान की मूर्ति है।

(१२) **तपोवनः**---यहाँ पर कपिला और गोदावरी का संगम है। कपिल मुनि ने यहाँ पर तप किया था। यहीं पर अग्नि तीर्थ है। श्री रामचन्द्र जी ने सीता हरण से पूर्व सीता जी को इसी अग्नि तीर्थ में रखा था। रावण सीता जी के मायावी रूप को हरण करके ले गया था। इसी स्थान पर लक्ष्मण ने सूर्पनखा की नाक काटी थी।

(१३) **सोमेश्वर मंदिरः**---नासिक से १० कि० मी० दूरी पर सोमेश्वर मंदिर है। यहाँ पर प्राकृतिक सौन्दर्य देखने योग्य है और एक झरना बहता है जिसमें यात्री स्नान करके आनन्द लेते हैं। प्रतिघात फिल्म में इस स्थान की शूटिंग है। यह स्थान सुनसान जगह में है वैसे यहाँ पर ठहरने के लिए धर्मशाला तथा होटल भी है। यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। सम्भवतः इसी को त्र्यम्बकेश्वर ज्योर्तिलिंग कहते हैं।

इसके अतिरिक्त नासिक में भद्रकाली मंदिर, टाकली, पांडव गुफा, गजपंथ, टेकड़ी, रामसेज, श्री रेणुका मंदिर आदि भी देखने योग्य स्थान हैं। सौ, ढेड़ सौ रुपये में ऑटो रिक्शा सब स्थानों को दिखा देती है। नासिक दर्शन बस भी जो हर रोज सुबह चलती है। उससे भी महत्त्वपूर्ण स्थानों का दर्शन कर सकते हैं। हमने दो आटोरिक्शा जिनके न० ५६४७ तथा २३१८ थे तथा चालक श्री मुकुन्द गोविन्द पाटिल और श्री अतुल भारसप है, कर लिए। उन्होंने हमें ३-४ घन्टें में सारा नासिक दिखा दिया था।

नासिक में टकसाल भी है जहाँ करंसी नोट, डाक टिकट, जुडिशियल तथा नौनजुडिशियल टिकट तथा पेपर छपते हैं। टकसाल मिलट्री एरिया तथा पांडव गुफा सोमेश्वर जाते हुए रास्ते में ही आ जाते हैं।

नोटः---लोनावला खंडाला जाते हुए हमें यात्रा रोककर (जरनी ब्रेक) मनमाड़ शिरडी तथा नासिक की यात्रा की थी। श्री राजकुमार गुप्ता हमें इस यात्रा पर ले गये थे। धर्मपाल सैनी, विपिन कुमार मित्तल, इन्द्रजीत जैरथ, रत्न सिंह, तथा प्रसाद जी भी हमारे साथ थे।

त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग, भीमशंकर ज्योतिर्लिंग

नासिक स्टेशन से त्र्यम्बकेश्वर १८ मील है। महर्षि गोतम और अहिल्या ने इस स्थान पर शिवजी की आराधना की थी तथा तप किया था। भगवान शिव ने प्रसन्न होकर ऋषि के स्थान पर गोदावरी (गंगा) निकाली तथा लिंग रूप में सदा यहाँ स्थित रहना स्वीकार किया। तभी से यह स्थान त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहाँ त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर है। मन्दिर में एक छोटे से गड्ढे में ३ छोटे लिंग हैं जो क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और शिव के रूप माने जाते हैं। मन्दिर के पीछे अमृत कुंड है। स्त्रियों को त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन नहीं करने दिये जाते।

भीमशंकर ज्योतिर्लिंग --- नासिक से १६० कि० मी० जाकर ६५ कि० मी० बैलगाड़ी से जा सकते हैं। पहुँचने का कोई भी मार्ग सुविधापूर्ण नहीं है। केवल शिवरात्रि के अवसर पर पूना से लोमशंकर तक बसें चलती हैं। शिव मन्दिर सह्याद्रि पर्वत पर अवस्थित है और वहाँ से भीमा नाम की नदी निकली है। पहाड़ का नाम भी भीमशंकर है, मामूली चढ़ाई है। मन्दिर के पास दो कुंड है तथा एक छोटी-सी बस्ती है।

कहा जाता है कि शिवशंकर महादेव ने त्रिपुरा राक्षस का वध करके कुछ समय के लिये यहाँ विश्राम किया। उस समय अयोध्या का एक भीमक नाम का सूर्यवंशी राजा यहाँ तपस्या कर रहा था। महादेव शिव शंकर ने प्रसन्न होकर उसको दर्शन दिये। उसी समय से यहाँ भीमशंकर नाम से ज्योतिर्लिंग प्रसिद्ध हुआ।

कुछ लोग भीमशंकर ज्योतिर्लिंग को आसाम प्रान्त के कामरूप जिले में गुवाहाटी के पास ब्रह्मपुर पहाड़ों पर मानते हैं।

शिरडी वाले --- सांईबाबा

बच्चों के सांईबाबा का असली नाम और गाँव किसी को मालूम नहीं। वे शिरडी कैसे आये ? इस विषय में कहा जाता है कि महाराष्ट्र में औरंगावाद जिले में धूपखेड़े नाम का एक गाँव है। इस गाँव में चांदभाई नाम का एक पाटील रहता था। एक दिन उसका घोड़ा घास चरने के लिए गया लेकिन वापिस नहीं आया। चांदभाई उसे ढूढने गया तो उसे एक १६ वर्ष का सुन्दर युवक फकीरी भेष में दिखाई दिया। उस युवक ने चांदभाई से पूछा, ---"क्या ढूढ़ रहे हो पाटील जी"। चाँदभाई ने जवाब दिया,---"मेरा घोड़ा कहीं ख़ो गया है। उसे ढूंढ रहा हूं।" वह युवक उंगली दिखा कर बोला---"वह देखों तुम्हारा घोड़ा कम्पाउंड के बाजू में चर रहा है"। चाँदभाई ने उस ओर देखा तो सचमुच घोड़ा वहाँ चर रहा था। चाँदभाई को आश्चर्य हुआ कि इस युवक ने मुझे पहले कभी देखा नहीं तो फिर मुझे पाटील पहचान कर कैसे पुकारा और मेरा घोड़ा भी बता दिया। चाँदभाई समझ गया कि यह कोई महान सन्त है। उसने यह बात लोगों को बताई और थोड़ समय में ही उस युवक की महिमा चारों ओर फैलने लगी।

कुछ समय पश्चात् चाँदभाई के घर एक विवाह उत्सव हुआ। बारात औरंगाबाद से शिरडी गई। बारात शिरडी में श्री खंडोबा के मंदिर के सामने खड़ी हुई। मन्दिर का मुख्य पुजारी म्हालसापती था। उसने बरात में आये हुए उस युवक को देखा और देखते ही उसके मन में युवक के प्रति आदर भाव प्रकट हुआ। उसने इस युवक को (आओ सांईबाबा) पुकार कर उसका स्वागत किया। तब से वह युवक शिरडी में ही रहने लगा। वहाँ के लोग भी उस युवक को "सांईबाबा" के नाम से पुकारने लगे। यह बात सन् १८५४ की है।

श्री सांईबाबा के शिरडी में आने से पहले शिरडी एक छोटा-सा गाँव था लेकिन जैसे जैसे श्री सांईबाबा की सुकीर्ति फैलती गई, वैसे वैसे शिरडी गाँव भी उन्नति

करने लगा और एक सुन्दर नगर बन गया।

शिरडी में अब श्री सांईबाबा का पवित्र समाधि मन्दिर है और लाखों भक्त जन शिरडी जाकर श्री सांईबाबा के पवित्र समाधि स्थान का दर्शन करते हैं। बम्बई, पूना, नासिक, बड़ौदा आदि से स्टेट ट्रांसपोर्ट की बसें सीधी शिरडी जाती हैं। रेल द्वारा मनमाड़ या कोपर गाँव पहुँचने के बाद वहाँ से शिरड़ी जाने के लिये बसें मिल जाती हैं। हम मनमाड़ से २६ मार्च १६६२ को नासिक गये थे और नासिक के पवित्र स्थानों का दर्शन करके उसी दिन सांयकाल ६ बजे नासिक से बस द्वारा चलकर रात्रि ६ बजे शिरडी पहुँच गये थे और रात को ही दस बजे श्री साईंबाबा के पवित्र समाधि स्थान के दर्शन किये थे।

शिरडी में श्री साईंबाबा संस्थान की बहुत बड़ी-बड़ी धर्मशालायें है जिन में हजारों लाखों लोग ठहर सकते हैं। हमने भी एक कमरा ले लिया था। कमरा लेने के लिए संस्थान के कार्यालय में जाकर एक फार्म भरते है। तब संस्थान का व्यक्ति धर्मशाला में जाकर कमरा दिलाता है। कुछ मामूली-सा शुल्क देना पड़ता है।

श्री सांईबाबा संस्थान की ओर से यहाँ पर खाने-पीने का भी बहुत अच्छा प्रबन्ध है। दूध, चाय, काफी का कप एक रुपये में मिल जाता है। २ रुपये में सुबह का नाश्ता मिल जाता है। खाने की भी बहुत उत्तम तथा सस्ती व्यवस्था है।

मन्दिर में दर्शन करने के लिये लाइन बना कर जाते हैं। हजारों श्रद्धालु लाइन में लगे रहते हैं। नागपुर के श्री गोपालराव बूटी जी ने एक पत्थर का बड़ा भवन बनवाया था। इसी भवन में बाबा का समाधि मन्दिर है। सबसे पहले श्री साठे नामक एक भक्त ने शिरडी में भवन बनवाया था। उसके बाद श्री हरि सीताराम दीक्षित नामक एक दूसरे भक्त ने भी एक बड़ा भवन बनवाया। इससे यात्रियों तथा भक्तों को सुविधा प्राप्त हुई।

सबसे पहले म्हालसापती और काशीराम श्री सांईबाबा के भक्त बने। उन्होंने बाबा को एक पुरानी मस्जिद में रहने के लिए जगह दी थी। श्री सांईबाबा ने उस मस्जिद का नाम द्वारिकामाई रख दिया। यद्यपि आगे चलकर शिरडी में कई नई-नई इमारतें बनी लेकिन श्री साईबाबा ने अपनी पूरी जिन्दगी द्वारिकामाई में ही बिताई। शिरडी में आने वाले हजारों लाखों भक्तजन यहीं पर श्री सांईबाबा के दर्शन करते थे।

श्री सांईबाबा ने शिरडी में एक अग्निशिखा प्रज्वलित की। यह ज्योत उन्होंने अपनी निजि योग शक्ति से उत्पन्न की। इस अग्निज्योति को आज धूनी माई कहा जाता है। श्री सांईबाबा के समय से लेकर आज तक यह धूनी निरंतर जलती रही

है। इस धूनी को रक्षा 'ऊदी' भी कहते हैं। श्री सांइबाबा रोगियों को दवाई देते थे और उनकी सेवा भी करते थे। उन्होंने दवाई बन्द करके रोगियों को 'ऊदी' ही देनी आरम्भ कर दी। इस 'ऊदी' से रोगियों के सब रोग दूर होने लगे। आज भी जो शिरडी में श्री सांईबाबा समाधि मन्दिर के दर्शनो के लिये जाता है वह उस 'ऊदी' को लेकर आता है।

श्री सांईबाबा द्वारिकामाई में रहते थे। द्वारिका माई के पास 'लेडी बाग' नामक एक घना जंगल था। श्री साईंबाबा वहाँ जाकर योग साधना करते थे। लोग वहाँ जाकर उन्हें दक्षिणा देते थे। उस दक्षिणा को बाबा गरीबों में बाँट देते थे। इस तरह लगभग ५०० रुपये हर रोज बाँटते थे। बाबा आने वाले लोगों को कहानी के माध्यम से उपदेश किया करते थे। भविष्य में क्या होने वाला हे, उसके बारे में भी बाबा को ज्ञान था। वह हरेक आदमी के मन की बात जानते थे। बाबा ने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की। इसका पता नहीं, लेकिन वेद, उपनिषद, गीता तथा पुराण की कथायें बड़े कौशल्य से सुनाया करते थे। बाबा हर रोज एक बड़ा मटका भर प्रसाद बना कर भक्तों को बांटते थे। इस प्रसाद को बाबा का गोपालकाला कहा जाता था। आज भी यह प्रसाद यात्रियों को बांटा जाता है।

द्वारिकामाई से लेडी बाग जाते हुए बीच में एक नीम का पेड़ है। उसके नीचे एक गुप्त मार्ग है और उसमें एक समाधि है। बाबा ने कहा था कि "यह मेरे गुरु की समाधि है और मैंने यहाँ बैट कर १२ साल तक तपस्या की है"। आज इस जगह को गुरुस्थान कहा जाता है। बाबा ने द्वारिकामाई में नौ इंच चौड़ाई का झूले की तरह एक लकड़ी का तख्ता टांगा हुआ था वह उसी पर सोते थे लेकिन वे उस पर कैसे चढ़ते-उतरते थे, यह किसी ने भी नहीं देखा था। बाबा रोजाना पाँच घर जाकर भिक्षा मांगते और जो कुछ मिलता उसी पर गुजारा चला लेते थे।

श्री साईंबाबा एक अलोकिक शक्ति के महात्मा थे। उन्होंने अपने आप को गुरू कहला कर अपने शिष्य नहीं बनाये। वे तो अपने आप को परमेश्वर का बंदा सेवक कहलाते थे और कहते थे कि उनके हाथ से जो कुछ अद्भुत लीलायें होती हैं, वे सब परमेश्वर उनके हाथ से करवाता है। श्री सांईबाबा अपने भक्तों की बीमारी अपने ऊपर ले लेते थे और उसे स्वयं सहन करके भक्त की बीमारी ठीक कर देते थे। श्री सांईबाबा परमात्मा से या परमात्मा के अन्य रूपों से एक रूप हो गये थे। वे कभी श्री राम तो कभी भगवान श्रीकृष्ण, कभी श्री पांडूरंग-विट्ठल, अक्कल कोट स्वामी महाराज, कभी कोई मौलवी तो कभी किसी के सद्गुरु के स्वरूप में अपने भक्तों को दर्शन देते थे।

उत्सव रामनवमीः---बाबा के एक भक्त श्री गोपालराव गुंड जी के मन में एक बार यह विचार आया कि शिरडी में रामनवमी के अवसर पर हर वर्ष श्री राम जन्म का उत्सव मनाया जाये। श्री बाबा के मन में भी यह बात थी। उन्होंने यह उत्सव मनाने की अनुमति दे दी और हर वर्ष शिरडी में रामनवमी मेला लगने लगा। इस अवसर पर हजारों लोग शिरडी में आते हैं और उत्सव मनाते हैं तथा यात्रा निकलती है। तीन दिन तक कीर्तन का कार्यक्रम चलता है और आखिर में "गोपालकाला" अर्थात् प्रसाद बांट कर उत्सव की समाप्ति होती है।

सावन अष्टमीः---गोकुल अष्टमी के दिन श्री कृष्ण जन्म का समारोह मनाया जाता है और "दही हंडी" का खेल होता है। दंगल लगता है। पहलवानों को इनाम दिये जाते हैं। उत्सव के अंत में गोपालकाला बांटा जाता है।

गुरू पूर्णिमाः---आषाढ़ पूनम को मनाई जाती है। इस उत्सव पर बाबा की पूजा होती है ।

बाबा अपने आप को गुरु नहीं मानते थे लेकिन उनके भक्त अपने सुख के लिये यह पूजा करते हैं।

इसके अतिरिक्त श्रीकृष्ण परम हंस इत्यादि बड़े महात्माओं के उत्सव मनाये जाते हैं। इन उत्सवों का उद्देश्य लोगों को इकट्टा करके भेदभाव को दूर करना तथा समाज में विश्वबन्धुत्व तथा समता की वृद्धि करना है। लोग बड़े आनन्द से एक दूसरे से मिलते हैं।

शिरडी में श्री साईंबाबा समाधि मन्दिर के आसपास बहुत सारी दुकानें हैं जिनपर साईंबाबा की मूर्तियाँ, मालायें, खेल-खिलौने, दस्तकारी की चीजें तथा अनेक सुन्दर-सुन्दर वस्तुएं मिलती हैं। यहाँ पर अंगूर बहुत अधिक होता है और जगह-जगह किसमिस बेचने वाले किसमिस से भरे हुए टोकरे लेकर बैठे रहते हैं। किसमिस का भाव लगभग ६० रुपये किलो है।

घृष्णेश्वर मन्दिर---एलोरा, औरंगाबाद, दौलताबाद, खुलदाबाद, म्हैसमाल रामटेक, पवनार, सेवाग्राम

भारत में १२ ज्योतिर्लिंग हैं। उनमें घृष्णेश्वर मन्दिर एक ज्योतिर्लिंग है। यह मन्दिर एलोरा में है। एलोरा को मराठी में बैरुल कहते हैं।

घृष्णेश्वर मन्दिर स्वयम् निर्मित माना जाता है। ऐतिहासिक दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि १२वीं शताब्दी में अहिल्याबाई तथा सास गौतम बाई और वायजाबाई ने इसे बनवाया था। मन्दिर के शिखर पर सोने का कलश है। शिव गृह में शिवजी का पिंड है। इस पिंड के सामने पार्वती जी की संगमर्मर की बनी हुई मूर्ति है। एक छोटे से दरवाजे में से प्रवेश करके मन्दिर के प्रांगण में पहुँचते हैं। मन्दिर का आधा भाग लाल पत्थर का और आधा भाग प्लास्तर का दिखाई देता है। पत्थरों की जुड़ाई पत्थरों को तराश कर की गई है। स्तम्भ का शिल्प साधारण है। इस मन्दिर की व्यवस्था समाज द्वारा की जाती है। मन्दिर की पूर्व दिशा में एक नदी बहती है जिसका उल्लेख पुराणों में मिलता है। यह नदी मन्दिर के आगे से बहती है और इसे शिवालय तीर्थ कहा जाता है। यात्री लोग इस तीर्थ में स्नान करके मन्दिर में जाते हैं और भगवान शिव तथा पार्वती जी के दर्शन करते हैं। मन्दिर में ११ रुपये की पर्ची कटवाने पर घर के पते पर डाक द्वारा प्रसाद भेजा जाता है। पर्ची कटवाना इच्छानुसार है। यहाँ महाशिवरात्रि के दिन बहुत बड़ा मेला लगता है। यहाँ पर विद्वान् ब्राह्मण पूजा पाठ के लिये उपस्थित रहते हैं। मन्दिर का प्रांगण बहुत बड़ा है तथा प्रांगण में बरामदे हैं। प्रांगण में यात्रियों के ठहरने की भी व्यवस्था है। हम रात्रि में मन्दिर के प्रांगण में ही ठहरे थे। धार्मिक दृष्टि से यह मन्दिर बहुत महत्त्वपूर्ण है।

लक्ष विनायक मन्दिरः---घृष्णेश्वर मन्दिर से एलोरा ग्राम जाते हुए रास्ते में ही लक्ष विनायक मन्दिर है। इस मन्दिर में गणेश जी की विशाल मूर्ति है। महाराष्ट्र में २७ स्थानों पर प्रसिद्ध गणेश मन्दिर हैं। एलोरा का यह लक्ष विनायक मन्दिर उन २७ प्रसिद्ध मन्दिरों में से एक है।

एलोरा की गुफायेंः---एलोरा में विश्वविख्यात ३४ गुफायें हैं। ये गुफायें 'गुफा मन्दिर' हैं इनका निर्माण पूजा-अर्चना तथा चिन्तन-मनन जैसे धार्मिक उद्देश्य के लिये किया गया था। इन्हें बनाने में हजारों साल लगे होंगे। ये गुफायें पहाड़ की दीवारों को छैनी हथौड़े से काट-काट कर बनाई गई हैं। इनका निर्माण चौथी शताब्दी से नौवीं शताब्दी तक हुआ है। विभिन्न राजाओं ने धार्मिक प्रेरणा से ओत-प्रोत होकर अपने-अपने शासन काल में ये गुफायें बनवाईं। वास्तुकला तथा मूर्ति-कला का इतना अद्भुत नमूना विश्व के इतिहास में कहीं भी नहीं है। धार्मिक प्रवृत्ति रखने वाले यात्रियों के लिये ही नहीं बल्कि कला प्रेमी पर्यटकों के लिये भी यह स्थान तीर्थ है। हरेक यात्री की यात्रा सूची में इसका नाम सर्वोपरि होना चाहिये।

एलोरा की गुफाओं को तीन भागों में बांटा जा सकता है (१) महायानी बौद्ध गुफायें, गुफा न० एक से १२ तक (२) पौराणिक हिन्दू गुफायें, गुफा न० १३ से २९ तक (३) दिगम्बर जैन गुफायें, गुफा न० ३० से ३४ तक।

इन गुफाओं में १२ न० गुफा ३ मंजिल की है तथा गुफा न० १६ का नाम कैलाश मन्दिर है। ये दोनों गुफायें सर्वश्रेष्ठ हैं। गुफा न० ५, १०, ११, १५, २१, २९, ३१, ३२ और ३४ भी देखने योग्य हैं।

गुफा न० १६ एलोरा की शिल्पकला का अद्वितीय नमुना है। यहाँ पर भव्यता, पवित्रता और शिल्पकला की चरम सीमा हो गई है। यह दुनिया के आश्चर्यों में सर्वोपरि है। इस का निर्माण शिखर से प्रारम्भ होकर नींव पर समाप्त कर देना शिल्पकार की कल्पना की चरम सीमा है।

यह गुफा नहीं बल्कि एक विशाल कैलाश मन्दिर है। यह १६४ फुट लम्बा, १०९ फुट चौड़ा तथा ९६ फुट ऊँचा विश्व का विशालतम मन्दिर है जो एक ही चट्टान को तोड़-तोड़ कर बनाया गया है। इस मन्दिर की मूर्तियों का शिल्प देखते ही बनता है। इस मन्दिर का राष्ट्रकूट वंश के राजा कृष्णराज ने सन् ५७८ ई० में निर्माण कराया था। इसके बनने में १५० साल लगे थे।

गुफा न० १ से ३४ तक, तीन कि० मी० का फासला है। गुफाओं तक पक्की सड़क बनी हुई है। इसलिये इन्हें आसानी से देखा जा सकता है। इन गुफाओं को

देखने में चार घंटे लग जाते हैं। गुफाओं से डेढ़ कि० मी० दक्षिण की ओर एलोरा गाँव है। एलोरा गाँव निकट होने के कारण इन्हे एलोरा की गुफायें कहते हैं। हिन्दू धर्म की गुफायें राष्ट्रकूर वंश के राजा दंतिदुर्ग और कृष्णराज द्वितीय से सम्बन्धित है। जैन धर्म की गुफायें राजा अमोघवर्ष से संबन्धित हैं। यहाँ पर हिन्दु जैन तथा बौद्ध धर्म के अनुयायी यात्रियों का जमघट लगा रहता है। यहाँ पर सब धर्मों का आपस में समन्वय है और अपार शान्ति है।

एलोरा औरंगाबाद से ३० कि० मी० है। रेल द्वारा दिल्ली से मनमाड़ पहुँचे। वहाँ से मनमाड़ सिकंदराबाद मीटर गेज रेल मार्ग पर औरंगाबाद है जो मनमाड़ से ११३ कि० मी० है। बम्बई से मनमाड़ २६० कि० मी० है और नासिक रोड से मनमाड़ ७३ कि० मी० है। औरंगाबाद से प्रातः बस द्वारा एलोरा जा सकते है और शाम को वापिस औरंगाबाद आ सकते हैं। यदि एलोरा में ही ठहरना चाहें तो यहाँ पर कई धर्मशालायें तथा होटल हैं। घृष्णेश्वर मन्दिर में भी ठहर सकते हैं।

औरंगाबाद

औरगांबाद का पहला नाम खड़की या खिड़की था। मुगल सम्राट औरंगजेब ने १६५३ में इसे 'औरंगाबाद' नाम से दक्षिण की राजधानी बनाया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद निजामउल्मुल्क ने इसे अपनी राजधानी बनाया। तत्पश्चात् (भागा नगर) हैदराबाद को राजधानी बंनाया। १६४७ में भारत सरकार के अधिकार में आ गया जो अब महाराष्ट्र सरकार के शासन में है। औरंगाबाद में अजंता एलोरा की तरह पहाड़ काट कर गुफाएँ बनाई गई हैं जो लगभग १२ हैं। ये गुफायें बौद्ध धर्म की हैं परन्तु ५वीं गुफा में जैन धर्म के २२वें तीर्थकर नेमीनाथ भगवान की मूर्ति है। इसी गुफा में गणेश जी की मूर्ति है जिनके दोनों ओर चतुर्भुजी देवी की खड़ी मूर्तियाँ हैं, बुद्ध की पद्मासन मूर्ति है, सामने वीरभद्र, शिव और छः देवियों की मूर्तियाँ हैं। सातवीं गुफा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। गर्भ गृह में भगवान् बुद्ध की मूर्ति है। एक मूर्ति वाद्य वृन्द के साथ है। कहा जाता है कि यह राजतड़ाग की नृतिका है। औरंगाबाद का खिड़की से पहला नाम राजतड़ाग था।

दौलताबादः---औरंगाबाद से १५ कि० मी० दूरी पर **देवगिरी** है जिसे अब दौलताबाद कहते हैं। १४वीं शताब्दी में मोहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली की बजाये देवगिरी को राजधानी बनाया था परन्तु उचित प्रबन्ध न होने के कारण वापिस दिल्ली चलने का हुक्म दिया था। यहाँ भारत माता का मन्दिर है। पहले यह जैन मन्दिर था।

खुलदाबादः---दौलताबाद से १२ कि० मी० पर **खुलदाबाद** है, पहले इसे भद्रावती कहते थे। कुछ सदियों पहले इसे राजा कहते थे जिसका अर्थ स्वर्ग है। उर्दु में भी खुलदाबाद को स्वर्गधाम कहते हैं। यहाँ महाराजा और संत महात्माओं की समाधियाँ हैं। यहाँ पर सम्राट औरंगजेब तथा उसके गुरु की कब्रे हैं। औरंगजेब की मृत्यु अहमदनगर में हुई थी। वह २५ साल तक मरहठा शक्ति को दबाने के लिये अहमदनगर में छावनी डालकर रहा था। यहीं पर उसकी मृत्यु हो गई थी और उसे यहीं पर दफनाया गया, परन्तु औरंगजेब की इच्छा थी कि उसे खुलदाबाद में उसके गुरु की कब्र के पास दफनाया जाये। इसलिये उसका पार्थिव शरीर बाद में खुलदाबाद में दफनाया गया। यहाँ हर साल उर्स का मेला लगता है।

महैमसालः---खुलदाबाद से १२ कि० मी० है, यह एक मर्हिषाद्रि नाम की पहाड़ी पर एक छोटा-सा गांव है। यहाँ पर गिरिजा (पार्वती) देवी का मंदिर है।

राम टेकः---नागपुर से ४२ कि० मी० है यह एक तीर्थ है। बनवास काल में श्री राम लक्ष्मण सीता यहां पहाड़ी पर रुके थे। यहां पर राम लक्षमण सीता का मन्दिर है। कालिदास ने अपने काव्य 'मेघदूत' में इसे 'रामगिरि' कहा है।

पवनार आश्रमः---नागपुर से ६५ कि० मी० वर्धा-नागपुर रेल मार्ग है। यहां भूदान-यज्ञ के प्रणेता विनोबा भविका "पवनार आश्रम है।

सेवाग्रामः---पवनार से अगला स्टेशन सेवाग्राम है। यहां पर गान्धी जी का "सेवा ग्राम आश्रम" है। गान्धी जी यहां रहते थे और यहीं से उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन का दिग्दर्शन किया था। उन्होंने यहां दस वर्ष बिताये थे। उनके वस्त्र, बिस्तर, बर्तन आदि वस्तुऐं आज भी यहां कुटिया में रखे हुए है।

बौद्ध धर्म से संबन्धित गुफाएँ-अजन्ता तथा कार्ली

अजन्ता की गुफाएँ बधोरा नदी के किनारे सह्याद्रि पहाड़ियों की ढ़ाई सौ फुट ऊँची चट्टान में हैं। यहाँ कुल ३० गुफायें हैं। ये सब गुफायें बौद्ध धर्म से संबन्धित हैं। बौद्ध धर्म में दो पंथ है (१) हीनयान (२) महायान। हीनयान मूर्ति पूजा नहीं मानते जब कि महायान मूर्ति पूजक हैं। दोनों में यही फर्क है। हीनयानियों ने मूर्ति रहित स्तूप की पूजा आरम्भ की और महायानियों ने मूर्ति पूजा। यदि स्तूप के साथ मूर्ति हो तो महायान गुफा और मूर्ति न हो तो हीनयान गुफा कहेंगे।

अजन्ता की गुफायें अपूर्ण होने के कारण यह नहीं कहा जा सकता कि इन में कितनी गुफाएँ हीनयान की हैं और कितनी गुफाएँ महायान की हैं। ये गुफाएँ प्लास छैनी तथा हथौड़ी से चट्टान काट-काट कर बनाई गई हैं। मिट्टी, गोबर तथा चावल के छिलके से दीवारों का प्लस्तर किया गया है। चूने के प्लस्तर के बाद लाल रंग से रेखाएँ निकाली गई हैं और उन रेखाओं में भिन्न-भिन्न रंग भर कर चित्र बनाये गये हैं। एलोरा की गुफाओं में वास्तुकला तथा मूर्ति कला का अद्‌भुत नमूना है जब कि अजन्ता की गुफाओं में चित्रकला का आश्चर्यजनक प्रदर्शन हुआ है। इन चित्रों में राजकुमार सिद्धार्थ की बाल अवस्था, बोधिसत्व, भूमिति के डिजाइन और जातक कथाओं के चित्र हैं। जातक शब्द पुनर्जन्म के अर्थ में है। बुद्ध ने क्यों जन्म लिया ? इन जातकों की संख्या ५५० है।

गुफाओं को देखने के लिये शुल्क है। शुक्रवार को बिना शुल्क देखा जाता है। चित्रित गुफाओं में बिजली की व्यवस्था की गई है जिसका शुल्क अलग से देना पड़ता है। फोटोग्राफी का शुल्क भी अलग है। जिस पहाड़ पर यह गुफायें खोदी गई, वह पहाड़ घोड़े की नाल की तरह है। इन गुफाओं के कारीगर कौन थे ? कितने

भिक्षुक रहते थे ? उन्होंने यह जगह क्यों छोड़ दी ? यहाँ के चेत्य गृहों में पूजा कितने दिन चलती रही ? भारत का यह सांस्कृतिक केन्द्र कब और क्यों मनुष्य रहित हुआ ? इसका इतिहास में कोई उल्लेख नहीं है।

सन् १८१६ में मद्रास सेना के ब्रिटिश सैनिक शिकार खेलते हुए इधर आये थे। उन्होंने जब ध्यानपूर्वक इधर देखा तो उन्हें वर्षा से कुछ खुली तथा कुछ ढकी गुफायें दिखाई दीं। जिस स्थान से उनको ये गुफायें दिखाई दीं, वह स्थान अब व्यू प्वांयट कहलाता है। इन गुफाओं में ५ चैत्यगृह और २५ विहारगृह हैं। चैत्यगृह सामुदायिक पूजा के स्थान होते हैं और विहारगृह भिक्षुओं के निवास स्थान होते हैं। ये गुफाएँ अजन्ता गाँव के निकट हैं इसलिये इन गुफाओं का नाम अजन्ता की गुफाएँ पड़ा। विद्वानों का कहना है कि इन गुफाओं का निर्माण दूसरी सदी से सातवीं सदी तक हुआ। इन गुफाओं के समीप बधोरा नाम की नदी है परन्तु इस में पानी का अभाव है।

अजन्ता की गुफाएँ औरंगाबाद से ११० कि० मी० हैं। अजन्ता और एलोरा से निकटतम रेलवे स्टेशन जलगाँव और दक्षिण में औरंगाबाद है। जलगांव से अजन्ता ६१ कि० मी० है। जलगांव दिल्ली बम्बई मुख्य रेल मार्ग पर है। दिल्ली से १११८ और बम्बई से ४२४ कि० मी० है। ठहरने के लिये फर्दपुर जो अजन्ता से ५ कि० मी० है, वहाँ ठहर सकते हैं। औरंगाबाद में भी ठहर सकते हैं। वहाँ पर बहुत सारी धर्मशालायें तथा होटल हैं। औरंगाबाद रेलवे स्टेशन से गाईड सहित टूरिस्ट बसें चलती हैं जो एलोरा, खुलदाबाद, घृष्णेश्वर, पनचक्की तथा अजन्ता दिखाकर वापिस औरंगाबाद ले आती है।

कारला की गुफायें:---बम्बई पूना रेल मार्ग पर खंडाला और लोनावला के स्टेशन है। पूना से लोनावला ६४ और खंडाला ६८ कि० मी० है। बम्बई से लोनावला १२८ और खंडाला १२४ कि० मी० है। यहाँ पर कारला, भाजा और बेदसा की गुफायें हैं। ये गुफायें मंदिर बौद्ध चैत्य और विहार हैं। इन तीनों में कारला की गुफायें बहुत सुन्दर हैं। कारला की गुफायें दूसरी शताब्दी ई० पूर्व में बनी थी यहाँ एक चैत्य और अनेक विहार हैं। कारला का चैत्य १२४ गुणा ४५ गुणा ४८ फुट है जो भारत का विशालतम गुफा चैत्य है। इन गुफाओं के साथ वीरदेवी का मंदिर है। यह फिशर मैंनो का पवित्र पूजा स्थल है। चैत्र प्रतिपदा से पूर्णिमा तक यहाँ फिशर मैंनो का गुड़िपड़वा नया वर्ष का त्योहार मनाया जाता है फिशरमैन यहाँ आते हैं और १५ दिन तक रह कर देवी की पूजा, नाच गाना आदि करते हैं। किसी ने मन्नत बोली हो तो उसे पूरा करते हैं।

नोटः---लोनावला से ८ कि० मी० पूना मार्ग पर कारला है और बम्बई मार्ग पर ६ कि० मी० खंडाला है। लोनावला बीच में है। यहां पर कैवल्य धाम योग केन्द्र तथा योग (प्राकृतिक) चिकित्सालय है।

खंडालाः---में पवित्र पूजा-स्थल श्री आदि शक्ति बाघ जई माता प्रसन्न देवी का मन्दिर है। खंडाला में अधिकतर फिल्मों की मारधाड़ के दृश्यों की शूटिंग होती है। वर्षा के समय वाटर फाल देखने योग्य हैं। **भाजा में** एक चैत्य और अनेक बौद्ध गुफायें हैं। **बेदसा** में भी बौद्ध गुफायें हैं। यहीं पर लोहगढ़ तथा बीसा पुर शिवाजी से सम्बन्धित किले है।
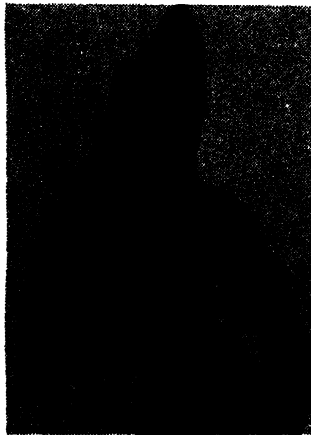
तख्त श्री सचखंड साहिब - नन्देड़ (महाराष्ट्र)

सरबंसदानी श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने जहाँ पटना की धरती को मान दिया वहीं आपने अपनी जवानी का सुन्दर समय श्री आनन्दपुर साहिब की रमणीक पहाड़ियों में गुजारा।

६ साल की उम्र में कश्मीरी पंडित के धर्म की हानि को न सहते हुए, आपने प्यारे पिता का बलिदान देना भी स्वीकार कर लिया। इतनी छोटी उम्र में गुरु गद्दी का भार आपके कंधों पर रखा गया। आपने बड़े ही अच्छे ढंग से सम्भाला।

भाई जैता जी जब गुरु पिता का शीश लेकर आनन्दपुर पहुँचे तो आपने अकाल पुरख का यह काम भी सिर माथे पर माना। आपने बड़ी गम्भीरता के साथ सारे हालात का जायजा लिया। अकारण ही किसी से लड़ना मुनासिब न समझते हुए, आप कुछ समय के लिये आनन्दपुर साहिब छोड़कर श्री पाऊंटा साहिब (नाहन) जाकर बस गये (पाऊँटा साहिब में यमुना नदी के किनारे बहुत भव्य एवम् विशाल गुरुद्वारा है।) परन्तु बाईधार राजपूतों ने वहाँ जाकर लड़ाई लड़ी। भंगांनी के मुकाम पर भारी युद्ध हुआ जिसमें सभी बाईधारी की हार हुई। यह आपकी पहली जंग थी। इसके बाद नदोण का, हुसैनी का, आनन्दपुर साहिब का, चमकोर साहिब और मुक्तसर साहिब के भारी जंग लड़े।

आप कोई २८ साल श्री आनन्दपुर साहिब रहे और कुल १४ लड़ाइयाँ लड़ीं। सरसा नदी के किनारे भारी युद्ध में आपके तीरों की बौछार ने दुश्मनों के हौंसले पस्त कर दिये थे। इस युद्ध में दोनों साहिबजादे व काफी सिंह शहीद हुए थे फिर भी विजय सदैव खालसा की ही रही।

आपने श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी की दोबारा लिखाई करवाई। आप आसन परबैठ मुँहजबानी गुरुबाणी उच्चारते जाते और भाई मनीसिंह जी लिखते जाते उस समय आप दमदमा साहिब में थे।

अगस्त १७०८ को आप दक्षिण को गये। अभी आप बधोर (राजस्थान) ही पहुँचे थे कि भाई दयासिंह और धर्मसिंह ने बादशाह से मुलाकात के लिये विनती सुनाई। आपने औरंगजेब को एक फारसी पत्र जफरनामा के नाम से लिखा था। पहले भी एक पत्र फतिहनामा के नाम से माछीवाड़े से औरंगजेब को भेज चुके थे। जफरनामे को पढ़कर औरंगजेब कांप उठा था और उसने गुरु से विनती की कि शाही खर्चे पर मेरे से मुलाकात करें। गुरु महाराज अभी पास में ही थे कि औरंगजेब के मरने की खबर मिली। आप दिल्ली वापिस गये और गुरुद्वारा मोतीबाग आ पहुँचे। औरंगजेब की मृत्यु पर शहजादों में तख्त के लिये लड़ाई छिड़ गई थी। शहजादा बहादुर शाह ने गुरुजी से मदद मांगी और आपने कुछ शर्तें रखी जो लिखित रूप से मानी गई।

आगरे के पास बेजु के मुकाम पर खालसा फौज ने भाई दयासिंह के नेतृत्व में भारी जंग की जिसमें तारा आजम मारा गया। बहादुरशाह तख्तोताज का मालिक बन गया। गुरु को दिल्ली से आगरा बुलाया और बेशुमार भेंट देकर अपने पीरो जैसा आदर किया। गुरुजी चार महीनें आगरा रहे। दक्षिण में बहादुरशाह के छोटे भाई कामबक्श ने बगावत कर दी। बहादुरशाह गुरुजी को साथ लेकर दक्षिण की ओर चल पड़े और नन्देड़ पहुँच गये। वहाँ गोदावरी के किनारे डेरा लगाया। बादशाह गुरुजी से आशीश लेकर हैदराबाद चला गया।

नन्देड़ पहुँच कर आप ने सबसे पहले अपने सतयुगी तप स्थान श्री सचखंड साहिब को प्रकट किया और तख्त स्थापित किया फिर माधोदास को सुधार कर मलेच्छों, पापियों को सुधारने के लिये अपने पाँच तीर देकर पंजाब भेजा। गुरुद्वारा शिकारघाट पर सियालकोट वाले मुले खतरी का खरगोश की जून से उद्धार किया।

नगीनाघाट, हीराघाट, मालटेकरी, संगत साहिब आदि गुरुद्वारे प्रकट किये और कार्तिक शुदी दूज को भारी दीवान (जलसे) में श्री गुरु ग्रन्थसाहिब के आगे ५ पैसे और नारियल रखकर माथा टेका और गुरुगद्दी तिलक बक्स कर कार्तिक शुदी पंचमी १७६५ विक्रमी को यहाँ (नन्देड़) ज्योति ज्योत समा गये। आकाश में भारी प्रकाश हुआ। सभी देवी देवताओं ने आकाश में जय जयकार की और पुष्प वर्षा की।

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने ज्योतिज्योत समाने से पहले ही सब तख्तों पर योग्य व्यक्तियों को सेवा के लिये लगा दिया था। तख्त श्री अनचल नगर पर आपने गढ़वई सेवक भाई संतोख सिंह जी की सेवा लगाई और हुक्म दिया कि यहाँ पर देग तेग का पहरा रखना है। आपने हुक्म दिया कि लंगर बनवा कर बांटते जाना। किसी

बात की कमी नहीं आयेगी। धन की चिन्ता नहीं करनी। जितना धन आये सब लंगर में खर्च करते जाना।

समय रहते ही यहाँ पर गुरु का लंगर का कार्य काफी कम हो गया। अब केवल एक ही समय सुबह का ही लंगर चलता था। तब संत बाबा निधानसिंह जी का मन यह देखकर बहुत उदास हो जाता। संत बाबा निधान सिंह तब सचखंड साहिब में जल और झाड़ू आदि की अनथक सेवा करते थे।

लंगर का ढीला काम देखकर संत बाबा निधान सिंह ने उदास होकर वापिस पंजाब जाने का निश्चय किया और स्टेशन पर आकर गाड़ी के इंतजार में इमली के पेड़ के नीचे बैठ गये और समाधि लग गई। आधी रात का समय था कि अचानक भारी प्रकाश हुआ। बाबा जी की आँखे खुल गईं और क्या देखते हैं कि अर्शों पर रहने वाले फर्शों पर खड़े होकर दर्शन दे रहे हैं। बाबा जी चरणों पर गिर गये। गरीब नवाज ने उठाकर छाती से लगा लिया और हुक्म किया कि हमको छोड़कर कहाँ जा रहे हो ? अभी तो आप से बहुत सेवा लेनी है। जाओ और लंगर पर लंगर चलाओ। गुरुजी ने और बक्शीश करते हुए यह वरदान दिया कि आज से जेब मेरी और हाथ तेरा, कोई कमी नहीं आयेगी। श्री कलगीधर पिता से यह वरदान लेकर बाबा निधानसिंह जी यहाँ पर गुरुद्वारा लंगर साहिब वाले स्थान पर पहुँचे। जंगल में मंगल लग गया। गुरु का लंगर आठों पहर अटूट चल रहा है। संतों के आराम के लिये कमरे बने हुए है। स्नान का योग्य प्रबन्ध है। बाबा जी ने कई गुरुद्वारों की सेवा करवाई। जहाँ पर गुरु महाराज ने उदासी संत को दर्शन दिये थे वहाँ रतनगिरि पहाड़ी के पास गुरुद्वारा रतनगढ़ बनवाया।

गुरुद्वारा गुप्तसर साहिब मनमाड़ (महाराष्ट्र)

मनमाड़ नगर दिल्ली बम्बई मेन लाइन पर भारी जंकशन है। श्री हजूर अंचल नगर साहिब नन्देड़ जाने के लिये भी यहीं से गाड़ी बदलनी पड़ती है। मनमाड़ को श्री सचखंड साहिब जी की दर्शन डयोढी भी कहते हैं।

सन् १६३१ की बात है कि श्रीमान बाबा जी अपने साथियों के साथ पंजाब जाने वाली गाड़ी के इंतजार में मनमाड़ स्टेशन पर बैठे थे। रात का समय था। गाड़ी सुबह आनी थी। बाबा जी समाधि में बैठे थे कि गुरु महाराज के दर्शन हुए और मनमाड़ में ही हजूर का गुरुस्थान प्रकट करने की आज्ञा हुई। श्रीमान बाबाजी अपने साथियों समेत शहर को चल पड़े और थोड़ी ही दूर जाकर एक पीपल के पेड़ के नीचे आसन लगा लिया। उस समय वहाँ पर भारी जंगल ही जंगल था। बाबाजी की आज्ञा पाकर साथियों ने जंगल की सफाई शुरू कर दी और थोड़े ही दिनों में लकड़ी इत्यादि लगा कर काफी जगह घेर ली। यह बात सारे नगर में फैल गई कि सिक्खों ने अपना कब्जा कर लिया है। कुछ शरारती लोगों ने नासिक जाकर क्लैक्टर की अदालत में बाबाजी के खिलाफ दरखास्त दी। कुछ दिनों बाद क्लैक्टर साहिब खुद फैसला देने के लिये मौके पर पधारे और बाबाजी के नूरानी चेहरे को देखकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने लोगों को समझाया कि यह भी खुदा का घर बन रहा है। हम आपको इसका मूल्य दिलवा देंगे। पर वे सब नहीं माने। कोई और उपाय न देखकर क्लैक्टर साहब ने बाबाजी से विनती की कि आप कहते हो कि यह स्थान हमारा है। आप इसका कोई ठोस प्रमाण पेश करो, नहीं तो कानूनन आपको यह जगह खाली करनी पड़ेगी।

बाबाजी यह फैसला सुनकर गम्भीर हो गये और पीपल के नीचे अपने आसन की ओर चल पड़े। कुछ देर वहाँ खड़े होकर पूर्व की ओर कुछ कदम गिनकर चले फिर एक जगह पर जाकर खड़े हो गये। फिर गम्भीर स्वर में बोले कि यहाँ पर हमारा

पुराना कुआँ है यही हमारा पक्का सबूत है। क्लैक्टर साहब के हुक्म अनुसार उस जगह की खुदाई शुरू हो गई।

सभी बहुत उत्सुक थे। कई घंटे की खुदाई के बाद कुछ दस फुट नीचे पुराने कुएँ के चिह्न साफ दिखाई देने लगे। तो खुशी से खालसे ने जयकार की। फैसला बाबाजी के हक में हुआ। फिर भी बाबाजी ने उस जमीन का योग्य मूल्य देकर वह जमीन गुरुद्वारे के नाम करवा दी। सभी ने यह फैसला माना। बाबाजी ने यहाँ एक कमरा डाल कर गुरु महाराज का प्रकाश करके निशान साहिब झुला दिया। यह वह स्थान है जहाँ आजकल गुरुद्वारा गुप्तसर साहिब मनमाड़ नगर में विद्यमान है। इस गुरुद्वारें का नाम गुप्तसर इस लिये रखा गया कि किसी ने भी वह कुआँ नहीं देखा था और न ही वह किसी रिकार्ड में दर्ज था।
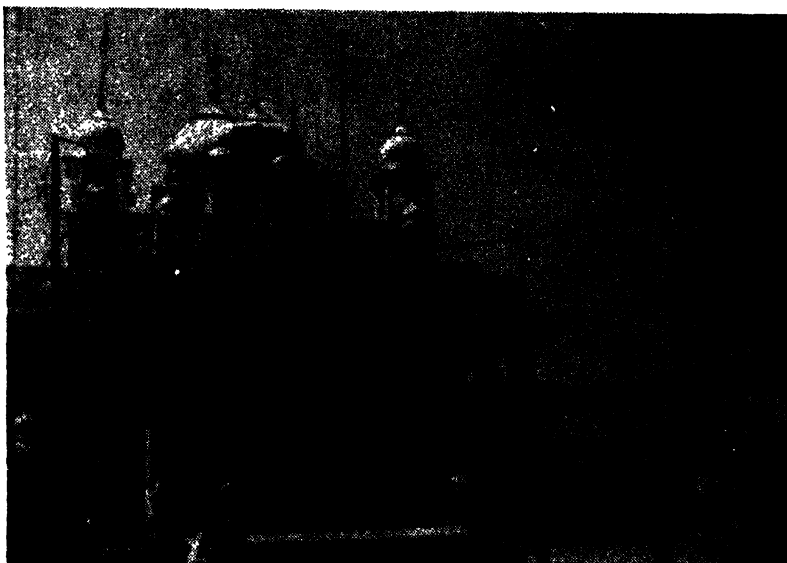
बंदी छोड़ दाता

गुरुद्वारा गुप्तसर साहिब मनमाड़ को बन्दी छोड़ दाता भी कहते हैं। यहाँ पर गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने नीले घोड़े समेत चरण डाले थे और जनवाड़ा नगर के दो मरहठा राजा भाइयों बालाराऊ और रुस्तमराऊ को कैद से छुड़ाया था।

जनवाड़ा नगर, बिदर शहर (कर्नाटक) से कोई दस मील की दूरी पर है। किसी समय यह दो मरहठा राजा भाइयों बालाराऊ और रुस्तमराऊ की राजधानी थी। ये दोनों अपने पड़ोसी राजा साहूराऊ के देश को लूटते थे। एक दिन साहूराऊ ने

उनको सबक देने के लिये सोचा और अपनी सारी फौज इकट्ठी करके जनवाड़ पर चढ़ाई कर दी और दोनों भाइयों को कैद कर लिया और उम्र कैदी बनाकर सतारे के बड़े किले में बन्द कर दिया। उनके अच्छे भाग्य थे उस जेल का एक पहरेदार गुरु का प्रेमी था और बहुत प्रेम व चाव से गुरुबाणी का पाठ करता था। दोनों भाई जब गुरुबाणी का पाठ सुनते तो मन को शान्ति मिलती। एक दिन उन्होंने पहरेदार से पूछा कि आप किस का कलाम पढ़ते हो। पहरेदार ने उनको सारी बात बड़े प्रेम से समझाई कि यह कलयुग के अवतार साहिब श्री गुरु नानकदेव जी की वाणी है जो कलयुगी जीवों की मुक्ति का एक मात्र साधन है और गुरुनानकदेव जी की दसवीं जोत साहिब श्री गुरुगोबिन्द जी हुए हैं। थोड़े समय पहले वह भी नन्देड़ में ज्योति ज्योत समा गये हैं और आगे की गुरुगद्दी अवतार गुरु की बाणी जो मैं रोज पढ़ता हूँ, को सौंप गये है। यह बड़ी कल्याणकारी है। दोनो भाइयां के मन श्रद्धा से भर गये और वे रात दिन वाहे गुरु - वाहे गुरु जपने लगे।

एक दिन पहरेदार ने दोनों भाइयों को छठे गुरु हरगोबिन्दजी बन्दी छोड़ की साखी सुनाई कि कैसे ग्वालियर के किले से ५२ राजाओं का उद्धार किया था। सबको अपना पल्लू पकड़ाकर कैसे किले की कैद से बाहर लाये थे। इस प्रेमभरी साखी का दोनों भाइयों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। दोनों भाई गुरु महाराज की आराधना करने लगे कि बन्दी छोड़ दाता हम पापियों का भी उद्धार करो। इसी प्रकार दिन-रात, आठों पहर दर्द भरी प्रार्थनायें करते काफी समय बीत गया।

एक दिन आधी रात को भारी प्रकाश हुआ। बालाराऊ गुरुजी की याद में लीन था, इस प्रकाश से आँखें खुल गईं। क्या देखता है कि गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज नीले घोड़े पर शोभायमान सामने दर्शन दे रहे हैं। मन गदगद हो उठा, रोम-रोम से वाहे गुरु-वाहे गुरु निकल रहा था। आँखों से प्रेम की झड़ी बह निकली थी। इतने में गुरु महाराज ने सुन्दर मुख से फरमाया---बालाराऊ जल्दी से तैयार हो जाओ। तुम्हारी मदद के लिये हम आ पहुँचे हैं। वाहेगुरु कहते ही बालाराऊ की सब हथकड़ियाँ बेड़ियाँ टूट गईं। दूसरा भाई सोया हुआ था। वाहेगुरू कहकर उसके शरीर को हिलाया तो उसकी भी सारी जंजीरें टूट कर गिर पड़ी। दोनों भाई मुक्त होकर गुरु चरणों से लिपट गये। गुरु महाराज ने फरमाया कि हमारे घोड़े की लगामें एक, एक तरफ से और दूसरा, दूसरी तरफ से कसकर पकड़ लो तो फिर तुम्हें ले चलें। हुक्म सुनते ही दोनों भाइयों ने गुरू महाराज के चरण रकाबों सहित कसकर पकड़ लिये। गुरु महाराज ने नीले घोड़े को आज्ञा दी कि चल भाई हमें आकाश के रास्ते से ही चलना है। जिस प्रकार पक्षी उड़ता है उसी प्रकार हजूर

का नीला घोड़ा भी आकाश में उड़ने लगा। दोनों भाइयों ने गुरुजी के चरण कसकर पकड़े हुए थे। वे भी आकाश में उडते जा रहे थे। नीला घोड़ा विन्धयाचल पर्वत की दिशा में उड़ रहा था। काफी दूर जाकर नीले घोड़े ने सब को धरती पर उतारा। गुरु महाराज ने दोनों भाइयों को हुक्म किया कि अब लगामें छोड़ दो और ख़ुशी-खुशी अपने घर जाओ। तुम अब किले से काफी दूर और कैद से आजाद हो। बाकी का समय प्रभु का सिमरन व सेवा करते हुए राज करो और सदा एक अकाल पुरख की याद रखना। किसी पर जोर जुल्म न करना, गरीब की रक्षा करना। इतना उपदेश देकर गुरु महाराज अन्तर्ध्यान हो गये।

जहाँ गुरु महाराज ने उन्हें उतारा था, यह वही स्थान है जहाँ आजकल मनमाड़ में गुरुद्वारा गुप्तसर साहिब सुशोभित है। यहाँ पर भक्तजन दर्शन करके निहाल होते हैं और सभी की मनोकामना पूर्ण होती है। यहाँ पर सारा दिन लंगर चलता है।

हम गोवा जाते हुए मनमाड़ में रुके थे और गुरूद्वारा गुप्तसर साहिब बन्दी छोड़ दाता के दर्शन करके निहाल हुए थे। वहीं पर हमने लंगर किया था दर्शन करके हम शिरडी चले गये थे।

बम्बई नगर में आपकी, आपके ईश्वर से मुलाकात कहाँ होगी?

मन्दिर

(१) बाणगंगा---बालकेश्वर

(२) महालक्ष्मी---महालक्ष्मी

(३) मुम्बादेवी---झवेरी बाजार

(४) सिद्धि विनायक---प्रभादेवी

(५) प्रभादेवी---प्रभादेवी

(६) गोल़ देवल

(७) हरेरामा हरेकृष्णा---जूहु

(८) बौद्ध मन्दिर---बर्ली

(९) बाबुल नाथ मन्दिर---मलबार हिल

(१०) वज्रेश्वरी देवी मन्दिर तथा गर्म पानी के कुण्डे---बसई रोड स्टेशन से ए. टी. की बस से एक घंटा लगता है।

मस्जिद

(१) झकरिया मस्जिद---झकरिया स्ट्रीट

(२) हाजी अली दरगाह शरीफ---महालक्ष्मी मन्दिर के पास ही समुद्र में गुम्बज दार दरगाह है। इस दरगाह में जांने के लिये समुद्र के किनारे से एक पक्का रास्ता बना हुआ है जो ज्वार (पानी का चढ़ाव) के समय पानी में डूब जाता है परन्तु भाटे (पानी का उतार) के समय रास्ता खुला रहता है। इसलिये दरगाह में लोग भाटे के

समय ही जाते हैं। यह हजरत हाजी अली की दरगाह शरीफ है यहां यात्रियों की सब मुरादें पूरी हो जाती है।

(३) जुम्मा मस्जिद---मंगलदास मार्किटः---यह मस्जिद बम्बई की सब से बड़ी और विख्यात मस्जिद है। इसकी नींव के पाये पानी के टैंक पर स्थित हैं। यह मस्जिद एक उत्कृष्ट कलाकृति का नमूना है। हर शुक्रवार को यहाँ सामूहिक नमाज पढ़ी जाती है।

गुरुद्वारा

(१) गुरु सिंह साहिब सभा----चम्बूर

(३) गुरु सिंह साहिब सभा---चार बंगला

(३) दादर गुरुद्वारा---दादर

गिरजाघर

(१) रोमन केथोलिक प्रॉ केथंड्रल---कोलाबा

(२) माउन्ट मेरीस---बांद्रा

(३) ग्लॉरिया चर्च---भायखाला

(४) श्राइन ऑफ मेरी ड्रेल्प औफ क्रिश्चियन्स---मांटुगा

(५) सेन्ट एण्ड्रेज चर्च---बांद्रा

(६) सैंट माइकल्स चर्च---माहीम

पारसी अगियारी---आतशबहेराम

(१) अंजुमन---धोबी तलाब

(२) बनाजी---चर्नीरोड स्टेशन

(३) वाडियानी---धोबी तालाब

बम्बई में अन्य दर्शनीय स्थान

(१) गेट वे ऑफ इंडिया (२) ताज इंटर कांटिनेंटल होटल (३) प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम (४) जहाँगीर आर्ट गैलरी (५) राजाबाई टावर (६) फ्लोरा फाउँटेन या फुटात्मा चौक (७) विदेश संचार भवन (८) चर्च गेट रेलवे स्टेशन (यह पश्चिम रेलवे का अंतिम स्टेशन है। यहाँ से हर पाँच मिनट पर लोकल गाड़ियाँ छूटती हैं। (६) सचिवालय (१०) नारिमान प्वाइंट (११) विक्टोरिया टर्मिनस रेलवे स्टेशन (यह भारत का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन है। देश के तमाम भागों से यहाँ गाड़ियाँ आती

हैं और तमाम भागों के लिये छूटती हैं। स्टेशन के दो भाग हैं। एक केवल लोकल गाड़ियों के लिये, जहाँ हर तीसरे मिनट पर गाड़ियां आती जाती हैं। दूसरा भाग देश के विभिन्न हिस्सों के लिये जाने वाली गाड़ियों के लिये है। यहीं से भारत की पहली रेल सन १८६१ में चली थी।

(१२) म्यूनिसिपल कारपोरेशन बिल्डिंग

(१३) महात्मा ज्योतिबा फुले मार्किट या क्राफर्ड मार्किट

(१४) मुद्रालय या टकसाल (१५) मरीन लाइन (१६) तारापोरबाला मछली घर (१७) चौपाटी (१८) हैंगिंग गार्डन (१६) कमला नेहरू पार्क (२०) ग्वालिया टैंक या क्रान्ति मैदान (१६४२ में यहाँ पर कांग्रेस का महाधिवेशन हुआ था जिसमें अंग्रेज सरकार के विरूध "भारत छोड़ो" का प्रस्ताव स्वीकार हुआ और अंग्रेजों ने अपना दमनचक्र शुरू किया।

(२१) मणि भवन (२२) रेस कोर्स (२३) विक्टोरिया गार्डन या रानी बाग (भायखला में बम्बई शहर का यह प्रसिद्ध चिडियाघर है। यहाँ दुनिया भर के सभी तरह के पशु पक्षी हैं।

(२४) टी. व्ही. सैन्टर (बर्ली में आधुनिक दवाओं की प्रसिद्ध कम्पनी "ग्लैक्सो" के पास टी. व्ही. सैंटर है। यह १६७२ में बनकर तैयार हुआ था। इसके टावर की उँचाई एक हजार फुट है जो एशिया में दूसरे नम्बर पर है। यहाँ से प्रतिदिन टैलिविजन के कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।)

(२५) ब्रेब्रॉर्न स्टेडियम (२६) शिवाजी पार्क और शिवाजी रंग मन्दिर (२७) जूहु बीच (२८) ऐरोड्रम (२६) नेशनल पार्क (३०) कन्हेरी गुफायें (३१) आरेमिल्क कालोनी (३२) विहार और पवई लेक (३३) तानसा लेक (३४) बसई का किला (३५) एलिफेंटा या घारापुरी की गुफायें आदि देखने योग्य स्थान हैं।

बम्बई संसार का पांचवाँ और भारत का दूसरा बड़ा शहर है। यह महाराष्ट्र की राजधानी है। यहाँ हर धर्म और जाति के लोग निवास करते हैं। पूरे भारत को अगर एक जगह पर देखना है तो वह जगह बम्बई है। प्रतिदिन हजारों सैलानी यहाँ हवाई मार्ग, समुद्री मार्ग, रेलमार्ग और सड़कों द्वारा आते जाते रहते हैं।

बम्बई भारत का होलीवुड है और रूपेरी सितारों की नगरी है। यहाँ फिल्म उद्योग तथा व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र है। सुप्रसिद्ध फिल्मी सितारे यहाँ रहते हैं। यह नगर प्राकृतिक सौन्दर्य, धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आधुनिक दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखता है। शहर "सहार" इंटरनेशनल एअर पोर्ट के द्वारा

दुनिया के महत्त्वपूर्ण शहरों से जुड़ा हुआ है। भारत के अन्तर्गत वैमानिक सेवायें "इंडियन एअर लाइन" और "वायुदूत" द्वारा प्रस्तुत है। यहाँ सैंट्रल और वैस्टर्न रेलवे का मुख्य कार्यालय है। बम्बई भारत का श्रेष्ठतम बन्दरगाह भी है। १८८६ में स्वेज नहर के शुरू होने पर यह पश्चिम भारत का मुख्य बन्दरगाह बना।

बम्बई कभी "मुम्बई" नाम का मछुआरों का एक छोटा-सा गाँव था। यहाँ पर मुम्बादेवी (अम्बा-पार्वती) का प्राचीन मन्दिर है। मुम्बादेवी के नाम पर ही यहाँ का नाम मुम्बई पड़ा था जो बाद में अपभ्रंश होकर बम्बई हो गया लेकिन अब फिर इसका नाम मुम्बई हो गया है।

बम्बई दिल्ली से १५४२, कलकत्ता से १९६८, मद्रास से १२७९, नासिक से १८८ और पूना से १३२ कि० मी० है। ठहरने के लिये यहाँ पर कई प्रसिद्ध धर्मशालायें हैं जिन में हीरा बाग, माधो बाग और सुखानन्द की धर्मशाला मुख्य हैं। विक्टोरिया टर्मिनल और बमब्ई सैंट्रल स्टेशनों पर रिटायरिंग रूम हैं तथा निकट में कई सस्ते होटल है। वाई. एम. सी. ए. के गेस्ट हाउसों में भी सस्ता तथा अच्छा प्रबन्ध है। गुरुद्वारों में भी ठहरा जा सकता है।

पूर्वी समुन्द्र के किनारे-श्री जगन्नाथ धाम-पुरी

श्री जगन्नाथ पुरी हिन्दुओं के चार पवित्र धामों में से एक है जो कि निम्नलिखित है दक्षिण में श्री रामेश्वरम्, उत्तर में श्री बदरीनाथ पश्चिम में श्री द्वारकापुरी, पूर्व में श्री जगन्नाथ पुरी।

चार धाम की यात्रा उत्तर में बदरीनाथ धाम से शुरू करते हे फिर पश्चिम में द्वारका धाम जाते है फिर पूर्व में जगन्नाथ पुरी और अन्त में दक्षिण में रामेश्वरम् धाम जाते है। हरिद्वार से गंगाजल लेकर जाते है जो रामेश्वरम् में भगवान शिव पर चढ़ाया जाता है।

पुरी कलकत्ता मे पाँच सौ कि० मी० दक्षिण में है और नई दिल्ली से १८२८ कि० मी० पूर्व में है। पुरी से दिल्ली, हावड़ा, आसनसोल, तालचर तथा हेदराबाद के लिये सीधी रेल गाड़ियाँ जाती हैं। हवाई जहाज से भुवनेश्वर जाते हैं। भुवनेश्वर से पुरी ६२ कि० मी० है।

भगवान श्री जगन्नाथ मन्दिरः---यह पुरी का मुख्य मन्दिर है। यहाँ पर हजारों वैष्णव हिन्दू प्रति दिन भगवान श्री जगन्नाथ (श्री कृष्ण) बलराम (श्री कृष्ण के भाई) तथा सुभद्रा (श्री कृष्ण की बहन) के दर्शन करने के लिये आते हैं यह एक विशाल मन्दिर है। इस की वास्तुकला तथा सौन्दर्य अनुपम है। यह मन्दिर पुरी नगर के बीच में २० फुट ऊँची जमीन जिसे नीलगिरी कहते है, पर बना हुआ है। मन्दिर की लम्बाई ६६५ फुट तथा चौड़ाई ६१५ फुट है। मन्दिर के चारों तरफ द्वार हैं। पूर्व में शंख चक्राकिंत सिंह द्वार है। यह मुख्य प्रवेश द्वार है। दरवाजे के दोनों तरफ बब्बर शेर की मूर्तियाँ हैं। प्रवेश द्वार के आगे एक पैंतिस फुट ऊँचा अरुण स्तम्भ बना हुआ है। इस स्तम्भ के ऊपर भगवान सूर्य देव के सारथी अरुण की मूर्ति है। यह स्तम्भ कोणार्क सूर्य मन्दिर से लाया गया था। मन्दिर में प्रवेश करने से पूर्व तीर्थ यात्री अरुण स्तम्भ तथा शंख चक्राकिंत सिंह द्वार को साष्टांग प्रणाम करते हैं।

मन्दिर में प्रवेश करते ही महराबी के ताक में भगवान श्री जगन्नाथ जी की छोटी मूर्ति है। इसे पतित पावन भगवान की मूर्ति कहा जाता है। मन्दिर में कैमरा चमड़े की कोई वस्तु तथा छाता ले जाना वर्जित है।

शंख चक्राकिंत सिंह द्वार के अन्दर लगभग २१ सीढ़ियाँ चढ़ कर मन्दिर का प्रांगण आ जाता है। यहाँ पर उत्तर की ओर भगवान जगन्नाथ जी के स्नान करने की वेदी है। इस वेदी के पास ही एक और वेदी है जिस पर लक्ष्मी जी बैठकर श्री जगन्नाथ जी का स्नान देखती हैं। इससे थोड़ा आगे एक और स्थान है जहाँ पर लक्ष्मी जी श्री जगन्नाथ जी के स्नान करने के पश्चात् उनके स्वागत के लिये आती हैं।

प्रांगण में दक्षिण की ओर भगवान श्री जगन्नाथ जी की पाठशाला है। इसके अतिरिक्त मुक्ति मंडप, अक्षय वट (अंकमान) विष्णु जी की मूर्ति (बालमुकंद) चतुर्भुज, विमला देवी, लक्ष्मी एकादशी आदि देवी देवताओं की मूर्तियाँ हैं।

बीच में भगवान् श्री जगन्नाथ जी का खास मन्दिर है। यह मन्दिर ८० फुट लम्बा ८० फुट चौड़ा तथा ६० गज ऊँचा है। मन्दिर के शिखर पर नील चक्र तथा लाल रंग की पताका है। मन्दिर के गर्भगृह में चार फुट ऊँची और १६ फुट लम्बी रत्न वेदी है। इस वेदी पर छः फुट लम्बा सुदर्शन चक्र है और इसके दक्षिण में भगवान् श्री जगन्नाथ जी, बलभद्र जी तथा सुभद्रा जी की मूर्तियाँ हैं। श्री जगन्नाथ जी की मूर्ति के एक तरफ लक्ष्मी जी और दूसरी तरफ सत्यभामा विराजमान हैं और उनके सामने राजा इन्द्रद्युमन जिन्होंने इस मन्दिर का निर्माण कराया था, उनकी मूर्ति स्थापित है। खास मन्दिर के दक्षिण की ओर नृत्य मन्दिर है उसके आगे भोग मन्दिर तथा जगमोहन मन्दिर हैं। ये चारों मन्दिर आपस में मिले हुए हैं और खास मन्दिर के अन्दर ही हैं। खास मन्दिर के बाहर प्रांगण में पश्चिम की ओर सरस्वती कर्माबाई का मन्दिर है। इसमें कर्म लिखने वाले विधाता तथा काली माँ की मूर्तियाँ है तथा शीतला देवी का मन्दिर है।

अश्व द्वारः---यह द्वार मन्दिर के दक्षिण में है। द्वार के दोनों तरफ घोड़ों की मूर्तियाँ है। द्वार के महराब में दो बड़े-बड़े पहलवानों की मूर्तियाँ हैं जिनमें एक भीम तथा दूसरा जरासंध है। इस द्वार में प्रवेश करके थोड़ा आगे चल कर पूर्व की ओर मन्दिर का रसोईघर है जिसमें चार सौ व्यक्ति रसोई बनाने का काम करते हैं। यह रसोईघर संसार का सब से बड़ा रसोई घर है जिसमें एक साथ एक ही चूल्हें पर नौ बरतन चढ़ाये जाते हैं। रसोईघर में भोजन तैयार होकर सीधा भोग मन्दिर में जाता है। इस रसोईघर को देखने के लिये ४० पैसे का टिकट लगता है।

सिंह द्वारः---यह द्वार मन्दिर के पश्चिम में है इस द्वार में दोनों तरफ शेरों की मूर्तियाँ हैं। द्वार में प्रवेश करके उत्तर की ओर नील आदि विहार मन्दिर हैं जिसमें परमेश्वर के अवतारों की मूर्तियाँ हैं तथा भगवान श्रीकृष्ण की लीलायें गोपियों के चीर हरण और राजा इन्द्रद्युमन द्वारा मन्दिर के निर्माण की झाँकियां है। इस मन्दिर को देखने के लिये ५० पैसे का टिकट लगता है।

नील आदि विहार मन्दिर के सामने दक्षिण की ओर मन्दिर का बगीचा है। इस बगीचे को देखने के लिये १० पैसे टिकट लगता है।

हाथी द्वारः---यह द्वार मन्दिर के उत्तर में है। इस द्वार के दोनों ओर हाथियों की मूर्तियाँ है। द्वार के महराब में हजारों लाखों की संख्या में जीवित चिमगादड़े हैं। दीवारों पर उनके झुंड के झुंड लटके हुए हैं। कहा जाता है कि जो कोई मन्दिर के प्रसाद का अनादर करता है या परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता उसकी यही दशा होती है।

हाथी द्वार के पश्चिम में बैकुंठ धाम है। यहाँ पर पंडे यात्रियों से अन्नदान का संकल्प कराते हैं। यात्री अपनी इच्छा से अन्नदान के लिये धन राशि दान करते हैं जिसकी उन्हें रसीद दी जाती है।

मन्दिर में लगभग ५००० कर्मचारी काम करते हैं। एक हजार पंडे तथा पुजारी हैं। इनके अतिरिक्त बीस हजार स्त्री पुरुप मन्दिर से ही गुजारा चलाते हैं।

कहा जाता है कि भगवान श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर मालवा देश के राजा इन्द्रद्युमन ने बनवाया था। जटिल मुनि ने राजा इन्द्रद्युमन से कहा था कि उड़िया देश में नील पर्वत पर भगवान जगन्नाथ (भगवान विष्णु) समस्त देवताओं सहित निवास करते हैं। यह विष्णु क्षेत्र है। आप भी अपने परिवार सहित वहाँ जाकर निवास करें। यह सुनकर राजा इन्द्रद्युमन ने नगर में मुनादी कराई और अपनी प्रजा के साथ उड़िया देश के लिये चल पड़े, नारद जी भी उनके साथ थे।

राजा इन्द्रद्युमन ने नीलगिरी पर्वत पर पहुँच कर विश्वकर्मा को बुलाया और एक विशाल मन्दिर का निर्माण कराया। मन्दिर में नरसिंह भगवान की मूर्ति स्थापित की तत्पश्चात् नारद जी की आज्ञा से १०१ अश्वमेध यज्ञ किये और ७ दिन तक बिना अन्न जल किये व्रत रखा। उनकी भक्ति भावना देखकर नील माधव भगवान जगन्नाथ ने उन्हें दर्शन दिये और कहा तुम १५ दिन यहाँ उत्सव करो। यहाँ पर एक बढ़ई आयेगा तो उस को मन्दिर में बन्द कर देना खूब ढोल बाजे बजवाना। बढई मन्दिर के अन्दर दारुण रूप भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा जी तथा बलभद्र जी की काठ की मूर्तियाँ बनायेगा।

तत्पश्चात् राजा इन्द्रयुमन ने उत्सव मनाया और एक बढ़ई औजार ले कर आया। राजा इन्द्रद्युमन ने उसे मन्दिर में बन्द करवा दिया और मन्दिर के बाहर ढोल बाजे बजवाये। बढ़ई ने १५ दिन में भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा जी तथा बलभद्र जी की काठ की मूर्तियाँ तैयार कर दी। राजा इन्द्रद्युमन ने ब्रह्मा जी के पास जाकर इन मूर्तियों को स्थापित करने की प्रार्थना की। ब्रह्मा जी ने इन्द्रद्युमन की प्रार्थना स्वीकार करके वैशाख शुक्ल अष्टमी, बृहस्पतिवार, पुण्य नक्षत्र में आकर तीनों देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित कीं। इस तरह राजा इन्द्रद्युमन द्वारा भागवान् श्री जगन्नाथ मन्दिर का निर्माण हुआ था।

भगवान श्री जगन्नाथ जी ने राजा इन्द्रद्युमन को दर्शन देकर कहा था कि मैं आजन्म होकर ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को मेरा जन्म दिन होगा। इस दिन से १५ दिन तक मन्दिर को बन्द रखना। इस लिये मन्दिर १५ दिन तक बन्द रहता है, पाठशाला भी बन्द रहती है। ज्येष्ठ की पूर्णिमा को भगवान् श्री जगन्नाथ का जन्म दिन मनाया जाता है।

रथ यात्रा

१५ दिन मन्दिर बन्द रखने के पश्चात् मन्दिर खोल दिया जाता है और अगले दिन आषाढ़ शुक्ल की द्वितीया को रथ यात्रा का उत्सव मनाया जाता है। यह जगन्नाथपुरी का प्रमुख उत्सव है लाखों की तादाद में यात्री इस उत्सव को देखने आते हैं। इस दिन तीनों देवताओं को अलग-अलग रथों में बिठाया जाता है। सब से आगे भगवान जगन्नाथ जी का रथ होता है। उनके पीछे सुभद्रा जी का रथ होता है और उनसे पीछे बलभद्र जी का रथ होता है। तीनो देवताओं की पूजा करके हजारों लोग रथों की डोरी खींचते हैं और बड़े समारोह के साथ तीनों रथों को श्रद्धालु लोग खींचते हुए गुंडीचा मन्दिर ले जाते है और यहाँ तीनों देवताओं को ७ दिन रखा जाता है। ७ दिन के बाद तीनों देवताओं को रथ में बिठा कर वापिस जगन्नाथ मन्दिर लाते हैं। इसे उलटा रथ यात्रा उत्सव कहते है।

उत्सव

जगन्नाथपुरी का प्रमुख उत्सव रथ यात्रा है। इसके अतिरिक्त लक्ष्मी पंचमी या हरी पंचमी, शयन, बारडोल, कर वट लेना, देव उठान, शृंगार, पुष्प अभिषेक, छदम, फगडोल तथा चंदन यात्रा आदि उत्सव मनाये जाते हैं।

अन्य देखने योग्य स्थान

(१) **स्वर्ग द्वारः**---जगन्नाथ मन्दिर से १, १/२ कि० मी० पूर्व की ओर समुद्र

तट है, इसी को स्वर्ग द्वार कहा जाता है। इसे महोदधि भी कहते हैं। यात्री लोग समुद्र में स्नान करके फल-फूल बेल पत्र तथा नारियल चढ़ा कर समुद्र के देवता वरुण की पूजा क़रते हैं।

(२) **श्वेत गंगाः---**स्वर्ग द्वार के रास्ते में यह एक पक्का तालाब है। इस तालाब के किनारे श्वेत केशव महादेव जी का मन्दिर है।

(३) **लोकनाथ महादेव मन्दिरः---**श्री जगन्नाथ मन्दिर से १, १/२ कि० मी० पश्चिम की ओर लोकनाथ महादेव जी का मन्दिर है। यह मन्दिर हमेशा जल में डूबा रहता है। शिवरात्रि के दिन यहाँ पर बहुत बड़ा मेला लगता है और सारा पानी निकाल कर शिवलिंग के दर्शन कराये जाते हैं। लोकनाथ महादेव मन्दिर के दर्शन करके मनुष्य सब पापों से छूट जाते हैं। मन्दिर के साथ पक्की सीढ़ियों वाला निर्मल जल का सरोवर है जिसमें यात्री स्नान करते हैं।

(४) **मारकंडे तालाबः---**यह तालाब जगन्नाथ मन्दिर से २, १/२ कि० मी० है।

(५) **चन्दन तालाबः---**यह तालाब उत्तर की तरफ १, १/२ कि० मी० पर हैं। २२५ गज चौड़ा और इससे भी अधिक लम्बा है। तालाब के बीच में नरेन्द्र मन्दिर है। चैत्र शुक्ल तृतीया को यहाँ पर चन्दन यात्रा का उत्सव होता है और तीनों देवता भगवान जगन्नाथ सुभद्रा जी तथा बलभद्र जी को यहाँ पर लाया जाता है और उनको नाव पर बिठा कर १३ दिन तक जल क्रीड़ायें कराई जाती हैं।

(६) **गुंडीचा मन्दिरः---**यह उत्तर की ओर ३, १/२ कि० मी० पर है। राजा इन्द्रद्युमन की पत्नी का नाम गुंडीचा था। उन्हीं के नाम पर यह नाम पड़ा। इस मन्दिर को जनकपुर भी कहा जाता है; क्योंकि यहीं पर बढ़ई ने तीनों देवताओं की मूर्तियाँ तैयार की थीं। रथयात्रा में तीनों देवता यहीं पर आकर ७ दिनों तक विश्राम करते हैं।

(७) **इन्द्रद्युमन तालाबः---**पुरी रेलवे स्टेशन से थोड़ी दूर पर यह तालाब है। यहाँ पर राजा इन्द्रद्युमन ने सहस्त्र अश्वमेध यज्ञ कराये थे और असंख्य गाय दान की थी। उन गायों के खुरों से यहाँ पर बहुत बड़ा गड्ढा हो गया था जो संकल्प के पानी से भर कर तालाब बन गया था। यह तालाब इन्द्रद्युमन तालाब कहलाता है। इस तालाब के किनारे पर पंचमुखी हनुमान, नील कंठ महादेव, पद्मनाभ तथा इन्द्रद्युमन के मन्दिर हैं।

(८) बेड़ी हनुमान तथा सुनार गौरांग मन्दिरः---इन्द्रद्युमन तालाब के पास ही बेड़ी हनुमान मन्दिर है। हनुमान जी यहाँ पर पहरा देते थे। एक दिन वह बिना इजाजत के अयोध्या जी में चले गये। इसलिये उनके पैरों में बेड़ी डाल दी थी। बेड़ी हनुमान मन्दिर के पास ही सुनार गौरांग मन्दिर है।

(९) भगवान् जगन्नाथ जी की ससुरालः---बेड़ी हनुमान मन्दिर के आगे समुद्र तट है। वहाँ पर भगवान जगन्नाथ जी की ससुराल है। कहा जाता है कि यहीं पर देवता और राक्षसों ने समुद्र मथन करके १४ रत्न निकाले थे। उन १४ रत्नों में समुद्र देवता वरुण की कन्या लक्ष्मी जी भी निकली थी। वरुण ने लक्ष्मी जी का विवाह भगवान जगन्नाथ जी से किया था। यहाँ पर वरुण देवता तथा उनकी पत्नी का मन्दिर है।

(१०) चक्रतीर्थः---भगवान जगन्नाथ जी की ससुराल के पास ही चक्रतीर्थ मन्दिर है। और यहीं पर शनि देवता का मन्दिर है।

(११) साक्षी गोपालः---यह मन्दिर खुर्दा रोड से पुरी जाने वाली रेलवे लाइन पर पुरी से १६ कि० मी० दूर है। पुरी की यात्रा करने के बाद यात्री साक्षी गोपाल के दर्शन करते हैं ताकि भगवान गोपाल (श्रीकृष्ण) उनकी जगन्नाथपुरी यात्रा के साक्षी बन सकें। साक्षी गोपाल के दर्शन के बिना पुरी की यात्रा अधूरी मानी जाती है।

शंकराचार्य मठः---स्वर्गद्वार के रास्ते में शंकराचार्य मठ तथा गंभीर मठ है। ये दोनों मुख्य मठ हैं। वैसे जगन्नाथपुरी में ७० मठ है जो सन्यासियों के आश्रम, निवास-स्थान तथा विहार है। यात्री इनमें ठहर सकते हैं।

(१२) धवल गिरी मन्दिरः---यहाँ पर दो मन्दिर हैं एक सफेद रंग का भगवान बुद्ध का मन्दिर और दूसरा लाल रंग का भगवान शिव शंकर का मन्दिर है। यह वही स्थान है जहाँ पर सम्राट अशोक ने कलिंग की लड़ाई लड़ी थी तथा लाखों करोड़ों आदमियों का नर संहार देखकर उनकी आत्मा ग्लानि से भर गई थी। उन्होंने बुद्धधर्म ग्रहण कर लिया था और कभी युद्ध न करने की प्रतिज्ञा करके संसार में शान्ति स्थापित करने का संकल्प लिया था।

(१३) सिद्धबकुलः---यह स्थान राधाकान्त मठ के नजदीक है। यहां पर एक मौलश्री (बकुल) का वृक्ष है। कहा जाता है कि यह वृक्ष चैतन्य महाप्रभु ने लगाया था। इस स्थान के प्रति लोगों की बड़ी श्रद्धा है।

गंभीरा मठः---चैतन्य महाप्रभु यहां १८ वर्ष रहे थे। यहां पर उनकी चरण

पादुका, कमण्डल अभी तक सुरक्षित रखे हैं। गंभीरा मठ को राधाकान्त मठ भी कहते हैं।

जगन्नाथपुरी में ठहरने के लिये कई धर्मशालाएँ है जिनमें दूध वाले की धर्मशाला, श्री रामचन्द्र गोयंका धर्मशाला, बागला की धर्मशाला, सेठ धन जी मूली की धर्मशाला, बीकानेर वालों की धर्मशाला, आशाराम मोती लाल की धर्मशाला, खेमका कोठारी की धर्मशाला आदि हैं। इसके अतिरिक्त कई सस्ते होटल हैं जिनमें पुरी व्यू होटल, प्लाजा होटल आदि हैं। अनेक मठों में भी ठहरा जा सकता है। हम श्री रामचन्द्र गोयंका की धर्मशाला में ठहरे थे। यहाँ के प्रबन्धक पंडित वैद्यनाथ शर्मा बहुत मिलनसार तथा विद्वान व्यक्ति हैं। श्री प्रभात पंडे ने हमें पुरी के दर्शनीय स्थान दिखाये थे। खाने पीने के लिये जैन मारवाड़ी भोजनालय हैं जिनमें सस्ता शुद्ध तथा शाकाहारी भोजन मिलता है।

नोटः---यात्री पंडों से खामखाह घबराते हैं। वास्तव में पंडे परदेश में हमारे मित्र संरक्षक और हितकारी हैं। वे अपने यजमानों की पूरी मदद करते हैं। उनसे सकुचायें नहीं, बल्कि उदारता का व्यवहार करें।

कोटिलिंग - भुवनेश्वर (उड़ीसा)

भुवनेश्वर कलकत्ते से ४३७ कि० मी० जगन्नाथ पुरी से ६२ कि० मी० और कटक से २६ कि० मी० है। यह उड़ीसा की राजधानी है। रेलवे स्टेशन से भुवनेश्वर का मन्दिर ३ कि० मी० है। ठहरने के लिये यंहाँ अनेक धर्मशालाएँ हैं। भिवानी वालों की धर्मशाला, दूध वाले की धर्मशाला, गोंयका की धर्मशाला तथा राय बहादुर विश्ववेश्वर दयाल हलवासिया की धर्मशाला आदि हैं।

प्राचीन काल में भुवनेश्वर को कोटिलिंग कहकर पुकारते थे। विश्वनाथ पुरी काशी की भाँति इस स्थान पर भी कोटि शिवलिंग स्थापित थे और इस पवित्र वन में हजारों ऋषि-मुनि तपस्या किया करते थे।

भुवनेश्वर काशी जितना प्राचीन नगर है। यहाँ भी शिव पार्वती सदैव निवास करते हैं। काशी की भान्ति भुवनेश्वर भी मन्दिरों का नगर है। किसी समय यहाँ एक हजार शिव मन्दिर थे परन्तु अब केवल ५००-६०० ही हैं। इन में सबसे प्राचीन मन्दिर परशुरामेश्वरम् का है। यह पांचवी शताब्दी में बनाया गया था। मुख्य मन्दिर भी प्रायः ११०० वर्ष पुराना है इस को उड़ीसा के राजा यया केसरी ने बनवाया था। आधे मील की दूरी पर सिद्धराज वन में भुवनेश्वर का मन्दिर है। इसकी शिल्प कला तथा चित्रकला प्रथम श्रेणी की है। विद्वानो का ऐसा मत है कि यदि यह मन्दिर रेतीले पत्थर का न होता तो इसकी सुन्दरता और कारीगरी आगरे के ताजमहल से कम न होती।

भुवनेश्वर मन्दिर के पूर्वोत्तर कोण में भास्करेश्वर का मन्दिर है। उसके पश्चिम में राजधानी का मन्दिर है जिसकी सुन्दरता का कोई मुकाबला नहीं। इसके अतिरिक्त वासुदेव अनन्त और बेताल आदि कई देव मन्दिर हैं।

बिन्दुसागरः---भुवनेश्वर के बाजार के निकट एक पवित्र सरोवर है जिसे बिंदुसागर कहते हैं। यह सरोवर पक्का बना हुआ है और इसके कई पक्के घाट

हैं। इन में मणिकर्ण घाट पर स्नान करने का बड़ा महात्म्य है। यात्री पहले बिंदुसरोवर में स्नान करते हैं। पिंडदान तर्पण आदि करते हैं। उस के बाद भुवनेश्वर महादेव के दर्शन करते हैं। बिंदुसरोवर के तट पर चारों तरफ मन्दिर हैं। मुख्य और दर्शनीय मन्दिर' इसी के साथ हैं।

बिन्दुसरोवर में स्नान करके सब तीर्थों का फल प्राप्त हो जाता है। कहा जाता है कि यहाँ के तपोवन में हजारों ऋषि-मुनि तपस्या किया करते थे। उनको यह इच्छा हुई कि यहाँ भारतवर्ष के समस्त तीर्थ आ जाएँ। इसलिये ऋषियों ने तीर्थ यात्रा करना आरम्भ किया और अपने-अपने कंमडलों में भिन्न-भिन्न तीर्थों का जल लाकर इस सरोवर में छोड़ दिया। अतः इस में सब तीर्थों का जल विद्यमान है।

लिंगराज मन्दिरः---यह विश्वविख्यात मन्दिर है। इसे भुवनेश्वर महादेव हरिहरात्मक नाम से भी पुकारते हैं तथा एकानुभव या लिंगराज मन्दिर भी कहते हैं। यह भुवनेश्वर का मुख्य और सुन्दरतम मन्दिर है और भारत के श्रेष्ठतम मन्दिरों में से एक है। इसकी उँचाई १८० फुट है। मन्दिर इतना विशाल है कि इसमें छोटे-छोटे ६४ मन्दिर हैं। अभी हाल ही में इस मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ। एक लाख रुपया सरकार ने दिया था और एक लाख रुपये का चन्दा हुआ था।

यह मन्दिर पुरी के जगन्नाथ मन्दिर से भी बड़ा और प्राचीन है। जो यात्री शिव जी को स्नान कराने के लिये अपने साथ गंगा जल नहीं लाते, उन्हें यहाँ से भी कुछ दक्षिणा देने पर गंगा जल मिल जाता है। वैसे बिन्दुसरोवर का जल भी सब तीर्थों का जल है। इससे भी शिवजी को स्नान कराकर पूजन आदि किया जा सकता है।

राजा रानी मन्दिरः---यह मन्दिर बहुत सुन्दर है इसमें राजाओं और रानियों की मूर्तियाँ हैं। मूर्तियाँ खजुराहो के कंडारिया महादेव के मन्दिर जैसी हैं। अब मन्दिर में थोड़ी ही मूर्तियाँ बची हैं।

मुक्तेश्वर मन्दिरः---इस मन्दिर में नर्तकियों, साधु, ऋषि, शेर, साँप आदि की मूर्तियाँ हैं।

परशुरामेश्वर मन्दिरः---यह यहाँ का सब से प्राचीन मन्दिर है।

अनन्त वासुदेवः---भुवनेश्वर में यह विष्णु का एक मात्र मन्दिर है। बाकी सब मन्दिर शिव के हैं।

ब्रह्मेश्वरः---यह भी बहुत सुन्दर तथा कलात्मक मन्दिर है।

महात्म्यः---श्री भुवनेश्वर महात्म्य आदि ब्रह्मपुराण, शिवपुराण और स्कन्ध में

भली भान्ति लिखा हुआ है। प्राचीन काल में यहां एक आम का वृक्ष था। इसलिये वह तीर्थ एकाग्र क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहाँ अगहन मास में, वैसाख में, ग्रहण के समय या शुभ तिथियों में बिंदुसरोवर में स्नान करके तर्पण पिंडदान करने से पितरों को अक्षय तृप्ति होती है। यहाँ शिवजी का पूजन और उसकी प्रदक्षिणा करने से मनुष्य को शिव लोक मिलता हे और २१ पुस्त का उद्धार हो जाता है। एकाम्रक नामक शिव क्षेत्र काशी जी के तुल्य है। यहाँ शरीर त्यागने वाले को मोक्ष मिल जाता है।

जो मनुष्य मुक्तेश्वर, सिद्धेश्वर, स्वर्णजालेश्वर, परमेश्वर, विख्यातेश्वर तथा सूक्ष्म नृतिकेश्वर नामों से विख्यात इन शिवलिंगों का दर्शन करता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है।

उदयगिरि और खंडगिरि

भुवनेश्वर से ४५ मील की दूरी पर उदयगिरि और खंडगिरि नाम की दो पहाड़ियाँ हैं। ये पर्वत काट-काट कर बनाई गई हैं। इनका निर्माण ईसा से ५० वर्ष से लेकर ५०० वर्ष पीछे तक है। ये पहाड़ियाँ जैन और बौद्ध मतावलम्बियों के पवित्र तीर्थ स्थान मानी जाती हैं।

ये गुफाएँ इस प्रकार बनाई गई हैं कि सामने आंगन भी निकल आया है। इन में से एक-एक में कई कोठरियाँ और बरामदे हैं जिनमें कई आदमी सुविधापूर्वक रह सकते हैं। इन गुफाओं में से कुछ गुफाओं के नाम सर्प गुफा, बैकुंठ गुफा, स्वर्गद्वारी गुफा, रानी नूर गुफा, गणेश गुफा आदि है। ये उदयगिरि पहाड़ी की गुफाएँ हैं। यहाँ बौद्ध भिक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्ति का साधन किया था।

खंडगिरि पहाड़ी पर ऊपर चढ़ाई पड़ती है। यहाँ जैन सम्प्रदाय के आचार्य श्री पारसनाथ जी का मन्दिर है और आकाशगंगा नाम का सरोवर है। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य देखने योग्य है।

भगवान सूर्यदेव का मन्दिर---कोणार्क (उड़ीसा) वांरगल

यह मन्दिर भुवनेश्वर से ६४ कि० मी० और जगन्नाथपुरी से ८५ कि० मी० है। यहाँ पर ठहरने की कोई विशेष व्यवस्था नहीं है। भुवनेश्वर या पुरी में ठहर कर ही यह मन्दिर देखा जा सकता है। दोनों स्थानों से बसें नियमित रूप से आती जाती हैं।

कोणार्क का अर्थ है कोना+अर्क/अर्क सूर्य को कहते हैं अर्थात् सूर्य का कोना। १३वीं शताब्दी में उड़ीसा के राजा नरसिंह राव देव ने यहाँ सूर्य मन्दिर का निर्माण कराया था। यह मन्दिर उजाड़ तथा सुनसान स्थान पर है। समुद्र तट से ४ कि०मी० दूर रेत के टीलों में बना हुआ है। आसपास कोई बस्ती नहीं है। निकटतम गाँव भी ६ कि० मी० दूर है। यहाँ केवल सूर्य मन्दिर है जो टूटा पड़ा है लेकिन यह मन्दिर हजारों मन्दिर देखने के बराबर है। इसकी विशालता और सुन्दरता संसार में अद्वितीय है। यह काले पत्थर का बना हुआ है।

पूरा मन्दिर एक विशाल रथ के आकार का है। इसमें ७ घोड़े जुते हुए है और १२ विशाल पहिये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे सूर्य भगवान का रथ आकाश में दौड़ा जा रहा हो। इस मन्दिर के शिखर की ऊँचाई २०० फुट है।

पूरा मन्दिर विशेषकर नट मन्दिर मूर्तियों से भरा पड़ा है। युद्ध के दृश्य हाथियों और अन्य पशु पक्षियों की मूर्तियाँ तथा मानवीय मूर्तियाँ काम उत्तेजक मुद्राओं में हैं। कुछ लोग इन मूर्तियों को अश्लील कहकर निन्दा करते हैं परन्तु इन मूर्तियों से उत्साह, आनन्द और संतोष टपकता है। यह मन्दिर मूर्तिकला, कलाकौशल और कल्पना की विविधता में सर्वश्रेष्ठ तथा चरम अवस्था का द्योतक है। पुरी और

भुवनेश्वर जाने वाले तीर्थ यात्रियों और पर्यटकों को कोणार्क अवश्य देखना चाहिए।
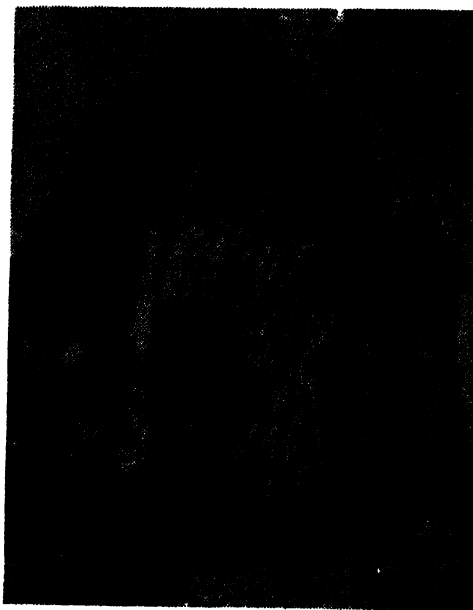
नोटः---खजुराहो में सामूहिक मैथुन क्रिया की मूर्तियाँ के साथ अन्य युगल विभिन्न मैथुन मुद्राओं में है जब कि कोणार्क में सामूहिक मैथुन की मूर्तियाँ नहीं हैं। केवल युगल मैथुन मूर्तियाँ हैं।

वांरगल

वांरगल हैदराबाद स १५७ कि० मी० काजी पेट नामक रेलवे स्टेशन से ११ कि० मी० है। यहां पर प्राचीन भद्रकाली मन्दिर है। काजीपेट तथा वांरगल के बीच में हनुमान कोन्डा एक कस्बा हैं जो वांरगल से लगभग ६ कि० मी० है। यहां पर काकतीय राजाओं में से एक राजा प्रताप रुद्र देव ने ११६२ में "सहस्त्र स्तम्भ" मन्दिर बनवाया था जो बहुत कलात्मक तथा सुन्दर है।

आंध्र प्रदेश के कुछ धार्मिक स्थान---भद्राचलम् तिरुपति (तिरुमलै बाला जी) हैदराबाद, गोलकुंडा

भद्राचलमः---वारंगल से ८४ कि० मी० तथा विजयवाड़ा से १२५ कि० मी० दूर दोरनाकल जंकशन है वहाँ से एक ब्रांच लाइन भद्राचलम रोड रेलवे स्टेशन तक जाती है जो कि ५५ कि० मी० है। भद्राचलम रोड से ३० कि० मी० आगे बोर्गमपाद नगर है। ये गोदावरी के दक्षिण तट पर है परन्तु भद्राचलम मन्दिर गोदावरी के उत्तरी तट पर है इसलिए नाव द्वारा नदी पार करके मन्दिर तक जाते हैं। भद्राचलम मन्दिर भगवान श्रीराम का मन्दिर है। गोदावरी नदी में स्नान करके मन्दिर में दर्शन करने जाते है। कहा जाता है कि भगवान श्रीराम, सीता और लक्ष्मण बनवास के समय यहीं पर पर्ण कुटी बनाकर रहते थे और यहीं से रावण, सीता का हरण करके ले गया था। यहाँ पर चारों ओर बहुत घना जंगल है। इस जंगल को **दण्डकारण्य** (दण्डवन) कहते हैं। यहाँ पर अचल नामक पहाड़ी है। इस पहाड़ी पर श्री राम चन्द्र जी का बहुत सुन्दर मन्दिर है तथा हजारों यात्री दर्शन करने आते हैं। भद्राचलम मन्दिर से ३० कि० मी० पर **दण्डकारण्य वन में पर्णशाला नाम का स्थान है**। यहाँ पर भी श्रीराम का मन्दिर है।

विजयवाड़ा से लगभसग १५० कि० मी० दूर राजामुन्द्री है और वहाँ से आगे गोदावरी का स्टेशन है। यहाँ प्राचीन शिवमन्दिर है जिसे प्राचीन कोटितीर्थ कहा जाता है।

तिरुपति (तिरुमलै या बाला जी):—यह दक्षिण भारत का प्रमुख तीर्थ स्थान है। उत्तर भारत के लोग इसे बाला जी के नाम से जानते हैं। मद्रास से सीधी ट्रेनें आरकोनम और रेनीगुंटा होती हुई तिरुपति ईस्ट तक जाती हैं। यहाँ पर तिरुपति नगर है। इसके साथ तिरुमलै पर्वत है। पर्वत के नीचे ही एक सरोवर है। यात्री पर्वत पर चढ़ने से पहले इस सरोवर में स्नान करते हैं। इस सरोवर का नाम कपिलतीर्थ है। यहाँ सात पहाड़ों का समूह है। इस समूह को तिरुमलै या वेंकट कहते हैं। यह पर्वत समूह भगवान विष्णु का बैकुंठ धाम माना जाता है और अति पवित्र स्थान है। इसलिए यात्रियों को बस स्टैंड पर ही जूते उतारकर जाना होता है। ६ पहाड़ों को पार करके ७वें पहाड़ पर तिरुपति या वेंकटेश्वर या बाला जी मन्दिर है। यह मन्दिर २८०० फुट की ऊँचाई पर है। यह भगवान विष्णु का मन्दिर है। तिरुपति का अर्थ लक्ष्मीपति (विष्णु) है। यहाँ यात्रियों की भीड़ लगी रहती है। मन्दिर के निकट वाराह मन्दिर भी देखने योग्य है।

तिरुमलै पर्वत पर आकाश गंगा, पाप नाशक आदि नामों के कई पवित्र झरनें हैं। तिरुपति विष्णु भगवान बाला जी के दर्शन करके नीचे तिरुपति नगर में आकर गोबिन्दराज मन्दिर तथा कोदण्डराम मन्दिर भी देखने योग्य है।

हैदराबाद (सिकंदराबाद):—हैदराबाद के समीप सिकंदराबाद प्राचीन काल में काकतीप हिन्दू राजाओं के शासन में था। परन्तु मध्यकाल में यहाँ कुतुबशाही मुस्लिम सुलतानों का राज्य हो गया। कुतुबशाही वंश के पांचवें सुलतान मुहम्मद कुली ने १५९० में हैदराबाद बसाया। उस समय सुलतानों की राजधानी गोलकुंडा थी। अब हैदराबाद आंध्र प्रदेश की राजधानी है। सिकंदराबाद और हैदराबाद के बीच एक झील है जिस पर एक पुल बना हुआ है और पुल द्वारा दोनों एक हो गये हैं।

हैदराबाद में धार्मिक स्थान मक्का मस्जिद है, यह बहुत विशाल मस्जिद है। इसमें दस हजार व्यक्ति एक साथ नमाज पढ़ सकते हैं। यहाँ पर मक्का से ईंट लाकर लगाई गई थी। इसलिए इसका नाम मक्का मस्जिद पड़ा। वह ईंट अब भी मस्जिद में लगी हुई है।

मक्का मस्जिद के निकट ४ मीनार हैं। इसके चारों तरफ १८० फुट ऊँचाई की चार मीनारें हैं। इसकी दूसरी मन्जिल पर एक छोटी सी मस्जिद है।

इसके अतिरिक्त हैदराबाद में सालारजंग म्यूजियम, चिड़ियाघर, चार-सू-का हौज, यहाँ से राजा जनता की फरयाद सुनता था और सेना का निरीक्षण करता था। जामा मस्जिद, नौबत पहाड़, फलकनुमा पैलेस, किंग कोठी तथा उस्मानिया यूनिवर्सिटी देखने योग्य स्थान है।

गोलकुंड़ा के कुतुबशाही वंश के पांचवे सुलतान मुहम्मद कुली कुतुबशाह एक रंगीन मिजाज तबियत के व्यक्ति थे। उनको एक बंजारन नृतकी "भागमती" से इश्क हो गया था। वह उसके प्रेम में सब कुछ भूल गये थे। बाद में मुहम्मद कुली ने भागमती से विवाह कर लिया और भागमती को अपनी प्रेयसी से महारानी बनाकर उसके गांव चिचलम में रहने लगा। अपने शासन काल में उसने चिचलम को केन्द्र मानकर एक नये नगर की नींव डाली और इस नगर का नाम अपनी प्रेयसी के नाम पर "भागनगर" रखा। प्यार की नींव पर बसाये इस नगर का नक्शा उन्होंने अपने प्रधान मन्त्री मीर मोमिन से बनवाया जो ईरान के प्रसिद्ध शहर इस्फाहान पर आधारित था। अपनी प्रेयसी को खुश करने के लिये अनेक बाग-बगीचे, सुगन्धित फूलों से सुसज्जित महल बनवाये। इस नगर की नींव १५९१ में रखी गई थी। यही नहीं, मुहम्मद कुली ने अपनी जाने-मन-दिलरूबा प्रेयसी भागमती के प्रति अपने अगाढ़ प्रेम के प्रतीक के रूप में जहां भागमती का घर था, वहां १६० फुट ऊँची चार मीनार बनवाई जो आज भी उनके प्रेम स्मारक के रूप में शान से खड़ी है। बाद में भागनगर का नाम हैदराबाद पड़ा।

गोलकुन्डा

निकट में ११ कि०मी० पर **गोलकुंड़ा** अर्थात् गोल पहाड़ है। यहाँ पर ऐतिहासिक किला है। कुतुबशाही सुलतानों की यहाँ राजधानी थी। यहाँ पर निकट में ही हीरों की खानें हैं। **विश्व विख्यात कोहेनूर हीरा यहाँ की हीरे की खानों से ही निकला था।**

चामुंडेश्वरी देवी से रक्षित---मैसूर (कर्नाटक)

मैसूर, बंगलौर से १३८, आर. सी. केरे से १६६, हसन से ११६, ऊटी से १५६, त्रिवेन्द्रम से ६२६ कि० मी० है।

यहाँ पर ठहरने के लिए शीतल निवास चौल्ट्री, नानाराज अर्स चौल्ट्री, कल्याण मंडप आदि धर्मशालाएँ हैं तथा कई सस्ते और अच्छे होटल हैं।

चामुंडा देवी का मन्दिरः---मैसूर से लगभग १३ कि० मी० पर चांमुडी हिल है। यह ३३५ मीटर ऊँची पहाड़ी है। यहाँ ४.८ मीटर ऊची महिषासुर की मूर्ति है उसके एक हाथ में फरसा तथा दूसरे हाथ में जहरीला सांप है। उससे थोड़ा सा आगे यहाँ पर चामुंडा देवी के तीन विशाल मन्दिर हैं। इन में से एक मन्दिर दसवीं शताब्दी का एक १२वीं शताब्दी का एक १७ वी शताब्दी का बना हुआ है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार महिषासुर नाम के दैत्य ने बहुत आतंक मचाया हुआ था। सब देवता महिषासुर से भयभीत हो गये थे। देवताओं का भय छुड़ाने के लिये दुर्गा ने महिषासुर को मारने का आह्वान किया। महिषासुर दुर्गा भवानी से डरकर इसी पहाड़ी पर आकर छिप गया। दुर्गा ने इसी पहाड़ी पर आकर महिषासुर का बध किया तथा यहीं पर स्थापित होगई और चामुंडेश्वरी देवी के नाम से विख्यात हुई तथा महिषासुर के नाम पर इस स्थान का नाम महिषामंडल प्रसिद्ध हुआ। महिषामंडल से इस स्थान का नाम महिषूर और महिषुर से मैसूर पड़ गया। यहाँ पर सबसे प्राचीन मन्दिर महाबलेश्वर है। इस मन्दिर में सन् ६५० खुदा हुआ है जिसके अनुसार यह पवित्र स्थान था। एक बड़े तालाब के साथ कोडिभेरेश्वर मन्दिर है। इस मन्दिर के निकट ही सन् १३९९ में वाड़ियार राजवंश की स्थापना हुई। इस प्रकार मैसूर चामुंडेश्वरी देवी तथा राजवंश परिवार का निवास स्थान है और यात्रियों का स्वर्ग तथा बागों का नगर है। यहाँ की प्राकृतिक छटा देखने योग्य है। चामुंडेश्वरी देवी मैसूर की रक्षक है। चामुंडेश्वरी मन्दिर जाने के लिये बसें तथां टैक्सियें आदि मिल जाती हैं।
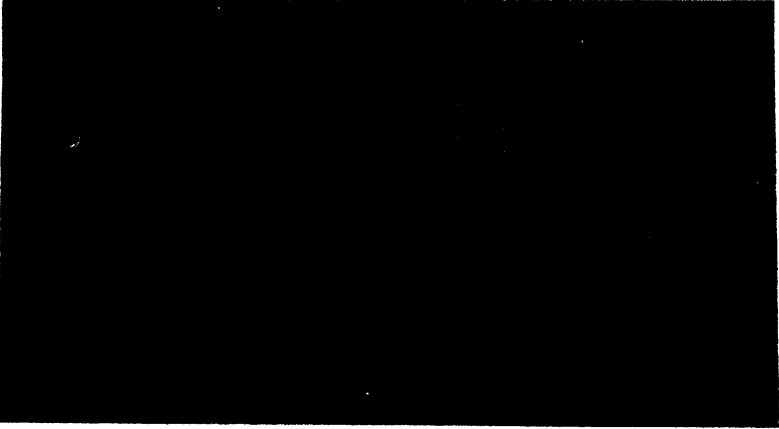
ललिता महल

राजिन्द्र विलास पैलेसः---चामुंडी पर्वत के निचले सिरे पर मैसूर से लगभग ६ कि० मी० पर यह महल है। यहाँ पर शाही मेहमानों को ठहराने के लिए व्यवस्था की जाती थी। अब इस महल को होटल में बदल दिया है।

श्री रंगपट्टनः---मैसूर से १६ कि० मी० दूर यह एक ऐतिहासिक नगर है यहाँ पर रंगनाथ मन्दिर है। इंस मन्दिर के नाम पर ही इस नगर का नाम श्री रंगपट्टन प्रसिद्ध हुआ। यह नगर पहले हैदरअली व टीपू सुलतान की राजधानी रह चुका है। यहाँ पर जामा मस्जिद भी है। जिसे टीपू सुलतान ने १७८५ में बनवाया था। यहाँ पर टीपू सुलतान व हैदर अली का मकबरा भी है।
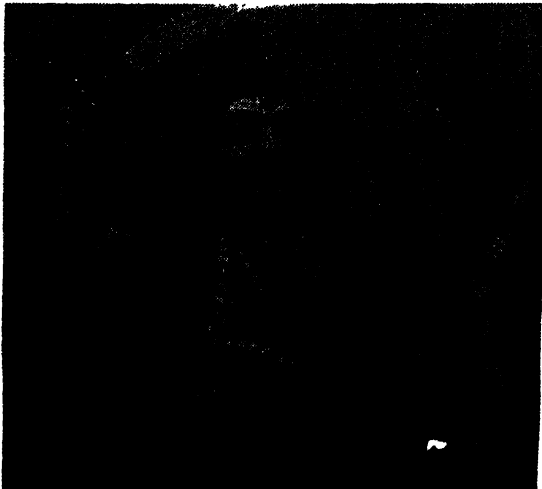
वृन्दावन गार्डनः---यह मैसूर से १६ कि० मी० है। इसे कृष्णराज सागर डैम भी कहते हैं। यहाँ पर विश्वविख्यात बाग है। रात्रि में झरने तथा फुव्वारे रंगबिरंगी रोशनियों में दर्शकों को रोमाचिंत कर देते हैं। यहाँ पर दक्षिण भारत का सबसे से बड़ा डैम है जो १६२३ में बनाया गया था।

महाराजा पैलेसः---यह विशाल महल नगर के बीचों बीच है। इस महल में दरबार हौल, अम्बाबिला, विशाल भीती चित्र, रत्नों से जड़ा सिंहासन, शीशे का फरनीचर तथा ऐतिहासिक वैभव के नमूने देखने योग्य हैं। इसे राज भवन या चामराजा वाडियार पैलेस भी कहते हैं। महल में दीवाने आम तथा दीवाने खास भी देखने योग्य हैं। आत्मा विलास, गणेश टैम्पल, पुराने महल का चाँदी का दरवाजा, अम्बा विलास के चान्दी तथा हाथी दान्त के बने दरवाजे देखने योग्य हैं। चामुंडा देवी भगवती का अस्सी किलो सोने का हुड्डा (सिंहासन) भी देखने योग्य है। इसमें चामुंडा देवी की मूर्ति विराजमान है। १६४२ में राजा शिकार खेलने गया था और दो हाथियों का शिकार किया था। उन दोनों हाथियों के असली सिर महल में रखे हुए हैं। महल के एक हिस्से में राज परिवार के सदस्य रहते हैं। वह हिस्सा जनता के देखने के लिए बन्द है।

त्रिपति बालाजी मन्दिरः---मैसूर में भारत का पहला त्रिपति बाला जी का मन्दिर है। दूसरे न० का मन्दिर आंध्र प्रदेश में है।

सैंट फिलोमिना चर्चः---इस चर्च की इमारत गोथिक शैली में बनी हुई हैं। इसकी खिड़कियों में खूबसूरत शीशे लगे हुए हैं तथा छोटे गुम्बद चर्च की सुन्दरता में चार चाँद लगाते हैं।

श्री जय चामराजेन्द्र आर्ट गैलरीः---१८७५ में जगमोहन महल को कला दीर्घा में बदल दिया गया था। उस युग की कला कृतियाँ इस दीर्घा में रखी हुई हैं। मैसूर की प्रसिद्ध गोल्डली पेंटिग भी इस संग्रहालय में रखी हुई हैं। यह बृहस्पतिवार को बन्द रहती है।

इसके अतिरिक्त मैसूर में चिड़ियाघर जिसे चामराजेन्द्र जुअलाजिकल गार्डन कहते हैं, भी देखने योग्य है।

संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि मैसूर सदियों से धर्म कला, साहित्य तथा संस्कृति का केन्द्र बिन्दु रहा है। यहाँ का मौसम साल भर सुहावना रहता है। अक्टूबर के महीने में यहाँ दस दिन दशराहरे का त्योहार मनाया जाता है जो सारे भारत में प्रसिद्ध है। इसलिए अक्टूबर में मैसूर जाना चाहिए।
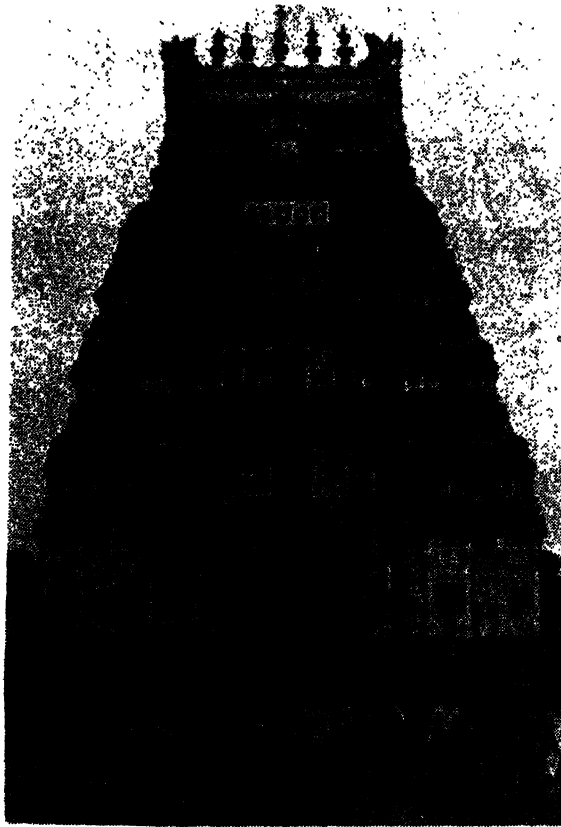
एशिया में सबसे बड़ा गुम्बज---बीजापुर (कर्नाटक)

बीजापुर, शोलापुर से ११०, बदामी से ११६ गदग से १४४, हुबली से २४२, पूना से ३७४ तथा औरंगाबाद से ४४० कि० मी० है। यह एक ऐतिहासिक नगर है। कुछ समय तक यह नगर राष्ट्रकूट वंश के राजाओं के आधीन रहा। इस नगर का पुराना नाम बिज्जनहलली था। किसी विजय के प्रतीक स्वरूप इसका नाम बीजापुर हुआ। १४८६ से १६८६ तक यह आदिलशाही सुलतानों की राजधानी रहा यह नगर कर्नाटक राज्य में है।

आदिलशाही सुलतानों ने यहाँ कई महल मस्जिदें और मकबरे बनवाये जो कि आज भी सारे संसार में प्रसिद्ध हैं।

(१)**गोल गुम्बजः**---यह गुम्बज अलि आदिलशाह ने बनवाया। इसका विशाल गुम्बज संसार का दूसरा सबसे बड़ा गुम्बज है तथा एशिया में पहला सबसे बड़ा गुम्बज है जो देखने योग्य है। गुम्बज के ऊपर का हौल १२५ फुट है। गुम्बज परिधि १२४ फुट ६ इंच है। समाधि से ऊपर तक का फासला २०५ फुट है। नीचे तहखाना है। जिसमें अंधेरा रहता है। बीच में मुहम्मद शाह और उसके परिवार के सदस्यों के मकबरे हैं इस इमारत के सामने एक हौज है। उसे पार करके संग्रहालय है। यहाँ पुराने जमाने के सिक्के, मोहर, तलवार, ढाल, कवच, बरतन, मूर्तियाँ, शिला लेख आदि रखे हैं।
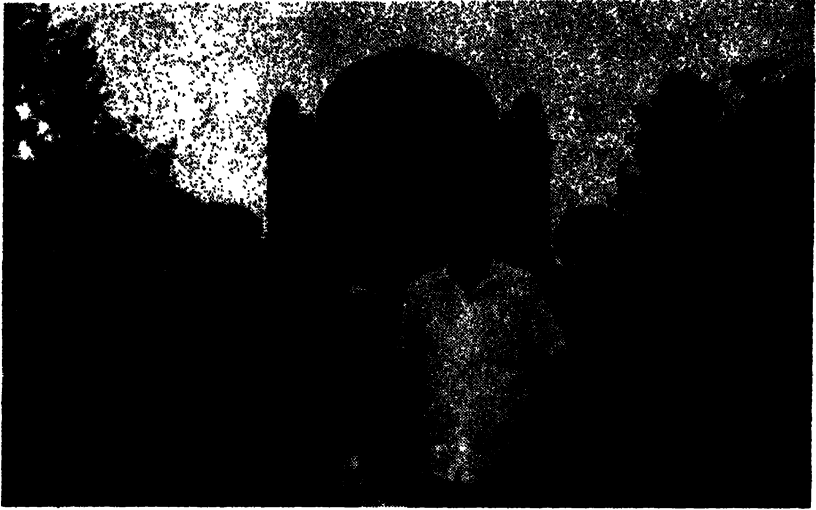
जामा मस्जिदः---बीजापुर की सभी इमारतों में सुन्दर जामा मस्जिद है। यहाँ हजारों लोग एक साथ नमाज पढ़ सकते हैं। यह इमारत ११६३०० फुट है। सामने दिखाई देने वाली गैलरी देखने योग्य है। नौ कमानों से निर्मित मध्य में पंचमाकृति पांच कमान हैं। ऊपर आलीशान गुम्बज निर्मित है। बाहर से देखने वालों को एक मजबूत किले की तरह दिखाई देती है। अंदर आने पर संगमरमर के पत्थरों की तरह दिखाई देने वाला सिमेंट का फर्श है। यहाँ नमाज पढ़ने के लिये २२५० चौखट हैं। इस हॉल के बीच में एक परदा लटकाया गया है। इस कमान को महराब कहते, हैं। इस महराब पर स्वर्ण अक्षर हैं। यह इमारत सन् १७८६ में सुलतान मुहम्मद की आज्ञानुसार मलिक याकूब ने बनवाई। आदिलशह से प्रारम्भ होकर मुहम्मद के समय में पूरी हुई। देहली के बादशाह औरंगजेब इस नगर को जीतकर यहाँ आया तो उसने प्रार्थना हॉल में काले पत्थर का फर्श बनवाया और उत्तर दिशा की ओर महादरवाजा बनवाया।

रोजाः---इसे सुलतान इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय ने अपनी पत्नी ताज सुलतान के मकबरे के रूप में बनवाया था। बीजापुर की विजय के बाद औरंगजब यहीं ठहरा। इस भवन की दीवारों पर कुरान की आयतें अंकित हैं।

इसके अतिरिक्त बीजापुर में मेहतर महल, आसार महल, बाराकमान, जोड़घुमठ, ताजबावड़ी, मलिक मैदान् तोप, हैदरबुर्ज, अदालत महल, किला, बुर्ज और पांच मुख्य द्वार देखने योग्य हैं।

गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ-मडगांव---गोवा

वैसे तो मैं पहले दो बार कोंकण तट पर भगवान् परशुराम द्वारा बसाये गये गोवा में जा चुका हूँ। इस बार मुझे राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित शैक्षणिक पत्रकारिता कार्यशाला में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। यह कार्यशाला गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ कोमुनिदाद बिल्डिंग मंडगांव-गोवा में आयोजित की गई थी।

गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ एक रजिस्टर्ड संस्था है। १६३६ से यानि गोवा आजादी से पूर्व यहाँ हिन्दी प्रचार का कार्य शुरू हुआ था जो कि उस समय "साधना हिन्दी वर्ग" नाम से चला था और माधव पंडित जी ने इसको शुरू किया था। इसकी शुरूआत केवल एक अलमारी, एक मेज तथा दो कुर्सियों से हुई थी।

गोवा आजादी के बाद यानि १६६२ से, उस समय के गोवा के प्रथम मुख्यमंत्री स्वर्गीय दयानन्द बादोड़कर जी के सहयोग से इस प्रचार कार्य को बढ़ावा मिलता गया। बाद में माधव पंडित जी के परिश्रम से यह गोमंतक राष्ट्रभाषा सभा के नाम से रजिस्टर्ड हो गई। तब से महाराष्ट्र भाषा सभा पूना की सभी परीक्षायें यहाँ चलने लगीं। सभा वालों ने गोवा के लिए प्रमुख कार्यालय के रूप में इसे विशेष मान्यता दी। गोवा में सितम्बर और फरवरी इन दो सत्रों में दो हजार के लगभग छात्र विविध परीक्षाओं में सम्मिलित होने लगे। उसी समय गोवा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के वर्ग दूसरी संस्था की ओर से चलाये जाते थे। १६७४ में इन दोनों संस्थाओं का एकीकरण किया गया और गोमंतक राष्ट्र भाषा विद्यापीठ की स्थापना हुई।

अब इस संस्था की तरफ से वर्धा और पूना सभा की सभी परीक्षाओं के वर्ग चलाये जाते हैं। लगभग ५ हजार छात्र विविध परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं। दोनों में मैत्री पूर्ण सम्बंध हैं। आपस में कोई झगड़ा नहीं होता। इसके अतिरिक्त राष्ट्रभाषा विद्यापीठ की ओर से विविध कार्यक्रम चलाये जाते हैं।

प्रति वर्ष छोटे बच्चों के लिए कथा कथन प्रतियोगिता, विद्यार्थियों के लिखे निबन्ध तथा भाषण प्रतियोगिता, महाविद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं के लिए एकांकी प्रतियोगिता आदि आयोजित की जाती हैं।

अध्यापकों के लिए शिविरों का आयोजन किया जाता है। अनुवाद भाषण प्रणालियाँ चलाई जाती हैं। समय-समय पर रा. शै. अनु. प्र. प. की ओर से चलाये गए विविध कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।

विद्यापीठ का पुस्तकालय गोवा राज्य का प्रमुख वशिष्ठ पुस्तकालय रहा है। भिन्न-भिन्न विषयों पर हिन्दी में शोध करने वाले या हिन्दी विषय में एम. ए. की परीक्षाएँ देने वाले विद्यार्थी इस संस्था के सदस्य हैं। सावंत वाड़ी, बेल गाँव तथा कर्नाटक आदि भागों से भी इस पुस्तकालय के सदस्य बन गये है। इसमें लगभग ८ हजार पुस्तकें हैं तथा पाठकों की संख्या ११सौ है। पुस्तकालय का समय सायं साढे चार बजे से साढे सात बजे तक होता है, अवकाश के दिन पुस्तकालय बन्द रहता है।

मंडगाँव में गोमंतक विद्यालय निकेतन नामक और भी एक संस्था काम करती है। उस में जनरल लायब्रेरी है परन्तु गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीट में केवल हिन्दी की ही पुस्तकें हैं। कोमुनिदाद बिल्डिंग में राष्ट्रभाषा विद्यापीट का कार्यालय, पुस्तकालय तथा संस्कृत प्रचारिनी सभा का हाल है। शेष बिल्डिंग में अलग-अलग कार्यालय, बैंक, आर. टी. ओ, कौमुनिदाद कार्यालय तथा कृषि विभाग का कार्यालय आदि हैं।

विद्यापीठ का अध्यक्ष गोवा का मुख्य मंत्री होता है। यह पद स्थायी है। इसका चुनाव नहीं होता। इस समय विद्यापीठ के अध्यक्ष भूतपूर्व मुख्यमंत्री प्रताप सिंह राव जी राणे हैं। पांच सालों में चार मुख्य मंत्री बदल गये हैं। इसलिए श्री राणे जी को पहला मुख्य मंत्री होने के नाते अध्यक्ष रखा गया है क्योंकि वह पांच साल तक चलता है। पांच साल के बाद विधान सभा का चुनाव होता है।

विद्यापीठ में दो उपाध्यक्ष होते हैं हर तीन वर्ष में इनका चुनाव होता है। इस समय श्री माधव पंडित तथा श्री प्रोफैसर जी. एम. ए. शेख हैं। विद्यापीठ के सचिव प्रोफैसर मोहन दास सुर्लरकर तथा सहसचिव विनायक राघोबा नार्वेकर, खजान्ची श्री अनिल बसन्त पै हैं। कार्य अध्यक्ष श्री चन्द्रकांत केणी हैं और सदस्य श्री शाबी शिरोडकर (२) श्री पांडुरंग रा. शिरगांवकर (३) श्री विलास सो. सुर्लकर (४) श्री श्रीधर वैरेंकर (५) सौ.पी.सी.एम. पाशेको (६) सौ. लीला गामतोंडे हैं।

विद्यापीठ के लायब्रेरियन श्री जगन्नाथ मांदरेकर तथा क्लर्क सिमला फड़के

और कार्यालय प्रबन्धक श्री विनायक राघोबा नार्वेकर जी हैं। प्रतियोगिताओं का संचालन कार्य कुमारी विजया पै दुंघट करती हैं। विद्यापीठ की त्रैमासिक पत्रिका "गोमांचल" निकलती है। इसके प्रबन्ध सम्पादक मोहनदास सो. सुर्लकर, सम्पादक मंडल श्री चन्द्रकांत केणी व श्री माधव वा. पंडित हैं।

विद्यापीठ का सब कार्य आनरेरी होता है। केवल क्लर्क और लायब्रेरियन को नोमिनल वेतन मिलता है। दिन में सब लोग नौकरी करते हैं और अवकाश के समय सांय काल साढे चार से साढे सात बजे तक यहाँ आकर आनरेरी कार्य करते हैं। सब काम स्वेच्छा से होता है। किसी का कोई बन्धन नहीं है। यदि किसी को किसी दिन कोई काम हो तो न आये। प्रायः सभी लोग अध्यापक हैं। कार्यालय प्रबन्धक विनायक राघोदा नार्वेकर "पापूलर हाई स्कूल" मडगाँव, गोवा में अध्यापक हैं उन्होंने ही मुझे गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ की उपरोक्त जानकारी दी।

गोवा (गोमतक)

गोमंतक का अर्थ गोवा से है। पहले गोवा को गोमंतक ही कहा जाता था जिसका अर्थ "ऊपर का भाग" है। परशुराम ने यहाँ बाण मारा था। यहाँ एक स्थान है जिसे बनावली कहते हैं। वहाँ पर तीर मारा था। कहा जाता है कि परशुराम घूमते फिरते कोंकण तट पर पहुँचे थे। उन्हें यह स्थान बहुत पसंद आया परन्तु समुद्र और पश्चिमी घाट की पर्वत शृंखला के बीच भूमि तंग थी। इसलिए परशुराम ने समुद्र में अपना बाण चलाया और जहाँ बाण गिरा, वहाँ पानी सूख गया और बहुत उपजाऊ भूमि हो गई। इसी उपजाऊ भूमि का नाम गोमंतक अथवा गोवा पड़ा था। यह ३६३५ वर्ग कि०मी० क्षेत्र में फैला हुआ है। यहाँ का एक तिहाई हिस्सा काजू के वृक्षों से भरा है। नारियल के वृक्षों की कतारें दर्शकों को आकर्षित करती हैं। प्रायः अंगूर और काजू की शराब बनाई जाती है। अंगूर की शराब की बोतल केवल १६ रुपए में मिल जाती है। काजू की शराब जिसे फैनी बोलते हैं, ३०, ३५ रुपए में मिल जाती है। ब्रांडी की बोतल ४०, ४५ रुपए में मिल जाती है। यहाँ पर काजू भी सस्ता है।

गोमंतक राष्ट्र भाषा विद्यापीठ के निकट ही मार्किट है। यह मार्किट दिल्ली के सदर बाजार की तरह है जहाँ पर हर चीज बड़ी बहुतायत तथा उचित कीमत पर मिल जाती है। हमने इसी मार्किट में मूसा रफियो कैथ्यू सैंटर जिसके मालिक अमीन अबी मूसा हैं, से १६० रुपए प्रति किलो काजू खरीदे थे। यहाँ के दुकानदार बहुत ईमानदार हैं। एक दुकान से मैंने एक रुपए का एक बिस्कुट लिया। अच्छा लगने पर मैंने उसे १० रुपए का नोट देकर नौ बिस्कुट और देने के लिए कहा लेकिन

उसने ढाई सौ ग्राम बिस्कुट तोलकर जो लगभग ११ बिस्कुट हो गये थे देकर ढाई रुपए वापिस कर दिये। यहाँ के होटल भी अधिक मंहगे नहीं हैं। हम गोमंतक विद्यापीठ से थोड़ा आगे, बापिसट रोड पर होटल गोल्ड स्टार में ठहरे थे जिसमें कम्फर्ट सिंगल बैड रूम ५०/-रुपए तथा डबलबैड कम्फर्ट रूम ८०/-में मिल जाता है। प्रत्येक कमरे में टेलीफोन लगा है। किसी चीज की आवश्यकता है। नौ नम्बर डायल करो और रिशैपशन से तुरन्त सामान की व्यवस्थास की जाती है। १० प्रतिशत सर्विस चार्ज किया जाता है। होटल के कर्मचारी बहुत इमानदार तथा सेवाभाव वाले हैं। होटल के नीचे कामत कैफे, कार्पे हाउस हैं। यहाँ पर खाने के लिए १३ रुपए में थाली मिलती है जिसमें ५ सब्जियां की कटोरी, एक दही की कटोरी, ५ पूरी तथा दो कटोरी चावल मिलता है जिसमें खूब अच्छी तरह पेट भर जाता है।

गोवा जाने के लिए हजरत निजामुद्दीन से १२ बजकर २५ मिनट पर गोवा एक्सप्रैस चलती है जो आगरा, ग्वालियर, भोपाल, भुसावल, मनमाड़ होती हुई बरास्ता पूना सतारा दूसरे दिन रात्रि नौ बजे मिरज पहुँचती है। मिरज से आगे वास्कोडिगामा तक छोटी लाइन है इसलिए गोवा एक्सप्रैस मिरज में ही रुक जाती है और मिरज से दूसरी ट्रेन उसकी सवारियों को लेने के लिए तैयार खड़ी रहती है। सारी सवारियाँ उतरकर उस ट्रेन में बैठ जाती हैं। सब का आरक्षण तथा सीटों के नम्बर उसी प्रकार रहते हैं। वह ट्रेन सारी रात चलकर बेल गाँव होती हुई प्रातः ६ बजे मडगाँव तथा सात बजे वास्कोडिगामा पहुँच जाती है। दिल्ली से वास्कोडिगामा का एक तरफ का द्वितीय श्रेणी का किराया २५० रुपए तथा प्रथम श्रेणी का किराया १०७६ रुपए है। लगभग ४५ घंटे का सफर है। दिल्ली से वास्कोडिगामा की दूरी २१४७ कि०मी० है।

गोवा के मुख्य चार भाग हैं:---मडगाँव या मारगोवा, पणजिम (राजधानी) मपूसा (ओल्ड गोवा) वास्को। चारों लगभग ३०, ३० कि०मी० के फासले पर हैं। लोकल बसें चलती हैं। मडगाँव गोवा को मारगोवा भी कहते हैं। यहाँ से पणजिम या मापूसा या वास्को जाने का किराया पांच रुपए है। वास्को में रेलवे स्टेशन तथा हवाई अड्डा तथा बागमेलो नाम की बीच है। पण जी से तीन कि०मी० पर **मीरामार** नाम की बीच है और मीरामार से चार कि०मी० पर **दोमा पाऊल** नाम की बीच हैं तथा ८ कि०मी० पर **कलंगूट** बीच है। मारगोवा या मडगाँव में लगभग ८ कि०मी० पर **कोलवा** बीच है इनके अतिरिक्त **अंजना** बाग, **कैडेलिम** इत्यादि बीच हैं।

वास्तव में गोवा समुद्री बीचों की रानी है। प्रायः पर्यटक टैंशन मुक्त होने

के लिए गोवा जाते हैं और सारा-सारा दिन एकान्त समुद्री तटों की दूर-दूर तक फैली सुनहरी रेत पर लेटकर आराम करते हैं। यहाँ की खूबसूरत भूमि पर्यटकों के लिए स्वर्ग के समान है। पश्चिमी घाट के सेह्याद्रि पहाड़ों और अरब सागर के बीच स्थित गोवा प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को संजोये एक बहुत सुन्दर समुद्री सेरगाह है। यहाँ पर ज्वारी तथा मांडवी नदियों की छटा भी देखने योग्य है।

समुद्री सेरगाह के अतिरिक्त गोवा एक प्राचीन धार्मिक नगर है तथा सब धर्मों का सगम स्थल है। यहाँ के लोग बहुत शान्ति प्रिय, खुश-मिजाज तथा मिलजुल कर रहने वाले हैं। यहाँ कभी कोई झगडा नहीं होता। लोक नृत्य, संगीत, तथा कला के प्रेमी हैं।

यहाँ पर निम्नलिखित पूजा स्थल हैं:---

बाम जीसस की बेसिलिका:---१६वी सदी में निर्मित यह चर्च पुराने गाआ का सबसे महत्वपूर्ण व लोकप्रिय चर्च है। यहाँ प्रसिद्ध संत फ्रांसिस जेवियर का पार्थिव शरीर ५०० वर्षों से सुरक्षित रखा है। यहाँ पर मोमवती जलाने से सब मुरादे पूरी होती है।

सि केथेड्रल:---यह गोआ का प्राचीनतम, विशाल एवं सुन्दर चर्च है। इसमें ५ घटियाँ लगीं है। इनमें से एक सोने की घंटी है जो गोआ में सबसे बडी घंटी है तथा विश्व की सर्वश्रेष्ठ घटियों में से एक है।

इसके अतिरिक्त चर्च ऑफ सेट फ्रासिस, सेंट अगस्टीन टावर, चर्च ऑफ आवरलेडी आफ रोजरी आदि पवित्र पूजा स्थल हैं।

श्री भगवती मन्दिर:---पण जी से २८ कि०मी० दूर परनेम में मुख्य सडक पर स्थित यह मन्दिर ५०० वर्ष पुराना है। इसके प्रवेश द्वार पर काले पत्थरों के बने दो हाथी है। मन्दिर में देवी भगवती की अष्टभुजी मूर्ति है। यहाँ दशहरे का पर्व धूमधाम से मनाया जाता है।

श्री मंगेश मन्दिर:---यह छोटी-सी पहाडी पर भगवान् शिव का भव्य मन्दिर है जो गोवा के महत्त्वपूर्ण मन्दिरों में से एक है।

ब्रह्मा मन्दिर:---यह मन्दिर ५वीं सदी का बना हुआ है और भारत के गिने चुने मन्दिरों में एक है।

श्री गणेश गोपाल गणपति मन्दिर:---यह मन्दिर ४०० वर्ष पुराना है।

इसके अलावा गोपेश्वर मन्दिर, श्री महालक्ष्मी मन्दिर, श्री दामोदर मन्दिर श्री

दत्ता मन्दिर तथा श्री मल्लिकार्जुन भी देखने योग्य हैं।

जामा मस्जिदः---मारगोआ से २६ कि०मी० दूर स्थित यह मस्जिद पिछली शताब्दी में बनी थी। १६५६ में इसे नया रूप दिया गया। इसकी चार मीनारों और कंगुरों की शोभा देखने योग्य है।

साफा मस्जिदः---पौंडा तालुका की २७ मस्जिदों में से यह सब से प्रसिद्ध मस्जिद् है। इसं मस्जिद का नाम साफा साहौरी मस्जिद है। इसका निर्माण १५६० में हुआ था।

गोआ जाते हुए रास्ते में दूध सागर नाम का एक जल प्रपात है जिसमें गिरता हुआ पानी दूध की तरह दिखाई देता है। लेकिन ट्रेन रात के समय गुजरती है इस लिए दिखाई नहीं देता।

दक्षिण का धाम---रामेश्वरम्

रामेश्वरम् भारत के दक्षिण सिरे पर हिन्द महासागर के पास हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ है। यह चार धामों में से एक है तथा १२ ज्योतिर्लिंगों में मे भी एक है। यह केवल तीर्थ ही नहीं बल्कि एक पर्यटन केन्द्र भी है। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य तथा द्रविड़ वास्तुकला का विशाल रामनाथ स्वामी मन्दिर देखने योग्य है।

भगवान् विष्णु के अवतार श्री रामचन्द्र जी ने यहाँ भगवान शिव की पूजा की थी। रावण पर चढ़ाई करने से पूर्व अपनी संफलता के लिए शिव की पूजा की थी और लंका को जीतकर तथा रावण का वध करके वापिस आते समय ब्रह्मा हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए भी यहीं पर शिव की आराधना की थी। बदरीनाथ, द्वारिका और पुरी वैष्णव धाम हैं परन्तु रामेश्वरम् में वैष्णव और शैव धाराओं का संगम है।

रामेश्वरम् ६१.८ वर्म कि०मी० क्षेत्रफल का एक द्वीप यानि टापू है जो एक लम्बे पुल के जरिये मुख्य भूमि से जुड़ा है। यह द्वीप शंख के आकार का है। बंगाल समुद्र को हिन्द महासागर से जोड़ने वाला यह क्षेत्र भूगोल में पाक स्ट्रेटस यानि पाक जलडमरूमध्य कहलाता है।

रामेश्वरम् पाकजलडमरूमध्य के उत्तरी सिरे पर है जो शंख के अगले हिस्से के आकार का है। दक्षिणी सिरा धनुषकोटि कहलाता है जो शंख की पूंछ के आकार का है। जिस समय रावण ने अपने भाई विभीषण को राम का भक्त जानकर लंका से निकाल दिया था तो विभीषण ने यहाँ आकर राम से शरण माँगी थी। रामचन्द्र जी ने अपने धनुष की कोटि (नोक) से सेतुबन्ध को तोड़कर उसे अपने पास बुला लिया था। उसी स्थान को धनुषकोटि या धनुषकोड़ि कहा जाता है और यहीं पर सीता जी की अग्नि परीक्षा हुई थी। यह स्थान रामेश्वरम् से ३७ कि०मी० दूर है और रामेश्वरम् द्वीप का अन्तिम छोर है। यहाँ हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी

का संगम है। यह भी एक तीर्थ है। इसकी यात्रा के बिना रामेश्वरम् की यात्रा अधूरी है। श्री रामचन्द्र जी ने लंका जाते समय इसी स्थान पर समुद्र पर नल नील द्वारा पुल बनवाया था। यहाँ से लंका की दूरी केवल २४ कि०मी० है। रामेश्वरम् और धनुषकोटि से सप्ताह में दो बार स्टीमर श्री लंका जाता है। सेतुबन्ध उभरी हुई चट्टानों और बालु तटों की एक शृंखला है। कहीं चट्टानें पानी के नीचे डूबी हुई हैं तो कहीं पानी के ऊपर आ गई हैं। सेतुबन्ध के दोनों तरफ समुद्र भी केवल ११ मीटर गहरा है इसलिए जहाजों को अरब सागर से बंगाल की खाड़ी में आने जाने के लिए श्रीलंका का चक्कर लगाना पड़ता है।

धनुषकोटि में कौंदड़रामास्वामी मन्दिर है। मन्दिर में राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान जी की मूर्तियाँ हैं। क्षमा याचना की मुद्रा में खड़े विभीषण की मूर्ति है। धनुषकोटि में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य भी देखने योग्य हैं।

रामेश्वरम् मन्दिरः---इस मन्दिर को रामनाथ स्वामी मन्दिर भी कहा जाता है। यह विशाल मन्दिर १५१ एकड़ भूमि पर बना हुआ है और द्रविड़ शैली का उत्कृष्ट नमूना हे। इस मन्दिर के पूर्वी द्वार पर दस मंजिला और पश्चिम द्वार पर ७ मंजिला गोपुरम् बना हुआ है। इस मन्दिर के गलियारे ४ हजार फुट लम्बे हैं जो संसार में सबसे लम्बे गलियारे माने जाते हैं। प्रत्येक गलियारा ७०० फुट लम्बा है। गलियारों के स्तम्भों पर की गई नकाशी अपनी कला और सुन्दरता से दर्शकों को मुग्ध कर देती है। यह मन्दिर १२वीं सदी में बनना आरम्भ हुआ था। श्री लंका के राजा पराक्रम बाहु ने गर्भगृह बनवाया। बाद में अनेक राजा निर्माण और विस्तार कार्य कराते रहे और ३५० वर्षों में पूरा हुआ। यह भारत का अद्वितीय मन्दिर है।

गर्भगृह में रामानाथ स्वामी के प्रतीक के रूप में एक शिवलिंग है। कहा जाता है कि इसकी स्थापना और प्राण प्रतिष्ठा स्वयं श्री रामचन्द्र जी और सीता जी ने अपने हाथों से की थी। इसलिए इस शिवलिंग को रामलिंग भी कहा जाता है।

रामलिंग मन्दिर के दाहिनी ओर पार्वती जी का मन्दिर है। शुक्रवार के दिन पार्वती जी की प्रतिमा का शृंगार किया जाता है और सोने की पालकी में बिठाकर पूरे मन्दिर की परिक्रमा कराई जाती है।

रामलिंगम् मन्दिर के उत्तर में भगवान विश्वलिंगम् का मन्दिर है। उसके पास ही विशालाक्षी का मन्दिर है।

रामानाथ स्वामी मन्दिर के विस्तृत परिसर में अनेक मन्दिर हैं। इनमें शेषनारायण भगवान का मन्दिर उल्लेखनीय है। इस मन्दिर में भगवान विष्णु शेषनाग को बिछौना बनाकर शयन कर रहे हैं।

मन्दिर के परिसर में २२ कुंड हैं। इन कुंडों के जल में स्नान करने से अनेक रोग दूर हो जाते हैं। मन्दिर के पूर्वी गोपुरम् के सामने समुद्र तट है जो अग्नि तीर्थम् कहलाता है। यात्री पहले अग्नि तीर्थ (समुद्र) में स्नान करते हैं फिर उन्हीं गीले कपड़ों में मन्दिर में आकर उन सभी २२ कुंडों में स्नान करते हैं। भूमध्य रेखा निकट होने के कारण यहाँ सर्दियों में भी ठंड नहीं पड़ती। इसलिए बार-बार स्नान करने में कोई तकलीफ नहीं होती। तीर्थ यात्री रामेश्वरम् मन्दिर में हरिद्वार कनखल से गंगा जल लाकर भगवान शिव का अभिषेक करते हैं। जो यात्री अपने साथ गंगा जल नहीं लाते वे पैसे देकर मन्दिर से ही गंगा जल ले लेते हैं।

गंधमादन पर्वत (राम झरोका):---

रामेश्वरम् मन्दिर से एक डेढ़ कि० मी० दूर एक पहाड़ी है जिसे हनुमान का टीला भी कहते हैं। यहाँ हनुमान का मन्दिर है जिसमें बालक रूप हनुमान जी की मूर्ति है। इस पहाड़ी पर एक पत्थर पर श्रीराम चन्द्रजी के चरण चिह्न हैं इसलिये इसे राम झरोका भी कहा जाता है। इसी पहाड़ी पर हनुमान जी ने सुग्रीव आदि के साथ बैठ कर सीता की खोज करने के लिये लंका जाने की योजना बनाई थी और समुद्र लांघने का विचार किया था। यह भी कहा जाता है कि राजा पुरूरवा ने उर्वशी अप्सरा के साथ इसी पर्वत पर विहार किया था।

प्रवाह शैलमाला :--- रामेश्वरम् के आस पास मूंगे की चट्टाने हैं जो विश्व की सुन्दरतम शैलमालाओं में गिनी जाती हैं।

रामेश्वरम् के कण कण में भगवान श्री रामचन्द्र जी के चरणों का स्पर्श है। इसलिये यह द्वीप पावन पवित्र माना जाता है। यहाँ मन्द पवन में धूप नैवद्य समिद्या व अगरबतियों की महक पूरे द्वीप में फैली रहती है और मन्त्रोच्चारण, जयनाद, भजन कीर्तन के स्वरों की गूंज, शंख घड़ियाल, ढोल मजीरों और घंटो घड़ियालों की आवाज सारे वातावरण को आनन्दमय बनाती है। रात्रि में घृत से भरे अनगिनत दीप जलते हुए ऐसा मनोरम दृश्य उत्पन्न करते हैं कि जैसे महासागर अपने हाथों में दीपों से भरा शंख के आकार जैसा, आरती का थाल लेकर भगवान रामनाथ स्वामी की आरती उतार रहा हो।

रामेश्वरम् रेल मार्ग से जुड़ा है। बस से जाने वाले यात्रियों को मंडपम उतरना पड़ता है। पहले मंडपम से रामेश्वरम् तक बसें नहीं जाती थीं और रेल द्वारा रामेश्वरम् जाते थे जो लगभग १६ कि० मी० है। मगर अब बसें भी रामेश्वरम् तक जाती हैं।

मंडपम से मदुरै १७३ कि० मी० कौडेकनाल ३०७ कि० मी०, कन्या कुमारी

२६५ कि० मी०, तिरनाचिरापल्ली २५४ कि० मी०, उटी ५३७ कि० मी०, कांचीपुरम् ६१० कि० मी० और मद्रास ६२४ कि० मी० है।

रामेश्वरम् का निकटतम हवाई अड्डा मदुरै है।

रामेश्वरम् में ठहरने के लिये सस्ता होटल मिनाक्षी लाज है। रेलवे रिटायरिंग रूम तथा कई धर्मशालायें हैं। इनमें महावीर धर्मशाला, पोद्दार धर्मशाला, बंमी लाल जी अबीर चन्द की धर्मशाला, दूध वालों की धर्मशाला, बागला की धर्मशाला, तंजोर राजा की धर्मशाला आदि हैं।

रामेश्वरम् में खजूर तथा ताड़ के वृक्ष हें ओर मूगे की पहाड़ियाँ हैं। यहाँ पर ताड़ के पत्तों की बनी वस्तुएँ तथा शंख और मनके आदि बिकते हैं। ये सभी चीजें रामेश्वरम् मन्दिर के पास ही मिल जाती हैं।

हम टूरिस्ट बस द्वारा रामेश्वरम् गये थे और रामेश्वरम् मन्दिर देखकर उसी दिन वापिस मंडप में आकर कन्याकुमारी के लिये प्रस्थान किया था।

भारत का अन्तिम छोर-कन्याकुमारी

कन्याकुमारी हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है। यहाँ पर तीन ओर से भिन्न भिन्न सागर आपस में मिलते हैं, दाईं ओर से अरब सागर, बाईं ओर से खाड़ी बंगाल और सामने से हिन्दमहासागर। यहाँ पर भारत की सीमा समाप्त हो जाती है। उत्तर में काश्मीर और दक्षिण में कन्याकुमारी तक हम सब भारतवासी एक हैं।

कन्याकुमारी में बंगाल की खाड़ी में सूर्योदय होता है और अरब सागर में जाकर सूर्यास्त हो जाता है। इन सागरों में सूर्योदय तथा सूर्यास्त का दृश्य देखने योग्य है। प्रति वर्ष चैत्र पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त और चन्द्रोदय के दृश्य एक साथ देखे जा सकते हैं।

कन्याकुमारी मन्दिर

समुद्र के तट पर कन्याकुमारी (पार्वती) जी का विशाल मन्दिर है। मन्दिर में कन्याकुमारी (पार्वती) जी की बहुत सुन्दर प्रतिमा है। उनके नाक में एक हीरे का नग है। उसकी इतनी चमक है कि इस चमक में कई बार समुद्री जहाज रास्ता भूलकर मन्दिर की दीवार से टकरा गये थे। इसलिये मन्दिर का वह गेट जो समुद्र की ओर खुलता था, उसे बन्द कर दिया गया है।

मन्दिर में ठीक १२ बजे कन्याकुमारी जी की आरती उतारी जाती है और भोग लगाया जाता है। सौभाग्य से हम ठीक आरती के समय मन्दिर पहुँचे। उसी समय मन्दिर के द्वार खुले थे। हमने कन्याकुमारी जी की प्रतिमा के बिल्कुल निकट बैठकर दर्शन किये, उनकी आरती उतारी और पूजा की तथा चमकता हुआ हीरे का नग भी देखा। जब हम आरती उतार कर तथा मन्दिर परिक्रमा करके बाहर निकले तो वहाँ एक बहुत बड़े लकड़ी के बर्तन में से लकड़ी के कड़छे से केले के पत्तों पर खिचड़ी जैसा प्रसाद दे रहे थे। उन्होंने हमें इतना प्रसाद दिया कि हमारा

पेट प्रसाद में ही भर गया। दोपहर को खाना खाने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी।

सच मानो कि हमने कन्याकुमारी से जो मनोकामना मांगी थी वह शत प्रतिशत पूरी हुई।

कन्याकुमारी (पार्वती) जी पिछले जन्म में राजा दक्ष की पुत्री थी। उनका नाम सती था, राजा दक्ष ने उनका विवाह भगवान शिवशंकर महादेव से किया था। एक दिन राजा दक्ष अपने दामाद शिवजी से मिलने के लिये कैलाश पर्वत पर आये। उस समय भगवान शिव शंकर ध्यान मग्न बैठे थे। उनको अपने ससुर के आने का कोई पता नहीं चला और उन्होंने उनका उठकर स्वागत नहीं किया। इसे राजा दक्ष ने अपना अपमान समझा। उन्होंने शिव जी को अपमानित करने के लिये अपने घर कनखल (हरिद्वार) में महायज्ञ किया। उन्होंने सब देवी देवताओं तथा ऋषि मुनियों को यज्ञ में आने का निमंत्रण दिया। परन्तु अपनी पुत्री सती और शिवजी को नहीं बुलाया। सती ने यह समझकर कि अधिक कार्य होने के कारण मेरे पिता जी हमें बुलाना भूल गये होंगे, उसने शिवजी से अपने पिता के यज्ञ में चलने के लिये कहा। परन्तु शिवजी ने अपनी पत्नी सती को समझाया कि हमें बिना बुलाये नहीं जाना चाहिये। वहाँ पर जाने से हमारा अपमान होगा परन्तु सती जी नहीं मानी और वह अकेले ही अपने पिता के यज्ञ में चली गई। वहाँ पर उसके माता पिता ने उसका कोई आदर सत्कार नहीं किया और यज्ञ में महादेव जी का भाग नहीं निकाला। सती जी ने अपने पति के इस अपमान को सहन न करके यज्ञ के अग्नि कुंड में कूद कर अपने प्राण त्याग दिये। मरने से पूर्व सती जी ने भगवान से प्रार्थना की कि अगले जन्म में भी मेरा विवाह भगवान शिवशंकर महादेव से ही होना चाहिये।

भगवान शिवशंकर महादेव को जब सती जी के मरने की खबर मिली तो वह क्रोध में भर कर वहाँ आये और सती जी के मृत शरीर को लेकर ब्रह्मांड में घूमने लगे तब विष्णु भगवान ने शिव शंकर का मोह छुड़ाने के लिये अपने सुदर्शन चक्र से सती जी के मृत शरीर के टुकड़े-टुकड़ें कर दिये। उनके शरीर के टुकड़े ५१ स्थानों पर गिरे। ये ५१ स्थान शक्तिपीठ कहलाते हैं।

अगले जन्म में सती जी ने विन्ध्याचल पर्वत के घर जन्म लिया। उनका नाम पार्वती रखा गया। पार्वती जी की माता का नाम मैना था। पार्वती जी ने शिव जी को पाने के लिये कन्याकुमारी में जहाँ पर अब विवेकानन्द रोक है वहाँ पर बैठ कर घोर तपस्या की। नारद जी ने पार्वती जी की घोर तपस्या देख कर शिव जी को बताया कि पार्वती आपको अपना पति बनाने की इच्छा से घोर तपस्या कर

रही है। तब शिवजी ने पार्वती के पिता के पास आकर उसका कन्यादान मांगा। पार्वती के पिता ने शिव जी को अपनी कन्या का विवाह लगन दे दिया। जिस समय शिवजी अपनी बरात लेकर आये तो उनकी बरात इतनी बड़ी थी कि विवाह मंडप पर पहुँचते पहुँचते विवाह लगन का समय बीत गया और पार्वती जी कुंवारी रह गई। इसलिये इस जगह का नाम कन्याकुमारी पड़ा और यहाँ पर कन्याकुमारी जी का विशाल मन्दिर बनाया गया। यह मन्दिर बहुत प्राचीन है।

बाद में नारद जी के कहने पर पार्वती जी के पिता ने विवाह लगन बीतने पर भी पार्वती जी का विवाह शिवजी से कर दिया क्योंकि नारद जी ने उनको समझाया था कि शिवजी ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश, तीनों देवता हैं और उनके विवाह के लिये हर समय ही शुभ लगन होता है।

विवेकानन्द मैमोरियल (स्मारक)

समुद्र तट में १६०० फुट दूर समुद्र के बीच में एक पहाड़ी है। इसी पहाड़ी पर बैठकर पार्वती जी ने तपस्या की थी। यहाँ पर एक शिला पर पार्वती जी का चरण चिह्न है। इसलिये इस पहाड़ी को पदशिला कहा जाता था। लेकिन अब इस पहाड़ी को विवेकानन्द राक्स कहा जाता है। सन् १८६३ में स्वामी विवेकानन्द जी समुद्र में तैर कर इस पहाड़ी पर गये थे और यहाँ बैठकर तीन दिन तक बिना कुछ खाये पिये ध्यान मगन समाधि लगाये बैठे रहे थे। उन्होंने यहीं पर निर्णय लिया था कि वे पश्चिमी देशों में जाकर भारतीय संस्कृति का संदेश देंगे। १६७० में यह मैमोरियल सार्वजनिक दर्शन के लिये खोल दिया गया है।

विवेकानन्द मैमोरियल में स्वामी विवेकानन्द जी के गुरु रामाकृष्ण तथा स्वामी रामाकृष्ण की पत्नी सरोदा का मन्दिर है। एक बहुत बड़ा मैडिटेशन हौल है। यहाँ पर कुछ देर बैटकर मैडिटेशन करने से मन को अलौकिक शान्ति मिलती है। मैडिटेशन हाल के समीप ही एक पत्थर पर पार्वती जी के पैर का निशान है।

विवेकानन्द रॉक के चारों ओर समुद्र की उत्ताल तरंगें चट्टानों से टकरा कर फेन उगलती हुई मनमोहक दृश्य उत्पन्न करती है और स्वर्गिक आह्लाद से मन को रोमाचिंत कर देती है। ऐसा लगता है कि जैसे समुद्र की अनन्त लहरें भारत माता के चरण पखार रहीं है। और अपनी गर्जन से कन्याकुमारी की आरती उतार रही हैं।

विवेकानन्द रॉक जाने के लिये तट पर स्टीमर खड़े रहते हैं जो एक रुपया प्रति सवारी टिकट लेते थे। यह स्टीमर सवारियों को विवेकानन्द रॉक छोड़ देते

हैं और उधर से आने वाली सवारियों को ले आते हैं। वापसी का कोई किराया नहीं लगता।

गाँधी मैमोरियल कन्याकुमारी मन्दिर के एक किनारे पर गाँधी जी का स्मारक है। गांधी जी की अस्थियाँ सागर में विसर्जित करने से पहले जनता के दर्शनार्थ यहाँ रखी गई थीं। यह स्मारक १९५२ में उसी स्थान पर बना। इस स्थान पर २ अक्टूबर को सूर्य की किरणे सीधी पड़ती हैं। यहाँ पर सागर का जल चट्टानों से घिर कर एक झील-सी बन गई है। तीर्थ यात्री कन्याकुमारी के मन्दिर में जाने से पहले इस झील में स्नान करते हैं।

(१) सुचीन्द्रम् :— कन्याकुमारी से १३ कि० मी० शुचिन्द्रम में स्थानुमालायन कन्याकुमारी के आस-पास देखने योग्य स्थान विशाल मन्दिर हैं। इस मन्दिर को त्रिदेव (त्रिमूर्ति) मन्दिर कहते हैं। मन्दिर में एकलिंग हैं जिसे स्थानुमालायन कहते हैं। यह लिंग ब्रहमा, विष्णु तथा शिव को समर्पित है।

(२) नगर कोइल :— यह सुचीन्द्रम् से ५ कि० मी० और कन्याकुमारी से १८ कि० मी० है। यहाँ पर नागराज मन्दिर, जिसे नागेश्वर भी कहते हैं देखने योग्य है।

(३) पध्मनवपुरम् :— कन्याकुमारी से ३४ कि० मी० है। यहाँ उदयगिरी फोर्ट देखने योग्य है जो लगभग ३ कि० मी० है।

उपरोक्त सब स्थान कन्याकुमारी से त्रिवेन्द्रम् जाते समय मार्ग में देखे जा सकते हैं। त्रिवेन्द्रम् कन्याकुमारी से ८६ कि० मी० है।

त्रिवेन्द्रम्, मदुरै और रामेश्वरम् से कन्याकुमारी तक सड़क मार्ग है। निकट का हवाई अड्डा त्रिवेन्द्रम् में है। रेल द्वारा रामेश्वरम् से मदुरै, विरुधनगर और मनियाची होता हुआ रेल मार्ग तिरुनेलवली तक जाता है। तिरुनेलवली से कन्याकुमारी तक बसें आती जाती है जो ८० कि० मी० है।

कन्याकुमारी में ठहरने के लिये कई होटल तथा धर्मशालाएँ हैं। केपहोटल, केरलहाउस, तमिलनाडु, टूरिस्ट बंगला, ड्राइसी लॉज, पैलेस लॉज तथा मीनाक्षी भवन होटल हैं। हम नागेश्वरी होटल में ठहरे थे। यहाँ होटल के किराये सस्ते हैं।

मीनाक्षी मन्दिर-मदुरै (तमिलनाडू), कुम्भकोणम्

मदुरै रामेश्वरम् से १६४, तिरुचिरापल्ली से १५५, त्रिवेन्द्रम से ३३३, मद्रास से ४६२ और कोयम्बटूर से २२६ कि० मी० है। यहाँ पर ठहरने के लिये मारवाड़ी धर्मशाला, संतराम लॉज, कालिज लॉज, मंगम्मा चौल्ट्री और लाला चौल्ट्री है तथा अनेक होटल हैं।

मदुरै तमिलनाडू का सबसे प्राचीन नगर है। कहा जाता है कि ईसा से छटी शताब्दी पूर्व (लगभग ढाई हजार साल पहले) इस नगर की स्थापना कुलशेखर नामक पांडिया राजा ने की थी। जिस दिन इस नगर का नामकरण होना था, उस दिन भगवान शिव इस नगर में अवतरित हुए। उन्होंने लोगों को आशीर्वाद दिया और प्रसाद के रूप में इस नगर पर दैविक प्रसाद का छिड़काव किया। तभी से इस नगर को मदिरापुरी कहा जाने लगा जो अब मदुरै के नाम से जाना जाता है। इसे दक्षिण मथुरा भी कहा जाता है। यह नगर पूरे दक्षिण भारत का साहित्य, वास्तुकला और मूर्तिकला का केन्द्र रहा है। संगीत और नाटक में भी मदुरै सारे दक्षिण भारत में सबसे आगे रहा है।

प्राचीन मदुरै के मिस्र, रोम तथा युनान से व्यापारिक संबन्ध थे। वहाँ के कुछ निवासी मदुरै में बस गये थे और पांडीय राजाओं ने उन्हें अपने अंगरक्षक के रूप में नियुक्त किया हुआ था। पांडियों के बाद १६वीं शताब्दी से १७४३ तक मदुरै पर नायक राजाओं ने शासन किया।

इन सब बातों के अतिरिक्त मदुरै अपने विश्वविख्यात मीनाक्षी मन्दिर के द्वारा विदेशों में भी प्रसिद्ध है तथा भारी संख्या में श्रद्धालुओं एवम् पर्यटकों को आकर्षित करता है।

मीनाक्षी मन्दिर मीनाक्षी मन्दिर वाईगई नदी के दाक्षणी तट पर स्थित है। यह मन्दिर इतना विशाल है कि इसे नगर के अन्दर नगर कहा जाता है। इस मन्दिर

के चारों ओर नगर का विकास हुआ है। यह मन्दिर एकं विस्तृत आयातकार क्षेत्र ६५००० वर्ग मी० में बना हुआ है।

मीनाक्षी मन्दिर के ११ गोपरम हैं। यह गोपुरम नौ मंजिले हैं तथा बीस मीटर से भी अधिक ऊँचे हैं। दक्षिण भारत के मन्दिरों में प्रवेश द्वार के ऊपर कई-कई मंजिले टावर बना दिये जाते हैं। इन टावरों को ही गोपुरम कहा जाता है।

मीनाक्षी मन्दिर के गोपुरम में सबसे ऊँचा गोपुरम दक्षिण का है। यह २०० फुट ऊँचा है और पश्चिम का गोपुरम् सब से सुन्दर है। मन्दिर के परकोटे में दो मुख्य मन्दिर हैं एक मीनाक्षी (पार्वती) जी का और दूसरा सुन्द्रेश्वर (शिव) का। पूर्वी गोपुरम सुंदरेश्वर मन्दिर के ठीक सामने है। मन्दिर में एक पवित्र तालाब है जो कि २४०० वर्ग मी० में बना हुआ है। इसे पोतरामराइकुलम कहते हैं। इस तालाब में स्नान करके मीनाक्षी देवी के दर्शन करते हैं। मीनाक्षी देवी मन्दिर के निकट ही, मीनाक्षी देवी के स्वामी सुन्दरेश्वर का मन्दिर है। मीनाक्षी देवी के दर्शन करके सुन्दरेश्वर भगवान के दर्शन करने चाहियें, नहीं तो यात्रा अपूर्ण मानी जाती है।

मुख्य मन्दिर के पूर्व में शतस्तम्भ मंडप है जिसमें १२० स्तम्भ हैं। प्रत्येक स्तम्भ पर नायक राजाओं और रानियों की बहुत सुन्दर मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इसके समीप ही मीनाक्षी कल्याण मंडप है। यहाँ पर चैत्रमास में साल में एक बार मीनाक्षी और सुन्दरेश्वर का विवाह उत्सव मनाया जाता है जो दस दिन तक चलता है।

मीनाक्षी और सुन्दरेश्वर का विवाह हो जाने के पश्चात् अनेक वर वधुओं का सामूहिक विवाह होता है जो बहुत कम खर्च में हो जाता है।

मीनाक्षी मन्दिर देखने के लिये हजारों श्रद्धालु लोग प्रतिदिन आते हैं। इस मन्दिर की विशेषता यह है कि कोई भी व्यक्ति जितनी बार इस मन्दिर को देखता है उतनी ही बार उसे उसमें कुछ न कुछ नया मिलता है। गोपुरों पर देवी-देवताओं, पशु-पक्षियों और मानव आकृतियों की असंख्य मूर्तियाँ देखते ही बनती हैं।

आसपास के दर्शनीय स्थान

तिरुपरनकुन्दरमः---मदुरै से आठ कि० मी० दूर अगला रेलवे स्टेशन तिरुपरनकुन्दरम है। यहाँ स्कन्धमलै नाम की पहाड़ी है। इस पहाड़ी पर गुफा मन्दिर है।

मार्यम्पन तेप्पकुलमः---मदुरै से ३१ कि० मी० दूर तेप्प सरोवर है। यह भारत का सबसे बड़ा मन्दिर सरोवर है। इसका निर्माण सन् १६४६ में थीरुमलाइ् नायक राजा ने करवाया था। जनवरी-फरवरी में यहाँ पर तेप्पम त्योहार मनाया जाता है

जो इस तालाब के निर्माता के जन्म दिन पर आरम्भ होता है। पौष पूर्णिमा को मदुरै से मीनाक्षी देवी की रथयात्रा यहाँ तक आती है।

कोडइकनालः---यह मदुरै से सड़क द्वारा १२८ तथा त्रिचुरापल्ली से १६२ कि० मी० दूर है। निकट का रेलवे स्टेशन कोडइकनाल रोड है। यहाँ से कोडइकनाल ८० कि० मी० दूर है। यहाँ से कोडइकनाल ८० कि० मी० है और बसें आती जातीं रहती हैं। यह दक्षिण भारत का हिल स्टेशन है।

पेरीयारलेकः---यह मदुरै से १४५ कि० मी० दूर है। कोचीन, त्रिवेन्द्रम् और कोट्टियम से भी बसें चलती रहती हैं। यह एक झील है। इस झील के पास हाथियों, चीतों और शेरों को खुला देखा जा सकता है।

कुम्भकोणम्

तंजौर से ३६, चिदम्बरम से ६६, पांडिचेरी से १६०, और मद्रास से ३११ कि० मी० दूर कुम्भकोणम् है।

कुम्भकोणम में कुम्भेश्वर का विश्वविख्यात मन्दिर है। इसका गोपुर ११ मन्जिला है और १४७ फुट ऊँचा है। शंकराचार्य की कामकोटि पीठ भी इसी में स्थित है।

इसके अतिरिक्त यहां शार्गपाणि मन्दिर नागेश्वर मन्दिर, रामा स्वामी मन्दिर तथा महामद्यम् सरोवर भी दर्शनीय पूजा-स्थल हैं। यह नगर कावेरी के तट पर बसा हुआ है। यात्री कावेरी में जल न होने पर महामद्यम् सरोवर में स्नान करके मन्दिरों के दर्शन करते हैं।

दक्षिण की सप्तपुरी तथा शक्तिपीठ---कांचीपुरम (तमिलनाडू), तंजौर, चिदम्बरम्

कांचीपुरम, मद्रास से ६७ और चंगलपट्टी से ३५ कि० मी० दूर है। कांचीपुरम् को कांची भी कहा जाता है। पहले इस का नाम कांजीवरम् था। मध्यकाल में यह नगर रेशम की साड़ियों (कांजीवरम् की साड़ियों) के लिये प्रसिद्ध था। अब भी यहाँ रेश्म की साड़ियों का उद्योगं है।

कांचीपुरम हिन्दुओं की सात पवित्रतम पुरियों में से एक है। इसलिये यह काशी जितना पवित्र तीर्थ है। इसे दक्षिण काशी भी कहा जाता है।

कांचीपुरम ५१ शक्तिपीठों में से भी एक है। जगद्गुरू शंकराचार्य और रामानुजाचार्य जैसे महान दार्शनिकों ने अपने जीवन का अधिक समय यहाँ बिताया कहा जाता है कि चाणक्य का जन्म स्थान भी यहीं है।

कांचीपुरम में अनेक मन्दिर दर्शनीय हैं जिनमें मुख्य मन्दिर निम्नलिखित हैं।

(१) एकाम्बरेश्वर मन्दिरः---यह यहाँ का मुख्य मन्दिर है। इसे एकाम्बरनाथ और एक्रामेश्वर मन्दिर कहते हैं। यह विशाल शिव मन्दिर है। यह मन्दिर सातवीं शताब्दी में पल्लव राजाओं ने बनवाया था और चोल राजाओं ने इसका विस्तार किया था। इसका बड़ा गोपुर विजयनगर के राजा कृष्ण देव राय ने १५०६ में बनवाया था। मन्दिर के निकट सर्वतीर्थ सरोवर है, यह कांचीपुरम का मुख्य तीर्थ है।

(२) कैलाशनाथ मन्दिरः---यह मन्दिर एकाम्बरेश्वर मन्दिर के समीप ही है और भारत का सबसे प्राचीन तथा श्रेष्ठतम मन्दिर है। इसे ७०० ई० में नरसिंह वर्मन ने बनवाया था। यहाँ की अद्भुत मूर्ति कला देखने योग्य है।

(३) कामाक्षी मन्दिरः---इस मन्दिर में कामाक्षी (पार्वती) जी की सुन्दर मर्ति है। यही स्थान ५१ शक्तिपीठों में से एक है।

(४) वरदराज (विष्णु) मन्दिरः---यह मन्दिर भगवान विष्णु का मन्दिर है। इसे ।वेजय नगर के राजाओं ने बनवाया था। इसके सहत्र स्तम्भ मंडप के स्तम्भों पर खुदाई का काम देखने योग्य है।

(५) बैकुंठ पेरुमाल मन्दिरः---यह मन्दिर भी भगवान विष्णु का है। इसके स्तम्भों पर पल्लव राजाओं के जीवन की झाँकियाँ अंकित हैं।

तंजौर

तंजौर (तंजबूर) यहाँ वृहदीश्वर मन्दिर है। यह मंदिर दक्षिण भारत का सर्वश्रेष्ठ है और भारत का सबसे ऊँचा भव्य तथा विशाल मंदिर है। यह विश्वविख्यात मंदिर है। इसे चौल राजा प्रथम्, राजराजा महान ने ६८५ में बनवाना आरम्भ किया था जो १२ साल में बनकर तैयार हुआ। इस मंदिर की विशेषता यह है कि निज मंदिर का शिखर गोपुरों से ऊँचा है जो २१६ फुट ऊँचा है तथा शिखर चोटी पर २२४० मन का एक ही पत्थर का बना हुआ कलश स्थापित है, जबकि दक्षिण भारत में गोपुर मंदिर के शिखर से इतने ऊँचे होते हैं कि उनसे मंदिर का शिखर ढक जाता है। इस मन्दिर का सौन्दर्य अद्वितीय है।

यह नगर कावेरी के तट पर है मद्रास से ३५१, कांचीपुरम् से ३३०, तिरुच्चिरापल्ली से ५० तथा मदुरै से २०५ कि० मी० है।

चिदम्बरम्

यह कुम्भकोणम से ६६, तंजौर से १०८, पांडिचेरी से १२१ और मद्रास से २४२ कि० मी० है। यहां पर विश्वविख्यात "नटराज मन्दिर" है। यह विशाल मन्दिर है और कई परकोटों के बीच में है। पहले परकोटे के गोपुर छोटे हैं। दूसरे परकोटे के पूर्वी और पश्चिमी गोपुर ऊँचे हैं। इन गोपुरों पर भरत मुनि के "नाटयशास्त्र" पर आधारित "भारतनाट्यम" शैली की १०८ मुद्राओं में नर्तक-नर्तकियों की मूर्तियाँ बनी हुई हैं।)

निजमन्दिर में "नटराज या नटेश्वर" (नृत्य करते हुए शिव) की मूर्ति है। दायें हाथ को अभय मुद्रा में किये, एक पैर ज्वालाओं के चक्र में उठाए तथा दूसरे पैर से राक्षस को दबाये हुए नृत्य कर रहे हैं।

मन्दिर के घेरे में वरदराज (पेरुमाल) मन्दिर, शिवगंगा सरोवर, सहस्त्र स्तम्भ मंडप तथा अनेक मंडप, भवन और मन्दिर है। चिदम्बरम् दक्षिण भारत का तीर्थ है। यहां का शिवलिंग आकाशलिंग का प्रतीक है।

एशिया में प्राचीनतम चर्च-मद्रास, महाबलीपूरम

भारत में पहला सबसे बड़ा नगर कलकत्ता दूसरा बम्बई और तीसरा मद्रास है। यह नगर लगभग ३५० साल पहले बसा था। यह दिल्ली से २१६२, बंम्बई से १२७६, कलकत्ता से १६६२ और त्रिवेन्द्रम् से ६२१ कि० मी० है।

मद्रास ईस्ट इंडिया कम्पनी का पहला मुख्यालय है। अंग्रेजों ने चन्द्रगिरी के राजा से भूमि अनुदान में लेकर अपनी बस्ती यहाँ बनाई थी तथा १६५३ में किला बनाया था जिसे फोर्ट (सेंट) जार्ज कहते हैं। इस किले में ब्रिटिश काल के सिक्के तथा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज रखे हैं।

मद्रास में पुर्तगालियों द्वारा १५०४ में बनाया हुआ सेंटोम कथीड्रल (रोमन कैथोलिक चर्च) है। पहले इस चर्च में ईसामसी के दूत सेंट टामस के अवशेष सुरक्षित रखे थे जो अब सेंट टॉमस चर्च में रखे हैं।

सेंट टॉमस माउंट चर्च मीना बक्कमा एअर पोर्ट के पास है। सेंट टॉमस की हत्या यहीं हुई थी। उनके अवशेष यहीं पर रखे हैं।

मद्रास में कपालेश्वर मंदिर वेंकटेश्वर (बाला जी) तथा पार्थ सारथी मंदिर धार्मिक पूजा स्थल हैं। इन के अतिरिक्त मद्रास में देखने योग्य स्थान निम्नलिखित हैं।

(१) फोर्ट सेंट जार्ज तथा फोर्ट म्यूजियम।

(२) सेंट मेरीज चर्च (**यह चर्च भी फोर्ट के अन्दर ही है यह चर्च १६८० में बना था जो एशिया का प्राचीनतम् एंगलीकन चर्च माना जाता है।**)

(३) विक्ट्री मेमोरियल, हाई कोर्ट बिल्डिंग, रिजर्व बैंक बिल्डिंग, सचिवालय, विधान सभा भवन, लाइट हाउस, पोर्ट हारबर, मरीना बीच, चिपोक पैलेस, गवर्मैंट

अस्टेट, चिल्डर्न पार्क, गाँधी मंडप, **थियोसोफिकल सोसायटी (डॉ० ऐनीबेसेंट द्वारा स्थापित की हुई अध्यात्मिक संस्था का मुख्यालय)**

(४) कला क्षेत्र (यह मद्रास का प्रसिद्ध कला स्कूल है जहाँ शास्त्रीय नृत्यों की शिक्षा दी जाती है। मद्रास दक्षिण के शास्त्रीय संगीत की शैली) "कर्नाटक संगीत" और शास्त्रीय नृत्य **"भरत नाट्यम्"** का भी केन्द्र है।

(५) गवर्मेंट म्यूजियम (६) नेशनल आर्ट गैलरी (७) अन्ना स्कवेयर (यहाँ अन्ना दुराई की समाधि है)

महाबलीपुरम (मामल्लपुरम)

मद्रास से ५६ कि० मी० चेंगलपट्टी है। चेंगलपट्टी से महाबलीपुरम ३० कि० मी० है। यहां पल्लव राजाओं ने ७वीं शताब्दी में अनेक मन्दिर बनवाये। पल्लव राजाओं के बाद चालुक्य तथा राष्ट्रकूट ने यहां पर शासन किया और वे यहां के कलाकारों को अपनी राजधानियों में ले गये और ऐसे ही मन्दिर बनवाये। **एलोरा के गुफा पट्टडकल और भारत के सुदूर दक्षिण-पूर्व के मन्दिर इन्हीं कलाकारों ने बनाये थे।**

महाबलीपुरम में चार तरह के मन्दिर हैं (१) रथ, (२) मंडप, (३) तट मन्दिर (४) गंगावतरण ये मन्दिर छोटे-छोटे हैं जो समुद्र-तट पर पड़ी चट्टानों को तराश कर बनाये गये हैं। वास्तव में ये मन्दिर तत्कालीन मन्दिरों के "माडल" (नमुने) हैं। ये ठांस चट्टानों को छैनी-हथोड़े से तराश-तराश कर इस तरह बनाये गये हैं जैसे आभूषणों पर जड़ाई का काम किया गया हो। हजारों वर्ष बीतने पर भी इनकी सुन्दरता में कोई फर्क नहीं आया।

रथ मन्दिरः---ये कुल आठ हैं। ये सब एक ही स्थान पर हैं। द्रोपदी, भीम, अर्जुन, धर्मराज, सहदेव, (दक्षिण में) हैं। द्रोपदी-रथ में दुर्गा मन्दिर है। उत्तर में गणेश-रथ तथा उत्तर पश्चिम में "वलयनंकुटई" और "पिडारी-रथ" हैं।

मंडपः---ये भी आठ हैं। इनके 'नाम महिषासुर, वराह, कृष्ण, पांडव, रामानुज, शिव, धर्मराज और कोटीकल हैं। ये एक प्रकार से "हाल" हैं। लोग इन्हें "गुफा" कहते हैं।

तट मन्दिरः---यह समुद्र-तट पर एक शिव-मन्दिर है। सूर्य की पहली सीधी किरणें शिवलिंग पर जाती है। प्रवेश द्वार समुद्र की ओर है ताकि यहां से गुजरने वाले नाविक दूर से ही प्रणाम कर सकें।

गंगावतणः---यहां गंगावतरण का दृश्य दिखाया गया है।

मल्लिकार्जुन (ज्योतिर्लिंग),

मल्लिकार्जुन तामिलनाडू प्रान्त के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के निकट श्री शैल पर्वत पर है। यह द्वादश (१२) ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इसे दक्षिण का कैलाश कहा जाता है।

मल्लिकार्जुन पहुँचने के लिये मद्रास प्रान्त के करनूल नामक स्टेशन पर पहुँचते हैं। करनूल से ४४ मील आत्माकूर तक बस जाती है। आत्माकूर से ३० मील पेंचखू जाते हैं। यह जंगल का खराब रास्ता है और बेलगाड़ियों में जाना होता है। पंचखू से श्रीशैल पर्वत की चढ़ाई आरम्भ होती है। थोड़ी दूर ऊपर चढ़ने पर एक जंगली मुखिया प्रत्येक यात्री से कर वसूल करता है। पांच मील की चढ़ाई चढ़कर उतार आता है और भीम तोला कुंड मिलता है। भीमतोला से ३ मील की कड़ी चढ़ाई समाप्त होकर एक मील आगे मल्लिकार्जुन का मन्दिर आता है। मन्दिर के अंदर भी एक कुंड है। मल्लिकार्जुन मन्दिर के पास ही श्री पार्वती जी का मन्दिर है। पार्वती जी को भमरावा कहते हैं। दोनों मन्दिरों के दर्शनों के लिये भी कुछ कर देना पड़ता है।

मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के विषय में कथा इस प्रकार है कि एक समय भगवान शिव और पार्वती ने यह निश्चय किया कि उनके दोनों पुत्र स्वामी कार्तिकेय और गणेशजी में से किसका विवाह पहले किया जाये। जो पृथ्वी की परिक्रमा पहले कर आयेगा, उसका विवाह पहले होगा। स्वामी कार्तिकेय उसी समय परिक्रमा पर चले गये परन्तु गणेश जी ने पार्वती जी की परिक्रमा कर दी और कहा कि पृथ्वी माँ का रूप होती है इसलिये मैंने परिक्रमा कर ली। इस बात को मान कर गणेश जी का विवाह पहले कर दिया। कई वर्ष के पश्चात् स्वामी कार्तिकेय पृथ्वी की परिक्रमा

करके वापिस आये तो पता चला कि गणेशजी का विवाह हो गया। उनको बहुत क्रोध आया और वह दक्षिण में क्रौंच पर्वत पर चले गये। शिव और पार्वती कार्तिकेय को मनाने के लिए क्रौंच पर्वत पर गये। माता-पिता का आगमन सुन कर स्वामी कार्तिकेय क्रौंच पर्वत से कई मील दूर दूसरे पर्वत पर चले गये। भगवान शिव क्रौंच पर्वत पर जाकर ज्योतिस्वरूप लिंग के रूप में हो गये और मल्लिकार्जुन के नाम से प्रसिद्ध हुए।

पदमनाभ-मन्दिर-त्रिवेन्द्रम्, कोचीन

त्रिवेन्द्रम् का नाम पुराणों में "अनन्तवनम्" वर्णित है। परन्तु इसका शुद्ध नाम "तिरुअनन्तपुरम्" है। यह केरल की राजधानी है तथा हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। यहाँ की जनसंख्या लगभग ५ लाख है। यह नगर पहाड़ियों पर बसा हुआ है। यहाँ से १३ कि० मी० केरल का सुप्रसिद्ध कोवलम बीच है।

यह एक धार्मिक तथा शांत नगर है। यात्री अपनी अन्तरात्मा का अवलोकन करने और परमेश्वर का मनन करने तथा शांत और अध्यात्मिक जीवन की तलाश में यहाँ आते हैं। यह भारत का सबसे साफ सुथरा तथा कम खर्च का नगर है। यहाँ पर प्रत्येक चीज सस्ती है। खाने पीने की चीजों से लेकर साड़ियाँ चप्पल, दस्तकारी की चीजें, हाथी दांत से बनी चीजें, लकड़ी की बनाई हुई चीजें काफी सस्ती मिल जाती हैं।

पदमनाभ मन्दिरः---यह भगवान विष्णु का मन्दिर है और प्राचीन दक्षिण की वास्तुकला का नमूना है। यह रेलवे स्टेशन से लगभग १/२ कि० मी० दूर नगर के बीच में है। मन्दिर के प्रवेश द्वार के ऊपर ७ मंजिल जितना ऊँचा गोपुरम है। मन्दिर में अनेक मंडपों को पार करने के बाद काले पत्थर का बना गर्भगृह है। जिसमें २२ फुट लम्बी भगवान विष्णु की शेषनाग पर लेटी हुई मूर्ति है।

गर्भगृह के तीन द्वार हैं। पहले द्वार में भगवान विष्णु जी का शेषनाग के फनों के नीचे शीश दिखाया गया है और शयन करते हुए उनका एक हाथ नीचे लटका हुआ है। उनके उस हाथ के नीचे शिवलिंग है। बीच के द्वार में भगवान विष्णु जी की शेषनाग पर शयन करते हुए नाभि के दर्शन होते हैं। उनकी नाभि से कमल का फूल उत्पन्न होकर ब्रह्मा जी की उत्पत्ति दिखाई गई है तथा कमल पर विराजमान ब्रह्माजी के दर्शन होते हैं। तीसरे द्वार पर भगवान विष्णु जी के शेषनाग पर शयन

करते हुए चरणें के दर्शन होते हैं।

यह मन्दिर ७ मंजिल का है। मन्दिर के गलियारों में ३६८ पत्थर के स्तम्भ हैं जिनपर बहुत सुन्दर सुन्दर कलात्मक मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। मन्दिर के परिसर में और भी कई मन्दिर हैं। एक म्यूजिकल साउंड मन्दिर है। इसमें चारों तरफ लकड़ी के स्तम्भ है। इन स्तम्भों पर भी सुन्दर सुन्दर मूर्तियाँ बनी हुई हैं। एक स्तम्भ पर जरा-सी टंकार करते ही दूसरे स्तम्भ पर म्यूजिक की तरह सुनाई देती है। इस मन्दिर को देखने के लिये ५० पैसे टिकट है।

यह मन्दिर १२ बजे बन्द हो जाता है। उसके बाद सायंकाल ५ बजे खुलता है। मन्दिर में पुरुषों को कमीज बनयान उतार कर केवल एक लुंगी पहन कर जाना होता है जो मन्दिर के साथ में ही बने एक कक्ष में दो रुपये किराये पर मिल जाती है। स्त्रियों को कपड़े बदलने की आवश्यकता नहीं।

मन्दिर के प्रवेश द्वार में बने कांउटर से प्रत्येक परिवार को २ रुपये की टिकट लेनी पड़ती है। वहीं से मन्दिर में चढ़ाने के लिये ६ रुपये का प्रसाद भी मिलता है।
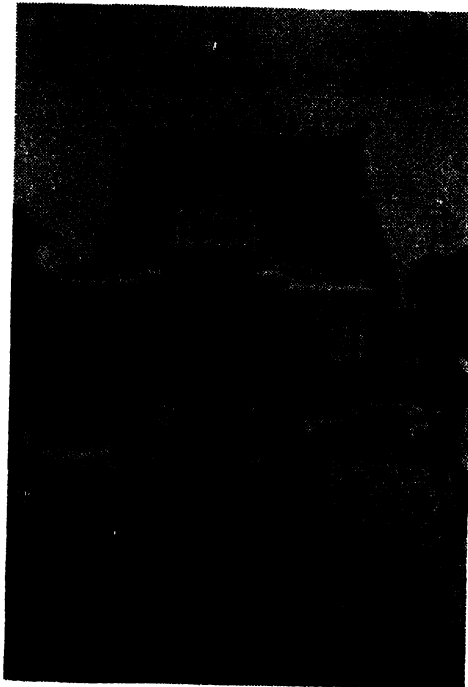
भगवान श्री पद्मनाभ स्वामी के अन्तर्गत त्रिवेन्द्रंम् में साल में दो उत्सव मनाये जाते हैं। पहला उत्सव अक्टूबर नवम्बर को श्रवण नक्षत्र के दिन ध्वजा आरोहन से शुरू होता है। ध्वजा आरोहन के दसवें दिन भगवान श्री पद्मनाभ स्वामी और अन्य देवताओं की मूर्तियों को लेकर जुलूस निकाला जाता है। संध्या समय जलूस शंकू भूख समुद्र तट पर पहुँचता है। वहाँ मूर्तियों को समुद्र जल में स्नान कराया जाता है। इस उत्सव को कोटिपट्टू कहते हैं। दूसरा उत्सव भी इसी तरह मनाया जाता है जो मार्च अप्रैल के रोहिणी नक्षत्र के दिन आरम्भ होता है। इस उत्सव को आराट्टू कहते हैं।

इन दो प्रमुख उत्सवों के अतिरिक्त दिसम्बर, जनवरी तथा जून जुलाई में कलंभ नाम के पर्व मनाये जाते हैं। ये पर्व सात, सात दिन तक चलते हैं। पर्व की समाप्ति पर रात्रि में मन्दिर के स्तम्भों पर बने हुए एक लाख से भी अधिक दीप जलाये जाते हैं। ये दीप हर महीने की श्रवण नक्षत्र शुक्ला एकादशी तथा अमावस्या की रात्रि में भी जलाये जाते हैं और भगवान की मूर्ति को सजा कर मन्दिर में चारों ओर परिक्रमा की जाती है।

त्रिवेन्द्रम् में पद्मनाभ मन्दिर के अतिरिक्त चिड़ियाघर, श्री चित्रालयम् आर्ट गैलरी, एववेरियम कौडियार पैलेस पिक्चर गैलरी तथा औबजरवेटरी देखने लायक है।

त्रिवेन्द्रम् में मुख्य तीन बाजार हैं चलई बाजार, पड़वनगड़ी और पूतनचंतई बाजार।

त्रिवेन्दरम्, सड़क द्वारा कोचीन से २१८ कोट्टयम से १५४ तथा कन्याकुमारी से ८६ कि० मी० दूर है। मदुरै और रामेश्वरम् से सड़क या रेल द्वारा त्रिवेन्द्रम् आ सकते हैं।

त्रिवेन्द्रम् में ठहरने के लिये श्री पद्मनाभ मन्दिर के साथ ही निःशुल्क धर्मशाला है तथा रेलवे स्टेशन पर रिटायरिंग रूम है और कई सस्ते होटल हैं। अधिक जानकारी के लिये गावर्नमैन्ट टूरिस्ट इनफरमेशन औफिस शक्ति नगर प्रैस

रोड से सम्पर्क करें। "हम राजस्थान पर्यटन बस से त्रिवेन्द्रम् देखने गये थे"।

त्रिवेन्द्रम में श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर के अतिरिक्त निम्न धार्मिक स्थान दर्शनीय है (१) भद्रकालि क्षेत्रम् (२) भगवती क्षेत्रम् (३) कालवगी लूथरन चर्च (४) चाला जामा मस्जिद (५) क्राइस्ट चर्च आफ इंडिया (६) गणेश मन्दिर (७) कृष्णन कोविल (८) महादेवन क्षेत्रम (६) मानक्कडपाल्ली (१०) मातिर मैमोरियल चर्च (११) मित्रानन्दापुरम क्षेत्रम् (१२) मस्जिद (१३) संत जार्ज मीरियन चर्च (१४) संत जोजफ कैथीड्रल (१५) संत जोजफ चर्च (१६) संत मेरीज चर्च (१७) सस्नम कोविल (१८) सस्तमंगलम् कोविल (१६) संत एन चर्च (२०) श्री कंटेश्वर क्षेत्रम् (२१) श्री वाराहम् अम्बालम् (२२) उदयाननूर अम्बालम् (२३) विटुकापाली।

कोचीन

कोचीन अर्नाकुलम से १५, कोइम्बटूर से ३०१, त्रिवेंदरम् से २२१ तथा कुइलोन से ५५६ कि० मी० दूर मालावार तट पर बसा हुआ है। बम्बई के बाद यह पश्चिमी तट पर सब से बड़ी बन्दरगाह है। इसे अरब सागर की रानी कहा जाता है। इसके एक ओर अरब सागर तथा दूसरी ओर वेम्बनाड़ झील है। यहां अधिकतर मछुआरे रहते हैं जो नावों में घर बना कर रहते हैं। अर्नाकुलम् और कोचीन दोनो नगर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। दोनों नगरों के बीच में वेम्बनाड़ झील है। एक पुल द्वारा दोनों नगरों को मिलाया हुआ है। अर्नाकुलम में काले यहूदी रहते हैं और कोचीन में गोरे यहूदी। यहूदियों के मन्दिर को अगियारे कहते हैं। अंग्रेजी में यहूदी को "जू" और उनके मन्दिर को "सिनगाग" कहते हैं। यहां पर यहूदियों का जूइश सिनगॉग अगियारा (मंदिर) जूइश सिनगॉग (सिनगॉग आफ वाइट जूज) धार्मिक स्थान है। ईसाइयों का फोर्ट कोचीन में सेंट फ्रांसिस चर्च तथा सान्ताक्रुज कथीड्रल पवित्र धार्मिक स्थान है। सान्ताक्रुज कथीड्रल में वास्कोडिमा की कब्र भी है।

कोचीन एक ऐतिहासिक नगर है। पुर्तगालियों ने अपनी सब से पहली बस्ती यहीं पर बनाई थी। महान नाविक वास्को-डि-गामा १५०२ से १५२४ तक यहीं पर रहा था और यहीं पर उसकी मृत्यु हुई थी। पुर्तगालियों से पहले यहां यहुदी अपनी

बस्ती बनाकर रहते थे। यहां पर भट्टनचेरी पैलेस है। इसे पुर्तगालियों ने और बाद में डचों ने बनवाया था। इसमें म्युजियम तथा भित्ति चित्र देखने योग्य हैं।

कोचीन-अर्नाकुलम के निकट त्रिपुणित्तुरै है। यह नगर कोचीन की राजधानी हुआ करता था। यहां कोचीन के राजाओं के महल हैं। बस तथा रेल से जा सकते हैं।